पतझड़

मानव कौल

पतझड़

(उपन्यास)

आओ, बहुत दूर जाकर
अपने पास आते हैं।

पतझड़

मानव कौल

कैथरीन

उम्र के साथ-साथ एक चुप भीतर बैठती जाती है। शरीर ज़्यादा आवाज़ों से कम आवाज़ों की तरफ़ ख़ुद-ब-ख़ुद चलने लगता है। यात्राएँ भी ख़ाली जगहों पर देर तक वक़्त गुज़ारने में सुकून देने लगती हैं। ऐसे में मैं जब ख़ुद को लोगों के बीच पाता हूँ और बचना नामुमकिन-सा लगता है तो मैं ख़ुद को एक खेल में फँसा लेता हूँ। इस खेल में मैं बस अपना नाम बदल लेता हूँ। ख़ासकर ऐसी यात्राओं में जहाँ मुझे कोई जानता नहीं है। किसी पब में बीयर पीते वक़्त, या किसी कैफ़े में कॉफ़ी के घूँट लगाते हुए मैं अपना नाम कुछ और बताता हूँ। कभी-कभी मैं उन नामों को चुनता हूँ जिनसे मैं बहुत प्रेम करता हूँ, तो कभी जब मेरा मूड ठीक नहीं होता, तो मैं उन लोगों के नामों को चुनता हूँ जिनके जैसा होना मैं कतई पसंद नहीं कर सकता हूँ।

मैंने अपनी इस अजीब-सी आदत के बारे में कैथरीन को बताया, हम दोनों लंदन के Tate Modern Museum में कुछ वक़्त बिताकर निकले ही थे।

वह कहने लगी, "ये तुम्हारे बदलने की इच्छा का एक असफल प्रयास है।"

मैं देर तक सोचता रहा कि उसे कैसे पता कि मैं बदलना चाहता हूँ? क्या सच में मेरी सारी यात्राओं में मेरा असल प्रयास यही रहा है!

"तुम सही सोच रहे हो?" कैथरीन ने कहा।

"नहीं, मैं तो कुछ और सोच रहा था।" मैंने झूठ बोला।

वह चुप रही, पर उसके चेहरे पर आई मुस्कुराहट वहीं लटकी रह गई। मुझे लगा मैं झूठ बोलते ही नंगा हो चुका था। एक बार इच्छा हुई कि उससे कहूँ कि इसमें इतना मुस्कुराने की क्या बात है, पर मैं अपने झूठ पर बना रहा।

"तुम यात्राएँ क्यों करती हो?" मैंने उससे पूछा।

"पता नहीं!" उसने कहा।

"ये क्या जवाब हुआ?" मैंने उसे फँसाने की कोशिश की।

वह कुछ देर चुप रही। उसकी मुस्कुराहट उसके होंठ छोड़ने ही वाली थी कि वह फिर मुस्कुराने लगी और कहा, "मुझे घूमना पसंद है, पर हर चीज़ जो मुझे पसंद है, उसके बारे में जब मैं बात करने लगती हूँ तो वो मुझे बहुत छोटी नज़र आने लगती है। और बात करते हुए ही एक प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है मेरी पसंद पर। मैं इसलिए अपनी निजी इच्छाओं को शब्द नहीं देना चाहती हूँ। ये जो मैं अभी तुम्हें कह रही हूँ, इसपर भी मुझे लग रहा है कि मेरे भीतर मेरी कोई इच्छा दम तोड़ रही है।"

हमारी कॉफ़ी ख़त्म हो चुकी थी। कैथरीन ने वेटर की तरफ़ बिल लाने का इशारा किया। मैं दिन भर के टहलने से बेज़ार हो चुका था। मैं कुछ देर और बैठना चाहता था। वेटर ने जैसे ही बिल दिया, मैंने उससे कहा कि मुझे एक कॉफ़ी और चाहिए। कैथरीन मेरी तरफ़ देखने लगी, पर मैं वेटर की तरह देख रहा था। वेटर ने कैथरीन के हाथ से बिल को वापस लिया और मेरी कॉफ़ी लेने के लिए निकल गया।

"हम बदल नहीं सकते हैं।" कैथरीन ने मेरी कॉफ़ी आने के बाद कहा। मैं चुप रहा। मैं कैथरीन को जानता था। उससे अगर मैं कोई सवाल करता तो वह हमेशा उसका जवाब देने से बचती दिखती। पर अगर मैं उसे वो जगह देता जिसमें वह अपनी आज़ादी से टहल सके, तो बिना पूछे मेरे सारे जवाब मिल जाते।

"हमारा बदलाव हमारे क़रीबी लोग सूँघ लेते हैं और उनकी बदलती आँखों में हमें हमारी वो शक्ल दिखने लगती है जिसे हम ख़ुद नहीं पहचान

पाते।" कैथरीन ने ये कहते ही सिगरेट जला ली। फिर धुआँ छोड़ते हुए उसने कहा, "मैं जब बहुत वक़्त तक यात्रा नहीं करती हूँ तो मेरे अगल-बग़ल की हर छोटी चीज़ का असर मुझ पर बढ़ता नज़र आने लगता है। जैसे मेरे घर के पास वाले कैफ़े के आदमी का मुझे घूरते जाना मुझे कुछ ज़्यादा ही अखरने लगता है, मेरी माँ का मुझे लगातार फ़ोन करते रहना, अपने दोस्तों के सारे जोक्स बिना हँसी के मेरे सामने से गुज़रने लगते हैं। यहाँ तक कि शाम को पार्क घूमने जाती हूँ तो पहचाने चेहरे मेरे अकेलेपन पर सवाल करते नज़र आते हैं। सारा कुछ बहुत बड़ा हो जाता है। मैं जब यात्रा पर रहती हूँ तो मुझे इन सबके बारे में सोचने में अच्छा लगता है और हँसी आती है ख़ुद पर कि कैसे ये छोटी चीजें मेरे जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती चली जा रही थीं।"

उसके बोलने के बीच में ही मैं सोचने लगा कि मैं यात्राएँ क्यों करता हूँ? मेरे जवाब कभी भी कैथरीन के कहे की तरह सरल नहीं थे।

"तुम सही कह रही थीं, मैं बदलाव के बारे में ही सोच रहा था।" मैंने उससे सच कह दिया।

मुझे हमेशा लगता था कि मैं यात्रा नहीं कर रहा हूँ। यात्रा कोई और करता है और मैं उस यात्री के ठीक पीछे उसकी परछाई-सा उसके अनुभवों को ताकता रहता हूँ। सामने जो भी घट रहा होता है उस पर कभी यक़ीन नहीं होता तो कभी किसी भी घटना का न होना देर तक गूँजता रहता है। ऐसी बे-सिर-पैर की यात्राओं को किस तरीक़े से जज़्ब किया जाना चाहिए मैं इस बारे में हमेशा अनिश्चित रहा हूँ। पुरानी की हुई यात्राओं के बारे में सोचता हूँ तो कुछ टेढ़े-मेढ़े वाक्य भीतर से उभरते हैं। वो हमेशा इतने पराए सुनाई देते हैं कि लगता है मैं किसी ऐसी किताब की कहानी सुना रहा हूँ जो असल में मैंने पढ़ी नहीं है। तो क्या मैंने असल में कोई यात्रा की ही नहीं थी? मैं अपने जीवन में भी हमेशा एक परछाई-सा ख़ुद के जिए हुए को ताक रहा होता हूँ। मैं वैसा-का-वैसा यहाँ भी जी रहा हूँ और वहाँ भी, इस बात में कितनी उदासी है!

मैं कैथरीन से उदासी के बारे में बात करना चाह रहा था। फिर लगा कि कॉफ़ी मेरे गले नहीं उतर रही है।

हम दोनों कैफ़े से निकल चुके थे और लंदन की सड़कों पर टहलने लगे थे। हवा में ठंडक थी और बारिश की फुहार भी चेहरे पर पड़ रही थी।

"तुम अचानक लंदन कैसे आ गए?" कैथरीन ने सिगरेट जलाते हुए पूछा।

"पिछले दिनों वर्जिनिया वुल्फ़ को पढ़ रहा था और फिर पता चला कि Edward Munch की पेंटिंग्स की प्रदर्शनी यहाँ लगी हुई है। इतनी वजह काफ़ी थी।"

कैथरीन के चेहरे पर मैंने उदासी की एक लकीर देखी। मुझे कहना था कि मैं तुमसे मिलना चाहता था।

"तुम सिगरेट कब से पीने लगी हो?" मैंने पूछा।

"जिस दिन तुम्हें पेरिस की ट्रेन में बिठाया था, तभी घर जाते वक़्त मैंने सिगरेट जला ली थी। तब से ये मेरे साथ है।"

मैंने उसे नहीं बताया कि मैं सिगरेट छोड़ चुका हूँ। हम लोग लंदन ब्रिज पार कर सोहो की तरफ़ चलने लगे थे। कैथरीन के चेहरे पर उभरी उदासी की लकीरें अभी भी बरक़रार थीं।

"जब तुम अपना नाम बदलते हो तो क्या तुम्हारे संवाद भी बदल जाते हैं?" कैथरीन ने पूछा।

"मैंने ध्यान नहीं दिया।" मैंने जवाब दिया।

वह चुप हो गई। इस चुप्पी में उसके चेहरे की उदास लकीरें गाढ़ी होती जा रही थीं। मैं उसे चुप नहीं देखना चाहता था सो मैंने आगे जोड़ा, "पर हाँ, मेरे भीतर की उदासी को ग़ायब होते देखा है मैंने। मैं अचानक अलग तरीक़े की बातें करने लग जाता हूँ।"

कैथरीन ने मुझे ऐसे देखा मानो पहली बार देख रही हो। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आई।

"ये बहुत दिलचस्प है!" उसने कहा।

"जैसे Christy Lefteri ने The Beekeeper of Aleppo लिखी। Christy लंदन की रहने वाली हैं। उन्होंने दो साल ग्रीस के रिफ़्यूजी कैंप्स में जाकर काम किया है बस, पर जब आप उपन्यास पढ़ते हैं तो आपको लगता है कि ये उपन्यास उस उपन्यास के मुख्य किरदार अली ने ही लिखा है, बल्कि ये अली की आत्मकथा है जो सीरिया का रहने वाला है। तो Christy भी एक तरीक़े से अली हो चुकी थीं।"

मुझे कहते ही लगा कि ये मैंने कितना ग़लत उदाहरण दिया है। अपनी पब और कैफ़े में की हुई बकवासों की तुलना मैंने अचानक एक बड़े लेखक से कर दी। मैं कहना चाहता था कि ये उदाहरण ग़लत है, पर तभी कैथरीन ने कहा, "हम सबने एक तरीक़े की ज़मीन तैयार कर रखी है, जहाँ से खड़े होकर हमने दुनिया को देखना सीखा है। मैं उस ज़मीन के बारे में सोच रही थी। क्या वो ज़मीन भी बदलती होगी ?"

तभी बारिश तेज़ हो गई और हम दोनों दौड़ने लगे। मैं किसी दुकान के भीतर जाकर रुक जाना चाहता था, पर कैथरीन कहने लगी कि पास में ही एक पुराना पब है, वहाँ चलते हैं। पब पास में नहीं था, हम दौड़ते-हाँफते हुए कई गलियों को पार करने के बाद उस पब में पहुँचे। हम दोनों ही थोड़ा भीग चुके थे। भागने की वजह से कैथरीन का चेहरा लाल हो गया था। उसने अपने स्कार्फ़ से अपना चेहरा पोछा और मुझे लगा उस स्कार्फ़ ने कैथरीन के चेहरे की उदास लकीरों को भी पोछ डाला। बारिश और उस बारिश में भागने का असर इतना हो सकता है ये मैंने कभी नहीं सोचा था। कैथरीन हँस रही थी, उसके चेहरे पर बचपन की शरारतें उभर आई थीं।

"क्या तुम्हें मेरे चेहरे पर कुछ अंतर दिख रहा है ?" बार के स्टूल पर बैठते ही मैंने पूछा।

"कैसा अंतर ?" उसने पूछा।

मैंने बात को आगे नहीं बढ़ाया और दोनों के लिए बीयर ऑर्डर की। कैथरीन ने मुझे टोका और कहा कि मैं व्हिस्की पिऊँगी। मैंने भी अपने लिए व्हिस्की ऑर्डर कर दी। कैथरीन इस पब में बहुत लोगों को जानती थी। वह

व्हिस्की के कुछ सिप लेकर पीछे अपने दोस्तों से मिलने चली गई थी। मैं सोचने लगा कि इन बीते सालों में कैथरीन कितना बदल गई है ! शायद किसी से इतने सालों बाद मिलने पर यही होता है, हम उससे मिलने में पुरानी जी हुई कहानी के संवाद तलाश रहे होते हैं। जैसे ही पुरानी कहानी के कुछ वाक्य सुनाई देते हैं तो दोनों के शरीर पर एक अपनेपन की लहर दौड़ जाती है। हाथ ख़ुद-ब-ख़ुद एक-दूसरे को छूने के लिए उठ खड़े होते हैं। मैं कैथरीन को पीछे के टेबल पर अपने दोस्तों से बात करता देख रहा था और भीतर इच्छा हुई उसे गले लगाने की, इच्छा हुई कि उससे कहूँ चलो उन्हीं गलियों और सड़कों पर चलते हैं जहाँ पिछली बार हमने कहानी को लिखते हुए छोड़ा था।

"माफ़ी चाहती हूँ, वो मुझे छोड़ ही नहीं रहे थे।" उसने वापस स्टूल पर बैठते हुए कहा।

उसकी व्हिस्की ख़त्म हो चुकी थी। मैंने उसके लिए दूसरी व्हिस्की मँगाई, पर उसने मना कर दिया। उसने अपनी कलाई घड़ी की तरफ़ देखा और बैग से सिगरेट निकाल ली। मैंने अपनी ड्रिंक एक बार में ख़त्म की और हम पब के बाहर सिगरेट पीने निकल आए। उसने अपनी सिगरेट जलाते ही मुझे एक सिगरेट ऑफ़र की। मैं थोड़ा झिझका फिर मैंने सिगरेट ले ली। मैं नहीं चाहता था कि कैथरीन को लगे कि मैं अब वो आदमी नहीं रहा जिससे वह मिली थी। कैथरीन सिगरेट पीती हुई अजीब लगती थी। वह किसी काम की तरह सिगरेट पीती थी। उसके कश लगाने में एक तरह की जल्दबाज़ी थी। तभी उसका फ़ोन बजा और वह मुझसे कुछ क़दम दूर जाकर बात करने लगी। बारिश थम चुकी थी। लंदन की सड़कें बारिश के पानी और स्ट्रीट लाइट की रोशनियों में चमक रही थीं। मैं सड़क के आख़िरी कोने को देखने लगा और इच्छा हुई कि अभी चलते हुए बाएँ मुड़ जाऊँ, या दाएँ मुड़ जाऊँ, कहीं चल दूँ, पुरानी कहानियों से दूर!

"एक ड्रिंक और पिएँ?" कैथरीन ने आते ही पूछा।

मैं पूरी सिगरेट पी नहीं पाया था। जब हम वापस आए तो कैथरीन थोड़ी परेशान दिखी। दूसरे ड्रिंक का सिप लेते ही मैंने पूछा, "क्या तुम मुझसे

मिलकर निराश हुई?"

कैथरीन ने व्हिस्की का एक बड़ा घूँट लिया और बिना मुझे देखे कहा, "नहीं, पर मैं थोड़ी असहज ज़रूर हूँ।"

"क्यों?"

"क्योंकि तुम बदलना चाहते हो, पर तुम अपने अगल-बग़ल किसी को बदलता नहीं देख सकते हो। मैं ये नहीं कह रही हूँ कि मैं बदल गई हूँ। मैं शायद वही हूँ। पर तुम्हारे साथ चलते हुए मुझे लग रहा था कि तुम लगातार कुछ ढूँढ़ रहे हो मुझमें। जैसे तुम्हारा कोई पुराना दोस्त तुम्हारी ही खोई हुई जैकेट पहनकर तुम्हारे सामने आ जाए और उससे बात करते हुए तुम पूरे वक़्त उस चीज़ के बारे में सोचते रहो जिसे तुम उस जैकेट की जेब में रखकर भूल गए थे।"

मैं कैथरीन के इस उदाहरण पर हँसने लगा। उसे भी हँसी आ गई।

"मुझे नहीं पता मैं तुम्हें सही-सही बता पा रही हूँ कि नहीं, पर ये मुझे थोड़ा असहज कर रहा था।" उसने कहा और वह फिर हँसने लगी। उस हँसी में हम अचानक सहज हो गए। इस बीच कैथरीन ने फिर से घड़ी देखी।

"क्या लिख रहे हो आजकल?" उसने पूछा। Akhil

"फ़िलहाल तो कुछ भी नहीं, पर कल से एक यात्रा पर निकल रहा हूँ, वहीं लिखना शुरू करूँगा।"

"यात्राओं में लिखना कुछ अलग होता होगा?" उसने पूछा।

"हाँ, अप्रत्याशित की संभावनाएँ लगातार बनी रहती हैं और मैं अंत में ऐसे लोगों से मिल रहा होता हूँ जिन्हें अपने घर पर रहकर लिखने की मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता हूँ।"

"पर जो लिख रहा है वो? वो तो वही रहता है, उसे कैसे बदलोगे?" उसने पूछा और मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

मैं देर तक सोचता रहा पर फिर कहा, "हाँ, शायद मैं भी बदल जाता होऊँगा।"

वह मुस्करा दी। काश कैथरीन हिंदी पढ़ना जानती तो मैं उसे अपनी किताबें पढ़ने देता और फिर शायद मैं उसके सवाल का सही जवाब दे पाता। पर फिर वह ख़ुद को भी पढ़ लेती और शायद हम इस तरह फिर से नहीं मिल पाते।

"पब और कैफ़े में बैठकर नाम बदल लेने वाले बचकाने खेल में और लिखने में अंतर है।" कैथरीन ने कहा।

मैंने कैथरीन की बात में हामी मिला दी। पर मैंने सच में ख़ुद को बदलते देखा था उन बचकाने खेलों में। मेरे जीवन का हर बड़ा क़दम किसी बचकाने उत्साह में ही उठा है। क्या मैं उस खेल को आगे नहीं बढ़ा सकता हूँ?

"कल कहाँ जा रहे हो?" उसने पूछा।

"कोपनहैगन।"

वह कोपनहैगन सुनते ही चुप हो गई। मैंने देखा, उसकी उँगलियाँ गिलास के ऊपरी हिस्से से खेलने लगी थीं और उसकी आँखें गिलास के भीतर पड़े बर्फ़ के दो टुकड़ों पर थीं जो लगभग पिघल चुके थे। तभी उसके फ़ोन पर मैसेज की कई घंटियाँ बजीं। उसने अपना फ़ोन उठाया और मैसेज पढ़ते हुए उसके चेहरे पर तनाव की रेखाएँ बढ़ गईं। फिर उसने ग़ुस्से में फ़ोन को अपने बैग में रखा और मेरी तरफ़ देखकर मुस्कुराने लगी। उसके मुस्कुराने में भी तनाव था और आँखें थोड़ी नम हो चली थीं।

"मैं पिछले साल कोपनहैगन में थी। मैं एक हफ़्ते के लिए गई थी, पर मैं वहाँ महीना भर रह गई थी। मुझे वहाँ इतना अच्छा लगने लगा था कि मैंने कुछ कंपनियों में जॉब के लिए इंटरव्यूज़ भी दे दिए थे। फिर वही हुआ जो मेरे साथ हमेशा से होता है..."

वह कहते ही चुप हो गई। मैं कुछ देर तक इंतज़ार करता रहा। कैथरीन की निगाह वापस अपने बैग पर गई। इससे पहले वह भटक जाए मैंने पूछा, "क्या हुआ था कोपनहैगन में?"

"तुम जब यात्राएँ करते हो तो तुम्हें नए क़िस्म के लोग मिलते हैं, और

तुम भी उनके साथ बदलना चाहते हो। मैं बदलना नहीं चाहती, पर मैं कहीं भी जाऊँ मैं अंत में उन्हीं लोगों से मिलने लगती हूँ जिन लोगों की वजह से मैं लंदन वापस नहीं आना चाहती थी।"

कैथरीन ने गिलास उठाया और एक बार में पूरा ड्रिंक ख़त्म कर दिया। उसने वेटर की तरफ़ इशारा करके एक ड्रिंक और लाने को कहा। मैंने अपने ड्रिंक की तरफ़ देखा जो अभी भी भरा हुआ था। मैं कैथरीन से कहना चाहता था कि मैं अब ज़्यादा दारू नहीं पी पाता हूँ। जैसे ही वेटर उसका ड्रिंक लाया उसने मेरे गिलास से अपना गिलास टकराया और चीयर्स कहा। मैंने अपना ड्रिंक तुरंत उठाया और उसके साथ एक बड़ा सिप लिया।

"तो जब मैं कोपनहैगन में थी तो..." वह आगे कहने ही वाली थी कि बैग में रखा उसका फ़ोन बजा। उसने अपना ड्रिंक नीचे रखा और आँखें घुमाते हुए फ़ोन उठाया। कुछ देर वह फ़ोन पर चुप रही और फिर उसने पलटकर पब के दरवाज़े की तरफ़ देखा। मैंने भी पलटकर देखा तो दरवाज़े पर एक आदमी खड़ा दिखा। उसका क़द लंबा था, सिर पर बाल कम थे और थोड़ा पेट निकला हुआ था। उसने अपना फ़ोन अपने कानों पर लगाया हुआ था। कैथरीन ने फ़ोन रखा और मुझसे फुसफुसाते हुए कहा कि मैंने तुम्हारे बारे में बेंजमिन को नहीं बताया था, यह कहकर वह उस आदमी की तरफ़ चली गई। पब के दरवाज़े पर खड़े होकर वे दोनों बहस करने लगे। मैं पलट गया। कैथरीन सही कहती थी, मैं अपने अगल-बग़ल लोगों को बदलते हुए नहीं देख सकता था। मैंने अपनी व्हिस्की के कुछ सिप लिए। अचानक मुझे व्हिस्की में पुराना स्वाद आने लगा और मेरी इच्छा सिगरेट पीने की करने लगी। मैंने देखा बेंजमिन और कैथरीन अभी भी पब के दरवाज़े पर खड़े होकर बहस कर रहे थे। मैंने कैथरीन के बैग से सिगरेट का पैकेट निकाला और उसमें से एक सिगरेट निकालकर उसे अपने कान पर खोंस लिया। तभी कैथरीन उस आदमी के साथ वापस आई। मैं स्टूल से उठकर खड़ा हो गया।

"हे, आई ऐम बेंजमिन।" बेंजमिन ने अपना हाथ बढ़ाया और मैंने अपना। बेंजमिन की आवाज़ बहुत भारी थी और उसके हाथों की पकड़,

बहुत मजबूत।

"हे बेंजमिन, आई ऐम ऋषभ।"

मेरे ऋषभ बोलते ही कैथरीन के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, उसे पता था ये मेरा नाम नहीं है।

"हमें निकलना है ऋषभ, इट वॉज़ नाइस मीटिंग यू।" कैथरीन ने ऋषभ पर ज़ोर देते हुए कहा।

उसने अपना बैग उठाया और काउंटर पर पड़ा उसका सिगरेट का पैकेट उसने मेरी तरफ़ खिसका दिया। मैं कैथरीन की सिगरेट की डब्बी को वापस उसके बैग में रखना भूल गया था। इन सबमें कैथरीन अपनी मुस्कुराहट छुपा नहीं पा रही थी। जाते हुए उसने पब के दरवाज़े पर पलटकर मुझे देखा और मुस्कुराते हुए हवा में चूम लिया। मैं इस कैथरीन को जानता था।

उनके जाने के बाद मैंने अपना ड्रिंक ख़त्म किया और कैथरीन का बचा हुआ ड्रिंक उठा लिया। उस गिलास पर कैथरीन की लिपस्टिक के निशान थे। मैंने अपने होंठ ठीक उसके होंठों पर रखे और उसका ड्रिंक ख़त्म किया।

पब के बाहर आकर मैंने सिगरेट जलाई और चलते हुए सड़क के कोने पर आकर खड़ा हो गया। दाएँ जाऊँ या बाएँ मुड़ जाऊँ, मैं देर तक सोचता रहा। फिर मैंने सोचा– ऋषभ क्या करना चाहेगा?

ऋषभ सड़क के कोने में देर तक खड़ा रहा, वह न तो दाएँ मुड़ा न ही बाएँ। वह जानना चाहता था कि कैथरीन के साथ कोपनहैगन में क्या हुआ था? उसे एक बचकानी हरकत सूझी, उसे लगा कि अगर वह दाएँ या बाएँ न मुड़कर सीधा अँधेरी गली में चलता रहेगा तो वह कोपनहैगन पहुँच जाएगा। उसी कोपनहैगन में जहाँ कैथरीन होगी, शायद उसका नाम वहाँ कैथरीन नहीं होगा। इस विचार से ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट छा गई। वह सीधी अँधेरी गली में सिगरेट के कश लगाता हुआ आगे बढ़ गया।

मुझे अपने गाँव का घर आज भी याद है। उस घर में सूरज की पहली किरण एक छोटे रोशनदान से प्रवेश करती थी। मेरी आँखें खुलतीं और वो सूरज का टुकड़ा मेरे सिरहाने पड़ा होता। मुझे लगता कि ये मेरे सपनों का सुनहरापन है जो नींद से छिटककर बाहर आ गया है। सूरज के उस छोटे-से टुकड़े को अपने सिरहाने पड़ा हुआ देखकर मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि कैसे ये मेरे सपनों की तरह उजला है। उस वक़्त मुझे अपने सपनों से भी बेहद प्यार था और उस रोशनदान से भी। बाद में, घर में छिपकलियों के डर की वजह से हमने उस रोशनदान में जाली लगवा दी थी। अब वो सूरज का टुकड़ा हमारे मध्यमवर्गीय डरों की वजह से फीका-सा मेरे सिरहाने आकर गिर पड़ता। उसके फीकेपन का असर मैं अपने सपनों में भी महसूस कर सकता था। मुझे लगने लगा था कि शायद मेरे सपने भी अब रोशनदान की जाली से छनकर भीतर आते हैं।

ऐसे में जब लोग पूछते कि बेटा बड़े होकर क्या बनोगे? तो मैं तुरंत उस धुँधली पड़ गई सूरज की पहली किरण को ताकने लगता। मेरे दोस्तों के जवाबों में मुझे छिपकली का डर नहीं दिखता था। मैं क्या बनूँगा के मेरे जवाब के बीच एक व्यवहारिक जाली मुझे महसूस होती थी। घर-घर, चोर-पुलिस खेलते हुए और अपने बड़े होते दोस्तों की पहली-पहली संजीदा बातों में मैंने जाना कि मैं एक अति सामान्य लड़का था। मेरे पास ऐसी कोई कला भी नहीं थी जिससे मैं सामान्य लोगों की भीड़ से अलग छिटक सकूँ। मुझे याद है मैंने लोगों को कहना चालू कर दिया था कि

बस एक अच्छी सरकारी नौकरी और हँसता हुआ सुखी परिवार मिल जाए मुझे, बस इससे ज़्यादा मुझे कुछ नहीं चाहिए। इससे ज़्यादा की कल्पना में छिपकली के भीतर आ जाने का डर था।

मैं पूरे गर्व से कह सकता था कि मैंने अपना सपना पूरा कर लिया था, मेरे पास एक लगभग सरकारी नौकरी थी, और एक सुंदर गर्लफ्रेंड थी, सारथी, जिसे देखकर सबको मुझसे बहुत जलन होती थी। उसका नाम सुनते ही मुझे उससे प्यार हो गया था। यूँ देखा जाए तो बचपन का देखा सपना अभी तक पूरी तरह पूरा नहीं हुआ था, क्योंकि हमारी शादी नहीं हुई थी। पर हम सात सालों से साथ एक ही घर में रह रहे थे तो वो भी एक तरीक़े से शादी ही हुई। असल में सारथी बहुत खुले विचारों की लड़की थी, उसे शादी जैसे पुराने दक़ियानूसी ख़यालात में विश्वास नहीं था। सो मेरा भी विश्वास उसमें से उठ गया था। मैं ऐसा ही था। मैं लोगों के बीच रहते रहते उनके जैसा हो जाता था।

मैं जब भी दिल्ली के किसी पार्क में सारथी के साथ घूमने जाता तो मुझे वो कुत्ते दिखते थे जिनके साथ उनके मालिक गेंद लेकर खेल रहे होते। वे गेंद फेंकते और कुत्ता भागकर जाता और उन्हें ले आता। मालिक कहीं भी गेंद फेंके, कुत्ता उसकी परवाह नहीं करता, नदी, नाले, झाड़ी, वो कहीं से भी गेंद ले आता था। मुझे लगने लगा था कि मैं बिलकुल उस कुत्ते के जैसा हूँ। मुझे अगर कोई काम दे दे तो मैं उसे भाग भागकर पूरा कर लेता था। शायद इसीलिए मेरी नौकरी में मेरी तरक़्क़ी हो रही थी। मेरा काम रिसर्च का था, मुझे बहुत किताबें पढ़नी होती थी। मुझे कभी भी किताबें पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। या यूँ कहें कि पूरा जीवन मैं किताबों से भागा फिरता था। पर क्योंकि मेरे मालिक उसे मेरी डेस्क पर रख देते थे तो मैं उन्हें समय से पहले पढ़कर ख़त्म कर देता था। मेरी कभी ये बात समझ में नहीं आई थी कि लोग किताबें लिखते क्यों हैं? मैंने ये सवाल कभी सारथी से नहीं किया था क्योंकि उसे मेरा लगातार किताबें पढ़ना बहुत पसंद था। वह कहती थी कि तुम पढ़ते वक़्त सबसे खूबसूरत लगते हो।

फिर एक दिन रोशनदान की जाली फट गई और उसमें से छिपकली भीतर प्रवेश कर गई। मेरे सारे डर सच निकले। सारथी मुझे छोड़कर चली गई। न कोई नोटिस, न कोई बातचीत, बस एक दिन वह उठी और घर छोड़कर चली गई। उसने कहा कि मैं बोर हो चुकी हूँ। मुझे लगा अगर बचपन में मेरे घर के रोशनदान में जाली न लगी होती तो शायद सारथी नहीं जाती, मुझे छिपकलियों का कोई डर नहीं होता, मेरे सपने थोड़े खुले हुए आते, शायद मैं उसका मनोरंजन ज़्यादा कर पाता और उसे बोर नहीं होने देता। मैं जानता था कि पिछले कुछ सालों से वह बदल रही थी। वह मुझे बार-बार यात्राओं पर चलने के लिए कहती। उसे पहाड़ पसंद थे, वह हर कुछ वक़्त में पहाड़ों पर चली जाती। मुझे कभी घूमना भी समझ नहीं आया, बिना काम के किसी वीराने में जाकर क्यों रहना? मैं उससे कहता कि कुछ वक़्त बाद सारे पहाड़ मेरे लैपटॉप पर लगे वालपेपर की तरह हो जाते हैं, मुझे समझ नहीं आता कि उनका क्या करूँ? मुझे काम चाहिए होता था, मैं उससे कहना चाहता था कि मैं कुत्ता हूँ, मुझे चाहिए कि कोई गेंद फेंके और मैं उस गेंद के पीछे भागता फिरूँ। बाद में वह मुझसे पूछती नहीं थी, वह अकेले पहाड़ों पर जाने लगी। मैं भी ख़ुश था कि उसे जो अच्छा लगता है, वो करती है और जो मुझे अच्छा लगता है, वो मैं। मुझे लगा था कि ये वो स्थिति आ गई है जिसमें मैं और वे दोनों साथ हैं और ख़ुश हैं।

उसके चले जाने के बाद घर में सन्नाटा छा गया था और समय की गति बदल चुकी थी। मैं कुछ देर दीवारें ताकता और दोपहर हो जाती थी, खाना खाकर बालकनी पर आता तो बैठे-बैठे शाम हो जाती थी। मैं बार-बार ख़ुद से पूछता कि ये मेरे साथ क्यों हुआ? क्या गलती थी मेरी? क्यों मैंने रोशनदान की छनती हुई रोशनी में इतना ही सपना देखा था? अगर कोई छोड़कर चला जाए तो क्या करना है इस बात की कल्पना मैंने क्यों नहीं की थी? मेरे हाथों से, मेरा जमा-जमाया जीवन छूटता चला जा रहा था। मेरा मेरे दोस्तों के साथ बैठना मुश्किल हो गया था। ऑफ़िस में सबकी सांत्वना

भरी दृष्टि मुझे असहज कर देती। सबको मेरे उजड़े पड़े जीवन के बारे में जानने में ज़्यादा दिलचस्पी रहती थी। फिर मुझे पता चला कि सारथी का किसी के साथ संबंध था। इस जानकारी के बाद मेरा पूरा संसार मेरे सामने ताश के पत्तों सा गिर गया।

मेरे हाथों में चाय होती और मेरा हाथ सो चुका होता। चाय हाथ में पड़े-पड़े ठंडी हो जाती और मैं उसे पीना चूक जाता। मैं लगातार सारा कुछ चूकता जा रहा था। सुबह होती और मैं सोचता कि अब नया दिन है, मैं सारा कुछ भूलकर नया जीवन शुरू करूँगा और देखता कि शाम हो रही है। मैं ऑफ़िस जाना भी चूक जाता। मुझे भीतर-ही-भीतर कुछ खाए जा रहा था, ऐसा मेरे साथ कभी नहीं हुआ था सो मुझे नहीं पता था कि इस स्थिति में क्या करना चाहिए। मैं गुस्से में कभी-कभी घर के सामान फेंक देता पर बाद में मुझे ही उस सामान को बटोरना पड़ता। घर में लगातार बढ़ता हुआ सन्नाटा मुझे खाए जा रहा था। मैंने अपना इंस्टाग्राम डिलीट कर दिया था क्योंकि वहाँ मैं लगातार सारथी को स्टाक कर रहा होता था। मैं भाग जाना चाहता था, कहीं दूर, पहाड़ों पर नहीं, क्या पता वहाँ सारथी अपने यार के साथ दिख जाए, मैं इस देश से दूर निकल जाना चाहता था।

मैंने अपनी नौकरी से लंबी छुट्टी की अनुमति माँगी जो कुछ हफ़्तों में मंज़ूर कर ली गई और मैं दिल्ली से, इस देश से, बहुत दूर निकल गया।

मैं कई दिनों से डेनमार्क में था, कोपनहैगन। मैं जानता भी नहीं था कि इतनी दूर आया जा सकता है। मैं डेनमार्क के बारे में कुछ नहीं जानता था, कोपनहैगन का नाम शायद फ़िल्मों और किताबों में पढ़ा था, पर ऐसा कुछ भी नहीं था कि मैंने इसे चुना था। यहाँ भी मैं पार्क का कुत्ता ही था। मेरी दोस्त का डैनिश बॉयफ्रेंड, डैनिश एम्बेसी में काम करता था। उसने कहा कि तुम डेनमार्क चले जाओ और मैंने उसे एक काम की तरह लिया। उसके बॉयफ्रेंड ने मेरे वीज़ा की प्रक्रिया को आसान कर दिया और एक दिन मैंने ख़ुद को कोपनहैगन में पाया। उसके बॉयफ्रेंड ने मुझे एक लिस्ट भी दी थी कि कोपनहैगन में क्या-क्या किया जा सकता है, पर मैंने उसकी लिस्ट को अब तक देखा भी नहीं था। मैं कई दिनों तक अपने कमरे में ही रहा जो मुझे Airbnb पर सस्ता मिल गया था। मैं बस खाने और दारू पीने पास के पब में जाता था।

फिर मैं अपनी इस दैनिक दिनचर्या से बोर होने लगा। पिछले कुछ दिनों से मैं दिन भर इस शहर में भटकता रहता। बार-बार एक ही सवाल दिमाग़ में घूमता कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? मुझे इसका कोई जवाब नहीं मिलता। मैं पिछली रात इतना भटका हुआ महसूस कर रहा था कि मैं चलते-चलते शहर के उन हिस्सों में चला गया जहाँ से वापस आने में मुझे गूगल मैप का इस्तेमाल करना पड़ा। ये शहर अपने परायेपन के साथ मुझे लगातार ताक रहा होता और मेरे पास इसे देने के लिए सिर्फ़ अपनी दुख भरी कहानी के अलावा कुछ नहीं था, जिसे ये सुनना नहीं चाहता था। दिन

ऐसे धीरे-धीरे खिसक रहे थे कि लगता वक़्त कहीं अटका पड़ा है। कौन कहता है कि यात्राएँ सब सही कर देती हैं! मुझे पहले भी बिना काम के कहीं जाने की कोई वजह समझ नहीं आती थी और आज भी। आदमी क्यों अपने बने-बनाए सुरक्षित ढाँचे को छोड़कर वीरानी में चला जाता है, जहाँ कोई उसे नहीं जानता, कोई बात करने के लिए नहीं होता, सुबह जितनी चुप होती है, शाम उससे भी कहीं ज़्यादा वीरान होती है! मुझे लगा था कि नए परिवेश में जाते ही सब ठीक हो जाएगा।

मैं ख़ुद जल्दी से ठीक हो जाना चाहता था। पर कहीं भी कुछ ठीक होता नजर नहीं आ रहा था। मैं थक चुका था, पर मैं और थकना चाहता था, इतना थकना कि रात में थकान की वजह से मुझे बिस्तर पर गिरते ही गहरी नींद आ जाए। मैं रोज़ सुबह टहलने निकलता, दोपहर तक चलता रहता, फिर कमरे पर आकर सोने की कोशिश करता, पर नींद की गिरफ़्त में जाने के बजाय बस बिस्तर पर पड़ा दीवारें ताकता रहता। शाम को भूख फिर बाहर निकलने पर मजबूर कर देती और मैं अलग-अलग पबों में बैठकर बहुत पीता और जब आगे पीना मुश्किल हो जाता तो मैं लड़खड़ाता हुआ अपने कमरे में वापस आकर बिखर जाता। पर मैं अपने बिखरने को ठीक नींद नहीं कहूँगा, हर कुछ देर में मेरी आँख खुलती और मुझे लगता कि मैं दिल्ली में हूँ, फिर कुछ देर दीवारें ताकता रहता, और सोचता कितना अंतर है कोपनहैगन के मेरे इस कमरे की दीवार में और मेरे दिल्ली के घर की दीवार में! कुछ देर मैं समानता और अंतर के गणित में ख़ुद को फँसाए रखता फिर बाहर के शोर को सुनने लगता और ख़ुद को समझाता कि मैं सारी तकलीफ़ों से बहुत दूर हूँ, मैं यहाँ वापिस ख़ुश हो सकता हूँ, यहाँ सारे लोग कितना हँसते हैं, पार्टी करते हैं, रोज़ रात में जश्न का माहौल होता है, पर मेरे लाख समझाने पर भी भीतर से उबाले मारती टीस ख़त्म नहीं हो रही थी।

मुझे यात्रा शब्द से चिढ़ होने लगी थी। क्या अंतर है मेरा यहाँ रहने और दिल्ली में अपने घर पर रहने में? मुझे यहाँ के कमरे की दीवारें भी

दिल्ली के मेरे घर की दीवारों जैसी दिखने लगी थीं, सारे अंतर ख़त्म होते जा रहे थे। मैं अपने पूरे अतीत के साथ यहाँ बैठा था, और इस सारे नए में मैं तो वही पुराना आदमी था, जिसने बहुत छोटे सपने देखे थे। कुछ भी नहीं बदला, सारा कुछ वही था, जैसा दिल्ली में था। मैं बस यहाँ और ज़्यादा अकेला था। साढ़े नौ बजे रात को यहाँ सूरज डूबता और सुबह पाँच बजे वो निकल पड़ता। रात छोटी होने के बावजूद ख़त्म होने का नाम नहीं लेती थी। मैं सारथी के साथ-साथ हर उस आदमी को कोसता रहता जिनका कहना था कि यात्राएँ बहुत अच्छी होती हैं।

आज बादल थे, मौसम उतना गर्म नहीं था जितना पिछले कुछ दिनों से हुआ पड़ा था। आज मैंने तय किया था कि मैं बिलकुल नहीं पिऊँगा। मैं पूरा दिन टहलने के बाद कमरे पर आ गया, फिर कुछ देर सोने की कोशिश की, पर बिस्तर पर करवटें बदलता रहा। मुझे लगने लगा था कि मैंने ख़ुद को एक क़ैद दे रखी है। जैसे-तैसे शाम हुई, बादल अभी भी गहरे थे, हल्की ठंडी हवा चल रही थी, मैं पास के एक पार्क में टहलने चला गया। आठ बजे क़रीब अचानक बादल छँट गए और सूरज चमकने लगा। आठ बजे का सूरज बहुत ही ख़ूबसूरत नज़र आ रहा था। मैं ख़ुद को रोक नहीं पाया और सोचा कि एक बीयर पीने से क्या हो जाएगा।

कोपनहैगन में सूरज निकलते ही लोग बाहर निकल आते थे। अचानक हर जगह लोगों से भर गई थी। मैंने एक कैफ़े से बीयर ली और बाहर खुले में आकर बैठ गया। मैं ख़ुशी से चमचमाते चेहरों को देख रहा था। लोग साइकिल पर, पैदल, दौड़ते बहुत ख़ुश लग रहे थे। सामने पार्क में बच्चे झूलों पर झूल रहे थे, कुछ बच्चे बास्केटबॉल खेल रहे थे। यहाँ जीवन कितना अलग है, बमुश्किल ऐसे क्षण आते हैं जब मुझे ठीक महसूस होता है, कितने दिनों बाद आज मैं ठीक महसूस कर रहा था। मैंने एक गहरी साँस ली और फिर ख़ुद से कहा कि देख कितना सुंदर है ये सब! कितने ख़ुश हैं यहाँ लोग! मैंने जबरन मुस्कुराने की कोशिश की, मेरे होंठ हिले पर

माथे के बल वैसे-के-वैसे रहे। मेरे पीछे दो लड़कियाँ बैठी थीं, शायद बहुत दिनों बाद वो मिली थीं इसलिए उनकी बातों में बहुत ज़्यादा उत्साह था। उनके संवाद मुझ तक बहुत आसानी से पहुँच रहे थे। उनमें से एक लड़की ने कहा कि 'मैं थक गई हूँ कोपनहैगन से, मैं अब यहाँ नहीं रह सकती।' वह अभी-अभी स्पेन घूमकर आई थी। वे वेलेंसिया की बात कर रहे थे। सारथी गई थी वेलेंसिया, उसने मुझे उस शहर के बारे में बताया था। मेरी बार-बार इच्छा होती कि घूमकर उनकी बातों में शिरकत दूँ। मैंने अपनी कुर्सी थोड़ी-सी उनकी तरफ़ घुमा दी ताकि मुझे उनकी बातों के साथ-साथ उनके चेहरे भी नज़र आए। तभी मुझे सामने से एक आवाज़ आई।

"आपको मज़ा आ रहा है उनकी बातें सुनने में?"

उसने ख़राब हिंदी में बोला था। मैं चकित रह गया कि कोई मेरे बग़ल की टेबल पर आकर बैठा और मुझे इस बात की कोई भनक नहीं लगी।

"वो कोपनहैगन की बुराई कर रही थीं और मैं उसका ज़ायक़ा ले रहा था।" मैंने खिसियाते हुए कहा तो वह हँस दी।

"आप हिंदुस्तान से हैं, वैसे मैं आपको देखते ही पहचान गई थी। इस तरफ़ बहुत ही कम हिंदुस्तानी पर्यटक आते हैं।"

"माफ़ी चाहता हूँ पर मैं पर्यटक नहीं हूँ।"

"ओ, तो आप किसी काम से यहाँ आए हैं?"

"नहीं, काम तो कुछ नहीं हैं। मैं तो बस यूँ ही आया हूँ।"

"फिर तो आप पर्यटक ही हुए न!"

"काश मैं पर्यटक होता! मैंने पर्यटक होने की बहुत कोशिश भी की है, पर भीड़ दिखते ही कम भीड़ की तरफ़ मेरे क़दम चलने लगते हैं, और कम भीड़ से कब अपने कमरे में पहुँच जाता हूँ इसका पता ही नहीं चलता। मैं कई दिनों से कोपनहैगन में हूँ और यहाँ बस चलता रहता हूँ, कुछ देखा नहीं है, कुछ गलियाँ पता हैं, कुछ पब और चंद कैफ़े, वहीं अपने दिन गुज़ारता पाया जाता हूँ।"

पता नहीं क्या हुआ मुझे मैं ये सब एक साँस में कह गया। शायद इतने

दिनों बाद पहली बार मुझे इस शहर में दो अदद कान मिले थे, जो मुझे सुन रहे थे, सो मैं ख़ुद को रोक नहीं पाया।

"कितने दिन हो गए हैं आपको यहाँ ?" उसने पूछा।

तभी उसके सामने वेटर आकर खड़ा हो गया।

"Should I buy you a beer ?" मैंने पूछा।

उसने कंधे उचका दिए। मैंने वेटर से दो बीयर लाने को कहा। मैंने अपनी बची हुई बीयर एक झटके में ख़त्म की, वेटर ने ख़ाली बीयर का गिलास उठाया और चला गया। अब मुझे उसकी टेबल पर जाना चाहिए या वह मेरी टेबल पर आए, में हम दोनों खड़े हो गए। मेरी टेबल सड़क की तरफ़ थी, सो उसने कहा कि मैं ही वहाँ आती हूँ। वह मेरी टेबल पर आकर बैठ गई। उसने अपनी टेबल से एक कुर्सी खींची और उस पर अपना बैग और जैकेट रख दिया। तब तक वेटर दो बीयर ले आया और हमने चीयर्स कहा। उसने बीयर का एक लंबा घूँट लिया।

"मैं यहाँ अपनी बहन का इंतज़ार कर रही हूँ।" उसने कहा।

मैंने जो एक साँस में उससे सबकुछ कह दिया था उसकी वजह से मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा था। उस असहजता ने मुझे चुप कर दिया था। उस चुप्पी में वह अपने बारे में औपचारिक बातें बताने लगी थी। वह यहीं कोपनहैगन में पैदा हुई थी, थर्ड जेनरेशन इंडियन। उसकी अँग्रेज़ी उतनी ही अच्छी थी जितनी उसकी डैनिश। मेरे कारण वह शुरू में हिंदी में बात करने की कोशिश कर रही थी, पर फिर कुछ ही देर में वह थक गई। मैं जवाब अँग्रेज़ी में देने लगा तो वह भी अँग्रेज़ी में बातें करने लगी। मैं चाहता था वह उस भाषा में बात करे जिसमें वह सहज है। मैंने देखा उसकी आँखों में एक चंचलता है, अजीब-सी चंचलता जिसकी वजह से उसका चेहरा बहुत आकर्षक दिखने लगता था। जैसे ही उसने कहा कि मेरा नाम रिदम है, मैं मुस्कुरा दिया।

"क्यों मुस्कुराए आप ?"

"बहुत ही अलग नाम है।"

मैं असल में कहना चाहता था कि तुम्हारा नाम मेरे नाम के जैसा सुनाई देता है, पर मैंने नहीं कहा। मुझे लगा जब उसे मेरा नाम पता लगेगा तो वह ख़ुद भी यही सोचेगी।

"थैंक्यू!" उसने कहा।

मैं अपने मुँह में उसका नाम बुदबुदाने लगा– रिदम, रिदम। मैं अपना नाम बताऊँ उससे पहले मैंने पूछा, "तो क्या करती हैं आप?"

"बहुत ही आम लाइफ़ बिता रही हूँ। एक बैंक में काम करती हूँ। और कोशिश कर रही हूँ कि प्लेन उड़ाने का लाइसेंस ले लूँ।"

"ये तो दो एकदम ही अलग काम हैं, मतलब बैंक और उड़ना।" मैंने उड़ना हिंदी में बोला।

"उड़ना... हाँ ये कितना अच्छा शब्द है! I want to fly. मैं उड़ना चाहती हूँ।"

वह मुस्कुराने लगी। उसकी निगाह आसमान को देखने लगी। मुझे लगा उसके भीतर कुछ हलचल हुई थी। जिस तरह अभी कुछ देर पहले मैं उसका नाम बुदबुदा रहा था, वो 'उड़ना' बुदबुदाने लगी।

"मैं bungee jumping, paragliding के पीछे पागल थी। कूदने के पहले का उत्साह, और हवा में बने रहने की मुक्तता। मैं ज़मीन पर वो नहीं हूँ जो आसमान में होती हूँ। मैं इसे समझा नहीं सकती।"

वह समझाने के लिए शब्द तलाश रही थी तभी वह मेरी तरफ़ देखकर मुस्कुराई और उसने पूछा, "जाने दीजिए... तो आपका नाम क्या है?"

"जी, मेरा और आपका नाम..." मैं कहने ही वाला था कि रिदम का चेहरा बदला और मुझे एक आवाज़ आई।

"What a surprise!"

ये रिदम की बहन थी। और उसे आश्चर्य हो रहा था कि रिदम एक आदमी के साथ बैठी हुई है। मैं अपनी झेंप में खड़ा हो गया। रिदम ने हमारा परिचय करवाया।

"ये पारुल है, और पारुल ये सलीम हैं। मेरे बहुत ही पुराने दोस्त। तुम

पूछती थी न कि मैं रात में किससे बात करती रहती हूँ। ये हैं वो... सलीम।"

रिदम ने एक साँस में सब कह दिया और मैं उसे ताकता रहा। मैंने पारुल से हाथ मिलाया।

"जी, मैं सलीम हूँ। बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर, आपकी बहन बहुत बात करती हैं आपके बारे में।"

मैं भी एक साँस में वो सब बोल गया जो उस वक़्त बोला जा सकता था।

"आशा है अच्छी ही बातें की होंगी! तो सलीम साहब... अरे, आप खड़े क्यों हो गए, बैठिए न! तो क्या करते हैं ये? आप पाकिस्तान से हैं?"

पारुल, रिदम को भूल चुकी थी। उसकी आँखें मुझ पर फँस गई थीं।

"मैं हिंदुस्तान से हूँ, और..."

"ये यहाँ H&M में काम करते हैं।" रिदम ने मेरी बात बीच में काटते हुए कहा।

"वाह! वो तो मेरा फ़ेवरेट स्टोर है, पर मैंने आपको H&M स्टोर में कभी देखा नहीं?" पारुल ने कहा।

"मैं असल में स्टोर्स मेंटेनेंस में हूँ, तो बहुत ऑफ़िस जैसा काम है और यहाँ-वहाँ आना-जाना लगा रहता है।"

रिदम ने मेरी तरफ़ देखकर मुस्कुरा दिया। पारुल ने रिदम के हाथों को अपने हाथ में लिया और कसकर उसे दबाया।

"तो अगली बार जब मैं H&M जाऊँगी तो आप मुझे इंप्लॉयर डिस्काउंट में कपड़े दिलवाएँगे न?"

"जी बिलकुल। ये भी कोई पूछने की बात है!"

"तो कोई ऐसा स्टोर नहीं है, जिसमें आप बैठते हैं?"

"आजकल तो work from home है।"

"Not bad didi, not bad at all. अच्छा तभी आप मेरे पीछे पड़ी थीं कि मुझे कुछ बात करनी है, तो ये बात थी। Even I want to have a beer."

मैं तुरंत उठा और पारुल के लिए भी एक बीयर ले आया। पारुल ऐसी लड़की थी कि अगर वह सड़क से गुज़र रही हो तो हर आदमी उसे पलटकर ज़रूर देखेगा। दोनों बहनों की उम्र में बहुत अंतर नहीं था पर पारुल के सामने रिदम साधारण दिखती थी। पारुल के आने पर मैंने देखा कि उस कैफ़े में बैठे बाक़ी लोग भी पारुल को पलटकर देख रहे थे।

मैंने देखा कि मैं कितनी आसानी से झूठ बोल रहा हूँ, क्या मैं अपने जीवन में भी ऐसे ही झूठ बोलता आया हूँ! जबकि सारथी की हर बहस में मेरा मुख्य मुद्दा यही होता कि झूठ नहीं बोलना चाहिए। अगर मैं यहाँ सच कह देता तो इस वक़्त वापस अपनी वीरानी में होता। मैं वहाँ नहीं जाना चाहता था, कम-से-कम अभी तो नहीं।

मैं जब बीयर लेकर वापस आया तो देखा रिदम अकेले बैठी हुई है।

"पारुल चली गई?" मैंने पूछा।

"नहीं, वो बाथरूम गई है। उसे नहीं पता था कि मेरे साथ कोई होगा, उसे क्या मुझे भी नहीं पता था कि ऐसा कुछ होगा। अब वो बाथरूम में सजने गई है। मैं उसे जानती हूँ।"

"मैं जाऊँ?"

"प्लीज़ नहीं। आप बस सलीम बने रहिए।"

"आप जब बोलेंगी, मैं उठकर चला जाऊँगा।"

"वैसे आपका नाम क्या है?"

मैं अपना नाम बताता उसके पहले पारुल आ गई। रिदम ने सही कहा था कि वह सजकर आएगी। वह वैसे भी बहुत ख़ूबसूरत थी, उसे सजने की ज़रूरत नहीं थी। वह लिपस्टिक और काजल लगाकर आई थी और उसके गाल कुछ ज़्यादा गुलाबी लग रहे थे।

"Okay, Mr. Salim cheers, and I want to know everything about you. So please start."

"मतलब, सब तो बता दिया इन्होंने।" रिदम ने कहा।

"अरे, What about love life, आप शादीशुदा हैं? आपकी

गर्लफ्रेंड है, या गर्लफ्रेंड्स हैं?"

"मैं इनका दोस्त हूँ अभी तो, मुझे लगता है ये अभी के लिए काफ़ी है।" मैंने मुस्कुराते हुए बोला।

"पारुल प्लीज़!" रिदम ने कहा।

"Okay sorry!"

"नहीं ऐसी कोई छुपाने वाली बात भी नहीं है। कुछ ही महीने पहले एक बहुत बुरा ब्रेक-अप हुआ है मेरा, मैं उससे उबर नहीं पा रहा हूँ। बहुत कोशिशें कीं, पर मेरे लिए बहुत ही कठिन वक़्त है ये, उसी के कारण मैं रिदम को फ़ोन करता था, इन्हें बहुत परेशान किया है मैंने।" मैं कह गया, और ये सारा मैंने रिदम से कहा। रिदम भी मुझे वैसे ही सुन रही थी जैसे पारुल।

"ओ, जो हो गया सो हो गया। You need to let it go Salim." रिदम ने कहा।

रिदम मेरी तरफ़ सांत्वना भरी मुस्कुराहट से देखने लगी और मैंने अपनी नज़रें चुरा ली। मैं इन सांत्वना भरी आँखों से बचकर दिल्ली से यहाँ आया था, मैं इन्हें देख नहीं सकता था।

सच कितना सपाट होता है, उसकी सीधी सड़क होती है, पर हम सच को झूठ की चादर में लपेटकर सारे कठिन रास्तों से गुज़र सकते हैं।

"वो छोड़िए अब, मुझे ये बताइए कि आप लोग कहाँ मिले?" पारुल ने पूछा।

"इंडिया में, मैं लखनऊ में थी न तब, वहीं टकरा गए थे।" रिदम ने तुरंत कहा।

"लखनऊ के सलीम, वाह!" पारुल बोली।

"नहीं, मैं लखनऊ से नहीं, दिल्ली से हूँ। मैं लखनऊ काम से गया था, वहीं इनसे टकरा गया था।" ये कहकर मैंने रिदम को देखा तो उसके चेहरे से मुस्कुराहट ग़ायब हो चुकी थी। मुझे लगा वह इस झूठ में मेरी भागीदारी पर दाद देगी, पर वह शांत थी और मैं समझ नहीं पा रहा था कि उस शांति

के पीछे उसके दिमाग़ में क्या चल रहा था।

"कहीं मैं कबाब में हड्डी तो नहीं बन रही हूँ!" पारुल ने कहा।

इसपर न तो रिदम ने और न ही मैंने कोई जवाब दिया। पारुल ने वेटर से कहा कि तीन बीयर और ला दो। मैं मना करता रहा, पर पारुल नहीं मानी। पारुल और रिदम के बीच कुछ तनाव मैं महसूस कर सकता था। उस तनाव में मैं नहीं चाहता था कि मैं और पी लूँ, मैं चीज़ें गड़बड़ भी कर सकता था। अगर ये स्थिति दिल्ली में होती तो मैं कब का उठकर घर जा चुका होता, पर यहाँ घर नहीं था, यहाँ एक ख़ाली कमरा था जिसके सन्नाटे के बारे में सोचकर भी मेरी पीठ में सिहरन दौड़ने लगती थी। यूँ भी मेरे दिन इतनी थकान और दिशाहीनता में बीत रहे थे कि मेरे लिए यह स्थिति बहुत सुखद थी। कुछ तो घट रहा था, भले ही झूठ क्यों न हो, पर इस झूठ में एक क़िस्म का आश्चर्य तो था ही। मैं इस आश्चर्य को जीना चाहता था पूरी तरह, यूँ इसे बीच में छोड़कर नहीं जा सकता था। सो मैं सलीम होने पर क़ायम रहा, यूँ भी सलीम नाम मुझे पसंद आने लगा था। दो दिन बाद राखी थी, तो दोनों बहनें राखी के त्योहार की तैयारी पर बातें करने लगीं। रिदम और पारुल अँग्रेज़ी से डैनिश पर आ गई थीं। मुझे बीयर का सुरूर चढ़ रहा था और सारा कुछ बहुत ही कमाल लग रहा था। कोपनहैगन में यह मेरा पहला दिन था, जब मैं इस तरह कुछ लोगों के साथ बैठा था।

"माफ़ी! हमारे यहाँ राखी बहुत महत्त्वपूर्ण होती है, सारे कज़िन घर आते हैं, घर पर भारतीय खाना बनता है। सो उन सबकी तैयारी बहुत अहम है। अगर आप हिंदू होते तो हम आपको भी बुलाते घर।" पारुल के मुँह से निकल गया और फिर तुरंत उसने माफ़ी माँगी। और माफ़ी माँगते हुए पारुल ने अपना हाथ मेरे हाथों पर रख दिया। मैंने उसका हाथ हटाया नहीं।

"ठीक है, मैं समझता हूँ।" मैंने कहा।

"पारुल अब तुम जा सकती हो, मुझे सलीम से कुछ निजी बात करनी है।"

रिदम ने कहा और पारुल का मुँह खुला-का-खुला रह गया। उसने

अपना हाथ मेरे हाथ पर से हटाया। मैं भी झेंप गया। पारुल की बीयर आधी बची हुई थी। उसने ग़ुस्से में बीयर ख़त्म की और बिना विदा लिए वह चली गई। पारुल के जाते ही मुझे लगा मैं नंगा हो गया हूँ। मैंने हाथ क्यों नहीं हटाया था? मैं ख़ुद को कोसने लगा। सलीम का जो पात्र मुझे दिया गया था निभाने के लिए, मेरी एक ग़लती के कारण वो मुझसे छीन लिया गया था। और अभी तो नाटक शुरू भी नहीं हुआ था।

"मैं माफ़ी चाहता हूँ।" मैंने रिदम से कहा।

"नहीं, मैं माफ़ी चाहती हूँ।" रिदम ने कहा।

वह अपनी बीयर ख़त्म करके उठ खड़ी हुई। मुझे बुरा लग रहा था कि वह जा रही थी। मैं बैठा रहा। उसने अपना बैग और जैकेट उठाया और कुछ देर मुझे देखने लगी। कुछ देर बाद उसने पूछा, "आप वॉक करना चाहेंगे सलीम साहब?"

उसके पूछने में बहुत हल्की शरारत थी। मैं ख़ुश हो गया, नाटक अभी ख़त्म नहीं हुआ था। मेरा पात्र ज़िंदा था। मैंने अपनी बीयर गटकी और रिदम के साथ हो लिया।

हम मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट में बैठे थे, यहाँ बहुत चहलक़दमी रहती थी, खाने की ढेरों जगहें, कैफ़े और पब थे। हम उस हलचल से निकलकर कुछ शांत सड़कों की तरफ़ बढ़ने लगे थे। क़रीब नौ बज गया था। सूरज लगभग ढल चुका था। सुंदर गुलाबी उजाला हर तरफ़ फैला हुआ था। सड़कों पर अभी भी लोगों के समूह दिख जाते जो पी रहे थे, नाच रहे थे। हर तरफ़ अच्छे मौसम का उत्सव जैसा था।

"आप सच में यहाँ बस यूँ ही आए हैं?" उसने पूछा।

"नहीं मैं तो जॉब करता हूँ H&M में।"

वह मेरी बात पर हँस दी। हमने कुछ क़दम आगे बढ़ाए, और हँसी जब पूरी तरह शांत हो गई तो मैंने कहा, "मुझे नहीं पता मैं क्या करने आया हूँ। यहाँ आ पाया तो आ गया। मुझे बस दिल्ली से बहुत दूर जाना था।"

"तो आप दूर आ गए हैं?"

"इच्छा तो इससे भी दूर जाने की है।"

"कहाँ?"

"मुझे नहीं पता। वैसे ये भी काफ़ी दूर है।" मैंने कहा।

"किससे?"

मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया। उसने भी जवाब की कोई अपेक्षा नहीं दिखाई।

"तो सच बताइए क्या-क्या देख लिया आपने कोपनहैगन में?"

"आपको आश्चर्य होगा, जानकर, कुछ भी नहीं। रेलवे ट्रेन के उस तरफ़ जो कोपनहैगन है मैंने वहाँ बहुत कम ही क़दम रखा है।"

"आप कब तक हैं यहाँ?"

"पता नहीं, कल ही सोच रहा था वापसी की टिकट करा लूँ।"

मेरा उसके साथ चलना इतना सहज था कि बीच-बीच में मुझे लगने लगता कि मैं अपने दिल्ली वाले घर के पीछे वाली सड़क पर चल रहा हूँ। शायद ये बीयर के नशे का भी असर हो सकता था। पर हम दोनों के अलसाए क़दम एकदम साथ-साथ उठ रहे थे।

"मैं जितना हिंदुस्तान जाती हूँ उतना ही लगता है कि कम है। आजकल जब मैं प्लान करती हूँ कि भारत जाऊँगी तो लगता है कि मैं असल में भारतीय तो हूँ। अगर घूमना है तो ऐसी जगह जाओ जो आपसे एकदम जुदा हो, पर जब मैं घूमने निकल पड़ती हूँ तो लगता है कि काश भारत चली गई होती!"

"आप भारत में कहाँ-कहाँ गई हैं?"

"बस लखनऊ, दिल्ली, कुछ पहाड़ और ज़्यादातर पंजाब, अपने पिंड।"

पिंड उसने एकदम पंजाबी लहजे में बोला था। मैं हँस दिया। उसने अपने बैग से सिगरेट निकाली और लाइटर तलाशने लगी। मैंने अपनी जेब से लाइटर निकाला और उसकी सिगरेट जलाकर लाइटर वापस अपनी जेब में रख लिया।

"आपको सिगरेट चाहिए?" उसने पूछा।

"नहीं, मेरे पास है। बहुत जल्दी बीयर पी है, सुट्टे का हिट बहुत तेज़ पड़ेगा अभी। मुझे इतना नशा सही लग रहा है।" मैंने कहा।

"दो गिलास तो पीए हैं अभी!" उसने आश्चर्य से कहा।

"तीन... और मैं डैनिश नहीं हूँ।" मैंने कहा।

"सही है सलीम साहब, मैंने अपना नाम बताया और आपको सलीम बना दिया। अब आपका असल नाम भी बता दीजिए?"

"मुझे लगता है आपने तुक्के से ही सही, पर नाम एकदम सही चुन लिया है मेरा... मुझे पसंद है... मैं सलीम बने रहना चाहता हूँ।"

"सच में?"

"मैं यहाँ आया ही था सब कुछ भूलने, एक नई शुरुआत करने। शायद वो सारा कुछ सलीम से ही शुरू हो जाए, देखते हैं।" Akhil

हम कुछ दूर एकदम चुप्पी में चलते रहे। कितना कहे और कितना छुपाए रहे में कुछ भी कहना मुझे ठीक नहीं लग रहा था। रिदम को सामने एक पब दिखा, उसने अपनी सिगरेट बुझाई, मुझे बाथरूम का इशारा किया और उस पब में चली गई। मैंने बाहर खड़े-खड़े एक सिगरेट जलाई। पहले दो कश मारते ही मैं थोड़ा हिल गया। फिर मुझे सिगरेट अच्छी लगने लगी। मैं सड़क पर ही खड़ा था, पब में नहीं गया। वह जब बाहर आ रही थी तो उसे कुछ दोस्त मिल गए। उसने मुझे इशारे से कहा, 'दो मिनट', ये इशारा शायद डैनिश भाषा में भी यही होगा। मेरी सिगरेट ख़त्म हो चुकी थी। दूर कहीं चले जाने की इच्छा में मैं बहुत दूर तो निकल आया था, पर रह-रहकर एक संवाद भीतर फूटता रहता कि क्या सच में मैं बहुत दूर हूँ! मैं अपने अतीत के बारे में सोचता तो लगता कि इस पब से अगर मैं बाईं ओर मुड़कर देखूँगा तो वो मुझे वहीं पड़ा दिखेगा। सारा कुछ बहुत कम दूरी पर ही है, बहुत दूरी कभी भी बहुत दूरी नहीं होती है। मुझे अचानक याद आया कि सारथी यूँ अचानक नहीं चली गई थी। बहुत पहले उसने मुझसे कहा था कि हमें एक ब्रेक की ज़रूरत है, मुझे तभी समझ जाना चाहिए था,

मुझे तभी उससे बैठकर बात करनी चाहिए थी। वो वक़्त था जब सब कुछ बचाया जा सकता था। लेकिन मैंने सारा कुछ अनसुना कर दिया था और अपने अहं में उसके साथ घिसटता रहा था। वह चली जाती थी, अपने काम से कुछ महीने के ट्रैवल पर और मुझे लगता कि चलो इस तरीक़े से ब्रेक तो हो ही रहा है! कम-से-कम वह अंत में घर तो आती है! हमें शादी कर लेनी चाहिए थी, ये नई दुनिया के लिव-इन संबंध मुझ जैसे ओल्ड स्कूल आदमी के लिए बहुत ज़्यादा थे। छोटे रोशनदान से देखे सपनों को मैं इतनी आसानी से टूटते नहीं देख सकता था। मैं उस हद तक सारथी से चिपका हुआ था कि उसे कई झटके देने पड़े छूटने के लिए। उन झटकों की धमस अभी भी मैं भीतर महसूस कर सकता हूँ।

"सलीम, सलीम... अरे तुम किधर चले जा रहे हो?"

पीछे से आवाज़ आई। मैं पलटा तो रिदम गली के कोने पर खड़े दोनों हाथ उठाकर इशारा कर रही थी what the fuck! हर भाषा में इस इशारे का मतलब भी यही होता है। मैं हड़बड़ाया, मुझे समझ नहीं आया कि मैं बाईं तरफ़ इस गली में कब मुड़ गया था। मैं गली के काफ़ी भीतर तक चला आया था। मैं वहीं से हकबकाकर रिदम को देख रहा था, मुझे लगा अभी तो मैं दिल्ली में था। मैं भागकर उसके पास गया।

"जाना ही है तो बाय कहकर तो जाइए... इसका क्या मतलब है?" उसने कहा।

"माफ़ कीजिए।" मैंने कहा।

"इस गली में क्यों आए?"

"मुझे लगा कोई... पता नहीं।" मैंने कहा।

मैं कुछ कह नहीं पाया। क्या कहता कि मुझे लगा इस गली के मोड़ पर मेरा सारा अतीत मुझे दिखा था, उस अतीत में लथपथ सारथी खड़ी थी!

"Do you want to go home?" रिदम ने पूछा।

"सॉरी-सॉरी, नहीं... चलो।"

"रुको दो मिनट।" कहकर वह वापस पब में गई और अपने दोस्तों

से कुछ बात की। उसके दोस्तों ने इशारे से मुझे हाय कहा। फिर वह उनके सामने रखे बीयर के दो प्लास्टिक गिलास उठाकर मेरे पास आ गई।

"आओ, अब चलते हैं।" उसने मुझे एक गिलास पकड़ाते हुए कहा।

हमने आपस में गिलास टकराए। मैं चीयर्स कहने ही वाला था तभी उसने कहा, "स्कोल... यहाँ चीयर्स को स्कोल कहते हैं।"

मैंने भी स्कोल कहा। मुझे पता था कि मुझे और नहीं पीना चाहिए थी। मेरे वश का नहीं था। पर इस वक़्त आसमान में चाँद चमक रहा था, सारे तारे नदारद थे और ठंडी हवा बह रही थी जो इस बीयर के हर घूँट के साथ अच्छी लग रही थी। चारों तरफ़ ख़ुशी से भरे जीवन के चित्रों की तरह लोग नज़र आ रहे थे।

"वो ब्रेक-अप वाली बात सही थी क्या?"

ये सवाल पूछते ही रिदम कुछ टटोलने लगी। उसने बीयर मुझे पकड़ा दी, उसे कुछ ही देर में बैग में रखी अपनी सिगरेट मिल गई। हवा तेज़ चल रही थी, उसने दो-तीन बार कोशिश की सिगरेट जलाने की, पर जली नहीं। जिस दिशा से हवा आ रही थी, मैं उस दिशा में आड़ बनकर खड़ा हो गया। वह मेरे शरीर के पास आकर थोड़ा झुक गई। सिगरेट जल गई थी। पहले कश के साथ उसने मुझसे अपनी बीयर वापस ली। उसके बाल हवा में उड़ रहे थे। उसकी आँखों में चमक थी। मैंने अवसर पाकर एक और सिगरेट जला ली थी।

"तो बताइए?" उसने फिर पूछा। मुझे लगा वह अपना सवाल भूल चुकी होगी।

"हाँ, कहा तो सब सही था मैंने।" मैंने कहा।

"I am sorry! क्या आप बात करना चाहेंगे?"

"नहीं।" मैंने बिना एक सेकेंड भी गँवाए जवाब दिया। मुझे थोड़ा अजीब लगा इतनी बुरी तरह नहीं कहना।

"मैं अब एकदम ठीक हूँ और आज का दिन सच में बहुत अच्छा है।" मैंने मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा।

रिदम ने हम्म कहा और चुपचाप चलने लगी। मैंने सोचा, मैं जानता भी नहीं हूँ कि ये लड़की कौन है, क्या ही फ़र्क़ पड़ जाएगा इससे कुछ भी कहने में! इसे तो मेरा असली नाम भी नहीं पता है।

मैंने अपना गला साफ़ किया और कहा, "मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ, और एक सरकारी-से ऑफ़िस में रिसर्च का काम करता हूँ। हम साथ रहते थे। वो एक दिन मुझे छोड़कर चली गई। मेरी कुछ समझ नहीं आया कि मैं क्या करूँ? मुझे यात्राएँ करना कभी भी अच्छा नहीं लगा था। मैं रिसर्च के लिए किताबें पढ़ता था, पर एक काम की तरह, किताबें मुझे बहुत पसंद नहीं थीं। बस मुझे पता था कि मैं दूर जाना चाहता था। जैसे ही यहाँ आने का रास्ता दिखा तो तुरंत चला आया। पर पहली बार दिल्ली से इतनी दूर आया हूँ तो पैरों तले ज़मीन थोड़ी खिसक रही है।"

मैंने ये सारा कुछ अँग्रेज़ी में कहा था इसलिए शायद अजीब सुनाई दे रहा था। जैसे मैं किसी और के बारे में बात कर रहा होऊँ। अगर मैं यही बात हिंदी में कहता तो शायद पूरा कह भी नहीं पाता।

"जितनी सीधी ये बात सुनाई दे रही है उतनी सीधी शायद है नहीं।" उसने कहा।

"हाँ, उतनी सीधी तो नहीं है।"

"पैरों तले ज़मीन शायद इसलिए नहीं खिसक रही है... इसकी वजह कुछ और है।" उसने आगे जोड़ा।

हम चुप हो गए। चलते वक़्त कभी एक-दूसरे को देख लेते तो एक सहानुभूति की मुस्कुराहट दोनों के बीच तैर जाती। वह चलते-चलते जिधर घूम जाती, मैं भी उसी तरफ़ चल देता। कभी हम अचानक किसी चौराहे पर पहुँच जाते तो लोग, संगीत और नाच-गाना हमारे चारों तरफ़ दिखने लगता तो कभी एकदम किसी वीरान-सी गली में हम होते जहाँ कुछ कोने में दुबके लोग नशा करते पाए जाते। मैं इन गलियों और चौराहों पर कभी भी नहीं आया था। मुझे इस कोपनहैगन के बारे में कोई ख़बर नहीं थी। मैंने यहाँ भी अपनी सुरक्षित सड़कें तय कर रखी थीं, जिन सड़कों से मैं बाहर

नहीं निकला था।

"मेरी बहन बचपन से ही बहुत ख़ूबसूरत थी। उसकी लोग इतनी तारीफ़ करते थे कि मुझे कभी-कभी लगता कि मैं आस-पास हूँ ही नहीं। वो मुझे हमेशा मिठाइयाँ, चॉकलेट खिलाया करती थी। मेरी इच्छा हो या न हो वो मेरे मुँह में ठूँस देती थी। मैं मोटी होती जा रही थी। पहले मुझे लगता था कि ये सिर्फ़ बचपन के बचकाने खेल हैं। पर पारुल कभी नहीं बदली। जब तक उसकी दुनिया मेरी दुनिया से बेहतर रहती है वो ख़ुश रहती है, वरना उसके चारों तरफ़ मुझे उसकी सुरक्षित दीवारें गिरती हुई नज़र आती हैं।"

ये सुनते ही मुझे रिदम कितनी अलग दिखने लगी थी! मैं उसे अपने उन दिनों के बारे में बताना चाहता था जिनके बारे में मैंने ठीक से सारथी को भी नहीं बताया था, जब सपने रोशनदान की जाली से छनते हुए भीतर प्रवेश करते थे। हम एक बेंच पर बैठ गए थे। बैठते ही मुझे लगा कि मैं कितना थक गया हूँ!

"इस तरह की दोस्ती मेरी कभी नहीं हुई है।" मैंने कहा।

"किस तरह की?" रिदम बोली।

"इस तरह की, जिसमें कुछ घंटों पहले पता ही नहीं था कि रिदम नाम की कोई लड़की कोपनहैगन में हो सकती है।"

"और जिसमें तुम्हारा नाम असल में सलीम है!" वह अपनी इस बात पर बहुत हँसी। उसकी हँसी में मुझे भी हँसी आने लगी। मैंने देखा उसके हँसने में रिदम वो लड़की नहीं रह गई थी जिसे कुछ घंटों पहले मैं पहचानता नहीं था। उसकी हँसी में कोपनहैगन भी थोड़ा अपना-सा लगने लगा था।

मैं कभी अकेला नहीं रहा था। पहले अपने परिवार के साथ रहता था, फिर नौकरी मिलने के पहले दोस्तों के साथ, और वहाँ से निकलकर सीधा सारथी के साथ रहने लगा था। मुझे पता नहीं था कि जब घर वापस जाते हैं और वो ख़ाली होता तो क्या करना चाहिए? शाम को घर जाने के पहले मेरे भीतर डर घुस आता था कि मैं घर जाऊँगा और वहाँ कोई नहीं होगा। सारथी के चले जाने के बाद एक बात मैंने तय किया था कि मैं किसी को

भी अपने बहुत क़रीब नहीं आने दूँगा। मुझे किसी के भी चले जाने का दुख अब बर्दाश्त नहीं होगा। रिदम की हँसी में वह रत्ती भर पास खिसक आई थी और मैं डर गया था।

"क्या सोच रहे हो?" उसने पूछा।

"मैं सोच रहा था कि मैं कितना जानना चाहता हूँ तुम्हें? फिर तुम्हें जानने में मैं भी ईमानदारी से तुमसे अपने बारे में सारा कुछ कहता चला जाऊँगा। तुम मुझे और जानने लगोगी और फिर तुम बोर हो जाओगी। पता नहीं मैं क्या कह रहा हूँ।"

"तो तुम कह रहे हो कि हम एक-दूसरे को अपने बारे में कुछ न बताएँ?"

"हाँ, शायद ऐसा ही कुछ।"

"ठीक है।" उसने कहा।

वह खड़ी हो गई। उसने अपना जैकेट पहना और अपना बैग उठा लिया। हवा में हल्की ठंड बढ़ गई थी। मैंने शायद उसे अपनी बातों से दूर कर दिया था। मैं ख़ुद को कोस रहा था, इसके बदले मुझे उसे अपने बचपन के सपनों के बारे में बताना था। सारथी से मेरे प्रेम की कहानी सुनानी थी। हमारे डर हमें हर सुंदर स्थिति में हमें गले से पकड़ लेते हैं। उन डरों के कारण किसी भी सुख को भीतर निगलना असंभव लगने लगता है।

"सलीम, मैं अभी घर नहीं जाना चाहती हूँ। मुझे पता है जिस तरह मेरी बहन टेबल से उठकर गई है, वो घर पर क्या तांडव करेगी। अगर तुम्हें दिक़्क़त न हो तो क्या हम कुछ देर और टहल सकते हैं?"

मैं मुस्कुरा दिया।

मैं अभी भी दिल्ली के अपने डरों को नहीं छोड़ पा रहा था। रिदम अलग लड़की थी। शायद मैं भी यहाँ एक अलग आदमी था।

"मैं डर रहा था कि कहीं आप मेरी बात सुनकर घर जाने के बारे में तो नहीं सोच रही हैं। मेरे पास इस वक़्त आपके साथ घूमने के अलावा कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं है।"

"चलो, तो मैं तुम्हें नहर के किनारे ले चलती हूँ। मुझे वहाँ टहलना बहुत पसंद है।"

जब हम नहर के किनारे पहुँचे तो मैं स्तब्ध रह गया, शहर के इस हिस्से की सुंदरता देखकर।

"मैं यहाँ आया हूँ शायद।" मैंने कहा।

"कब?"

"शायद किसी दोपहर मैं यहाँ से टहलते हुए निकला था।"

"मुझे नहीं लगता है, अगर यहाँ से निकले होते तो ज़रूर ये जगह तुम्हें याद रहती।"

मैंने रिदम से सहमति जताई पर मुझे पता था कि मैं यहाँ से निकला था। मेरे भीतर एक डर बना रहता था गुम हो जाने का। मैं शायद उस डर की वजह से किसी भी चीज़ को ठीक से देख नहीं पाता। कभी-कभी जब मैं सारथी के साथ पहाड़ों पर गया, तो जंगलों की छोटी पगडंडियों पर चलने से मेरी घबराहट बढ़ जाया करती थी। मैं सारथी से कहता कि चलो वापस चलते हैं, आगे कुछ भी नहीं है, हम गुम जाएँगे। कई बार ग़ुस्से में वह अकेले आगे निकल जाती और मैं होटल के रूम में देर तक उसका इंतज़ार करता रहता। मैं कोपनहैगन में भी थोड़ी दूर जाते ही Google Map चालू कर लेता था।

हवा में हल्की ठंड थी, पर वो चुभ नहीं रही थी। वहाँ काफ़ी लोग थे, पर भीड़ जैसा कुछ भी नहीं था, सब अपने-अपने हिस्सों में, अपनी बातों में मशग़ूल थे, किसी को भी किसी दूसरे से कोई भी मतलब नहीं था। रिदम को कोपनहैगन का इतिहास ज़बानी याद था। वह नहर के अगल-बग़ल की इमारतों की कहानियाँ सुना रही थी। जब नहर के साथ लगी इमारतें ख़त्म हो गई तो वह दूर दिख रही इमारतों के बारे में बताने लगी। मैं भीतर तक शांत था, उसकी बातें किसी अच्छे संगीत की तरह काम कर रही थीं।

"अपना शहर किसी दूसरे को दिखाने पर लगता है कि आप अपने ही शहर को पहली बार देख रहे हों। मुझे आज अपना ही शहर बहुत अलग

लग रहा है।" उसने कहा।

हम चलते-चलते लिटिल मरमेड तक पहुँच गए।

"अगर आप यहाँ दिन में आते तो आपको लोगों की भीड़ दिखती। वो पागलों की तरह इसकी तस्वीर खींच रहे होते। तुम्हें पता है लोगों ने कभी इस मरमेड का सिर तोड़कर चुरा लिया था, तो कभी प्रोटेस्ट में इस पर काला रंग छिड़क दिया था!"

"आपके कहते ही मुझे ये मरमेड एकदम बेचारी लगने लगी।" मैंने हँसते हुए कहा।

"हाँ बेचारी तो है ही, एक सर्वे के हिसाब से ये second most disappointing आर्ट पीस है।"

"पहला कौन-सा है?"

"मोनालीसा।"

हम नहर के पीछे की तरफ़ से वापस जाने लगे। यहाँ गलियाँ सँकरी थीं, छोटे पत्थरों की सड़क पर हमें हमारे ही चलने की आवाज़ गूँजती हुई सुनाई दे रही थी।

"इन गलियों में रात में घूमने का ही सुख है। दिन में इन गलियों में बहुत भीड़ होती है।" उसने कहा।

गली के मोड़ पर पहुँचकर वह दाहिनी तरफ़ देखती और बाएँ मुड़ जाती, मैं चकमा खा जाता। मैं भागते हुए उसके पास आता तब तक वह दूसरी गली में प्रवेश कर चुकी होती। हम इस खेल में कब दौड़ने लगे, हमें पता ही नहीं चला। एक गली से दूसरी, दूसरी से तीसरी। गलियाँ ख़त्म होने का नाम ही नहीं ले रही थीं। तभी एक गली अचानक बड़े से चौक पर खुली। उस चौक के एक कोने में बड़ा-सा गिरजाघर था। हम दोनों हाँफते हुए गिरजाघर के सामने जाकर खड़े हो गए।

"मुझे आपका कोपनहैगन बहुत अच्छा लग रहा है।" मैंने हाँफते हुए कहा।

"ये मेरा नहीं है, आपका भी है।"

"नहीं, मेरा कोपनहैगन तो बहुत उदास था, आपके कोपनहैगन की बात ही कुछ और है।"

"सच में?"

"हाँ, मैं और देखना चाहता हूँ।"

"आप बोर हो जाएँगे।"

"कोशिश करके तो देखो।"

"ठीक है।"

इतना दौड़ने के बाद हमारी चाल में अलसाई-सी थकान थी। हम पैरों को रगड़ते हुए चल रहे थे। पैरों के रगड़ने की आवाज़ गूँज रही थी, इस शांति में हम अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे थे। मुझे याद है किसी ने मुझे बचपन में ही सिखाया था कि अगर पैरों को रगड़ते हुए चलोगे तो पूरी ज़िंदगी पैर रगड़ते ही रहोगे। मैंने कभी पैरों को चलते वक़्त रगड़ा नहीं, पर आज लगा कि मैंने ऐसा कभी क्यों नहीं किया था। कितना सुख है किसी के साथ पैरों को रगड़ते हुए चलना! इस आवाज़ में मेरा ध्यान कभी रिदम की चाल पर रहता तो कभी मैं उसके हाथों को देर तक देखता रहता।

"तुम्हें पता है, जब मैं और मेरी बहन छोटे थे, सॉरी, कुछ बता सकती हूँ न तुम्हें या कुछ भी नहीं?"

"प्लीज़ बताओ... मैं सुन रहा हूँ।" मैंने अपना सिर नीचे झुकाते हुए कहा।

"तो हम दोनों ट्रांजिट में एक एयरपोर्ट पर थे। मेरे पिता ने हम दोनों के लिए एस्कॉर्ट्स बुक कराया था जिसका ज़िम्मा था कि वो हमें एक प्लेन से दूसरे प्लेन में पहुँचाएगा। हम दोनों बहनें पहली बार अकेले सफ़र कर रही थीं और दोनों को रोना आ रहा था। तभी मैंने देखा कि एक बूढ़ा आदमी हमें बहुत देर से देख रहा रहा है। मैं डर गई और अपनी बहन के पास खिसक आई। कुछ देर में वो हमारे पास आया और उसने मुझसे पूछा कि क्यों रो रही हो? मैंने आँसू पोछे और उन्हें बताया कि हम पहली बार अकेले सफ़र कर रहे हैं और हमें बहुत डर लग रहा है। ये कहते ही मेरी आँखों

से आँसुओं की धार बहने लगी। तो उन्होंने कहा कि देखो बेटा, तीन बातें हमेशा याद रखना। पहला तो ख़ूब पढ़ना, स्कूल की पढ़ाई नहीं, लिटरेचर, अपने मन का पढ़ना, तुम्हारे पास हमेशा एक किताब होनी चाहिए। दूसरा be gentle, हमेशा दूसरों के प्रति स्नेह रखो और तीसरा कभी भी रिस्क लेने से मत डरो। इस वक़्त तुमने अपनी बहन के साथ अकेले सफ़र करने का रिस्क लिया है और इसलिए ये एक एड्वेंचर है, अपने जीवन में कभी एडवेंचर मत छोड़ना। मुझे उस बूढ़े आदमी का चेहरा अभी भी याद है। उस वक़्त मुझे उसका बोलना बिलकुल भी ठीक नहीं लगा था, पर वो बूढ़ा आदमी मेरे साथ हमेशा रहता है। कभी भी मैं दुखी होती हूँ, भटक रही होती हूँ, परेशान होती हूँ तो वो मेरे सामने आकर खड़ा हो जाता है। और ये तीन बातें दोहरा रहा होता है, किताब, स्नेह और रिस्क।"

मैं मुस्कुरा दिया। रिदम ने अपने बैग से एक किताब निकालकर मुझे दिखाई। A Still Life by Josie George.

"किस बारे में है किताब?" मैंने पूछा।

"जो लेखक हैं Josie वो पूरा जीवन एक disabling chronic illness से गुज़री हैं। ये किताब आत्मकथा जैसी है। वो अपनी इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर पर बैठे अपने घर और उसके आस-पास चल रही होती हैं। और अपनी इस छोटी-सी दुनिया में वो इतनी बारीकी से जी रही होती हैं कि आपको रश्क होने लगता है, क्योंकि मैं अपनी दुनिया इतनी ख़ूबसूरती से नहीं जी पाती हूँ जितनी Josie जी रही हैं। इसे पढ़ते वक़्त लगातार मुझे मेरे बिखरे हुए जीवन पर तरस आ रहा होता है।"

वह उस किताब को प्यार से एक बार देखती है मानो वो किसी क़िस्म का ख़ज़ाना हो और फिर उसे सलीक़े से अपने बैग में वापस रख लेती है। किताब से इस क़िस्म का लगाव मेरी कभी समझ नहीं आया था।

"आप कैसे किताबें पढ़ लेती हो?" मैंने कहा।

"आप नहीं पढ़ते हैं?" उसने पूछा।

"रिसर्च में बहुत-सी किताबें पढ़नी पड़ती हैं, पर वो तो मेरा काम

है। बिना काम के पढ़ना मेरी कभी समझ नहीं आया, मतलब उसका क्या फ़ायदा ?" मैंने पूछा।

"आपका फ़ायदे और नुक़सान का बड़ा चक्कर है, इसलिए आपको यहाँ भी समझ नहीं आ रहा कि यात्रा में क्या करें ? इससे क्या फ़ायदा है ?"

"हाँ, मुझे तो कोई भी लाभ होता दिख नहीं रहा है।"

"अगर आप अपने कहे में इतने ईमानदार न होते तो मैं कब की आपको नमस्ते कहकर अपने घर चली जाती।"

"मुझे जो महसूस होता है, वो मैं बता रहा हूँ।"

"मैं आपको एक सलाह दूँ? अगर आपको बुरा न लगे तो?" उसने पूछा।

"जी, बिलकुल बताएँ।"

"देखिए, अब आप सलीम हैं। आप मान लें कि सलीम को फ़ायदे-नुक़सान से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। आपके पास बहुत वक़्त है, जो आपसे काटे नहीं कट रहा है। तो कल मैं उसके लिए आपको एक किताब लाकर दूँगी। आप यूँ समझें कि वो किताब आपकी दोस्त है जो ख़ाली वक़्त में आपसे बात कर रही है।"

"कौन-सी किताब ?" मैंने पूछा।

"उस पर मत जाइए, ये कोई परीक्षा नहीं है। पढ़ना हो तो पढ़ना वरना छोड़ देना। मैं आपसे कभी नहीं पूछूँगी उस किताब के बारे में। ठीक है ?" ये कहकर उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

"ठीक है।" कहकर मैंने हाथ मिलाया।

मैं उसके बग़ल में चलते वक़्त इतना सहज था मानो हम एक-दूसरे को सालों से जानते हों। रिदम के हाथ बहुत कोमल थे। मैं कुछ देर उसे पकड़े रहना चाहता था। इस बीच मेरी इच्छा हुई कि मैं सारथी के बारे में उसे सारा कुछ बता दूँ। पर हम चुपचाप चलते रहे। तभी हमें एक शवरमा की दुकान दिखी, हम दोनों ने एक-दूसरे को ऐसे देखा मानो सालों से भूखे

हों। बिना कुछ कहे हम उस दुकान में घुस गए। वो शवरमे वाला रिदम को जानता था। आपस में दोनों ने बहुत देर तक डैनिश में बातचीत की। वह जो भी कह रहा था, रिदम को बहुत हँसी आ रही थी। बीच में दोनों हँसते-हँसते मेरी तरफ़ देख लेते। मुझे पता था कि बात मेरे बारे में हो रही है। रिदम ने इशारे से कहा कि बाद में बताती हूँ।

"क्या कह रहा था वो?" शवरमा खाते हुए मैंने रिदम से पूछा।

"वो शब्बीर के बारे में पूछ रहा था कि वो कहाँ है। मैं और शब्बीर यहाँ बहुत आते थे। जैसे ही मैंने उससे कहा कि हमारा ब्रेक-अप हो गया है तो वो बहुत ही ख़ुश हो गया। वो बता रहा था कि उसे शब्बीर कभी पसंद नहीं आया था। फिर वो तुम्हारी तारीफ़ कर रहा था। और बाक़ी सब बकवास बातें।"

वह ये बताते हुए, मुँह में शवरमा लिए हँसे जा रही थी। हम दोनों हँसते हुए पास की एक बेंच पर बैठ गए थे। शवरमा बहुत ही अच्छा था। खाने के बाद हम घूमकर वापस मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट पहुँच गए थे। मुझे नहीं पता था कि हम चलते हुए उसकी कार की तरफ़ जा रहे हैं।

"तुम और शब्बीर क्यों अलग हुए?"

"ये सब बातें तो तुमने करने से मना किया हुआ है।"

"सॉरी... वैसे भी मेरा कोई हक़ नहीं है।"

"हक़ की बात नहीं है, तुम डिक्टेट करना चाहते हो सब कुछ, और हर तरीक़े की डिक्टेट की हुई चीज़ अंत में जाकर टूट जाती है।"

मैं चुप हो गया। हम मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट की पार्किंग वाली जगह की तरफ़ बढ़ गए। उसने अपने पर्स से कार की चाबी निकाली और बटन दबाया। तीसरी लाइन के अंत में एक काले रंग की गाड़ी की लाइट जली। हम दोनों उस तरफ़ चल दिए।

"मैं हमेशा भूल जाती हूँ कि मैंने गाड़ी कहाँ पार्क की हुई है।"

उसने गाड़ी का दरवाज़ा खोला और अपना पर्स अंदर रख दिया।

"कहीं छोड़ना है तुम्हें?"

"नहीं, मैं पैदल चला जाऊँगा।"

"तो क्या प्लान है तुम्हारा कल का?"

"यूँ तो आपका कोपनहैगन देखना चाहता हूँ, पर अगर आप व्यस्त हैं तो मैं इधर-उधर भटकूँगा।"

"मेरा बैंक में काम है... पर शायद मैं जल्दी छुट्टी ले सकती हूँ। आपका नंबर चल रहा है यहाँ?"

"जब भी Wi-Fi मिलता है तो चल देता है।"

हम दोनों ने नंबरों का आदान-प्रदान किया और वह कार में बैठ गई।

"वैसे तुमने मना किया है पर मेरे दिमाग़ में बात अगर रह जाती है तो कह देती हूँ कि शब्बीर से मैं बहुत पहले ऊब चुकी थी, मेरी तरफ़ से प्रेम ख़त्म हो चुका था। मैं उसे समझा-समझाकर थक गई थी, पर पुरुषों को बहुत मुश्किल में समझ आता है कि ये प्रेम बस यहीं तक था। दो सभ्य इंसानों के बीच जैसा ब्रेक-अप होना चाहिए वैसा नहीं हुआ था, पर मुझे इस बात का कोई दुख नहीं है। वो समय रहते समझ जाएगा।"

मैं उससे कुछ कह नहीं पाया। उसने कार का दरवाज़ा बंद किया और कल मिलते हैं, कहकर चली गई। मैं हक्का-बक्का उसे ताकता रहा। मुझे लगा कि वह शब्बीर की नहीं बल्कि मेरी बात कर रही थी। उसे क्या पता कि असल में क्या हुआ था, मैं चिल्लाकर उससे कहना चाहता था कि ऐसा कुछ नहीं है, सारथी मुझे छोड़कर गई थी, और इसलिए नहीं कि वह बोर हो चुकी थी, वह किसी और के साथ सोने लगी थी, उसका कोई यार था। मैं पार्किंग में खड़े रहकर उन बातों को बटोर रहा था जिनमें मैं सही था और सारथी ग़लत। जब मैं थक गया तो बुदबुदाने लगा कि ग़लत तो सारथी ही थी, जो छोड़कर जाता है, ग़लती तो उसकी ही होती है।

वापस अपने कमरे पर जाते हुए मेरा सिर झुका हुआ था, मैं कहीं बहुत भीतर गड़ा जा रहा था। मैं बार-बार ख़ुद से कह रहा था कि मैं सही था। मेरे सारे दोस्त भी यही कहते थे। रिदम क्या जानती है मेरे संबंध के बारे में, मेरे दुखों के बारे में, मैंने क्या-क्या सहा है, जैसी बातों को अपने कंधे

पर लादे मैं अपनी बिल्डिंग की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। मैं थोड़ा हिल गया था रिदम की बात सुनकर, मैंने अपने कमरे में प्रवेश किया और साथ-साथ अपने दिमाग़ में सारथी के सारे धोखों की लिस्ट बनाई, अपने ईमानदार होने के सारे सबूत उस लिस्ट में दूसरी तरफ़ एकत्रित किए और उस वज़न से मैं अपना गड़ा हुआ सिर वापस उठा पाया।

मैं अपने बिस्तर में पड़े हुए सोचने लगा कि शायद मैं इसलिए इतनी दूर चला आया क्योंकि यहाँ आकर मैं कम-से-कम अपने अतीत में अपनी मर्ज़ी से जितना चाहूँ उतना डूब सकता हूँ, मैं अपने अकेलेपन में इतना दुखी होना चाहता था कि सारथी मेरे शरीर से बहकर निकल जाए। रिदम की बातें मेरे दिमाग़ से निकल नहीं रही थीं, मैं देर तक करवटें बदलता रहा। सारथी सही नहीं हो सकती है। मैंने अपना फ़ोन उठाया और उसमें इंस्टाग्राम वापस डाउनलोड किया। साइन इन करने के बाद मैं देर तक सारथी की तस्वीरें देखता रहा। वह ख़ुश थी, और अपनी तस्वीरों में वह बहुत ज़्यादा ख़ुश नज़र आ रही थी। मैं हर तस्वीर पर देर तक रुका रहता, कुछ तस्वीरों को ज़ूम करके देखता। उसकी आँखों को, उसके होंठों को। मुझे छोड़ने के बाद वह ज़्यादा सुंदर दिखने लगी थी। हर तस्वीर एक टीस की तरह मेरे भीतर कहीं चुभ रही थी। मेरे भीतर अजीब-सी चिढ़ और ग़ुस्सा बढ़ते जा रहे थे। अपने फ़ोन पर, अपनी खींची तस्वीरों को देखने लगा। मैंने बहुत तस्वीरें खींची थी पर कहीं भी मैं मुस्कुरा नहीं रहा था। फिर मैंने अपनी तस्वीरों को छोड़ कोपनहैगन की तस्वीरें छाँटी और उन्हें सिलसिलेवार जमाकर अपने इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर दिया। मैं बस चाहता था कि सारथी इस पोस्ट को एक बार देख ले तो उसे पता चले कि मैं भी उसके चले जाने के बाद ख़ुश हूँ, यात्रा कर रहा हूँ, और पहाड़ों पर नहीं, मैं विदेश में हूँ।

कमरे में अँधेरा था पर मैं बार बार अपनी पोस्ट की हुई तस्वीरों को देख रहा था। बहुत से लोगों ने लाइक किया पर उसमें सारथी नहीं थी। वह मेरी पोस्ट को लाइक तो कर ही सकती है, उसमें क्या जाता है। मैं बार बार

इंस्टाग्राम रिफ़्रेश करता रहा। वह ख़ुश है तो मैं भी कम ख़ुश नहीं हूँ। मैंने ख़ाली कमरे में कहा, मैं भी ख़ुश हूँ। पर मुझे लगा मेरे कहे को ये ख़ाली अँधेरा कमरा निगल गया। ख़ुशी का कोई असर कहीं भी नज़र नहीं आया। मैं ख़ाली कमरे की दीवारें ताकने लगा। मैंने तय किया कि मैं कल रिदम से नहीं मिलूँगा।

अगले दिन बारह बजे क़रीब रिदम का मैसेज आया– 'मैं एक घंटे में फ़्री हो रही हूँ, अगर तुम्हारा कोई महत्त्वपूर्ण काम नहीं है तो हम ड्राइव पर जा सकते हैं?'

मैं बहुत देर तक उसे जवाब देना टालता रहा। क्या महत्त्वपूर्ण काम हो सकता था मेरा? मुझे कुछ सूझा नहीं। फिर मैं भीतर से ख़ुद को कुत्ते जैसा महसूस कर रहा था। रिदम ने गेंद फेंक दी थी और मेरे पास भागकर उस गेंद को पकड़ने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं था।

मैं गाड़ी में रिदम के साथ बैठा था। कोपनहैगन शहर पीछे छूट रहा था और मुझे पता नहीं था कि हम कहाँ जा रहे हैं। मैं उससे पूछने ही वाला था कि तभी मेरे इंस्टाग्राम पर मैसेज आया– 'Hey whatssp? पहचाना?'

मैंने तुरंत अपना फ़ोन जेब में रख लिया।

"सब ठीक?" रिदम ने पूछा।

"हाँ-हाँ, सब ठीक।" मैंने जवाब दिया।

"तो कहाँ जा रहे हैं हम?" कुछ देर में मैंने पूछा।

"हम अभी जा रहे हैं Camp Adventure Tower की तरफ़, नाम पर मत जाना, बहुत ही शांत-सी जगह है जंगल में।"

रिदम ने शॉर्ट्र्स और टॉप पहन रखी थी। उसके बाल पीछे की तरफ़ अच्छे से बँधे हुए थे। उसके पास से किसी महँगे परफ़्यूम की गंध आ रही थी। मुझे लगा ये वह लड़की नहीं थी जिससे मैं कल रात मिला था, ये कोई और है।

"आपको ड्राइविंग का बहुत शौक़ है?" मैंने पूछा।

"हाँ, मैं यहीं पर आकर ख़ुद को खो देती हूँ। मैंने पिछले साल ये

गाड़ी ख़ुद को गिफ़्ट दी थी, और यही चाहती थी कि मैं कभी भी कहीं भी निकल सकूँ।"

"कहाँ तक जाना चाहती हैं आप?" मैंने पूछा।

"काश इस सवाल का जवाब कभी न मिले!" ये कहकर रिदम ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया कि कैसे मैं हमेशा कहीं पहुँच जाने के फ़ायदे तलाश रहा होता हूँ।

"हाँ, मैं समझ गया।" मैंने कहा।

"पीछे की सीट पर किताब रखी है उसे अपने बैग में रख लो वरना भूल जाओगे।"

मैंने हाथ बढ़ाकर किताब उठाई।

Christy Lefteri द्वारा लिखित किताब The Beekeeper of Aleppo. मैं उसके कुछ पन्ने पलटकर देखने लगा। मैं इस किताब को नहीं पढ़ूँगा, मैंने तय किया, मैं कुत्ता नहीं हूँ और ये गेंद मुझे नहीं पकड़नी है। मैंने रिदम को धन्यवाद कहा और किताब को अपने बैग में रख लिया। रिदम ने डैनिश गाने लगा दिए। हम हाईवे पर थे। उसने काला चश्मा पहन रखा था। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी। मैं उससे कहना चाहता था कि आप बहुत सुंदर लग रही हैं। पर ये कहते ही शायद ये चित्र बिगड़ जाता। मैं उससे कहना चाहता था कि बहुत दिनों बाद रात में मैं बहुत गहरा सोया पर ये भी मैंने नहीं कहा। मैं जाने कितने दिनों के बाद अपनी सहजता पर था! मुझे इस डैनिश गाने की रिदम बहुत अच्छी लग रही थी। इस गाने की रिदम इस वक़्त उस रिदम से मेल खा रही थी जो रिदम मेरे भीतर चल रही थी।

हम जब Camp Adventure Tower पहुँचे तो सूरज सुनहरा हो चुका था। आसमान सुर्ख़ था और हम गाड़ी पार्क करके जंगलों के रास्ते उस टावर की तरफ़ बढ़ रहे थे। चारों तरफ़ पेड़ों से अटा पड़ा रास्ता था। चलते हुए मेरी निगाह ऊपर पेड़ों की ऊँचाई पर गई, इतने घनेपन में बहुत ही कम नीला आसमान दिखाई दे रहा था। मुझे आश्चर्य भी हो रहा था कि मैं पहली बार यहाँ आकर किसी भी क़िस्म के फ़ायदे और नुक़सान के

बारे में नहीं सोच रहा था। मैं यहीं था, इन पेड़ों के बीच से गुज़रता हुआ, और बिना कारण मुझे सब सही लग रहा था। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे ये पेड़, जंगल कोई सुख दे सकते हैं। मैंने मान लिया था कि दुनिया में दो क़िस्म के लोग होते हैं– एक सारथी जैसे जो लगातार नए आश्चर्यों की तलाश में रहते हैं और दूसरे मेरे जैसे। मेरे जैसे लोगों को क्या बोलते हैं मुझे नहीं पता था।

लोहे का बना बहुत ही ऊँचा टावर था जिस पर गोल-गोल चलते हुए हम दोनों ऊपर की तरफ़ चढ़ रहे थे। जैसे-जैसे हम ऊपर पहुँचते जाते चारों तरफ़ का विस्तार बढ़ता जाता। पूरा जंगल, सारे पेड़ हम नीचे की तरफ़ छोड़ते जा रहे थे। अब हम बहुत दूर तक का खुला आसमान देख सकते थे। हम जब ऊपर पहुँचे तो दूर कहीं कोपनहैगन दिखाई दे रहा था। रिदम ने इशारे से बताया कि उस तरफ़ स्वीडन है और वहाँ जर्मनी है। चारों तरफ़ का नज़ारा देखने के बाद हम दोनों सूरज की दिशा में मुँह करके खड़े हो गए।

मैं आसमान का सुर्ख़ सुनहरापन रिदम के चेहरे पर देख सकता था। तभी वह पलटी और उसने मुझे ऐसे देखा मानो मेरे निज में झाँक रही हो। मैंने अपनी आँखें हटा लीं।

"तुम बहुत ही अजीब हो।" उसने कहा।

"क्यों?" मैंने उसे बिना देखे पूछा।

"ऐसे ही।"

"वैसे एक अजीब हरकत तो की थी मैंने।"

"क्या?"

"वही कि हम एक-दूसरे को अपनी निजी बात नहीं बताएँगे वाली। कितनी मूर्खतापूर्ण बात थी वो!"

"तो क्या अब हम बता सकते हैं?" उसने तंज़ में पूछा।

"जी, बिलकुल।" मैंने तंज़ को बिना समझे बोला।

"बहुत धन्यवाद महाराज जी, आपने स्वीकृति दे दी।"

मैं हँस दिया और हाथ जोड़कर माफ़ी माँगने लगा। उसने मेरे हाथों पर अपना हाथ रखा और कहा कि मैं मज़ाक़ कर रही थी। हम दोनों उस टावर की ऊँचाई पर टहलने लगे।

"मैं वो बात तो तभी भूल गई थी जब तुमने कही थी। अकेले यात्रा करने में सारा बाहर और निज एक ही होता है। बाहरी बातें कब बहुत निजी सुनाई देने लगती हैं आपको पता भी नहीं चलता। ये आपकी पहली यात्रा है सलीम साहब, इसलिए आप अभी भी इस मुग़ालते में हैं कि निज और बाहर अलग है।"

"पर निज और बाहर एक कैसे हो सकता है? वो तो अलग ही है न?" मैंने कहा।

रिदम मुस्कुरा दी। वह कुछ देर चुपचाप चलती रही। फिर उसने कहा, "आज का मौसम कितना सुंदर है... है न?"

"हाँ, आज सच में बहुत ही सुंदर मौसम है, आसमान देखो कैसा सुर्ख़ हुआ पड़ा है!" मैंने उत्साह में कहा।

"दो दिन पहले भी ये शाम बिलकुल ऐसी ही थी, जब तुम कोपनहैगन में भटक रहे थे। तुमने ध्यान नहीं दिया होगा, तुम शायद उस वक़्त अपने निज में थे!"

मैं फिर हँस दिया और दोनों हाथ ऊपर उठाकर अपनी हार स्वीकार की।

रिदम ने अपना फ़ोन निकाला और ढलते सूरज की तस्वीरें लेने लगी। मैं टावर से नीचे की तरफ़ देख रहा था। नीचे देखने पर पता चलता था कि असल में हम कितनी ऊँचाई पर हैं। सूरज का ढलना इतना ख़ूबसूरत था कि हमें चुप रहने की तरफ़ ढकेल रहा था। न जाने क्यों मुझे लगने लगा था कि मेरे सारे सवालों के जवाब रिदम के पास हैं। वह सारा कुछ जानती है।

"क्या आपको कभी प्यार हुआ है? मैं जानता हूँ ये बहुत ही छिछला-सा सवाल है, पर मेरे भीतर कुछ वक़्त से हरकत कर रहा है सो मैंने सोचा पूछ लूँ।" मैंने खिसियाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता इसका उत्तर कोई भी दे पाएगा। मुझे लगता तो था कि मैं प्रेम में थी। शब्बीर पाकिस्तान से था, लाहौर से, हम दोनों क़रीब छह साल साथ रहे। शुरुआत में तो लगता था कि हम सबसे लड़ जाएँगे। बाद में पता चला कि सबसे लड़ना तो आसान था, पर ख़ुद से, अपने-आप से लड़ना बहुत मुश्किल। मैं धर्म में बिलकुल विश्वास नहीं रखती हूँ। जो लोग अपने देश से दूर रहते हैं, जैसे मेरे माँ-बाप और उसके अम्मी-अब्बा, उनके लिए जिस वक़्त उन्होंने देश छोड़ा था वो उस समय की ज़मीन को अपने से चिपकाकर साथ ले आए थे, वो अभी भी उसी ज़मीन को पकड़े हुए हैं और उसी समय में जी रहे हैं।"

"और आपके लिए?" मैंने पूछा।

"मैं पहले डैनिश हूँ। फिर कुछ और। मेरे लिए भारत मेरे माँ और पिता के क़िस्सों में है। मैं यहाँ की हूँ, और इसलिए मुझे लगा था कि मैं और शब्बीर एक साथ रह सकते हैं। हम दोनों के बीच एक क़रार था कि हम दोनों एक-दूसरे के बिना जहाँ भी जाएँगे, वहाँ की ज़मीन पर पड़ा कोई भी पत्थर का टुकड़ा एक-दूसरे के लिए लेकर आएँगे। मेरे पास जाने कितने लाहौर के पत्थर पड़े हैं। और उसके पास जाने कितने पंजाब के, दिल्ली के और एक पत्थर लखनऊ का भी है उसके पास। अभी भी जब कभी मैं लाहौर के उन पत्थरों को छूती हूँ तो लगता है कि ये प्रेम हैं। इसके अलावा प्रेम क्या है मुझे नहीं पता।"

अपनी बात कहकर वह दूर सूरज का सुनहरापन ताकने लगी। बहुत दूर देखने में वह जाने कितनी स्मृतियों के बेहद क़रीब थी। मुझे लगा अगर मैं इस वक़्त उसे छूऊँगा तो मैं उसे नहीं बल्कि लाहौर के उन पत्थरों को छू रहा होऊँगा, जिनके रंग मुझे अभी उसकी आँखों में दिखाई दे रहे थे।

हम वापस कार में थे। उसने अपने फ़ोन पर मैप ऑन कर दिया था। मैं समझ गया था कि हम अभी कोपनहैगन शहर वापस नहीं जा रहे हैं। इस बार उसने हिंदी गाने लगा दिए। मैं हँसने लगा।

मैं रिदम क्यों नहीं हो सकता हूँ? वह जैसी है, जिस तरह से वह दुनिया

को देखती है, जिस तरह से वह शब्बीर और प्रेम के बारे में बात करती है, मैं क्यों नहीं कर सकता! मेरे भीतर इतनी ज़्यादा कड़वाहट क्यों है! अगर वह मुझसे पूछती कि तुम्हारे लिए प्रेम क्या है, तो मैं क्या जवाब देता! शायद मैं कल रात ख़ाली अँधेरे कमरे में अपने होने के बारे में बात करता, सारथी की तस्वीरों में उसकी ख़ुशी से उठ रही पीड़ा के बारे में सारा कुछ कहता और उसी से पूछता कि क्या मैं प्रेम के दूसरे छोर पर हूँ इस वक़्त?

"एक बात पूछूँ?" रिदम ने गानों की आवाज़ कम करते हुए पूछा।

"हाँ बिलकुल।"

"जब तुम गाड़ी में आकर बैठे थे तो कोई मैसेज आया था। तुम उद्वेलित हो गए थे। किसका था वो मैसेज?"

"मेरी एक्स-गर्लफ्रेंड का।" मैंने बिना एक भी सेकंड गँवाए जवाब दिया।

"सब ठीक है?"

"हाँ।"

मैं जानता था कि मैं झूठ कह रहा था, पर इस झूठ से किसी को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ना था। मेरी एक्स-गर्लफ्रेंड का मैसेज है, ये कहते ही मुझे अजीब-सी ख़ुशी महसूस हुई, ऐसी ख़ुशी जो तकलीफ़ से भरी पड़ी थी। सारथी ने जिस दिन से मुझे छोड़ा था उस दिन से उसने मुझे एक भी मैसेज नहीं किया था। कल रात इंस्टाग्राम पर लगाई मेरी तस्वीरों के बारे में मैं सोचने लगा। क्या सारथी ने उन तस्वीरों को देखा होगा? वह आश्चर्य से भर गई होगी, वह मेरे दोस्तों को फ़ोन कर रही होगी कि ऋषभ कैसे इतना बदल गया? कैसे वह विदेश में अकेला घूम रहा है? फिर शायद किसी कोने में वह मुझे छोड़ के चले जाने के बारे में भी सोचेगी। पछताएगी नहीं, इतना तो मैं उसको जानता हूँ, पर पछताने के आसपास कहीं उसके विचार ज़रूर मँडराने लगेंगे। मैंने तुरंत फ़ोन देखा और मेरी तस्वीरों पर किए लाइक की फ़ेहरिस्त में उसका नाम तलाशने लगा। न तो उसने तस्वीरें लाइक की थी और न ही कोई मैसेज ही आया था उसका। जो इंस्टाग्राम

पर मुझे मैसेज आया था उसे मैंने छुआ भी नहीं।

बहुत ही छोटे टाउन से होते हुए हम Stevns Fyrtarn पहुँचे। सफ़ेद बड़ा-सा लाइट हाउस देखते ही मेरी आँखें प्रसन्न हो गईं। लाइट हाउस के चित्र मैं बचपन में देखा करता था, उन चित्रों में मैं ख़ुद को उसके प्रति आकर्षित पाता था। आज पहली बार मैं किसी लाइट हाउस के सामने खड़ा था... मंत्रमुग्ध। ये मेरे देखे गए बचपन के चित्रों से भी अधिक ख़ूबसूरत था।

रिदम अपनी कार पार्किंग में लगाकर मेरे पास आई।

"तुम ठीक हो?" उसने पूछा।

"हाँ, देखो क्या कमाल लाइट हाउस है!" मैंने कहा।

वह हँसने लगी।

"मैं तुम्हें लाइट हाउस दिखाने नहीं लाई हूँ, कोपनहैगन और नॉर्वे तो लाइट हाउस से भरे पड़े हैं, चलो आगे चलते हैं।"

मैं उसके पीछे हो लिया। हम पैदल पहाड़ के किनारे-किनारे चलने लगे। नीचे समुद्र की लहरें दिख रही थीं और दूर एक बेहद पुराना चर्च दिखाई दे रहा था। हम उस चर्च की तरफ़ बढ़ रहे थे।

"मैं यहाँ शब्बीर के साथ आना चाहती थी। उसे समुद्र से बहुत डर लगता था।"

मैंने पहाड़ से नीचे झाँका तो नीला समुद्र सफ़ेद पहाड़ों को छूता हुआ बहुत सुंदर दिखाई दे रहा था।

"वो सामने जर्मनी दिखाई दे रहा है।" उसने कहा।

"इतनी पास!"

"हाँ, तुम्हें जाना चाहिए जर्मनी।"

"आप चलेंगी मेरे साथ?"

"मैं? आप मुझे आमंत्रित कर रहे हैं?"

"यूँ ही समझो।"

"ठीक है कोशिश करती हूँ अगर छुट्टी मिल जाए तो।"

हम चर्च तक नहीं गए थे। हम उस पहाड़ के एक पत्थर पर बहुत देर तक बैठे रहे थे। सूरज ढल रहा था। और उस ढलते सूरज की हल्की गुलाबी धूप में मुझे लग रहा था कि हम एक पिच्चर-पोस्टकार्ड के भीतर बैठे हैं। मैंने कई तस्वीरें खींचने की भी कोशिश की, पर कोई भी तस्वीर, दिख रही सुंदरता को अपने भीतर बाँध नहीं पा रही थी।

जब हम वापस कोपनहैगन आ रहे थे तो मेरा मन उदास होने लगा था। मेरे भीतर वापस अकेले रह जाने की उदासी थी। मुझे इस उदासी से लड़ने के लिए नशे की ज़रूरत थी। मैंने उससे कहा कि मुझे भूख लगी है, कुछ खा लेते हैं, मैं उससे कहने में हिचक गया कि चलो कुछ पीते हैं। हम शहर में वापस आकर एक थाई रेस्टोरेंट में गए जहाँ हम दोनों ने थाई बीयर ऑर्डर की।

"आप पी सकती हैं? मतलब आपको तो कार चलानी है?" मैंने पूछा

"यहाँ एक लिमिट तक पीकर चला सकते हैं।"

हमने खाना ऑर्डर किया, पर मैंने खाने को हाथ भी नहीं लगाया। मैं बस पीता रहा।

"कल मेरी छुट्टी है, अगर आप कहें तो हम कहीं चल सकते हैं?" रिदम ने कहा।

"हाँ, बिलकुल।"

"कहाँ जाना चाहेंगे?" रिदम ने पूछा।

"ये हम डील कर लेते हैं कि आप ये मुझसे कभी नहीं पूछेगी। जहाँ आप कहें हम वहीं जाएँगे।"

"ठीक है... डील पक्की।" उसने मुस्कुराते हुए कहा।

मैं जब कमरे पर आया तो नशा लगभग ख़त्म हो चुका था। मुझे लगा था कि कमरे में आते ही उदासी फिर मुझे जकड़ लेगी। पर मैं बहुत हल्का महसूस कर रहा था। अगर रिदम नहीं मिलती तो मैं अभी तक हिंदुस्तान वापस जाने की टिकट बुक करा चुका होता। कैसे मैं कल रात सोच रहा था

कि मैं रिदम से नहीं मिलूँगा। मैंने इस कमरे को दस दिनों के लिए किराये पर लिया था, अब लगता है कि इसे आगे बढ़ाना पड़ेगा। मैं रिदम के संबंध को लेकर बहुत सँभलकर चल रहा था। मुझे लगा कि मेरा यहाँ रहना उसके और मेरे संबंध पर ही टिका हुआ है। मैं नहीं चाहता था कि वह मुझसे बोर हो जाए। मैं आज पहाड़ पर ढलते सूरज की रोशनी में उसे चूमना चाहता था। मैंने उस विचार को वहीं उसी वक़्त ख़त्म कर दिया था। मैं नहीं चाहता था कि मैं ऐसी कोई हरकत करूँ जिससे रिदम बिदक जाए।

मुझे अचानक भूख लगने लगी। थाई रेस्टोरेंट में सिर्फ़ बीयर पी थी। मैं खाना खाना भूल गया था। इस Airbnb में तीन कमरे थे और एक कॉमन किचन। मैं किचन में गया देखने कि फ्रिज में क्या पड़ा है। फ्रिज खोलते ही मेरी निगाह बीयर पर गई। ये मेरी बीयर नहीं थी। ये बाक़ी दो कमरों में रह रहे लोगों में से किसी की होगी। मैंने एक कैन निकाला और सोचा कल दूसरा कैन ख़रीदकर वापिस फ्रिज में रख दूँगा, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। मैं बीयर के कैन को एक झटके में आधा गटक गया। तभी मुझे याद आया कि इंस्टाग्राम पर मैसेज आया हुआ था। वो मैसेज पारुल का था जिसे मैंने रिदम से छुपा लिया था। मैंने मैसेज खोलकर देखा तो उसके कई और मैसेज आए हुए थे।

'शायद पहचाना नहीं! मैं कल मिली थी आपसे अपनी दीदी के साथ। एक हैलो तो कर ही सकते हैं। कैसे हैं आप? और कब तक हैं कोपनहैगन में? अगर वक़्त हो तो एक कॉफ़ी पर मिल सकते हैं, बताइएगा।'

इसके बाद एक तस्वीर उसने भेजी थी जो एक बार देखने के बाद गुम हो जाती थी। मैंने खोला तो देखा वह आईने के सामने खड़ी है, शायद ये उसके घर का बाथरूम होगा, बहुत छोटी शॉर्ट्स और बनियाननुमा टी-शर्ट पहने हुए थी। मैंने उस तस्वीर का तुरंत स्क्रीनशॉट ले लिया। देर तक उस तस्वीर को देखता रहा। तभी उसका मैसेज आया।

'स्क्रीनशॉट लेना ग़लत है, आप कहिए तो मैं आपको वैसे ही भेज दूँगी तस्वीर।'

मैं उस मैसेज को देखता रहा। फिर मैंने लिखा– 'जी, देखना तो चाहता हूँ।'

उसने तुरंत एक तस्वीर खींचकर भेज दी। उस तस्वीर में वह बिस्तर में थी जिसमें उसका चेहरा और कंधे दिख रहे थे। देखकर लग रहा था कि उसने बनियान नहीं पहन रखी है।

'कैसी लगी?' उसने पूछा।

'ये तो आप चिढ़ा रही हैं।' मैंने लिखा।

'अच्छा? न चिढ़ाऊँ?' उसने लिखा।

मैंने एक मुस्कुराता हुआ चेहरा भेज दिया। मैंने बीयर ख़त्म की और फ्रिज से एक और बीयर कैन लेकर अपने कमरे में आ गया। कमरे तक आते हुए पता चल रहा था कि आख़िरी बीयर का असर कुछ ज़्यादा ही हुआ है, मैं लड़खड़ाते हुए अपने बिस्तर पर पसर गया।

'ये नहीं चलेगा, क्या देखना है लिखना पड़ेगा।' उसने लिखा।

'तुम्हें।'

'कैसे?'

'जैसा तुम दिखाना चाहो।'

'जैसा तुम देखना चाहो।'

'दिखाओ?'

'बताओ?'

फिर मैंने कुछ नहीं लिखा। ये ठीक नहीं है की घंटी मेरे दिमाग़ में बजने लगी थी। मैंने जल्दी से अपने फ़ोन को स्विच ऑफ़ कर दिया। मैं हमेशा शुतुरमुर्ग़ की तरह अपनी गर्दन रेत के अंदर घुसा लेता था और सोचता कि सारी समस्या का समाधान हो चुका है। मेरा यहाँ कोपनहैगन आकर छुपना भी वैसा ही था। मैंने अपनी गर्दन को यहाँ की रेत में घुसा रखा था। और मुझे पता नहीं क्यों पूरा विश्वास था कि मैं जब अपनी गर्दन इसकी रेत से निकालूँगा तो मुझे सामने मुस्कुराती हुई सारथी खड़ी दिखाई देगी।

अगले दिन मैं देर से सोकर उठा। उठते ही मेरा हाथ मेरे फ़ोन पर

गया, मैंने उसे ऑन किया और सीधा इंस्टाग्राम खोला। तीन तस्वीरें पारुल ने भेजी थीं और अंत में गुड नाइट लिखा था। पहली तस्वीर में चेहरा और छाती का थोड़ा हिस्सा दिख रहा था, दूसरी तस्वीर में उसके ख़ूबसूरत गोल स्तन दिख रहे थे, और तीसरी तस्वीर में वह बिना कपड़ों के आईने के सामने खड़ी थी। पारुल सच में बहुत सुंदर थी। तस्वीरें बेहद निजी थीं। मैंने उन्हें तुरंत डिलीट कर दिया और मैसेज में लिखा कि हम जल्द कॉफ़ी पर मिलेंगे, धन्यवाद इन तस्वीरों के लिए।

मैंने उठकर कॉफ़ी पी और कुछ नाश्ते के लिए किचन में ब्रेड और बटर तलाशने लगा। तभी पीछे के कमरे का दरवाज़ा खुला और किचन में एक लड़की दाख़िल हुई। मैंने गुड मॉर्निंग कहा और उसने भी जवाब में गुड मॉर्निंग कहा। वह किचन में आते ही कॉफ़ी तलाशने लगी। यह लड़की जर्मनी से थी, मैं इसका नाम नहीं जानता था पर हमेशा कॉफ़ी पीते हमारी गुड मॉर्निंग हो जाया करती थी। वह कॉफ़ी बना रही थी।

"कल रात मैंने दो बीयर के कैन फ्रिज से लिए थे। मैं नए कैन ख़रीदकर आज रख दूँगा।" मैंने अँग्रेज़ी में उससे कहा।

"इट्स ओके।"

यह कहकर वह अपनी कॉफ़ी लेकर वापस अपने कमरे में चली गई। तभी रिदम का मैसेज आया कि तीन बजे Tivoli Gardens में मिलते हैं।

मुझे पता नहीं था कि Tivoli Gardens का मतलब क्या होता है, मुझे लगा हम किसी पार्क में मिल रहे हैं। मैं जब चलते हुए वहाँ पहुँचा तो मुझे बहुत सारे झूले दिखाई दिए। मेरी समझ में आया कि ये तो यहाँ का प्रसिद्ध Tivoli है, एम्यूज़मेंट पार्क, ये कोपनहैगन में सबसे पुराना पार्क है। मुझे समझ नहीं आया कि हम यहाँ क्यों मिले रहे हैं। मैं ठीक तीन बजे पहुँच चुका था, पर रिदम को बहुत मुश्किल से पार्किंग मिली थी सो वह क़रीब चार बजे पहुँची। मैं रिदम को देखते ही हँसने लगा।

"हम यहाँ क्यों मिले हैं?" मैंने रिदम से पूछा।

"आप हमारा एग्रीमेंट देख लीजिए, आपने ही कहा था कि मैं जहाँ चाहूँ। अब आप फँस चुके हैं। बस अब आप मेरे पीछे-पीछे आइए।"

हम सबसे पहले सबसे ऊँचे झूले पर गए। इस झूले में चेन से बँधी हुई बेंचें थीं जिसमें दो लोग बैठ सकते थे। ये पहले हमें बहुत ऊपर ले जाता, जहाँ से पूरा कोपनहैगन आपको दिख सकता, और फिर ये झूला घूमना शुरू करता। हम जब ऊपर पहुँचे और जब हमें पूरा कोपनहैगन नज़र आने लगा तो रिदम मस्ती में नज़र आने लगी, पर मेरी हालत ठीक नहीं थी। जैसे ही उस झूले ने घूमना शुरू किया मेरी घबराहट अपने चरम पर पहुँच गई। मुझे नहीं पता था कि झूले में मुझे इतना डर लग जाएगा। रिदम मुझसे कह रही थी कि देखो उस तरफ़ मेरा बैंक है और उसके दूसरी तरफ़ वहाँ तुम रहते हो, पर मैं कुछ भी देख नहीं पा रहा था। मेरा पूरा शरीर अकड़ चुका था, बस रिदम को दिखाने के लिए एक झूठी मुस्कुराहट मैंने मेरे चेहरे पर

चिपका रखी थी। मैं बस इस झूले के रुक जाने का इंतज़ार कर रहा था। जैसे-तैसे वो झूला रुका और हम धीरे-धीरे नीचे आए। नीचे आते ही मेरी साँस-में-साँस आई। रिदम का हँस-हँसकर बुरा हाल था। मुझे लगा था कि मैं झूठी मुस्कुराहट चिपकाए हुए था, पर उस मुस्कुराहट की वजह से मेरा डर कुछ ज़्यादा ही झलक रहा था। मैंने झूलों से तौबा की, पर रिदम कहने लगी कि वह मेरे डरे हुए चेहरे को फिर से देखना चाहती है। मैं मना करता गया, पर वह नहीं मानी। हम एक-के-बाद-एक ख़तरनाक झूलों पर जाते रहे। कई बार मेरा उलटी करने का भी मन किया, पर मैंने ख़ुद को सँभाले रखा। रिदम जब-जब मुझे देखे वह तब-तब बुरी तरह हँसने लगे। अब हम हमारी आख़िरी राइड पर थे जिसका नाम The Golden Tower था। रिदम और मैं जब उसकी लाइन में लगे थे तो वह चुप थी। इस राइड में बैठकर हमें बेहद ऊपर जाना था और फिर ये हमें वहाँ से नीचे की तरफ़ छोड़ देगी, मानो हम उतनी ऊपर से गिरा दिए गए हों। जब हम ऊपर की तरफ़ जा रहे थे तो रिदम लाल हो चुकी थी। मैंने पूछा तुम ठीक हो? उसने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। हम जब नीचे फेंके गए तो मैं चिल्ला रहा था और रिदम ने आँखें बंद करके अपने पूरे शरीर को कड़क कर लिया था।

सारे झूलों पर झूल लेने के बाद मेरा सिर चकरा रहा था। मैंने रिदम से कहा कि मुझे बीयर की ज़रूरत है। हम एक कैफ़े में बैठे और तुरंत बीयर ऑर्डर कर दी। जैसे ही बीयर आई मैंने कुछ लंबे घूँट खींचे और मुझे ठंडी बीयर का अपने शरीर में प्रवेश महसूस हुआ। मैंने जब गिलास नीचे रखा मुझे तब जाकर कुछ ठीक महसूस हुआ। पर मैंने देखा रिदम चुप थी।

"क्या हुआ था तुम्हें?" मैंने पूछा।

बीयर का घूँट लेने के बाद उसने कहा, "मैं ये आख़िरी राइड से सबसे ज़्यादा डरती हूँ।"

"सच कहूँ तो मुझे आख़िरी वाली राइड में उतना डर नहीं लगा।"

"सलीम साहब, आपकी चीख़ें गूँज रही थीं पूरे कोपनहैगन में।" उसने

हँसते हुए कहा।

"हाँ, पर आख़िरी झूले में वो उत्साह में निकल रही थीं।"

"बहुत पहले शब्बीर और मेरी बहन के साथ मैं इस राइड के लिए आई थी। जब ये राइड नीचे की तरफ़ जा रही थी तो उसके ठीक पहले मेरी बहन ने मुझे कहा कि तेरा सेफ़्टी बेल्ट खुला हुआ है। मैंने जैसे ही उसे छुआ तो मुझे मेरा सेफ्टी बेल्ट ढीला लगा और तब तक ये राइड नीचे की तरफ़ फेंक दी गई। मेरी साँसें रुक गई थीं। डर का एक ऐसा तेज़ झटका लगा था कि मुझे लगा मैं मर चुकी हूँ। जब हम नीचे पहुँचे तो मेरी साँसें उल्टी चल रही थीं, आँखों से पानी बहने लगा था। जब मैंने अपने चारों तरफ़ देखा तो मेरी बहन हँस रही थी, शब्बीर भी हँस रहा था और मैं ज़मीन पर लेटी हुई हाँफ रही थी। बाद में पता चला कि सेफ़्टी बेल्ट हमेशा थोड़ी ढीली रखी जाती है। पर तब से मुझे इस राइड का डर भीतर बैठ गया था। पहले मैंने सोचा कि आज मैं ये राइड नहीं करूँगी। पर आपको इतना डरा चुकी थी सोचा आप भी मुझे एक बार डरता हुआ देख लें।"

हमने बीयर ख़त्म की, पर उस पार्क से निकलने से पहले रिदम ने आग्रह किया कि हम बच्चों की राइड करें। वो राइड Hans Christian Andersen की थीम पर थी। रिदम को ये लेखक बहुत पसंद थे। ये राइड उनकी कहानियों पर आधारित थी, उनकी बच्चों की कहानियों के सारे पात्रों को उसमें शामिल किया गया था। रिदम ने कहा कि ये बहुत ही अच्छा ट्रिब्यूट है उस लेखक को। मुझे याद आया जो किताब रिदम ने मुझे दी थी, वो अभी भी मेरे बैग में ही पड़ी हुई है।

जब हम बाहर निकले तो पारुल के मैसेज इंस्टा पर आए हुए थे– 'Where are you guys, my sis is not picking up my phone. Please don't tell her that we are chatting.'

मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उसका मैसेज देखा ही क्यों? अब उसको पता है कि मैंने उसका मैसेज देखा है और मैं जवाब नहीं दे रहा हूँ। रिदम ने कार में बैठने से पहले अपना फ़ोन देखा और उसने अपनी आँखें

घुमाते हुए अपना माथा ठोक लिया।

"क्या हुआ ? सब ठीक है ?" मैंने पूछा।

"मेरी बहन पगला गई है।" उसने कहा, "दो मिनट मैं ज़रा बात कर लूँ।"

वह कार से उतरी और रास्ते पर टहलते हुए फ़ोन पर बात करने लगी। मैं कार में बैठा रहा। कार धूप में खड़ी होने के कारण अंदर से बहुत गरम हो रही थी। मैंने खिड़की के शीशे नीचे करने की कोशिश की, पर वो हो नहीं रहे थे क्योंकि कार बंद थी। कुछ देर मैंने कार को ऑन करने के बटन को ढूँढ़ने की कोशिश की ताकि खिड़की के काँच को नीचा कर सकूँ पर वो मिला नहीं। फिर मैंने दरवाज़ा खोला और गाड़ी के बाहर आ गया। मुझे पसीना आने लगा था। बाहर आते ही मैंने राहत की साँस ली।

मैं कार से थोड़ा दूर हट गया और छाँव में खड़ा हो गया। यहाँ से मुझे कोपनहैगन के गिरजाघर की मीनारें, घंटाघर, और दूसरी बड़ी ऐतिहासिक बिल्डिंगों के गुंबद नज़र आ रहे थे। मैं पिछले दस दिनों में लगभग हर बड़ी जगहों से होकर गुज़रा था। मैं क्या पा रहा था इस तरह इस शहर में चलते रहने से ये मेरी समझ के परे था, पर जब तक मेरी ऑफ़िस की छुट्टियाँ हैं मैं इसी शहर के चक्कर लगाता रहूँगा। मुझे याद आया कि मुझे अपने कमरे के आगे के दिनों की बुकिंग करनी है। वो फ़्लैट बाक़ी सभी जगह से सस्ता था, शायद बिल्डिंग की खस्ता हालत की वजह से उसमें मुझे बहुत लोग रहते नहीं दिखते थे। हमारे फ़्लैट का एक कमरा भी मुझे हमेशा ही ख़ाली दिखता था। बस वो एक जर्मन लड़की थी जो रोज़ सुबह दिख जाया करती थी। उसके चेहरे पर हमेशा मुझे एक उदासी की लकीर दिखती थी। अगर दिल्ली होता तो पूछ लेता सब ठीक तो है ? पर यहाँ मैं हर क़दम फूँक-फूँककर रखता था। पता नहीं यहाँ किसे किस बात का बुरा लग जाए। उस उदास जर्मन लड़की का नाम क्या होगा, मैं सोचने लगा। अगर वह मेरे बारे में अपने दोस्तों को बात करती होगी तो शायद कहती होगी वो एक डिप्रेस भारतीय आदमी है जो साथ वाले कमरे में पड़ा रहता है।

"चलो, चलते हैं।" रिदम ने कहा और वह कार में बैठ गई।

उसने अपने फ़ोन को कार से जोड़ा और गाने लगा दिए। कार की स्टेयरिंग को उसने बहुत कसकर पकड़ा हुआ था। उसकी उँगलियाँ लाल हो गई थीं, कंधे तने हुए थे और पीठ ज़रूरत से ज़्यादा सीधी। हम सीधा एक थाई रेस्टोरेंट गए और उसने घुसते ही तीन चीज़ें ऑर्डर की। Gaeng Daeng (Red Curry), Pad Thai (Thai style Fried Noodles), Khao Pad (Fried Rice)। मैं दंग रह गया। मुझे बिलकुल भूख नहीं थी। और उसने मुझसे पूछा भी नहीं। जब खाना आया तो मैंने थोड़ा-सा लिया ताकि उसका साथ दे सकूँ। धीरे-धीरे करके कुछ ही देर में वह सारा खाना खा गई। फिर भागकर बाथरूम गई। मैं थोड़ा असहज हो रहा था। मैंने अपना फ़ोन निकाला तो पारुल के मैसेज आए हुए थे। इस बार मैंने उन्हें नहीं छुआ। रिदम बहुत देर में वापस आई और उसने अपने लिए तुरंत एक कोल्ड ड्रिंक ऑर्डर की, मुझसे पूछा तो मैंने मना कर दिया। उसकी आँखें लाल थीं, बाल थोड़े बिखरे हुए थे और गालों पर हल्की लालिमा आ गई थी। वह बड़े ही अजीब तरीक़े से, पर बहुत ख़ूबसूरत लग रही थी। मैं उस थाई रेस्टोरेंट की कुर्सी पर पीछे टेक लगाकर बैठ गया। मैं चाहता था कि वह अपने को आराम से सुलझा ले, उसे इस वक़्त मेरी चिंता नहीं होनी चाहिए। कोल्ड ड्रिंक ख़त्म करके उसने पैसा दिया और हम बाहर आ गए।

"मैं कार नहीं चलाना चाहती, क्या हम पैदल घूम सकते हैं?"

मैंने अपना बैग कार में रखा और उसके साथ हो लिया। मैं यूँ तो एक बीयर पीना चाहता था, पर मैंने उससे अपनी ये इच्छा ज़ाहिर नहीं की।

"तुमने बिलकुल सही कहा था..." मैंने धीरे से बात करनी शुरू की, "...कि हम पुरुषों को कभी नहीं पता चलता है कि ये संबंध ख़त्म हो चुका है। सारथी, मेरी एक्स गर्लफ्रेंड, का मुझसे संबंध बहुत पहले ख़त्म हो चुका था। उसने मुझे कई इशारे भी किए थे, पर मुझे एक भी इशारा कभी समझ नहीं आया। जब वो चली गई तब भी मैं मानने को राज़ी नहीं था कि वो

छोड़ चुकी है मुझे। अगर कोई मुझसे पूछता कि बहुत ईमानदारी से कहो कि क्या तुम चाहते हो ये संबंध? तो शायद मैं कहता पता नहीं। चूँकि वह मुझसे छूटना चाहती थी इसलिए दिन-ब-दिन मेरी पकड़ उसके लिए मज़बूत होती जा रही थी। शायद मैं उस संबंध को वापस पटरी पर लाना चाहता था ताकि बाद में जब सब ठीक हो जाए तो मैं उसे छोड़ सकूँ... पता नहीं। यहाँ आकर सोचने का इतना वक़्त है मेरे पास कि मैं सारे पहलुओं की गहरी शिनाख़्त कर चुका हूँ। पर अंत में मैं अपनी हार के साथ यहाँ छुपा बैठा हूँ, पर बहुत कोशिश करने पर भी छुप नहीं पा रहा हूँ, मैं चाहता हूँ कि वह देख ले मुझे कि मैं यहाँ हूँ, उसे पता चल जाए कि मैं इतनी दूर उसी की वजह से आया हूँ।"

रिदम ने मुझे अपनी पूरी सांत्वना से मुस्कुराते हुए देखा। मैं भी उसके साथ मुस्कुरा दिया। पर सारा कुछ कहते ही मुझे लगा कि मुझे ग़ुस्सा आ रहा है। मैंने इस ग़ुस्से में इस वक़्त ठीक जो कहा है उसका उल्टा कहना चाहता था। मैं सारथी की भर-भरकर बुराई करना चाहता था। मैंने सिगरेट जलाई और अपना सारा ग़ुस्सा उसके पहले कश पर निकाला। मुझे खाँसी आने लगी। खाँसकर ठीक होने में जितना वक़्त लगा, मुझे लगता है मुझे उतना ही वक़्त चाहिए था, ख़ुद के ग़ुस्से पर क़ाबू पाने के लिए। रिदम अभी भी ठीक नहीं थी, उसका पूरा शरीर अभी भी बहुत टेंस था। मैंने देखा वह फ़ोन पर कुछ ढूँढ़ रही थी।

"सुनो, State Art Museum आज देर तक खुला है, चलो चलते हैं।"

"देखो मैं आपको बता दूँ", मैंने कहा, "Art से मेरा कोई संबंध नहीं है।"

"मतलब?"

"मुझे समझ नहीं आता।"

"Edvard Munch भी नहीं?"

"वो कौन है?"

उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं किसी दूसरी दुनिया का आदमी हूँ। और सच भी था कि मैं असल में दूसरी दुनिया का ही आदमी था। हम वापस कार की तरफ़ गए, मैं अपना सिर पीटना चाहता था कि क्यों मैं बार-बार एक जैसे लोगों के साथ ही फँस जाता हूँ। वहाँ सारथी भी मुझे दिल्ली में NGMA ले जाती थी, मैं उसे कहता था कि मेरी कुछ समझ नहीं आता कि लोगों ने इतने आड़े-तिरछे चित्र क्यों बनाए हुए हैं, और वह थी कि हर देखी हुई पेंटिंग के सामने देर तक खड़ी रहती थी। यहाँ रिदम मुझे Art Museum ले जा रही है।

जब हम म्यूज़ियम पहुँचे तो रिदम, सारथी की तरह, पूरे म्यूज़ियम में नहीं भटकी, वह सीधा पहले फ़्लोर पर जाकर दाहिने हाथ की तरफ़ मुड़ गई। जब तक मैं भागते-भागते उसके पीछे पहुँचा मैंने देखा वह Edvard Munch की एक पेंटिंग के सामने खड़ी है। उस पेंटिंग में बिस्तर पर कोई लेटा हुआ था जिसका चेहरा नज़र नहीं आ रहा था और उस बिस्तर के आस-पास लोग जमा थे जो बेहद दुखी लग रहे थे। पेंटिंग के बाद मेरी निगाह रिदम पर गई। उसे देखने पर लगा कि वह किसी ध्यान अवस्था में है, मैं बाक़ी कलाकृतियों को देखने लगा, फिर मुझे पीछे एक बेंच पड़ी दिखी, मैं धीरे-से जाकर उस पर बैठ गया। मुझे कभी पेंटिंग समझ नहीं आई। और अब तो मैंने उन्हें समझने के प्रयास भी छोड़ दिए थे। शुरुआत में मैं कई बार सारथी के साथ म्यूज़ियम में जाता रहा था और हर बार ढेर सारी थकान लेकर बाहर आया था। रिदम उस पेंटिंग के सामने इतनी स्थिर खड़ी थी कि वह उस पेंटिंग का हिस्सा लग रही थी। तभी मैंने देखा रिदम के कंधे वापस अपनी स्थिति पर लौटने लगे थे, शरीर थोड़ा ढीला होने लगा था। मैं उठकर उसके क़रीब गया। उसने एक गहरी साँस ली और उसकी आँखों के किनारे हल्की-सी मुस्कुराहट चमकने लगी थी।

मुझे रिदम से बेहद रश्क हो रहा था, काश चित्रकारी का मेरे ऊपर भी ऐसा ही असर होता तो शायद मुझे कोपनहैगन आने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं दिल्ली NGMA में जाकर ही ठीक हो जाता।

"तुम्हें कैसी लगी पेंटिंग ?" नीचे उतरते हुए उसने पूछा।

"पता नहीं।" मैंने कहा।

"मतलब ?"

"मतलब, मैं खड़ा रहता हूँ और कुछ होता नहीं है।"

"जिस पेंटिंग को मैं देख रही थी, उसे तो तुम भी देख रहे थे ?"

"हाँ वो अच्छी थी।"

मैं कहना चाहता था कि मैं उस पेंटिंग को नहीं तुम्हें देख रहा था, पर मैं कह नहीं पाया।

"Munch ने अपनी बहन Sophie की मृत्यु को पेंट किया था। वो पंद्रह साल की थी, By the Deathbed, पेंटिंग का नाम है। मैं जब भी इस पेंटिंग के सामने आती हूँ तो मेरे भीतर धीरे-धीरे सब सुलझने लगता है। कभी उनकी पेंटिंग Vampire देखना, यहाँ..." उसने मेरी छाती पर अपनी उँगली रखी, "यहाँ भीतर तक उतर जाती है। अगर उसे देखकर तुम्हें कुछ समझ न आए तो फिर जिस सलीम को मैं जानती हूँ तुम वो नहीं हो।"

"Vampire वाली पेंटिंग है यहाँ ?" मैंने पूछा।

"वो Munch म्यूज़ियम में है, ओस्लो में।"

मुझे लगा अगर वो पेंटिंग यहाँ होती तो मैं रिदम के सामने झूठा अभिनय कर देता। क्या फ़र्क़ पड़ता है, सलीम भी तो ओढ़ा हुआ एक झूठा नाम है!

"ख़ैर जाने दो, तुमसे नहीं होगा।" उसने कहा।

उसने अजीब-सा झिड़क दिया था, मानो मुझे जीवन के किसी बहुत अहम पहलू की कोई समझ नहीं हो। मुझे ये बात थोड़ी चुभी, पर मैं चुप रहा। मैं उस स्टेट म्यूज़ियम के बाथरूम में गया और Munch की Vampire पेंटिंग को मोबाइल में सर्च किया। जब उसका चित्र सामने आया तो मैंने ज़ूम करके देखा। मुझे वो डरावनी पेंटिंग लगी। लाल बालों में एक लड़की एक आदमी को अपनी बाँहों में लिए हुए है। अच्छा हुआ वो पेंटिंग यहाँ नहीं थी वरना मैं उस डरावनी पेंटिंग को लेकर ज़्यादा झूठ नहीं कह सकता था।

हम स्टेट म्यूज़ियम से निकले तो शाम हो चुकी थी। मैंने उससे कहा कि मैं यहाँ से अपने घर अकेले जाना चाहता हूँ। उसने 'ठीक है' कहा और वह अपनी कार की तरफ़ बढ़ गई। मतलब अगर मुझे Munch समझ नहीं आया तो वह इस तरह बिना बाय किए चली जाएगी? शायद ग़लती मेरी है, आज वह बहुत अस्त-व्यस्त थी, आज मुझे उसके साथ रहना चाहिए था, पर मैं अपने स्वार्थीपन में इस वक़्त किसी पब में जाकर पीना चाहता था और मैं नहीं चाहता था कि मैं पीते हुए Munch पर कोई लेक्चर सुनूँ।

मैं जब अपने कमरे की तरफ़ बढ़ रहा था तो भीतर एक टीस थी, Munch के नहीं समझने की, रिदम को जब ज़रूरत थी तब उसके साथ वक़्त न बिताने की और अपने स्वार्थी होने की।

मुझे स्टेट म्यूज़ियम से घर तक पहुँचने में डेढ़ घंटा लगा। चलते-चलते मैं बहुत थक चुका था, तभी मुझे छोटा-सा पब अपनी बिल्डिंग के ठीक नीचे दिखा। मैं पहले कभी इस पब में नहीं गया था। मेरी इच्छा हुई कि मैं यहीं बैठ जाऊँ, फिर पीकर लड़खड़ाता हुआ ऊपर अपने कमरे तक जाने में कोई दिक़्क़त भी नहीं होगी। मैं उस पब में प्रवेश कर गया।

"What can I get for you?"

मेरे सामने उदास जर्मन लड़की खड़ी थी। मुझे नहीं पता था कि वह इस पब में काम करती थी। उसे देखते ही मेरी बहुत थकान मिट गई। उसके इस रूप में वह मुझे बहुत उदास नहीं लग रही थी। फिर मैंने ध्यान से देखा तो उसने मेकअप किया हुआ था।

"Good to see you, क्या मुझे बीयर मिल सकती है?"

उसने पीछे से गिलास उठाया और टैप से एक बीयर का गिलास भरकर मुझे दे दिया।

"ये पहली बीयर मेरी तरफ़ से।" उसने कहा।

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है।"

"कोई नहीं, बाद में आप मुझे पिला देना।"

"ठीक है।"

"क्या बात है आज बहुत ख़ुश लग रहे हो ?" उसने पूछा

"क्यों वैसे नहीं लगता ख़ुश ?" मैंने पूछा।

"ऐसा नहीं है, पर हमेशा आपको मैंने उड़ा हुआ देखा है। दो मिनट।" उसने कहा और वह बाक़ी कस्टमर्स के ऑर्डर लेने चली गई।

मुझे अजीब लगा उसका कहना कि मैं उड़ा हुआ लगता हूँ। मैंने तो नहीं कहा कि आप उदास लगती हैं। वह घूमकर वापस आई।

"कोई आ रहा है या अकेले ही पी के ज़ाया हो जाने का इरादा है ?"

जब ये उदास जर्मन लड़की घर में टकराती थी तो कभी इतनी उत्साहित नहीं लगती थी। मुझे लगा ये अपने जॉब की वजह से मुझसे ऐसी बातें कर रही है। या शायद ये घर से बाहर निकलते ही बदल जाती है ?

"कोई आ रहा है।" मैंने कहा और मैं फ़ोन देखने लगा। मैंने झूठ कहा और मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसा क्यों किया। उसकी बातचीत में मुझे किसी तंज़ की बू आ रही थी, ज़ाया हो जाने का क्या मतलब है ? इंस्टाग्राम पर मैंने पारुल के मैसेज खोले। उसके बहुत से मैसेज आए हुए थे। मैंने बस उसका आख़िरी मैसेज पढ़ा- 'I need to talk to you.'

मैंने तुरंत जवाब लिखा– 'बताइए क्या बात है ?'

कुछ देर में उसका मैसेज आया– 'आपसे ज़रूरी बात करनी है। अगर आप फ़्री हैं, तो बताइएगा।'

'जी मैं फ़्री हूँ, बताइए क्या बात करनी है ?' मैंने मैसेज किया और उसके जवाब का इंतज़ार करने लगा।

'कहाँ हैं आप अभी ?' उसने पूछा।

'एक पब में।'

'लोकेशन भेजिए, मैं आती हूँ।'

मैं नहीं भेजना चाहता था। पर तभी मेरी निगाह उस उदास जर्मन लड़की पर पड़ी, वह मुस्करा रही थी। मुझे उसकी मुस्कुराहट में भी कुछ तंज़ नजर आ रहा था।

मैंने तुरंत पारुल को इस पब का नाम लिखकर भेज दिया।

'ओ, मैं पास में ही हूँ, आती हूँ जल्द।'

मैंने उसका मैसेज पढ़ा और सामने काम कर रही उदास जर्मन लड़की की तरफ़ जीत भरी मुस्कुराहट से देखा। मैं ठीक-ठीक नहीं जानता था कि मैं किससे जीत रहा था और मेरी लड़ाई किससे चल रही थी। मैंने अपनी बीयर गटकी और एक बीयर और ऑर्डर की। उदास जर्मन लड़की जब अगली बीयर लेकर आई तो मेरे बीयर लेने में एक तुनक आ गई थी। उसने देखा पर कुछ कहा नहीं। फिर लगा ग़लती मेरी ही थी, वह जर्मन थी और उसकी अँग्रेज़ी ठीक नहीं थी, शायद इसलिए उसके वाक्यों में एक तंज़ रहता था।

मैं अपनी दूसरी बीयर लगभग ख़त्म कर चुका था, तभी पारुल आई।

"ये बताइए सलीम साहब, आपका नाम तो इंस्टाग्राम पर अलग है? क्या आपने डर के मारे अपना मुसलमान होना छुपाया है?" उसने आते ही पूछा।

"क्यों, मैं क्यों छुपाऊँगा?"

"मतलब आजकल जिस स्थिति से पूरी दुनिया का मुसलमान गुज़र रहा है, इसलिए पूछा।"

"ऐसा कुछ नहीं है, मेरा असल नाम सलीम है, पर मेरी एक्स-गर्लफ्रेंड मुझे उस नाम से बुलाती थी, अब एकाउंट उसकी वजह से खोला था तो वही नाम रहने दिया, और मुझे पता भी नहीं कि अब नाम वापिस बदलते कैसे हैं!"

सच बात कहने के लिए एक ही वाक्य काफ़ी होता है पर किसी भी झूठ को सच साबित करने के लिए कितने सारे वाक्यों का सहारा लेना पड़ता है! पारुल ने अपने लिए एक व्हिस्की मँगवाई और उसे एक शॉट में ही गटक लिया, फिर मुझे खींचकर पब के बाहर ले गई सिगरेट पीने।

"मैं दीदी के सामने सिगरेट नहीं पीती हूँ।" उसने कहा।

मैंने पहले उसकी सिगरेट जलाई फिर अपनी।

"तो क्या बात है, बताओ?" मैंने पूछा।

उसने दो लंबे कश लगाए, उसके मुँह में शायद च्विंगम थी जिसे उसने थूका, फिर उसने सिगरेट का एक कश और लगाया। धुआँ छोड़ते हुए वह मुझे देखने लगी। वह उन लड़कियों में से थी जो जानती हैं कि उनमें इतना आकर्षण है कि वे अपना समय ले सकती हैं। मैं इस चुप्पी में बहुत देर तक खड़ा रह सकता था क्योंकि मैं सामान्य-सा दिखने वाला एक आदमी था। हम सामान्य लोगों के पास चुप रहने के अलावा और कोई चारा नहीं होता। मुझे यूँ भी हर परिस्थिति में चुप रहना आता था।

"शब्बीर और मेरे बीच प्रेम था, मतलब ठीक प्रेम नहीं, प्रेम जैसा शुरू होने की उम्मीद जैसा कुछ। दीदी मेरे कारण ही शब्बीर से मिली थीं। और एक दिन मुझे पता चला कि वे दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। मैं अपनी दीदी को इस बात के लिए माफ़ भी कर सकती थी, पर जो बातें दीदी ने मेरे बारे में शब्बीर से कही थीं, मैं उन बातों के लिए उन्हें कभी माफ़ नहीं कर सकती हूँ।"

यूँ मुझे उसकी प्रेम कहानी में कोई दिलचस्पी नहीं थी, पर जब बात रिदम की आई तो मेरी दिलचस्पी बढ़ गई।

"मैं समझा नहीं! शब्बीर ने तुम्हारी दीदी और तुम्हारे बीच, तुम्हारी दीदी को चुना?" मैंने सीधे पूछा।

"ग़लती मेरी थी थोड़ी, जब हमने साथ सोना चालू किया तो मैं बस ऐसे ही उसके साथ सो रही थी, पर वो हमारे संबंध को लेकर संजीदा था। वो कोई सतही संबंध नहीं चाहता था। तो मैंने उससे समय माँगा सोचने के लिए। मेरी ग़लती बस इतनी-सी थी कि मैंने थोड़ा ज़्यादा वक़्त ले लिया।"

"कितना?"

"क़रीब एक साल। तो क्या हुआ, दीदी को पता था कि मैं और शब्बीर साथ थे। और मतलब वो मेरे साथ था और फिर दीदी के साथ सोने लगा, मतलब ये कितना ग़लत है न!"

उसने दूसरी सिगरेट निकाल ली। मैंने कहा, "चलो अंदर चलते हैं, मैं थोड़ा पीना चाहता हूँ।"

उसने सिगरेट वापस अंदर रख ली। उसने व्हिस्की मँगवाई और मैंने बीयर। तब तक उदास जर्मन लड़की की शिफ़्ट ख़त्म हो चली थी। मैंने उससे कहा कि हमें ज्वॉइन कर ले। वह अपने साथ वोदका के तीन छोटे गिलास लाई और एक बीयर। हम तीनों ने चीयर्स कहा और वोदका का शॉट मारा। उदास जर्मन लड़की ने बीयर के दो लंबे घूँट मारे। हम दोनों ही उदास जर्मन लड़की को नहीं जानते थे सो मैंने ही उससे पूछा कि वह असल में करती क्या है? तो उसने बताया कि वह पहले न्यूयॉर्क में रहती थी, अब वह यहाँ किसी अफ़्रीकन कंपनी के लिए काम करती है, वो कंपनी अफ़्रीकन लोगों को नागरिकता दिलाने और उनके अधिकारों के लिए लड़ने का काम करती थी। वह अपने काम में बहुत शिद्दत से घुसी हुई थी, उसकी बातचीत में इतना उत्साह था कि लग रहा था वह हमसे बात नहीं कर रही है बल्कि बहस कर रही है। मुझे उसके सारे उत्साह में भी एक क़िस्म की उदासी नज़र आ रही थी। फिर उसने कहा कि क्योंकि ऐसे कामों में बहुत पैसा नहीं है इसलिए उसे इस क़िस्म के odd jobs करने पड़ते हैं। उसकी बातों के बीच में, टेबल के नीचे से पारुल ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे फ़ोन देखने के लिए कहा। मैंने फ़ोन चेक किया तो उसने इंस्टाग्राम पर मैसेज भेजा हुआ था।

'मैं इसकी बातें सुनने नहीं आई हूँ। चलो, कहीं और चलते हैं।'

मैंने मैसेज पढ़कर सीधा पारुल को देखा। उदास जर्मन लड़की समझ गई कि क्या हुआ। वह चुप हो गई और अपनी आधी बीयर उठाकर उसने चीयर्स कहा और वहाँ से उठ गई। मैंने उसको रोकने की कोशिश की, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

मैं और पारुल सुपर मार्केट से सस्ती बीयर लेकर नदी किनारे चले गए। मुझे यूँ तो भूख लग रही थी, पर मुझे पता था कि अगर इस वक़्त कुछ खा लिया तो मुझे नींद आने लगेगी। सो मैं बीयर पर बना रहा। पारुल अपनी सुंदरता में बेबाक-सी लड़की थी, ख़ासकर पीने के बाद जब वह हल्की अस्त-व्यस्त-सी होने लगी थी तो उसकी सुंदरता और बढ़ गई थी।

मैं कोपनहैगन की रात की रोशनी में बार-बार उसके शरीर को देख लेता। उसे पता था कि मेरी आँखें उसके शरीर के किन हिस्सों पर रुक रही थीं।

"तुमसे कुछ चालाकी नहीं होती। उस लड़की को पता नहीं लगना चाहिए था और तुमने गधों की तरह सीधे मुझे देख लिया।"

वह ये हँसते हुए कह रही थी। मैं कभी भी बहुत चपल आदमी नहीं था, मैं ये बात जानता था। मैंने पारुल से कुछ नहीं कहा, बस उसके सामने खिसियाता रहा। लेकिन मेरे दिमाग़ में वह उदास जर्मन लड़की की आँखें घूम रही थी। धोखा खाने के बाद वाली आँखों को मैं बहुत अच्छे से पहचानता था। कई महीनों से मैं उन आँखों को रोज़ सुबह आईने में देखता रहा था।

हम दोनों बहुत नशे में थे। पहले हम एक-दूसरे को बहाने-बहाने से छू रहे थे फिर हर छुए पर हम देर तक टिके रहने लगे। इतने नशे के बाद हम दोनों जानते थे कि क्या होना था। मैं और पारुल उस नदी किनारे एक-दूसरे को देर तक चूमते रहे। तभी मेरे फ़ोन के मैसेज की घंटी बजी। मैंने देखा रिदम का मैसेज था।

'मेरी तीन दिन छुट्टी है, कल सुबह तैयार रहना, मैं तुम्हें नॉर्थ ऑफ़ डेनमार्क घुमाना चाहती हूँ। गुड नाइट!'

मैंने कोई जवाब नहीं दिया और चेहरे पर मैंने इस मैसेज की झलक तक नहीं आने दी। पर धोखा शब्द मेरे दिमाग़ में रह-रहकर हरकत करने लगा।

"दीदी का मैसेज है?" पारुल ने पूछा।

"नहीं, मेरी एक्स-गर्लफ्रेंड का।" मैंने तपाक से कहा।

एक खिलौने जैसा जीवन मिला हुआ होता है। पूरा बचपन उसके साथ उछलते-खेलते बीत जाता है। फिर एक वक़्त आता है जब हमें उस खिलौने के असल खेल समझ आते हैं, तब तक लोग कहने लगते हैं कि अब हमारे खेलने की उम्र जा चुकी है। हमें अभी-अभी तो इस खिलौने के असली पैंतरे समझ में आए थे, हम अभी तो समझे थे कि एक वक़्त के बाद असल में सब छूटता ही जाता है। अब हम खेल नहीं सकते थे। बड़ों की इन नसीहतों से भरे जीवन में जब हम झूठ बोलकर अपने जीवन से खेलने निकलते हैं तो पता चलता है कि हम खेलना तो बहुत पहले भूल चुके हैं।

सुबह जब मैं सोकर उठा तो पारुल जा चुकी थी। बिस्तर के बग़ल में एक नोट छूटा हुआ था।

'Left... love... see you soon... kisses...'

मैंने उठते ही रिदम को मैसेज किया कि मैं तैयार रहूँगा, बताना कितने बजे निकलना है। मैं मैसेज करके फिर सो गया।

मैं ख़ुद को पहचान नहीं पा रहा था। मैं ऐसा कभी नहीं था, या असल में मैं ऐसा ही था। मैं जब बाद में उठा तो ख़ुद को आईने में देखने का मन नहीं किया। मैं जानता था कि मेरी आँखें अलग हैं इस वक़्त। मैंने ख़ुद को समझाया कि मैंने धोखा नहीं दिया, मतलब ये ठीक धोखे जैसा नहीं है, मेरे और रिदम के बीच में महज़ दोस्ती थी। ठीक धोखा नहीं है ये, इस वाक्य का जाप मैं सुबह से कर रहा था। किचन में कॉफ़ी बनाने गया तो वहाँ मुझे उदास जर्मन लड़की दिखी, वह अपने लिए नाश्ता तैयार कर रही थी। यूँ मैं

हमेशा कॉफ़ी बनाकर अपने कमरे में चला आता था, पर आज मैं अपनी कॉफ़ी लेकर उसके सामने बैठ गया।

"मैं माफ़ी चाहता हूँ।" मैंने कहा।

मुझे लगा कि मुझे ये फिर से कहना चाहिए। मैंने फिर से कहा, मुझे माफ़ कर दीजिए कल के लिए, फिर भी मुझे लगा कि कम है अभी।

"मेरी ग़लती थी, मुझे तुम दोनों को डिस्टर्ब नहीं करना चाहिए था।" उसने कहा।

मैं उससे सब सच कह देना चाहता था, सारा कुछ। सारथी से लेकर रिदम तक, मेरे बचपन के खिलौने से न खेल पाने की टीस से लेकर अभी के सारे झूठ तक।

"तुम बिलकुल ग़लत नहीं थी, मैं थोड़ा ज़्यादा नशे में था और मुझे ख़याल रखना चाहिए था।"

"वो है कि गई ?" उसने पूछा।

"गई।"

"तुम्हें पता है न अगर लड़की रात में सोकर सुबह बिना बताए चली जाए तो उसका क्या मतलब होता है ?"

"क्या ?" मैंने पूछा।

वह मुस्कुरा दी। आज मुझे उदास जर्मन लड़की बहुत उदास नहीं लग रही थी।

"तो क्या प्लान है आज का ?" मैंने उससे पूछा।

"क्यों तुम मुझे डेट पर ले जाने वाले हो ?" उसने कहा।

मैंने देखा उसने अपनी ब्रेड पर बहुत ज़्यादा बटर लगाया हुआ था फिर उसने cheese का एक बड़ा-सा टुकड़ा लिया और उसे बटर के ऊपर ऱखकर वह खाने लगी।

"चलो नॉर्थ डेनमार्क घुमाकर लाता हूँ।" मैंने कहा।

"अरे वाह ! वहाँ जा रहे हो, बहुत सुंदर जगह है।"

मैंने अपनी कॉफ़ी ली और किचन से निकलने को हुआ।

"वो लड़की का मैं नाम भूल गई, पर उसकी बहन के साथ मैं पहले काम कर चुकी हूँ। क्या तो नाम था उसका..." वो सोचने लगी।

"सुनो, जब मैं नॉर्थ डेनमार्क से वापस आऊँगा तो हम एक रात बाहर डिनर पर जाएँगे। ठीक है?"

"I would love that."

मुझे कुछ समझ नहीं आया था कि मुझे क्या करना था सो मैंने उससे ये पूछ लिया। फिर मुस्कुराकर उसके सामने से ऐसे निकला मानो ये बात मेरे दिमाग़ में कब से थी और अच्छा हुआ मैंने उससे पूछ लिया। मैं ख़ुद को ये सब करते देख सकता था। मैं हमेशा सारथी से बड़े गर्व से कहता आया था कि मैं कभी झूठ नहीं बोलता हूँ। उसके प्रति ग़ुस्से का मुख्य मुद्दा भी मेरा यही था कि उसने मुझसे झूठ बोला था। जो मैं अभी कर रहा था मुझे हमेशा से ऐसे आदमियों से चिढ़ रही थी। जब सारथी ने मुझे धोखा दिया तो मैं मान बैठा था कि इस दुनिया में दो क़िस्म के लोग होते हैं– एक सारथी जैसे और एक मेरे जैसे। पर मैं तो हर पल, हर कहीं, बिना झूठ के चल ही नहीं रहा हूँ। और फिर मुझे याद आया कि मैं पहले भी ऐसा ही था। मैंने छोटे-बड़े जाने कितने झूठ कहे हैं। कब मैंने सच के कवच-कुंडल पहन लिए थे? उस कवच-कुंडल के भीतर झूठ का एक शरीर था जिसे मैं छुपाए रखता था। क्या मैं कभी भी अच्छा आदमी नहीं था?

जब हम कोपनहैगन छोड़ रहे थे तो रिदम ने एक छोटे से टाउन को अपने मैप में डाला।

"हम कहाँ जा रहे हैं?" मैंने पूछा।

"Grenen डेनमार्क का northernmost point है और टिप है, वो Skagen में है। मुझे लगता है तुम्हें बहुत पसंद आएगा। अगर सीधा जाएँगे तो रात हो जाएगी, तो पहले हम Aarhus जाएँगे, बहुत ही सुंदर जगह है, वहाँ रुकेंगे फिर कल Skagen के लिए रवाना होंगे।"

मैंने Air BnB में Aarhus में रुकने की जगह तलाशनी शुरू की, सब जगहें बहुत महँगी थीं। फिर मुझे एक ठीक-ठाक हॉस्टल नज़र आया, मैंने रिदम को उस हॉस्टल का कमरा दिखाया और उसे बुक कर दिया।

हमें निकलने में बहुत देर हो गई थी। हम क़रीब साढ़े चार बजे निकले थे जबकि प्लान बारह बजे का था। रिदम के मैसेज आते रहे थे कि उसे देर हो रही है। जब रिदम पहुँची तो मैंने उससे कुछ नहीं पूछा था।

रिदम को कार ड्राइव करना सच में बहुत पसंद था। उसके भीतर एक क़िस्म की शांति रहती थी गाड़ी चलाते वक़्त। मैंने अपना फ़ोन कनेक्ट किया और अपने कुछ पसंदीदा हिंदी गाने लगा दिए। आज रिदम का मूड बहुत अच्छा था।

"कल के लिए मैं माफ़ी चाहती हूँ।" रिदम ने कहा।

"किस बात की?" मैंने पूछा।

"कल मैं जिस तरह चली गई थी। मैं मेरी बहन की वजह से बहुत

परेशान थी कल, वो कल रात भर घर भी नहीं आई।"

"माफ़ी मुझे माँगनी चाहिए थी... ख़ैर जाने दीजिए इन बातों को।"

मैं इस बारे में कोई भी बात नहीं करना चाहता था। सो मैंने रिदम से कहा कि ये सब होता रहता है। फिर मैंने कोपनहैगन के अच्छे मौसम की बात की, उदास जर्मन लड़की के बारे में उसे बताया। सारे कहे में मैं अपने झूठ को कहीं भीतर दबा देना चाहता था, बस उस झूठ को दबाने में मुझे कई और झूठी बातों का सहारा लेना पड़ रहा था। जब मैं चुप हुआ तो उसने कहा, "तुम चाहो तो पीछे की सीट पर सो सकते हो कुछ देर, मैं उठा दूँगी जब मुझे ब्रेक चाहिए होगा।"

"नहीं, मुझे नींद नहीं आ रही है।"

"तुम्हारी आँखों को देखकर लग रहा है कि तुम रात भर सोए नहीं हो।"

"अरे ऐसी कोई बात नहीं है, मैं ठीक सोया हूँ, और मुझे तुम्हारे बग़ल में बैठकर बहुत मज़ा आ रहा है।"

मुझे सच में बहुत नींद आ रही थी। भीतर एक अजीब-सी टीस उठ रही थी रात के बारे में सोचते हुए। इस बीच जब भी रिदम का फ़ोन बजता मैं डर जाता कि उसकी बहन का फ़ोन होगा। मैंने सोचा अगर ठीक इस वक़्त रिदम को कल रात के बारे में पता चल जाए तो वह मुझे गाड़ी से धक्का देकर उतार देगी। फिर मेरी इच्छा हुई कि मैं ही उसे सारा कुछ बता दूँ। इस वक़्त मेरे भीतर बहुत डर था सो मैंने तय किया कि मैं उसे टिप ऑफ़ डेनमार्क पर जाकर सब सच कह दूँगा।

ये सोचते-सोचते कब मेरी नींद लग गई मुझे पता ही नहीं चला। जब हम Aarhus पहुँचे तो रिदम ने मुझे उठाया।

"आप काफ़ी खर्राटे भी मार रहे थे।" मेरी आँख खुलते ही उसने कहा।

"मैं?"

"जी आप।"

"तो आपने उठाया क्यों नहीं?"

"इतनी गहरी नींद से उठाने का पाप थोड़ी लेना है मुझे।"

हम बाहर निकले तो तिरछी सूरज की गुलाबी किरणें पूरे Aarhus शहर पर पड़ रही थीं। रिदम ने बताया कि उसने इसी शहर में अपना कॉलेज किया है। इस शहर का चप्पा-चप्पा वह जानती है। हम नीचे नहर की तरफ़ निकल आए। "इस तरीक़े के छोटे शहर मुझे बहुत आकर्षित क़रते हैं", मैंने उससे कहा।

नीचे नहर पर रेस्टोरेंट क़तार में बने हुए थे। उसने एक रेस्टोरेंट चुना और मैं भीतर जाकर दोनों के लिए बीयर ले आया। पूरा शहर किसी निद्रा में लग रहा था, पर नहर के किनारे का माहौल बहुत जीवंत था। सीगल बार-बार खाने की तलाश में हमारे आस-पास से गुज़र जाता था।

"शब्बीर ने मुझे वो सामने वाले कैफ़े में प्रपोज़ किया था।" रिदम ने कहा।

"क्या मैं आपसे एक बात कहूँ, अगर आपको बुरा न लगे?" मैंने कहा।

"क्या?"

"आप मेरे ज़रिये वापस शब्बीर को तो नहीं जी रही हैं न?" वो मुझे देखती रही, "क्या आप शब्बीर के साथ Tip of Denmark भी गई हैं जहाँ हम कल जाने वाले हैं?"

"नहीं, वहाँ हमारा जाने का प्लान था, लेकिन हम वहाँ कभी जा नहीं पाए थे।"

"अच्छा!"

हम दोनों कुछ देर चुप रहे। फिर उसने कहा, "शब्बीर से जब संबंध ख़त्म हुआ था तो मैंने उन सभी जगहों पर जाना बंद कर दिया था जो हम दोनों को बहुत पसंद थीं। ये सारी जगहें मेरे दिमाग़ में बहुत बड़ी हो गई थीं। आपके साथ घूमते हुए सारा कुछ अपनी सहजता पर वापस आ रहा है। एक तरीक़े से मैं अपने शहर और उसकी पसंदीदा जगहों को वापस पा

रही हूँ आपके कारण।"

मैंने मुस्कुराते हुए रिदम को देखा।

"क्यों मुस्कुरा क्यों रहे हो?" उसने पूछा।

"मुझे लगा था कि आप पर शब्बीर का कोई असर नहीं हुआ था।"

"आपको लड़कियों का प्रेम में पछताना पसंद है?"

"नहीं, पर जिस तरह आपने पहले दिन शब्बीर के बारे में बात की थी, मुझे लगा कि वो आपके साथ रहना चाहता था, पर आप नहीं।"

"ये सच है, और ये भी सच है कि उस संबंध में बिताए सुंदर क्षणों को मैं अपने पास रखना चाहती हूँ, मैं उन्हें नहीं भुलाना चाहती।"

"अगर संबंध में सुंदर क्षण थे तो वो संबंध ख़त्म क्यों हो गया?"

"हम यहाँ किसकी बात कर रहे हैं? मेरी या आपकी?"

"मतलब!" मैंने पूछा।

"आपको पता है न कि आप शब्बीर नहीं हैं!" हल्की मुस्कुराहट के साथ उसने कहा।

मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था। मैंने बीयर का एक बड़ा सिप लिया और वह सामने वाले कैफ़े की तरफ़ देखने लगी।

"हम वहाँ जाकर क्यों नहीं बैठते हैं, जिस जगह को आप देख रही हैं?" मैंने पूछा।

"मैं बस दूर से इसे देखना चाहती थी। जब आप किसी चीज़ के भीतर होते हो तो उसे देख पाना मुश्किल हो जाता है।"

हमने एक एक बीयर और ऑर्डर की। यहाँ शाम थोड़ी ठंडी थी। दूसरी बीयर पीकर हमें पता चला कि हम दोनों ही थके हुए हैं। हमने कार की तरफ़ वापस चलना शुरू किया। रिदम शहर की सारी सड़कों को पहचानती थी। उसकी आँखें हर तरफ़ थीं, वह हर गली को देख लेना चाहती थी, हर दुकान पर लिखी चीज़ों को पढ़ लेना चाहती थी।

जब हम हॉस्टल पहुँचे तो अँधेरा हो चुका था। रिदम ने कहा कि हमें कुछ बीयर उठा लेना था रात के लिए। मैंने हाँ कहा, पर मेरी और पीने की

हिम्मत नहीं थी। हमने गाड़ी से सामान निकाला और हॉस्टल के काउंटर पर पहुँचे। उसने हमारे आईडी माँगे और दो चाबियाँ दे दीं।

"दो चाबियाँ?" रिदम ने पूछा।

छोटे कमरे हैं तो मैंने दो कमरे बुक कर दिए।

"ओ! अच्छा! ठीक है!"

रिदम ने ये तीनों शब्द अलग-अलग कहे थे। मैं थोड़ा झिझक गया, पर मैंने अपने चेहरे से मुस्कुराहट जाने नहीं दी। उसने अपना सामान उठाया और अपने कमरे की तरफ़ चल दी। मैंने एक बोतल पानी लिया और अपने कमरे की तरफ़ बढ़ गया। उसका कमरा नंबर तीन था और मेरा चार। मैं उसके कमरे की हलचल अपने कमरे में सुन सकता था। अपना सामान खोलने में मैं कम-से-कम आवाज़ कर रहा था। मैंने अपना फ़ोन चेक किया। पारुल का कोई मैसेज नहीं था। मुझे इस बात की ख़ुशी थी। अगर मैं और रिदम एक ही कमरे में रुक जाते तो शायद मेरा रिदम के साथ एक दिन भी और बिताना मुश्किल हो जाता। तब असल धोखा होता और मैं रिदम को धोखा नहीं देना चाहता था। मैं ऐसा करके अपनी सच्चाई के सबूत अपने पास जमा करना चाहता था। मुझे लगा कि मैं अभी खेल सकता था जीवन से, पर मैंने फिर बड़े होने के नियमों को चुनना ठीक समझा। मैंने रात में कई बार रिदम के दरवाज़े का खुलना और बंद होना सुना, पर मैं ख़ामोश रहा। लाइट बंद करके अपने बिस्तर में लेटा रहा। मैं चाहता था कि मुझे नींद आ जाए, पर कार में सो जाने की वजह से मैं तुरंत सो नहीं पा रहा था। काश एक बीयर और होती!

मैं लेटे-लेटे सारथी के बारे में सोचने लगा। कहाँ होगी वह अभी? क्या वह उसी के साथ होगी? क्या वह मेरे बारे में सोच रही होगी कि मैं अभी कहाँ होऊँगा? मुझे सारथी का मुस्कुराता हुआ चेहरा दिमाग़ में आया, पर वो थोड़ा धुँधला हो चला था। क्या वह अतीत के धुँधले चेहरों में शामिल होती जा रही थी? अजीब-सी टीस भीतर उठी और मैं अपने बिस्तर पर करवटें बदलने लगा। क्या जब मैं सारथी की बात कर रहा होता हूँ तो मैं

उस सारे अतीत की भी बात कर रहा होता हूँ जो अतीत के हल्के धुँधलके में खोता गया था मैं? मेरा बचपन, उसके खेल, वहाँ के दोस्त, नदी, मेरा पहला जॉब, दिल्ली शहर। शायद सारथी अतीत का दरवाज़ा हो गई थी। उसके बारे में सोचते ही वो दरवाज़ा खुल पड़ता और उसके खुलते ही सारा अतीत वहाँ अपने धुँधलके में मेरे भीतर आने की प्रतीक्षा में खड़ा मिलता।

अचानक मुझे सारथी के मुस्कुराते चेहरे से ईर्ष्या होने लगी। मैं तुरंत पारुल के बारे में सोचने लगा। अँधेरे कमरे में देखा उसका नग्न शरीर, उसके उभार, उसकी जाँघें, कमर, उसके सुडौल स्तन। कितनी कोमल थी उसकी त्वचा, कितनी वासना भरी हुई थी मेरे भीतर। मेरे हाथ मेरे पैंट के भीतर जाने लगे, मैं बिस्तर पर करवटें लेने लगा।

कुछ देर बाद मैं बाथरूम जाने के लिए खड़ा हुआ तभी खिड़की से देखा रिदम लॉन में सिगरेट पीती हुई फ़ोन पर किसी से बात कर रही है। अच्छा हुआ मैंने अपने कमरे की लाइट नहीं जलाई। मैं बाथरूम करके चुपचाप बिस्तर पर वापिस आया और कब मुझे नींद आई मुझे पता ही नहीं चला।

हम Tip of Denmark के रास्ते पर थे। वह सुबह बहुत चुप थी। जब मैंने पूछा तो उसने कहा कि हॉस्टल में सुबह अच्छी कॉफ़ी नहीं मिली, मुझे अच्छी कॉफ़ी चाहिए। पूरे रास्ते हम चुपचाप चलते रहे। मैंने गाने लगा दिए थे। बीच में तो मेरी इच्छा हुई कि पीछे वाली सीट पर सो जाऊँ, पर वो थोड़ा ज़्यादा हो जाता। हम बीच में एक बहुत ही ख़ूबसूरत छोटे शहर में कॉफ़ी के लिए रुके। मुझे भूख लग रही थी, पर उस छोटे शहर के कैफ़े में खाने को कुछ नहीं था। मैंने एक croissant लिया और रिदम ने कॉफ़ी।

"जहाँ हम जा रहे हैं वो Denmark's Northernmost Point है।" रिदम ने कहा।

रिदम ने एक कॉफ़ी और ले ली थी रास्ते के लिए। मैंने गाने की आवाज़ थोड़ी कम की।

"जब पिछली बार मैं अकेले आई थी तो वहाँ बहुत शांति थी, सिर्फ़

लहरों की आवाज़ थी। मैंने तभी सोचा था कि मैं शब्बीर को लेकर वहाँ ज़रूर आऊँगी। वहाँ पर दो समुद्र मिलते हैं और उन दोनों समुद्र के पानी को आँखों के सामने एक-दूसरे से भिड़ते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है। मानो आपके भीतर सच और झूठ लड़ रहे हों– Skagerrak और Kattegat का समुद्र।"

"कल रात आपको अच्छी नींद आई?" मैंने पूछा।

"कल रात बड़ी मुश्किल से पारुल से बात हुई। अब हमारे बीच सब ठीक है। वो मुझे लेकर बहुत ही अजीब बर्ताव करती है। ख़ासकर जब वो हार्ड ड्रग्स करती है।"

"क्या? वो..." मैं अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाया था।

"छूट गई थी ड्रग्स की लत, पर फिर भी कभी-कभी वो फिसल जाती है। तब मुझे ही सँभालना पड़ता है।"

मैं रिदम के चेहरे को देर तक देखता रहा था। मैं डरा हुआ था कि कहीं पारुल ने उसे सारा कुछ न बता दिया हो। लेकिन अगर ऐसा कुछ हुआ होता तो हम दोनों इस वक़्त साथ नहीं होते।

हम जैसे ही समुद्र पर पहुँचे तो हमें पार्किंग मिलनी मुश्किल हो गई। रिदम आश्चर्य में थी कि इतने सारे लोग क्यों हैं यहाँ! जब हम बीच पर चलते हुए Tip की तरफ़ जा रहे थे तो रिदम लगातार माफ़ी माँग रही थी। मैं उससे कह रहा था कि मुझे बहुत अच्छा लग रहा है यहाँ। भीड़ सच में बहुत थी, पर सब अपने में व्यस्त थे और एक तरह के उत्सव का माहौल बहुत ही मज़ेदार था। खुले आसमान में हवा बहुत तेज़ थी जो शरीर से टकराते ही चेहरे पर मुस्कुराहट भर देती थी। रिदम ने अपनी चप्पल उतारकर हाथों में रख ली थी, मैंने भी अपने जूते उतारे और उन्हें अपने हाथों में रख लिया। हम दोनों समुद्र के ठंडे पानी में चलते हुए Tip की तरफ़ पहुँच रहे थे। वहाँ पहुँचकर सच में दो समुद्र का आपस में टकराना देखा जा सकता था। पानी इतना साफ़ था कि मेरी इच्छा हो रही थी कि कपड़े उतारकर अभी पानी में कूद जाऊँ। तभी चारों तरफ़ से लोग तस्वीरें

खींचने के लिए वहाँ कूद पड़े। हम ज़्यादा देर वहाँ रुक नहीं पाए थे। जब हम पानी में चलते हुए वापस आ रहे थे तो रिदम ने मेरा हाथ पकड़ लिया। हम दोनों एक-दूसरे के पास खिसक आए थे, हमारे कंधे आपस में टकरा रहे थे। उसकी उँगलियाँ मेरे हाथों पर हरकत कर रही थीं। मुझे पता था यही वो वक़्त था जब चलते-चलते मैं रिदम को चूम सकता था। मेरा पूरा शरीर उस तरफ़ बढ़ रहा था, पर दिमाग़ में 'धोखा' शब्द गूँज रहा था। काश मैं पारुल के साथ नहीं सोया होता। पता नहीं इस वक़्त रिदम क्या सोच रही होगी! मेरे आगे न बढ़ने के क्या मायने निकाल रही होगी! मैं चाहता था कि उसे ठीक इस वक़्त सब कुछ बता दूँ। पर जिस तरह मैं उसे धोखा नहीं देना चाहता था ठीक उसी तरह मैं उस वक़्त के उसके संसार को ध्वस्त भी नहीं करना चाहता था।

हम जब वापस कार में बैठे थे तो उसने मुझे एक अजीब-सी सांत्वना भरी दृष्टि से देखा था। उसकी वो बेचारी-सी मुस्कुराहट मेरे भीतर तक प्रवेश कर गई थी। यूँ मैं ऐसे वक़्त अपनी आँखें हटा लिया करता था पर इस वक़्त मैं निढाल-सा उसे देखे जा रहा था। गाड़ी में गहरी चुप्पी थी, हमारे हल्के हिलने की भी सरसराहट बहुत ज़्यादा सुनाई दे रही थी।

"क्या मैं तुम्हारी गोद में अपना सिर रख सकता हूँ।" मैंने पूछा।

उसने अपना एक हाथ ऊपर उठाया और मेरे सिर के पीछे के बालों को सहलाने लगी। मैंने अपना सिर धीरे से उसकी गोद में रख दिया। मैंने देखा मैं सिसकियाँ ले रहा हूँ। मैं रुक जाना चाहता था पर मुझसे रुका नहीं जा रहा था। कुछ देर बाद मैंने अपने आपको रोकने की सारी कोशिशें त्याग दीं। तभी मुझे अचानक लगा कि यही तो वो पेंटिंग है, Edward Munch की, Vampire.

हम अब Horsens की तरफ़ जा रहे थे। वहाँ रिदम का एक फ़ैमिली फ़्लैट था। जब वह यहाँ कॉलेज में थी तब वह वहीं रहा करती थी। हमें पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई थी। हमने बाज़ार से छह बीयर का एक पैक उठा लिया था। गाड़ी पार्क करके जब हम सामान लेकर उसकी बिल्डिंग

की तरफ़ बढ़ रहे थे तो रिदम बीच में ही रुक गई। वह ऊपर तीसरे फ़्लोर की खिड़की को देख रही थी, उसने अपना सामान नीचे रखा और पर्स से अपना फ़ोन निकाला। मैं उसके पीछे रुका रहा और उस खिड़की की तरफ़ देखने लगा जिस खिड़की को रिदम देख रही थी। उसने फ़ोन लगाया और मुझसे थोड़ी दूर जाकर खड़ी हो गई, फिर वह डैनिश में बात करने लगी। वह अपनी आवाज़ को दबाकर बात कर रही थी। तभी तीसरे फ़्लोर की खिड़की खुली और पारुल ने हम दोनों को हाय कहा। उसके कान में फ़ोन लगा हुआ था। रिदम ने फ़ोन काटा और मुझसे कहा, "पारुल यहीं कॉलेज में पढ़ती है, पर वो दो दिन बाद आने वाली थी। मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था।"

जब रिदम आगे चली गई तो पारुल ने मुझे आँख मारी। मैंने अपना सिर झुका लिया। पारुल ने हम दोनों का स्वागत ऐसे किया मानो यही हमारा प्लान था।

"कहाँ ग़ायब हैं आप सलीम साहब?" पारुल ने मेरे स्वागत में बोला।

"बस यहीं हूँ, आप ठीक हैं?" मैंने पारुल से आँखें मिलाए बिना पूछा।

"एकदम, वेल्कम टू माय फ़्लैट!"

उस फ़्लैट में दो छोटे कमरे थे। रिदम ने मुझे इशारे से दाहिनी तरफ़ वाले कमरे में जाने को कहा। मैं अपना सामान लेकर उस कमरे में चला गया। पारुल किचन में चली गई और रिदम अपना सामान लेकर दूसरे कमरे में चली गई जो शायद पारुल का कमरा था।

"कॉफ़ी कौन-कौन पिएगा?" किचन से पारुल की आवाज़ आई।

मैं जवाब दूँ उससे पहले रिदम ने अपने कमरे से पारुल को पुकारा और कहा कि मुझे कुछ बात करनी है। पारुल ने जब कमरे में प्रवेश किया तो रिदम ने पीछे से कमरे का दरवाज़ा बंद कर दिया। मैं पारुल को मैसेज करना चाह रहा था कि हमारी बिताई रात का ज़िक्र रिदम से न करे, पर अब बहुत देर हो चुकी थी। बाहर आती उनकी आवाज़ों में डैनिश भाषा के जो शब्द मेरे कानों में पड़ रहे थे मैं उनका मतलब समझने की कोशिश

करता रहा। मुझे उनकी बातचीत में सलीम नाम बार-बार सुनाई दे रहा था।

हवा में हल्की ठंड थी, पर मुझे पसीना आ रहा था। यहाँ, ठीक इस वक़्त मुझे लगने लगा था कि मैंने रिदम को धोखा दिया है। मैं शायद सारथी को धोखा देना चाह रहा था, मैं उससे बदला लेना चाहता था, उससे ले नहीं पाया था तो रिदम से ले लिया। मैं एक तरीक़े के कारण बटोरने लगा कि मुझे मेरे संबध में धोखा मिला था, मैं उस धोखे को सहन नहीं कर पाया था इसलिए भागकर यहाँ चला आया, मैं दिमाग़ी रूप से बीमार हूँ, सो जो हो गया उसे बीमार दिमाग़ की हरकत ही समझें। और यूँ मैंने आपको अभी तक छुआ भी नहीं है, हम दोस्त हैं, उससे ज़्यादा कुछ नहीं। और यूँ भी किसी भी संबंध में हमें धोखे की जगह हमेशा रखनी चाहिए, धोखा प्रेम का ही पूरक है, अगर प्रेम है तो धोखा होगा। ये मैं क्या कह रहा था। ये सब ग़लत था। मैंने फिर कोशिश की, देखिए जैसे आप शब्बीर के बाद किसी से भी संबंध के लिए तैयार नहीं हैं वैसे ही मैं भी तैयार नहीं हूँ। और एक रात के सेक्स से क्या होता है? मैंने ये सोचते ही अपना सिर पकड़ लिया। कोई भी कारण मेरे भीतर की ऊहापोह को कम नहीं कर पा रहे थे।

कुछ देर में पारुल बाहर निकली और बाथरूम में चली गई। पारुल के कमरे का दरवाज़ा खुला था पर भीतर कोई आहट नहीं हो रही थी। मैं खड़ा हुआ ताकि आगे बढ़कर उस कमरे में झाँककर देख सकूँ। तभी रिदम निकली और सीधा किचन में चली गई। उसने अपने लिए एक बीयर का कैन खोल लिया। मैं इंतज़ार करता रहा कि कोई मुझसे भी बात करे पर दोनों बहनें गहरी चुप्पी में थीं। रिदम बीयर लेकर वापस कमरे में चली गई पर इस बार उसने दरवाज़ा बंद नहीं किया। मैंने कुछ क़दम आगे बढ़ाए ताकि मैं रिदम से बात कर सकूँ पर तभी पारुल बाथरूम से निकली, उसने घर की चाबी टेबल से उठाई और दरवाज़ा खोलकर घर से बाहर निकल गई। जाते वक़्त उसने बहुत तेज़ी से दरवाज़ा बंद किया जिससे मैं थोड़ा डर गया। किसी ने भी मुझसे एक भी शब्द नहीं कहा था अभी तक, उन्हें पता था न कि मैं भी यहीं हूँ।

मैं रिदम के कमरे की तरफ़ बढ़ा और भीतर झाँका तो देखा कि रिदम किसी से फ़ोन पर बात कर रही थी। मैं उसके भीतर का ग़ुस्सा उसके पूरे शरीर पर देख सकता था। मैं वापस अपने कमरे में चला आया और अपने सामान के पास बैठ गया। कुछ देर में रिदम बाहर आई और सीधा मेरे सामने आकर खड़ी हो गई।

"सलीम, तुम अपना सामान पैक ही रखना, मैं तुम्हें कोपनहैगन की बस तक छोड़ दूँगी।"

ये कहकर रिदम ने अपना पर्स उठाया, उसमें उसने एक बार गाड़ी की और घर की चाबी देखी और बाहर निकल गई। मैंने तुरंत अपना फ़ोन देखा तो उसमें पारुल के मैसेज थे।

'मेरी बहन पगला गई है, वो आ रही है मुझसे मिलने कैफ़े में, मैं तुमसे मिलकर बात करूँगी, तुम चुप रहना बस। And delete this chat.'

मैं इतना असहज धोखा खाते वक़्त नहीं था जितना असहज धोखा देने में हो रहा था। मैं पूरी तरह फँस चुका था और मुझे साँस लेने में दिक़्क़त महसूस हो रही थी। उस ख़ाली फ़्लैट में मैं कुछ देर तक चक्कर लगाता रहा। दीवार पर लगी एक तस्वीर के सामने मैं रुक गया जिसमें दोनों बहने एक-दूसरे के गले में हाथ डाले हँस रही हैं। मुझे मेरे हाथों में रिदम की उँगलियों की छुअन महसूस हुई। मैंने तुरंत अपना फ़ोन निकाला और सर्च किया Horsens से कोपनहैगन कैसे जाया जा सकता है। Aarhus से रात की एक बस थी, पर यहाँ से Aarhus जाने का कोई रास्ता दिख नहीं रहा था। मैंने टैक्सी देखी जो बहुत महँगी थी। पर इस वक़्त मेरा यहाँ से निकलना बहुत ज़रूरी था, मैं रिदम का सामना नहीं कर सकता था। हाँ, मैं शुतुर्मुर्ग़ हूँ, मैंने ख़ुद से कहा, मुझे अपना चेहरा रेत में घुसाना पड़ेगा ताकि ये सब ग़ायब हो जाए। मैंने तुरंत टैक्सी बुक की और एक ख़त रिदम को लिखा।

दोस्त रिदम,

मेरा अभी यहाँ रहना ठीक नहीं है, मैं जानता हूँ। मैं वापस कोपनहैगन जा रहा हूँ। मुझे माफ़ कर देना।

ख़याल रखना,

तुम्हारा दोस्त

सलीम।

पंद्रह मिनट में टैक्सी आ चुकी थी। मैं जब टैक्सी में अपना सामान रख रहा था तो मेरी निगाह ऊपर फ़्लैट पर गई। मैं लाइट बंद करना भूल गया था। जब रिदम वापस आएगी तो उसे लगेगा कि मैं घर पर ही हूँ, पर मैं जा चुका होऊँगा। अब देर हो चुकी थी, अब हर चीज़ के लिए देर हो चुकी थी। मुझे पता था कि मैं ग़लती कर रहा था, मुझे पता था कि मैं बदल सकता था, मैं सारी चीज़ों का सामना कर सकता था पर एक बार फिर मैं भाग रहा था। मैंने अपना सिर नीचे किया और टैक्सी में बैठ गया।

मैं बस में रात भर सो नहीं पाया। हर थोड़ी देर में मैं एक गहरी साँस लेता पाया जाता। तभी मुझे वो किताब याद हो आई जो रिदम ने मुझे दी थी, The Beekeeper of Aleppo, मैं उसे पढ़ने लगा। जब सुबह-सुबह कोपनहैगन पहुँचा तो आधी से ज़्यादा किताब ख़त्म हो चुकी थी। ये किताब नूरी और उसकी पत्नी आफ़्रा के बारे में है, नूरी मधुमक्खी पालन का काम करता था सीरिया में, फिर वहाँ के गृह युद्ध की वजह से उन्हें वहाँ से भागना पड़ा। वे दोनों अपने दोस्त के पास लंदन पहुँचना चाहते थे, पर शरणार्थी बनकर वहाँ पहुँचना बहुत ही कठिन था। मैं नूरी और आफ़्रा की कहानी में पूरी तरह घुस चुका था। मेरी असहजता को इस कहानी में कहीं पड़ाव-सा नज़र आने लगा था। अपने काम के अलावा मैंने पहली बार कोई किताब उठाई थी जिसे मैं सिर्फ़ पढ़ने के लिए पढ़ रहा था। इसमें कोई दबाव नहीं था, कहीं भी मुझे नोट्स नहीं लेने थे, कहीं भी इसके फ़ैक्ट्स कॉपी नहीं करने थे। मैं बस नूरी की कहानी में उसके साथ था, मैं रिफ़्यूजी था, मैं

जैसे-तैसे लंदन पहुँचना चाहता था।

जब मैं कोपनहैगन पहुँचा तो सीधा अपने कमरे में जाकर पसर गया, पर कमरे में भी नींद का नाम-ओ-निशान नहीं था। मैं करवटें बदलता रहा। जब नींद नहीं आई तो मैं वापस किताब पढ़ने लगा। कुछ देर बाद फ़ोन देखा तो न ही रिदम और न ही पारुल का कोई मैसेज था। किताब ख़त्म होने को थी और मुझे लगा मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं बीमार हूँ। मैंने अपना हाथ देखा तो वो ठंडा था, पर मुझे लग रहा था कि मुझे बुख़ार है। ऐसा ही तो मैं दिल्ली में महसूस कर रहा था जब मैंने ये यात्रा करने के बारे में सोचा था। वहाँ हमेशा लगता था कि मुझे बुख़ार है। मैं इतनी दूर आकर वापस वैसा-का-वैसा महसूस कर रहा था। हम कहीं भी चले जाएँ हम अंत में अपने लिए वैसा-का-वैसा संसार गढ़ लेंगे जिसके हम आदी हैं। क्या सारथी ने कभी ऐसा बुख़ार महसूस किया होगा?

मैं किचन में गया, ख़ुद के लिए चार अंडों का ऑमलेट बनाया और चार ब्रेड गर्म की। मैं बहुत सारा खा लेना चाहता था, ताकि पेट भर जाए और मैं सो सकूँ। तभी मुझे पीछे के कमरे के खुलने की आहट हुई, अँगड़ाई लेती हुई उदास जर्मन लड़की किचन में आई।

"क्या कर रहे हो सुबह-सुबह?"

"मुझे भूख लगी है, आप कुछ खाएँगी?"

"हाँ, मेरे लिए भी बना दो जो भी तुम अपने लिए बना रहे हो, मैं मुँह धोकर आती हूँ।"

वह बाथरूम में चली गई और मैंने अपने बन रहे नाश्ते को दो भागों में बाँट दिया और दोनों के लिए कॉफ़ी चढ़ा दी। मेरी घबराहट और बढ़ रही थी क्योंकि रिदम का एक भी मैसेज नहीं आया था। मुझे पूरा यक़ीन था कि पारुल ने उसे सब कुछ बता दिया है।

"कहाँ थे इतने दिनों?" उदास जर्मन लड़की ने पूछा। हम नाश्ता करने किचन में लगी टेबल पर बैठ गए थे।

"बताया तो था कि मैं नॉर्थ की तरफ़ गया था।"

"हाँ, उसी लड़की के साथ?"

"हम्म, कहानी थोड़ी कॉम्प्लीकेटेड है। पर अब मैं वापस आ गया हूँ। तुमने क्या किया?"

"मैं काम कर रही थी। मुझे पैसे जमा करना है ताकि मैं स्पेन की यात्रा कर सकूँ।"

"स्पेन?"

"हाँ, क्या हुआ? आपको स्पेन पसंद नहीं है?" उसने पूछा।

"ऐसा नहीं है, मैं तो कभी कहीं गया नहीं हूँ, पर मुझे लगता है कि आपको कुछ अलग देखना चाहिए, जैसे भूटान, कंबोडिया, भारत। मतलब स्पेन तो ऐसा ही है लगभग, जितना मुझे लोगों से पता है।"

"हाँ, कह तो सही रहे हो। तो जब आप वापस भारत जाओगे तो मुझे बुला लेना।"

"ठीक है, वादा रहा।" मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"हम तो ड्रिंक पर जाने वाले थे, उस वादे का क्या हुआ?"

"मुझे याद है, हम जल्द जाएँगे।"

तभी रिदम का मैसेज आया– 'मैं कल आ रही हूँ कोपनहैगन और मिलना चाहती हूँ तुमसे आते ही।'

उसका मैसेज देखकर मैं थोड़ा असहज हो गया।

"क्या हुआ? ऑल ओके?" उदास जर्मन लड़की ने पूछा।

"हाँ, मुझे ये बताओ कि जर्मनी कैसा है?"

"बहुत अच्छा है।"

"अगर मुझे जर्मनी जाना है तो कैसे जाया जा सकता है?"

"कब जाना है?"

"अभी?"

"सच में?"

"हाँ।"

"बस से सफ़र करने में कोई दिक़्क़त है?"

"बिलकुल नहीं, अभी मैं बस से ही वापस आया हूँ।"

"जिस पब में मैं काम करती हूँ उसके पीछे की तरफ़ जो सड़क है न, बस-अड्डा वहीं पर है। जर्मनी में कहाँ जाना चाहोगे?"

"बर्लिन।"

"पहले हैमबर्ग जाओ, मैं हैमबर्ग से ही हूँ, तुम्हें पसंद आएगा।"

उसने मुझसे Flixbus की ऐप मेरे मोबाइल पर डाउनलोड करवाई और मैंने हैमबर्ग की टिकट बुक कर दी। साथ-ही-साथ वहीं हॉस्टल में एक कमरा भी बुक कर दिया।

"कितने बजे की है बस?" उसने पूछा।

"एक घंटे बाद की।"

उदास जर्मन लड़की मुझे आश्चर्य से देखने लगी।

"काश मैं भी तुम्हारी तरह होती!" उसने कहा।

"तुम्हें क़तई पता नहीं है कि कितना अच्छा है कि तुम मेरी तरह नहीं हो।"

ये कहते हुए पता नहीं क्या हुआ कि मेरी आवाज़ भारी हो गई। मेरे सारे संवादों में ये वाक्य शायद सबसे ईमानदार वाक्य था। उदास जर्मन लड़की ने अपना एक हाथ मेरे हाथों पर रख दिया।

"अगर मेरा काम नहीं होता तो मैं भी तुम्हारे साथ चल देती।" उसने कहा।

"अगली बार।" मैंने कहा और उसके सामने से उठकर चला गया। उसके स्पर्श में इतना स्नेह था कि अगर कुछ देर और बैठता तो मेरी आँखें गीली हो जातीं।

मैं Flixbus में बैठा था और Hamburg की तरफ़ जा रहा था। मेरी सीट 10 D थी और 10 C पर जो आदमी बैठा था, वह मुझे भारतीय लग रहा था। Flixbus में फ्री Wi-Fi मिलता था तो मैंने तुरंत लैपटॉप खोला और अपने मेल चेक किए। मेरे ऑफ़िस से मेल आए हुए थे, मुझे

बुलाया जा रहा था। मैंने तारीख़ देखी, मेरी छुट्टी में एक हफ़्ता बाक़ी था। मैंने ऑफ़िस वालों को कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि मैं सलीम था इस वक़्त, मैं इतनी जल्दी सलीम को छोड़ना नहीं चाहता था। तभी Flixbus के चालक ने एनाउंस किया कि इस बस का वातानुकूलन ख़राब है और Wi-Fi भी आगे काम नहीं करेगा। मेरे बग़ल में बैठे आदमी के मुँह से गहरी आह निकली। मैंने फिर अपना हाथ देखा, मुझे लग रहा था कि मुझे बुख़ार है, पर हाथ फिर ठंडे निकले। वो बग़ल वाला आदमी बार-बार मुझे देख रहा था, मुझे डर था कि कहीं वह मुझसे बातें न करने लगे सो मैंने अपने हेडफ़ोन पर गाने लगाए और किताब के आख़िरी पन्नों को पढ़ने लगा।

जब मैंने किताब ख़त्म की तो मैं पसीने में तर-ब-तर था। मेरा हाथ सीधा मेरे फ़ोन पर गया। मैं रिदम को किताब के बारे में मैसेज करना चाहता था, उससे मिलकर नूरी के बारे में ढेर सारी बातें करना चाहता था। पर मैंने देखा कि रिदम ने जो मैसेज मुझे भेजा था उसे भी उसने डिलीट कर दिया था। मैंने तुरंत रिदम को मैसेज किया।

'रिदम, मुझे माफ़ कर देना! मैं बीमार हूँ, मैं कोपनहैगन अभी बर्दाश्त नहीं कर पा रहा हूँ इसलिए जर्मनी की तरफ़ निकल गया हूँ। जर्मनी पहुँचकर तुम्हें फ़ोन करूँगा। और हाँ मैंने The Beekeeper of Aleppo पढ़ी और बहुत-बहुत धन्यवाद इस किताब के लिए। एक बार फिर माफ़ी दोस्त!'

कोपनहैगन, डेनमार्क बहुत पीछे छूट गया था। पर सारा कुछ पीछे रह जाने पर भी सारा कुछ साथ चलते जा रहा था। तभी ड्राइवर ने कहा कि हम लोग शिप से समुद्र पार करेंगे तो आप लोग क़रीब पैंतालीस मिनट तक उस शिप की कैंटीन में खा-पी सकते हैं। मुझे अच्छा लगा कि कम-से-कम एक घंटे तो बस की गर्मी से थोड़ी राहत मिलेगी। बस शिप की पार्किंग में खड़ी हो चुकी थी और उसके रुकते ही लोग उतरने लगे थे। सभी लोग गर्मी से परेशान थे और जल्द-से-जल्द बस से बाहर निकल जाना चाहते थे। मैंने अपना हेडफ़ोन निकाला और अपनी सीट से उठकर बाहर निकलने लगा। तभी मेरे बग़ल में जो आदमी बैठा था उसने मुझसे हिंदी में कहा, "कहाँ से हो बर्खुरदार ?"

मुझे लगा जैसे वह मेरे हेडफ़ोन उतारने का इंतज़ार कर रहा था। जिस तरह उसने बर्खुरदार कहा था मैं समझा कि ये शायद अफ़ग़ानिस्तान से है। मैंने उससे कहा कि मैं भारत से हूँ।

"मेरा नाम मुबारक है, तुम्हारा नाम क्या है ?" उसने पूछा।

"मेरा नाम............ रिद्म है।"

मुझे पता नहीं क्या हुआ कि मैंने अपना नाम रिदम बताया। वह मुझे देखता रहा, मैंने फिर बोला, "रिदम, रिदम है मेरा नाम।"

वह और भी कुछ पूछना चाहता था, पर मैंने उसे 'एक्सक्यूज़ मी' कहा और बस से उतर गया। मैंने अभी-अभी किताब पढ़कर ख़त्म की थी मैं उसके सुरूर में था। पहली बार किसी किताब का सुरूर इतना अच्छा

था कि मैं नूरी को अपने क़रीब रखना चाहता था। मैं बस से निकलकर कुछ क़दम ही चला होऊँगा कि मैंने देखा वह मेरे ठीक पीछे-पीछे चलने लगा था। मैं सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कुछ देर रुक गया ताकि वह आगे निकल जाए, पर मेरे साथ-साथ वह भी रुक गया। मैं आगे बढ़ा तो वह फिर मेरे साथ-साथ चलने लगा। अंत में मैंने रुककर पूछा, "कहाँ जाना है मियाँ?"

उसने कहा, "मुझे भूख लगी है, चलो कुछ खाते हैं।"

मैंने कहा, "चलो नहीं दोस्त, आप जाओ।" पर वह नहीं माना, वह मेरे पीछे ही आता रहा। मैं रुकूँ तो वह भी रुक जाए, मैं चलूँ तो वह भी चलने लगे। अंत में हारकर मैं उसे खाने की जगह ले गया और उसे बताया कि खाना कैसे लेना है, पर वह पीछे पड़ा रहा कि चलो साथ ही खाएँगे। तब मुझे पता चला कि उसे अँग्रेज़ी, जर्मन, डैनिश कुछ भी नहीं आती। उसे ये भी नहीं पता था कि यहाँ खाना कैसे लेते हैं। मैंने उसको दो बार समझाया कि वहाँ से खाना उठाओ और यहाँ लाइन में लग जाओ और जब तुम्हारा नंबर आएगा तो पैसा दे देना। पर वह फिर कहे कि चलो फिर लेते हैं साथ ही खाना। मैं उसकी तरफ़ ग़ुस्से से देखने लगा तो उसने कहा, "रिदम मियाँ, मैंने कल दोपहर से कुछ नहीं खाया है, चलो कुछ खा लेते हैं।"

उसने रिदम नाम इतने अपनेपन से लिया कि मुझसे रहा नहीं गया। मैं उसे अपने साथ ले गया। उसने अपने लिए तीन बर्गर उठाए, एक पानी की बोतल और एक जूस। उसे जो सामने दिखा वह उसे उठाता गया। मैंने उससे कहा आगे और भी चीज़ें हैं, पर उसने कहा कि बस इतना ही चाहिए अभी। मैंने एक जूस की बोतल अपने लिए उठा ली। जब वह खाने बैठा तो उसे पता चला कि बर्गर तो ठंडे हैं और पानी सोडे वाला है। उसने मुँह बनाया, पर उसे भूख ज़ोरों की थी सो वह धीरे-धीरे करके बर्गर चबाता रहा और उसे सोडे के पानी से अंदर गटकता रहा। जब वह दो बर्गर खा चुका था तब मेरा ध्यान गया कि बर्गर में तो pork भी है, और इस्लाम में सूअर हराम है, पर मुझे लगा कि अब बहुत देर हो चुकी है सो मैंने उससे कुछ नहीं कहा। खाने के बाद उसकी आवाज़ में थोड़ा उत्साह आया तो मैं

उठकर जाने लगा, पर उसने रोक लिया।

"रिदम भाई, यहाँ तो कुछ समझ नहीं आता है मुझे, आप मेरे साथ ही रहो।" मुबारक ने कहा और मुझे लगा कि मैं फँस चुका हूँ, मुझे इसके साथ ही बैठना पड़ेगा।

"मुबारक मियाँ, कब से हो यहाँ?" मैंने पूछा।

"रिदम भाई, बस अभी कुछ दिन ही हुए हैं।"

"क्या करोगे हैमबर्ग में?"

"मैं लोहार हूँ, वेल्डिंग में महारत है मुझे। अफ़ग़ानिस्तान में मेरी कारीगरी मशहूर थी।"

वह इतना भोला निकलेगा इसका मुझे इल्म नहीं था। उसमें मुझे नूरी की झलक दिखी। मैं ख़ुद को कोसने-सा लगा कि किताब के नूरी के साथ मैं था और जब यहाँ मेरे सामने उसी जैसा एक आदमी है तो मैं उससे बिदक रहा हूँ! खाने के बाद उसने आस-पास बैठी लड़कियों को देखा। फिर उसने मुझे इशारा किया कि देखो उन लड़कियों को, मैं उसकी तरफ़ देखकर मुस्कुराने लगा।

"भाईजान, यहाँ बहुत ही सुंदर लोग हैं।" उसने कहा।

"क्या उम्र है तुम्हारी?"

"बीस", फिर उसने थोड़ी देर सोचा, "उसमें तीन और जोड़ लो।"

"तुम पढ़े-लिखे नहीं हो?"

"भाईजान, जंग अगर वतन में हो रही हो तो कौन पढ़ सकता है!"

खाना खाने के बाद मैं सिगरेट पीने शिप की डेक पर गया। मुबारक भी मेरे पीछे-पीछे आ गया। मैंने सिगरेट जलाई तो उसने भी अपने लिए सिगरेट माँग ली। मैंने देखा उसे सिगरेट पीना आता नहीं था। हम दोनों अपनी ख़ामोशी में सिगरेट पीते रहे। मुबारक की आँखें हर तरफ़ भटक रही थीं। वह कभी डेक पर खड़े लोगों को देखता तो कभी दूर समुद्र को ताकता रहता। क्या चल रहा होगा उसके दिमाग़ में? क्या वह वही सब सोच रहा होगा जो नूरी सोच रहा था जब वह ग्रीस के रिफ़्यूजी कैंप में फँसा हुआ

था ? तभी डेक पर बहुत तेज़ हवा चलने लगी थी। हमारा वहाँ खड़ा रहना मुश्किल हो रहा था सो हम वापस नीचे कैंटीन की तरफ़ आ गए। कैंटीन में मुबारक बार-बार अपना फ़ोन देख रहा था। उसके पास सैमसंग का पुराना फ़ोन था।

"रिदम भाई, सिग्नल नहीं आ रहा है फ़ोन में।" उसने कहा।

"एक बार बंद करके फिर चालू करो।"

"नहीं कर सकता।"

"क्यों ?"

"मना किया है।"

"अरे, किसने! लाओ मैं करता हूँ।"

"नहीं भाईजान, अगर ये बंद हो गया तो मेरा काम तमाम हो जाएगा। मेरे को इस फ़ोन का लॉक वाला कोड पता नहीं है। उन्होंने कहा था कि जो भी हो जाए इस फ़ोन को बंद मत होने देना।"

जब हम शिप से निकलकर बस में वापस बैठे तो उसने बताया कि उसका एक भाई लंदन में काम करता है, उसने ही उसे हैमबर्ग पहुँचाने में मदद की है। सीट पर बैठते ही उसने फ़ोन को चार्ज पर लगा दिया।

"मुझे एक आदमी लेने आएगा बस डिपो पर, इसलिए फ़ोन बहुत ज़रूरी है।"

"अफ़ग़ानिस्तान से कैसे निकले ?" मैंने पूछा।

"लंबी कहानी है, बस जैसे-तैसे मैं पाकिस्तान पहुँच गया था।"

"अगर पकड़े जाते तो ?"

उसने अपने गले के कटने का इशारा किया। पर उसके चेहरे की मुस्कुराहट नहीं गई। वह जैसे ही मुस्कुराता था तो लगता था कि उसकी उम्र अठारह से भी कम है। जो यात्रा उसने अफ़ग़ानिस्तान से की थी, वैसी ही बल्कि इससे भी ज़्यादा ख़तरनाक यात्रा नूरी ने सीरिया से लंदन की तरफ़ की थी। मैं मुबारक की पूरी यात्रा का ब्योरा लेना चाहता था।

"तो पाकिस्तान में क्यों नहीं रह गए? कम-से-कम भाषा तो आती है तुम्हें।"

"वहाँ कोई हमें पसंद थोड़ी करता है, और न ही हम उन लोगों को! ये तो सालों का ऐसा ही संबंध है।"

"फिर पाकिस्तान से कहाँ गए?" मैंने पूछा।

उसने मुझे शक की निगाह से देखा और कहा, "बहुत जगह भटकते हुए यहाँ पहुँचा हूँ, बस ये समझ लो। मुझे मना किया है किसी से ज़्यादा बात करने से। सो बस, मैं ज़्यादा नहीं बताऊँगा।"

तभी उसका फ़ोन चालू हुआ। उसने सस्ता हेडफ़ोन कान में लगाया और किसी को फ़ोन किया। फिर अफ़ग़ानी भाषा में वह हेडफ़ोन में फुसफुसाने लगा। अजीब-सा ख़ुफ़ियापन था इन सबमें। कितनी जल्दी मैं इसकी चिंता करने लगा था! कैसे रहेगा, क्या करेगा! उसके फ़ोन में कोई भी मोबाइल कंपनी से मैसेज आता तो वह उसे देर तक ताकता रहता, फिर मेरी तरफ़ घुमाता, मैं उसे बताता कि इसका क्या मतलब है।

"घर में बाक़ी लोग?"

"भाईजान, वो सब तो इंतज़ार में हैं कि मैं कब काम चालू करूँ और कब उन्हें पैसा पहुँचाना शुरू करूँ।"

"कब तक चलेगा ऐसा?"

"मेरी अम्मी हैं रिदम भाईजान, उनको बड़ी बीमारी हो गई है, उनका इलाज कराना है तो कुछ तो करना पड़ेगा।"

"मैं समझ सकता हूँ।" मैंने कहा।

"मुझे अजीब लगता है कि लोग कैसे कह देते हैं कि मैं समझ सकता हूँ। कैसे आप तालिबानियों को समझेंगे यहाँ रहकर भाई? कैसे आप समझेंगे जब आपके अब्बू आपके सामने अपने जीवन की भीख माँग रहे थे उन तालिबानियों से?"

"माफ़ी चाहता हूँ दोस्त, मैं कभी नहीं समझ सकता।" मैंने तुरंत कहा।

हम हैमबर्ग पहुँचने वाले थे। मैंने उसे अपना फ़ोन नंबर एक पर्ची

में लिखकर दिया और कहा, "अगर कोई भी तकलीफ़ हो तो मुझे फ़ोन करना। या मैसेज करना। ठीक है? इसे अपने पास रखना।"

उसने वो पर्ची अपने ऊपर वाली जेब में रख ली, "शुक्रिया रिदम भाईजान!"

मैंने बस से उतरते हुए उससे कहा, "जहाँ भी रहो वहाँ की भाषा ज़रूर सीख लेना।"

उसने कहा, "बिलकुल, दो-तीन साल छुपकर रहना है, उसी में सीख लूँगा, फिर देखेंगे।"

मैंने उसे ख़ुदा हाफ़िज़ कहा और वहाँ से चल दिया, पर मैं वहाँ से जा नहीं पाया था। मैं बस स्टॉप से दूर जाकर खड़ा हो गया और उसे देखता रहा। कुछ देर बाद मैंने एक सिगरेट जलाई। मैं तब तक यहाँ से जा नहीं सकता था जब तक उसे कोई लेने नहीं आ जाता। वो मेरी अपनी नूरी की कहानी थी, मुझे उसकी यात्रा का अंत देखना था। हैमबर्ग बस डिपो की भीड़ में वह अपने फ़ोन और एक बैग को थामे एक छोटा बच्चा लग रहा था। उसकी आँखें कभी फ़ोन पर रहतीं तो कभी वो हर आते-जाते आदमी को घूरकर देखतीं। मेरा दिल बैठा जा रहा था। वह हर कुछ देर में कोई नई जगह तलाश रहा था बैठने की, पर बैठते ही वह उठ खड़ा होता। उसके चेहरे की मुस्कुराहट ग़ायब हो चुकी थी। मैंने दूसरी सिगरेट जला ली और एक पेड़ के पीछे खड़ा हो गया। बहुत देर बाद एक आदमी आया और उसने मुबारक के हाथों से फ़ोन छीन लिया और अपनी जेब में रख लिया। वह आदमी मुबारक से सवाल कर रहा था और मुबारक उसे सिर झुकाकर जवाब दे रहा था। फिर उस आदमी ने मुबारक के जेबों की तलाशी ली, लगभग सारी चीज़ें जो मुबारक की जेब में थीं उन्हें निकालकर वह बग़ल में पड़े कचरे के डब्बे में फेंकने लगा। तभी उसके हाथ वो पर्ची लगी जिसमें मेरा फ़ोन नंबर था। उसने मुबारक को इशारे से कहा कि चलो। पर निकलने के ठीक पहले उस आदमी ने मेरी तरफ़ देखा और पर्ची को

मोड़कर फेंक दिया। मैं जल्दी से पेड़ के पीछे छिप गया पर छिपने का कोई फ़ायदा नहीं था। जब मैंने वापस मुबारक की तरफ़ देखा तो वह मुझे कहीं नज़र नहीं आया।

मुझे पता नहीं मेरी नूरी की कहानी का क्या होगा? मुबारक को वो आदमी कहाँ ले गया है, वह उसे किस हाल में रखेगा? शायद इसका मुझे कभी पता नहीं चलेगा! ऐसे न जाने कितने मुबारक हैं, नूरी हैं, उन सबका क्या होता होगा? काश मैं भागकर कुछ कर सकता, काश मैं रोक सकता सारा कुछ, कह सकता कि हम सब अंत में इंसान हैं और जैसे-तैसे साथ में इत्मीनान से जीना चाहते हैं!

मेरा मन बहुत ख़राब हो गया था, मैं बेहद असहज महसूस कर रहा था। जब शाम को हैमबर्ग घूमने निकला तो मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगा। सारा आर्ट, सारा सुंदर शहर, महँगे रेस्टोरेंट में खाते-हँसते लोग, इन सबका क्या मतलब है, जब तक हम एक इंसान को महज़ इंसान की तरह नहीं देख सकते! मुझे सारी भव्यता अपनी सारी विशालता में फूहड़ लग रही थी। बार-बार मुझे मुबारक का चेहरा दिख जाता, भीड़ में अपनों को खोजता-सा। मुझे उबकाई आने लगी। मुझसे हैमबर्ग देखा नहीं गया। मैं अपने हॉस्टल की तरफ़ वापस चलने लगा तभी मुझे हैमबर्ग के बाज़ार से थोड़ा बाहर एक बहुत ही वीरान-सा ग़रीब पब दिखाई दिया, जो सारी आपाधापी से अलग एक कोने में अपना छोटा-सा दरवाज़ा खोले हुए था। मैंने उस दरवाज़े के भीतर झाँका तो देखा वहाँ इक्का-दुक्का लोग बैठे हुए थे। मैं भीतर जाकर पब के काउंटर पर बैठा और एक बीयर ऑर्डर की। साथ में मैंने एक वोदका का शॉट भी बोल दिया। मेरे बग़ल में तभी एक आदमी अपने खाने का पेमेंट करने आया। एक वेज सैंडविच और एक जूस, उसने कहा। मुझे उसके ऑर्डर पर हँसी आ गई। मैंने देखा वो एक इंडियन था। उसने मुझे देखकर अपने कंधे उचका दिए और कहा– भाई, मैं ऐसे ही हूँ।

मैंने अपना हाथ बढ़ाया।

“राजन।” उसने कहा।

मैंने बिना सोचे अपना नाम रिदम बताया।

"रिदम, बड़ा ही अच्छा नाम है।" राजन ने कहा।

मैंने धन्यवाद कहा।

मैं तब तक वोदका का एक शॉट और आधी बीयर गटक चुका था। मैं राजन से बात करने लगा, इस शहर के बारे में, अपने दिल्ली शहर के बारे में, उस अफ़ग़ानी के बारे में, मैं लगातार बोल रहा था, मैं बड़बड़ाए जा रहा था। राजन मेरी बात पर हँसता रहा। हम दोनों की उसी वक़्त दोस्ती हो गई।

"अगर तुम्हें यहाँ रहना पसंद नहीं है और अगर तुम किसी छोटी जगह रहना चाहते हो तो तुम मेरे गाँव आ सकते हो। मेरा छोटा परिवार है, वहीं रह लेना जब तक मन करे।"

मैंने ज़्यादा सोचा नहीं। अगले एक घंटे में मैं राजन के साथ उसकी गाड़ी में था और हम लोग Garbsen, Germany के एक छोटे-से गाँव Schloss Ricklingen में जा रहे थे। मुझे हैमबर्ग से निकलते ही उबकाई आनी बंद हो गई थी। उबकाई बंद होते ही लगा कि मैंने कब से कुछ खाया नहीं है। राजन ने कहा कि अगर घर का खाना खाना है तो पास में ही मेरा एक दोस्त रहता है वहाँ चल सकते हैं। उसे इंडियन लोग बहुत पसंद हैं, तुम्हें देखकर उसे ख़ुशी ही होगी। मैंने हाँ कहा और राजन ने तुरंत अपने दोस्त को फ़ोन लगाया। हम आधे घंटे में उसके दोस्त के घर पर पहुँच गए। राजन का दोस्त जर्मन था और उसकी पत्नी यूक्रेन से थी। वे भारतीय खाने के शौक़ीन थे और उनके पास कल के राजमा-चावल बचे हुऐ थे। मैं खाने पर टूट पड़ा। घर के राजमा-चावल के साथ-साथ उन लोगों ने मुझे बीयर भी दे दी।

खाने के बाद जब मैं अपनी बीयर के साथ बाहर आया तो मेरी दिलचस्पी सिर्फ़ राजन के जर्मन दोस्त की बीवी में थी। मैं पहली बार किसी यूक्रेनियन से मिला था। मेरे पास सवाल थे– ढेरों सवाल। पर ये वो सवाल नहीं थे जिन्हें मैं रिसर्च के दौरान, अपने ऑफ़िस के लिए, दिल्ली में लिखा करता था। मेरे सवाल बदल चुके थे, नूरी की वजह से मेरा पढ़ना भी बदल

गया था। मैंने उनसे जो भी सवाल किए, उसपर उनके जवाब इतने सीधे और साफ़ थे कि मैं आश्चर्य में पड़ गया। युद्ध किस तरह सबको इतना साहसी बना देता है कि उनके सारे जवाबों में क्राइसिस से जूझने के प्रयत्नों के अलावा किसी तरह का दुख और पीड़ा का कोई नामोनिशान नहीं था।

उनके माँ-बाप अभी भी यूक्रेन में ही थे और जिस शहर में वे रह रहे थे वहाँ के एक मॉल को रशियन मिसाइल ने उड़ा दिया था इसलिए वह थोड़ा डरी हुई थी।

"पर क्या है", उन्होंने कहा, "कि पूरी दुनिया की दिलचस्पी इस युद्ध में कम होती जा रही है क्योंकि लोग बोर हो चुके हैं। पर हमारे लिए तो रोज़मर्रा की आने वाली हर ख़बर हमें नए तरीक़े से जीने की तरफ़ फेंक रही है। हमें पता है कि कभी भी कुछ भी हो सकता है।"

राजन ने बताया कि मज़े की बात है कि इनके ठीक बग़ल में जो इनका पड़ोसी है वो रशियन है। वो भी ऐसा-वैसा नहीं, एकदम पुतिन का कट्टर भक्त। इन्होंने अपने घर में यूक्रेन का झंडा लगाया तो उसने रशियन झंडा लगाया। हमसे कहने लगा कि आप आग में घी का काम कर रहे हैं। जब ये लोग नहीं माने तो उसने कट्टरपंथियों वाला रशियन झंडा लगा दिया। मैंने देखा पड़ोसी के रशियन झंडे के बीच में एक बड़ा-सा चिह्न बना हुआ था। तभी वहाँ उनके बहुत से यूक्रेनियन दोस्त आ गए, वे सारे आर्टिस्ट थे और रियाज़ करने आए थे, अगले दिन यूक्रेन का स्वतंत्रता दिवस था सो उन्हें बहुत तैयारी करनी थी। ये सारे यूक्रेनियन शरणार्थी थे जो जर्मनी में अलग-अलग कैंपों में रह रहे थे।

हम युद्ध के बारे में जब भी बात करते हुए पाए जाते तो बातों में एक चलतापन रहता था, पर अगर हम किसी एक जीवन को भी क़रीब से देखें जो युद्ध से होकर गुज़रा है तो शायद हम अपनी बातों में प्रेम और शांति को दोहराते नज़र आएँगे।

राजन ने मुझे धीरे-से कहा कि हमें अब निकलना चाहिए। मैंने उससे हाँ कहा, पर मेरे भीतर बहुत हलचल थी। मैं चाहता था कि मैं सब लोगों से

बात करूँ। यूक्रेनियन आर्टिस्ट में एक यूक्रेन की थियेटर ऐक्ट्रेस थी जिसने वहाँ तीस से ज़्यादा फ़िल्मों में काम किया था। वह कह रही थी कि रशियन सैनिकों की वर्दी में एक स्पेशल जेब होती है सामने की तरफ़, जो सिर्फ़ कंडोम रखने के लिए डिज़ाइन की जाती है। उस अभिनेत्री को अँग्रेज़ी नहीं आती थी। उसके जवाब के मुझ तक पहुँचने की गति बहुत धीमी थी और राजन जूते पहन चुका था। हमने निकलने के पहले उनसे उनका एक गाना सुना, गाना यूक्रेनियन सैनिक के बारे में था कि कैसे वह युद्ध में फँसा हुआ है और अपने घर को याद कर रहा है।

वे सारे आर्टिस्ट थे, और क्या कुछ नहीं करना चाहते थे, मैं उनसे कहना चाहता था कि मैं साथ हूँ आप सबके पर ये उनके किसी काम का नहीं था, उन्हें इस तरीक़े के साथ से कहीं ज़्यादा कुछ चाहिए था।

मैं कार में बहुत शांत था और राजन बहुत बात करना चाहता था। मुझे इस वक़्त जो अनुभव हो रहे थे वो मेरे लिए एकदम नए थे। मैं रिदम का कितना शुक्रगुज़ार था कि यहाँ आने के ठीक पहले मैंने उसकी दी हुई किताब ख़त्म कर दी थी। अगर मैंने वो किताब नहीं पढ़ी होती तो मैं कभी भी शरणार्थियों की व्यथा ठीक से समझ नहीं पाता।

अंत में हम राजन के गाँव पहुँचे। गाँव सच में बेहद सुंदर था, उसका घर वहाँ के लगभग पचास घरों में से एक था। राजन के दो बहुत ही ख़ूबसूरत बच्चे थे, एक लड़का और एक लड़की। मुझे लड़की के कमरे में रखा गया और वो बच्ची अपने भाई के साथ उसके कमरे में शिफ़्ट कर दी गई।

नहाने के बाद मैं राजन की जर्मन पत्नी नेनी से मिला। शायद उनका कोई पूरा नाम होगा, पर उन्होंने मुझे नेनी कहा और मैं उन्हें नेनी बुलाने लगा। वह पूर्व जर्मनी से आती थीं, उनके माता-पिता अभी भी वहीं रहते थे। नेनी मुझसे बहुत ही ठंडे तरीक़े से मिलीं, मुझे लगा उन्हें मेरा यहाँ आना ठीक नहीं लगा, सो मैं उसने थोड़ा झेंपा हुआ रहने लगा। हम यूँ भी बहुत थक गए थे और दिन का खाना अभी तक पचा नहीं था। राजन ने कहा कि

उसे कल ऑफ़िस जाना पड़ेगा पर वह कोशिश करेगा कि जल्दी छुट्टी लेकर आ जाए ताकि वो मुझे शाम को कहीं ले जा सके।

मैं जल्द-से-जल्द सबसे विदा लेकर अपने कमरे में आ गया। मुझे पूरा यक़ीन था कि रिदम के कुछ मैसेज ज़रूर आए होंगे। पर मेरा फ़ोन एकदम चुप था। वहाँ कोई भी हरकत नहीं थी। मैंने रिदम को अंत में मैसेज किया।

'मुझसे बड़ी ग़लती हो गई थी। जो माफ़ी के लायक़ भी नहीं है, तो पता नहीं तुम मुझे माफ़ करोगी कि नहीं। मैं जानता हूँ मुझे इस तरह जर्मनी नहीं आना था, पर मेरी कुछ समझ नहीं आया कि क्या करूँ सो मैं बस भाग लिया। मैंने सारा सच कह दिया है। और मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ जब मैं कोपनहैगन आऊँगा। तुम ठीक हो ? I miss you a lot !'

मैंने मैसेज भेजने से पहले miss you a lot वाली बात हटा दी।

सुबह जब नींद खुली तो फ़ोन मेरे हाथों में ही था, मैंने तुरंत देखा पर रिदम का कोई मैसेज नहीं था। मैं कॉफ़ी बनाने किचन में चला गया। नेनी वहीं थी। वह भी अपने लिए कॉफ़ी बना रही थीं।

"कॉफ़ी ?" उन्होंने पूछा।

"जी।"

उन्होंने मुझे कॉफ़ी पकड़ाई और सामने टेबल पर बैठ गईं। मुझे लगा कि मैं कहीं बीच में खड़ा हूँ। मुझे इस वक़्त अपने कमरे में चले जाना चाहिए था, पर वह जिस तरह टेबल पर बैठी थीं मुझे लगा उन्होंने ये अपेक्षा की है कि मैं उनके साथ कॉफ़ी पीने बैठूँगा। उन्होंने कुछ कहा नहीं तो मैं अपने कमरे की तरफ़ जाने लगा, तभी उन्होंने पूछा, "क्या करते हैं आप ?"

"जी ! मैं दिल्ली की एक कंपनी में रिसर्च का काम करता हूँ।"

"मैं सुन रही थी कल आपकी बातें। आप कोपनहैगन में थे, अब यहाँ हैं और यहाँ से कहाँ जाएँगे उसकी कोई प्लानिंग नहीं है। अच्छा है, इतने पैसे मिल जाते हैं आपको कि आप इस तरह घूम सकें ?"

"नहीं मिलते हैं, पर जमा कर रहा था बहुत वक़्त से किसी और काम के लिए पर वो काम बिगड़ गया और... मतलब ऐसा ही कुछ।"

उन्होंने जिस तरह मेरी यात्रा को एक यायावरी रंग दिया मुझे अजीब लगा, क्योंकि मैं वह नहीं था। इस तरह की यायावरी सारथी में थी। मैं ऐसी चीज़ों से बहुत दूर था। मैं अभी भी तय नहीं कर पा रहा था कि खड़ा रहूँ या उनके साथ टेबल पर बैठ जाऊँ, पर मेरे दिमाग़ में मैंने अपने कमरे में जाना रद्द कर दिया था। वह खिड़की के बाहर देखने लगीं। उनकी आँखें हरी थीं। शरीर गठा हुआ था और बाल घुँघराले और बिखरे हुए। उनके दोनों बच्चे अभी भी सो रहे थे। उन्होंने एक गहरी साँस ली। वह बहुत थकान में दिखने लगी थीं। मैंने अंत में उनके साथ बैठना तय किया।

"मैं बहुत घूमती थी। पागलों की तरह, मैंने अपनी पूरी जवानी सिर्फ़ बैगपैक ट्रेवल किया है।"

फिर अचानक उन्होंने मुझे देखा, "तुम्हारी शादी ?"

"नहीं हुई।" मैंने जवाब दिया।

मेरे पास शादी की एक पूरी कहानी थी, पर उन्हें सुनाने का कोई मतलब मुझे समझ नहीं आया। वह कुछ देर चुप रहीं फिर उन्होंने कहा,

"मैं आपको मेरे एक दोस्त से मिलवाना चाहती हूँ। उसका नाम ओल्गा है, उसे जर्मन सरकार की तरफ़ से रिफ़्यूजियों की मदद करने के लिए अवॉर्ड भी मिला है।"

"मैं बिलकुल मिलना चाहूँगा।"

उनकी अँग्रेज़ी अच्छी नहीं थी तो हर वाक्य में तनाव रहता था। बीच में वह कई जर्मन शब्द डाल देती थीं जिन्हें सुनकर मुझे अच्छा लगता था। पर तनाव भाषा का था या किसी और का, ये मैं पता नहीं कर पा रहा था।

"अजीब लगता है ये बोलते हुए भी, पर सच में कभी-कभी तो लगता है कि सब कुछ छोड़-छाड़ के वापस बैग उठाऊँ और निकल जाऊँ यात्रा पर।" कहकर वह अपने घर को देखने लगीं, जिसे उन्होंने अभी-अभी ख़रीदा था।

"ये मत सोचिए कि मैं अपने बच्चों को नहीं चाहती। बहुत प्रेम करती हूँ पर... पर थक जाती हूँ।"

वह मुझे देखती रहीं मानो मेरे चेहरे में कुछ पढ़ना चाहती हों। इससे पहले उन्हें कुछ और दिखाई दे मेरे चेहरे में, मैंने बोलना शुरू किया।

"आपको बताऊँ कि जो मैं यूँ घूम रहा हूँ, वो घूमना कम, भागना ज़्यादा है। मैं कोपनहैगन से मुँह छुपाकर भागा हूँ, मुझसे सहन नहीं हुआ वो। कोपनहैगन अच्छा है, पर समस्या मुझमें है। लगातार एक बेचैनी बनी रहती है, बुख़ार-सा, कभी लगता है साँस नहीं आ रही है। जहाँ भी जाता हूँ, लगता है कि कुछ मिल रहा है, पर मेरे हाथों को छूते ही वो ख़राब होने लगता है, फिर वो सारा ख़राब मेरे हाथों से लगातार छूटता रहता है। दिल्ली में भी सब छूट ही गया अंत में। कहीं भी कुछ नया छूने की कोशिश करता हूँ तो भीतर कुछ चुभ रहा होता है, ये चुभन डर है कि जो भी अच्छा छूऊँगा वो अंत में छूट ही जाएगा। कई दिनों तक लोगों से बात नहीं कर पाता हूँ तो पब में वेटरों से की हुई बातों में अपनापन खोजता हूँ। किन्हीं क्षणों में इतना अकेला हो जाता हूँ कि अपना चलना ही कानों में पूरी रात गूँजता रहता है और नींद नहीं आती है।"

मैं ये सारा कुछ एक साँस में बोल गया। वह बड़ी-बड़ी आँखों से मुझे ताकती रहीं। उनके चेहरे पर एक मुस्कुराहट आ गई।

"मैं तुम्हारे लिए ब्रेड लेके आती हूँ। एक कॉफ़ी और पिओगे?"

जिस यायावरी का रंग चढ़ाकर वह मेरी यात्रा के बारे में कह रही थीं, न तो वो सच था और न ही जिस तरह मैंने यात्रा को एक स्याह रंग दे दिया था, वो सच था। सच कहीं बीच में घट रहा होता है। उस बीच को हम छू नहीं सकते, वो सारा कुछ बीत जाने के बाद महसूस होता है।

हम नाश्ता कर रहे थे तब तक घर अपनी पूरी हलचल में उठ चुका था। सारे लोग टेबल के आस-पास जमा हो गए थे। नेनी सबको नाश्ता देने में व्यस्त हो गईं। बीच-बीच में मैं उन्हें देख लेता तो वह सच में मुझे बेहद थकी हुई नज़र आतीं, उनके भीतर की थकान मैं अपने भीतर भी महसूस कर सकता था।

"इस तरफ़ सब बहुत सुंदर है, पर अगर तुम पूर्व जर्मनी की तरफ़ जाओगे तो ऐसे अकेले नहीं घूम सकते।"

राजन गाड़ी चला रहा था और रफ़्तार क़रीब एक सौ तीस थी। जर्मनी ही एक ऐसा देश है जहाँ स्पीड लिमिट नहीं है। आप कितनी भी तेज़ गाड़ी चला सकते हैं।

"क्यों पूर्व जर्मनी में क्या समस्या है?" मैंने पूछा।

"वहाँ अल्ट्रा एक्सट्रीमिस्ट रहते हैं... नाज़ी।"

भारत में जब मैं ये बात सुनता था तो लगता था कि ये झूठ है। जहाँ तक मुझे पता था जर्मनी के लोग तो एक तरीके के गिल्ट में जीते हैं उनके इतिहास के कारण, यहाँ नाज़ी हो सकते हैं इस बात की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।

"हैं भाई, पूर्व जर्मनी तो भरा पड़ा है।"

"पूर्व जर्मनी से तो तुम्हारी पत्नी नेनी भी आती हैं।" मैंने कहा।

हम लोग हाईवे से निकलकर छोटे रास्तों से चलने लगे थे। राजन ने कहा कि तुम हाईवे पर बोर हो जाओगे, ये रास्ता लंबा है पर बहुत ख़ूबसूरत है। मैंने उससे कहा कि कही कॉफ़ी के लिए रुकते हैं। वह बातों-बातों में हर बार कॉफ़ी की जगह गाड़ी रोकना भूल जाता था।

"हाँ, उसके माँ-बाप जहाँ रहते हैं उनके चारों तरफ़, मतलब बिलकुल उनकी बाउंड्री की दीवार से चिपककर नाज़ी रहते हैं।"

"और तुम्हारी पत्नी के माँ-बाप?"

"वो भी हैं, पर वो हिटलर को गाली देते हैं, पर टर्की के लोगों से बहुत चिढ़ते हैं। ख़ासकर नेनी की माँ।"

"तो तुम कैसे आ गए इस इक्वेशन में?"

"यहाँ माँ-बाप से परमीशन थोड़ी लेना होता है शादी के लिए! अब आ गया तो आ गया। मैंने बहुत कोशिशें की कि उन्हें सहज कर दूँ, पर कुछ चीज़ों को बदलना नामुमकिन है। आज भी वो जब मिलने आते हैं तो हमारे घर पर नहीं रुकते। वो पास में एक होटल ले लेते हैं।"

हम अंत में Clausthal-zellerfeld पहुँच गए।

ये सुंदर पहाड़ी शहर था। खाना खाने के बाद हम दोनों अपनी-अपनी कॉफ़ी लेकर इस शहर में घूमने निकल गए। यहाँ के छोटे घरों को देखकर मुझे लगा कि मैंने इन सुंदर घरों को कहीं देखा है, तब याद आया कि जब मैं छोटा था तो अपनी ड्रॉइंग क्लास में इसी तरह के घरों को बनाता था। जितने रंग मेरे पास होते थे लगभग मैं उन सारे रंगों का इस्तेमाल करता था। मुझे आश्चर्य हुआ कि कभी मैंने उस क्लास में अपने घर को क्यों नहीं बनाया जहाँ मैं रहता था, ड्रॉइंग में हमेशा बहुत सुंदर रंगों वाला घर होता, और वे सारे घर एक क़तार में यहाँ खड़े थे।

"तुम्हें पता है जर्मन सबसे ज़्यादा सेल्फ़ क्रिटिकल होते हैं", राजन ने कहा, "मैंने उनसे ज़्यादा ख़ुद को गरियाते हुए किसी और समुदाय को नहीं देखा। पर फिर एक समुदाय और है जो नाज़ी हैं और दुख की बात है कि उनकी संख्या सरकार में बढ़ती चली जा रही है। नाज़ी लोगों की जो अग्रिम फ़ोर्स है वो बहुत कट्टर है, उन्होंने अभी-अभी एक नेता को मारा है. और वो इस तरीक़े की चीज़ें करती रहती है।"

"मेरे लिए सच में ये बहुत अजीब है सुनना," मैंने कहा, "मतलब मुझे पता था दुनिया में चरमपंथी ताक़तें बढ़ती जा रही हैं पर मैं अपने जीवन में शुतुर्मुर्ग़ रहा हूँ, मैंने अपनी गर्दन ज़मीन में घुसाई हई है और मैं मानकर चल रहा था कि ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा है कहीं भी। पर यहाँ रहकर तो उससे आँख नहीं मोड़ी जा सकती है।"

"हम जहाँ रहते हैं, उन पचास घरों में भी एक घर नाज़ी का है। उसने फ़्लैग भी लगाया हुआ है अपने घर पर।"

"तुम्हें डर नहीं लगता?" मैंने पूछा।

"काहे का डर! कम-से-कम वो घोषित कर रहा है ख़ुद को वो कौन है, तो ठीक है।"

जब हम वापस आए तो मैं बहुत थक गया था, शायद मेरी पुरानी पड़ी थकान थी जो मिटी नहीं थी। राजन को अपनी कंपनी के दोस्तों की महफ़िल में जाना था सो वह मुझे घर छोड़कर वहाँ चला गया। मैं सीधा अपने कमरे में गया और बिस्तरे पर चित पड़ गया, रिदम का कोई जवाब नहीं आया था, मुझे अजीब-सी उलझन हो रही थी सोचा उसे एक और मैसेज कर दूँ, मैंने अपना फ़ोन निकाला तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई।

"खाना नहीं खाएँगे?" नेनी ने पूछा।

"जी, खाना?"

"हाँ मैंने बनाया है।"

"हाँ खाएँगे। बस मैं आया।"

मैंने फ़ोन रखा और तुरंत नहाने भाग गया।

मुझे बिलकुल भूख नहीं थी, पर उनके आग्रह में एक तरीक़े का आदेश था जिसे मैं मना नहीं कर पाया। बच्चे सोने जा चुके थे और वह मेरा खाना परोस रही थीं। उन्होंने मेरे सामने जर्मन बीयर रख दी। मैंने मना नहीं किया। वह पीती नहीं थीं सो उन्होंने पानी के गिलास से चीयर्स किया। खाने में उन्होंने गोभी की सब्ज़ी बनाई हुई थी और चावल थे। मैं जानता था कि अगर बीयर पी लूँगा तो जो थोड़ा-बहुत खा सकता हूँ वो भी नहीं खा पाऊँगा। पर बीयर मेरे हाथों में आ चुकी थी।

मुझे फिर वहीं दिल्ली के पार्क में भागकर अपने मालिक की गेंद लाता हुआ कुत्ता याद आ गया। यूँ ही, इच्छा है कि नहीं है में, सारी चीज़ें करता चलता था। कभी लगता कि सारा कुछ जो नहीं करना उसे मना करता चलूँगा, पर मना करने के ठीक पहले 'ना' मुँह से निकला ही नहीं कभी।

कुत्तें अगर ना कहना सीख लेंगे तो वे बिल्ली की श्रेणी में आ जाएँगे। जब सारथी ने कहा कि मैं जा रही हूँ और मैं देख रहा था कि वह जा रही है, मैं जानता था कि मैं कुत्ता हूँ पर उस वक़्त मैं वो भी नहीं था, मुझे दरवाज़े तक जाना चाहिए था, मुझे भौंकना चाहिए था, मुझे अपने दोनों पंजों को दरवाज़े पर रगड़ना चाहिए था। पर मैं चुपचाप बैठा रहा था... तब मैं अगर कुत्ता नहीं था तो क्या था उस वक़्त! पहली बार मुझे महसूस हुआ कि मेरा कुत्ता होना एक सरवाइवल स्किल है, मैं वो नहीं हूँ।

काश मैं सारथी से कह देता कि मत जाओ!

"इसके बाद कहाँ जाने का इरादा है?" उन्होंने पूछा।

"कोपनहैगन।" मैंने कहा।

"कब?"

"शायद कल या परसों! मैं किसी के जवाब का इंतज़ार कर रहा हूँ, अगर जवाब आ गया तो कल भी जा सकता हूँ।"

वह गोभी और चावल से खेल रही थीं। मुझे नहीं लगता कि उन्हें भी भूख होगी।

"मुझे थोड़ा अजीब लग रहा है कि आप जर्मनी में आए हुए हैं और आप कितना कुछ घूम सकते हैं, पर आप यहाँ इस गाँव में आकर पड़े हुए हैं!"

"बड़े शहरों से डर लगता है, मैं घबरा जाता हूँ।"

"किस बात का डर लगता है?"

"लगता है कि कुछ खो दूँगा।"

"क्या?"

"पता नहीं, एक गुम जाने का भय रहा है, शायद छोटे शहरों से आए लोगों के भीतर ये भय बहुत वक़्त तक हरकत कर रहा होता है। मैं इससे छुटकारा पाने के बजाय इसे पकड़कर बैठा हूँ, पता नहीं क्यों।"

उसके बाद हम दोनों चुप रहे। कुछ देर में उन्होंने अपनी प्लेट किचन में रख दी और मैंने अपनी। मैं अपने कमरे में चला गया। दूर देश में आकर

लगता कि यहाँ जो भी मिलता है मैं उससे बहुत ईमानदार रह सकता हूँ, अपने भीतर चल रही सारी हरकत कह सकता हूँ। कौन जानता है मुझे यहाँ? क्या हो जाएगा? पर अजीब बात है कि सारा कुछ कहते हुए भी एक जगह आकर मैं रुक गया था। कहते वक़्त मैंने नेनी की आँखों को देखा और फिर मुझसे कुछ कहते नहीं बना। एक जगह आकर हम सबकी आँखें एक जैसी दिखने लगती हैं। मैं नेनी से और भी बहुत कुछ कहना चाहता था, पर गोभी और चावल से खेल रहीं उनकी आँखें पहचानी लगने लगी थीं।

मैं अपने कमरे में दीवारें ताकता हुआ लेटा रहा। सारथी का चेहरा याद करता रहा, उसकी मोटी भवें, एक गाल का डिंपल, घुँघराले बाल, हाथों के रोएँ, फिर याद आया कि उसे कोई और छू रहा होगा। उसकी तारीफ़ कर रहा होगा। मेरे भीतर वापिस एक जलन-सी महसूस हुई पर तभी मैंने ख़ुद को समझाया कि मैं अब सलीम नहीं हूँ, मैं इस वक़्त रिदम हूँ, लेटे-लेटे मैंने सारथी के बारे में रिदम बनकर सोचना शुरू किया और मुझे उसके प्रति एक सांत्वना-सी महसूस हुई। सांत्वना! मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं ऋषभ से जब सलीम हुआ था तब मैंने भीतर बहुत से बदलाव देखे थे, पर वे उतने नहीं थे कि मैं उन्हे अलग से देख पाऊँ। पर रिदम में कुछ अलग ही बात थी, मैं रिदम बनकर शायद बिलकुल ही अलग हो सकता हूँ। मैं रिदम हूँ, मैं ही रिदम हूँ, मैं ठीक इस वक़्त रिदम हूँ। मैंने कई बार ये वाक्य अपने भीतर दोहराया।

मैंने फ़ोन निकाला और लिखा– 'मैं ख़ुद रिदम हूँ, सो मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं समझता हूँ मैंने तुम्हें धोखा दिया है। मुझे पता है तुम मुझसे ज़रूर मिलोगी, मुझे पता है क्योंकि मैं ख़ुद रिदम हूँ। जब मिलूँगा तो तुम्हें बताऊँगा, तुम समझोगी ये बात। प्लीज़ जवाब दे देना। मैं कोपनहैगन आना चाहता हूँ, बताओ कब आऊँ? I miss you!'

इस बार 'मिस यू' लिखकर मैंने मिटाया नहीं।

सुबह उठकर मैं गाँव में घूमने चला गया। चलते-चलते गाँव के घर कुछ ही देर में ख़त्म हो गए थे और क़रीब दस मिनट में ही मैं खेतों में था।

हवा बहुत सुंदर थी और मौसम बहुत साफ़। खेतों के बाहर पेड़ों के बीच यहाँ गाँव वालों ने बेंचें जमाकर रखी हुई थीं। मैं रिदम की दी हुई किताब भी ले आया था। मैं एक बेंच पर बैठ गया और पढ़ी हुई किताब के कुछ अंश वापस पढ़ने लगा। नूरी की जद्दोजहद और आफ़्रा से उसकी देर रात की बातों में अजीब शांति थी। मैं अपने नूरी को याद करने लगा, वो अफ़ग़ानी लड़का, कहाँ होगा, क्या कर रहा होगा? काश उसके पास मेरा नंबर होता तो वह ज़रूर फ़ोन करता मुझे!

जब मैं वापस घर आया तो राजन ऑफ़िस जा चुका था। मेरे लिए वह मैसेज छोड़कर गया था कि शाम को तैयार रहना, हम कहीं चलेंगे। मैं नाश्ते की इच्छा से किचन में गया तो वहाँ एक बहुत ही दुबली-पलती लड़की बैठी हुई दिखी। नेनी ने कहा कि ये ओल्गा है जिनके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। मैंने हाथ मिलाया।

"मेरा नाम रिदम है।"

इस बार मुझे रिदम नाम बताने में जरा सा भी संकोच नहीं हुआ, बल्कि रिदम कहते ही मेरे होंठों पर हल्की-सी मुस्कुराहट आ जाती थी।

नेनी हम दोनों के लिए कॉफ़ी और ब्रेड लाई।

"मैं तीन साल इंडिया रही हूँ।" ओल्गा ने कहा। उन्होंने पहले थोड़ी हिंदी में बात करने की कोशिश की फिर वह अँग्रेज़ी पर आ गईं। उनकी अँग्रेज़ी कॉफ़ी अच्छी थी।

मैंने उनसे पूछा, "कहाँ रहीं आप इंडिया में?"

"दिल्ली।"

"अरे, मैं भी वहीं से हूँ।"

फिर दिल्ली को लेकर हमारी औपचारिक बातचीत हुई। वह दिल्ली के चप्पे-चप्पे से वाक़िफ़ थीं। जितना दिल्ली को वह जानती थीं, उतना शायद मैं भी नहीं जानता था।

"ये यहीं पास के गाँव में रहती हैं। कितने लोग रहते हैं तुम्हारे साथ आजकल?" नेनी ने ओल्गा से मस्ती में पूछा।

"कल रात चार थे।" ओल्गा ने जवाब दिया।

ओल्गा देख सकती थी मेरे चेहरे का हतप्रभ भाव। मैं इस भाव को अपने चेहरे से दूर रखना चाहता था पर वो मेरे बस में नहीं था, बचपन में मुझे मेरे दोस्त चिढ़ाते थे कि हर बात पर तेरा मुँह क्यों खुल जाता है बे।

"मेरा एक सर्कस ग्रुप है," ओल्गा ने कहा, "हम इंडिया में भी शोज़ कर चुके हैं। हमें नए लोगों की ज़रूरत हमेशा रहती है। पाँच साल पहले मुझे पता चला था कि कुछ सीरियन, अफ़ग़ानी शरणार्थी यहाँ कैंपस में रह रहे हैं जिन्हें सर्कस में ट्रेन किया जा सकता है तो मैं उनके कैंपस में चली गई। वहीं मुझे मुश्ताक़ मिला। वो बहुत मुश्किल से सीरिया से लेबनान भागा था। उससे और उसके दोस्तों से मिलकर लगा कि ये तो कमाल के लोग हैं, इनमें सरवाइवल का जज़्बा कूट-कूटकर भरा है। बस तब से वो मेरे सर्कस का हिस्सा हो गए हैं।"

"मुश्ताक़ मुझे भी बहुत पसंद है," नेनी ने कहा, "तुम्हें पता है उसके पिछवाड़े पर और पैर में गोलियों के घाव थे जब ओल्गा उससे मिली थी। वो उस हालत में लेबनान भागा था, बाद में उसने अपने परिवार को भी लेबनान बुला लिया। पर उसके पिता कहने लगे कि वहाँ रह रहे बाक़ी बच्चों का क्या होगा? वो शिक्षक थे, तो वो वापस सीरिया चले गए और सीरिया के उत्तर में उन्होंने बच्चों के लिए एक स्कूल खोल लिया है। अभी बस मुश्ताक़ को उसके पिता का डर खाए जाता है।"

"मुश्ताक़ और हसन दोनों अब मेरे साथ ही रहते हैं," ओल्गा ने कहा, "बाक़ी लोग आते-जाते रहते हैं, अब ये मेरा परिवार है।"

मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट थी, वे दोनों देख सकते थे कि मुझे कितना आनंद मिल रहा है उनकी बातें सुनकर। शायद ये दूसरों की कहानियाँ ही हैं जिनमें डूबकर आपको अपना जिया हुआ थोड़ा हल्का लगने लगता है। मुझे इस वक़्त मेरा जिया हल्के से ज़्यादा टुच्चापन लिए हुए दिख रहा था। ओल्गा जिस शिद्दत से दूसरों के लिए काम कर रही थीं, और जिस उत्साह से वह आ रही समस्याओं का ज़िक्र कर रही थीं, उनकी बातें सुनकर पहली

बार मैंने महसूस किया कि मेरे दिमाग़ में सारथी नहीं थी, रिदम भी नहीं थी, मैं ख़ुद को नूरी के एकदम क़रीब महसूस कर रहा था मानो Beekeeper of Aleppo, Christy Lefteri ने नहीं लिखा है, मैंने उसे जिया है, मैं मिला हूँ नूरी से, उसके साथ ग्रीस के रिफ्यूजी कैम्प्स में भी बैठा हूँ।

"आप सर्कस के साथ-साथ कितना अच्छा सोशल वर्क करती हैं?" मैंने कहा।

ओल्गा ने नेनी की तरफ़ देखा फिर मेरे सामने अपना सिर हिला दिया।

"नहीं मैं कोई सोशल वर्कर नहीं हूँ। पता नहीं कैसे कहूँ," उन्होंने कहा, "मेरा ये काम नहीं है, मैं बस सर्कस चलाती हूँ। और जब कैंप में जाती हूँ तो उन्हें एक महिला मिल जाती है जिससे बात करके वो अपनी जर्मन भाषा ठीक कर सकते हैं। इसलिए लोग मुझे पसंद करते हैं क्योंकि मैं उनसे बात करती हूँ। फिर कुछ लोगों से जग्लिंग सिखाते वक़्त दोस्ती हो जाती है, मैं उनकी लीगल कार्यवाही में थोड़ी मदद कर देती हूँ। पर ये मदर टेरेसा जैसा कुछ नहीं है। हम लोग दोस्त हैं और अब मेरे चार बहुत ही क़रीबी दोस्त हो गए हैं जो मेरे से कहीं ज़्यादा अच्छा काम कर रहे हैं और साथ-साथ सर्कस चलाने में मेरी मदद भी कर रहे हैं। अब तो जाने कितने यूक्रेन के लोग आने लगे हैं। मैं मेरे घर में जाती हूँ तो मुझे पता नहीं होता कि आज कौन लोग मिलेंगे।"

मैं अपने सवाल पर झेंप गया। ये सारे सवाल बहुत दूर से देखी दुनिया से आने वाले सवाल थे। तुरंत लोगों को किसी खाके में डाल देना कि अगर वह मदद कर रही हैं तो इसका मतलब वो सोशल वर्कर हैं।

फिर नेनी और ओल्गा जर्मन में बात करने लगे। मैं चाहता था कि ओल्गा से और बात करूँ, पर लगा कि वह अपनी दोस्त नेनी से भी बहुत दिनों बाद मिली है, उन्हें बहुत सारा साझा करना है। मैं कमरे के बाहर सिगरेट पीने चला गया। बाहर आते ही मेरा हाथ मेरे फ़ोन पर गया और मैं देखने लगा कि कहीं रिदम का कोई जवाब न आया हो, फिर मैंने इंस्टाग्राम खोला और सारथी की तस्वीरें देखने लगा। बरामदे से मेरी निगाह वापस

ओल्गा और नेनी पर पड़ी और मैंने अपना फ़ोन जेब में रख लिया। कितना कम जिया है मैंने! मैंने सोचा मेरे पास ओल्गा को सुनाने के लिए, अपने जीवन से, एक क़िस्सा भी नहीं है। दिल्ली में रहकर मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया था जिससे मैं ओल्गा का ध्यान अपनी तरफ़ आकर्षित कर सकूँ। सारथी बहुत से कामों से जुड़ी रहती थी। वह बहुत से प्रोटेस्ट में भी हिस्सा लेती थी। मैं हमेशा उससे कहता कि इसके फ़ायदे क्या हैं, अपने वक़्त की बर्बादी के अलावा? अब यहाँ खड़े रहकर मैं अपना फ़ायदे से भरा जीवन देखता हूँ तो लगता है कि फ़ायदे नुक़सान के चक्कर में कुछ जिया ही नहीं है।

राजन के पड़ोस में एक बंगला था जहाँ एक बूढ़ी औरत अकेली रहती थी। जब मैं बाहर सिगरेट पी रहा था तो वह मुझे फिर दिखीं, उन्होंने मुझे देखकर मुस्कुराते हुए अभिवादन किया और मैंने उन्हें। वह अपनी झुकी हुई कमर लिए बग़ीचे की बत्तियाँ जलाकर वापस अपने बंगले में चली गईं। मैं अब तक उन्हें बेचारी नज़र से देखता आया था। कैसे बेचारी बूढ़ी औरत इस उम्र में अकेली रह रही हैं, उन पर तरस आता था मुझे। पर अभी उन्हें देखते हुए ऐसा लगा कि कितना स्वतंत्र और स्वावलंबी जीवन है उनका और वह उसमें कितनी सहज हैं! सारी असहजता मेरे भीतर थी, मुझे खूँटे से बंधे लोग हमेशा सुरक्षित दिखते थे, मुझे स्वतंत्र स्वावलंबी जीवन की समझ नहीं थी कभी भी। अकेले रह जाने का डर मेरे भीतर था जिसे मैं पूरी दुनिया पर थोप रहा होता था।

"सुनिए, ओल्गा चाहती है कि वो आपको हेनोवर घुमाए। वो एक आर्टिस्ट को बहुत पसंद करती है। कल वो उस तरफ़ जा ही रही है तो आप भी साथ में घूम लीजिए।"

भीतर से नेनी की आवाज़ आई। मैं अपनी सिगरेट फेंक के वापस भीतर आया।

"मुझे कोई दिक़्क़त नहीं है, पर मुझे आर्ट और आर्टिस्ट समझ नहीं आते हैं।" मैंने कहा।

"समझने की कोई ज़रूरत नहीं है, आप बस देख लीजिएगा।" ओल्गा ने सहजता से कहा।

"हाँ, तो चलते हैं।" मैंने कहा।

"ठीक है," ओल्गा के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई, "मैं कल आती हूँ, आप सुबह तैयार रहना।"

हम इंसान थोड़ा-सा ही एक-दूसरे को जानने के बाद एक-दूसरे की कितनी चिंता करने लगते हैं! नेनी मेरी चिंता करने लगी थीं, वह चाहती थीं कि मैं उनका जर्मनी थोड़ा घूम लूँ। मेरा उत्साह था कि मैं ओल्गा के साथ थोड़ा और वक़्त बिताना चाहता था। उनकी कहानियों को सुनते हुए मुझे बेहद हल्का महसूस होता था। वो किसी थेरेपी की तरह मेरे ऊपर काम कर रही थीं। मुझे मेरा जीवन छोटा नज़र आने लगता और उस जीवन की समस्याएँ कहीं चींटियों-सी रेंग रही होतीं। जब मैं अपने कमरे में आया तो मेरा माफ़ी माँगने का मन किया। अगर मैं कोपनहैगन में होता इस वक़्त तो रिदम से मिलकर माफ़ी माँग लेता। इच्छा हुई कि मैसेज कर दूँ, पर ये माफ़ी मैसेज पर अपनी ईमानदारी खो देगी।

मैंने अपने मेल चेक किए। पुराने जितने मेल आए हुए थे सबके जवाब दिए और एक मेल ऑफ़िस को लिखा कि मैं जल्द वापस आ रहा हूँ। मुझे पता है इस मेल के मिलते ही वो अगले हफ़्ते के काम का ब्योरा मुझे मेल कर देंगे और मैं वापस उसी जाल में फँस जाऊँगा।

अगली सुबह, राजन ने ऑफ़िस जाते हुए मुझे हेनोवर ट्रेन स्टेशन छोड़ा। कल रात वह बहुत देर से घर वापस आया था। उसके शरीर पर मैं उसके काम का बोझ देख सकता था। दिल्ली में मैं ऐसा ही दिखाई देता था। कुछ देर में ओल्गा अपने बताए स्थान, हेनोवर स्टेशन की टिकट की खिड़की पर आई। आते ही उसने कहा, "पहले एक कॉफ़ी पीते हैं।"

हमने एक ट्राम ली और हम मुख्य शहर में पहुँच गए। ओल्गा की

चाल में एक तेज़ी थी। सुबह की ठंडक में उनके गालों पर लालिमा छाने लगी थी, लग रहा था कि उन्होंने मेकअप किया हुआ है। हम बहुत-सी गलियों और सड़कों को पार करने के बाद एक चर्च पर पहुँचे, उस चर्च के सामने की गली में एक बहुत ही पुरानी-सी लकड़ी की बनी इमारत में एक कैफ़े था, जहाँ हम दोनों बैठ गए।

"ये जगह पूरी तरह ख़त्म हो गई थी दूसरे विश्वयुद्ध में।" ओल्गा ने कहा।

फिर उन्होंने अपने फ़ोन पर इसी जगह के, युद्ध के, कुछ पुराने चित्र दिखाए। उन चित्रों को देखने के बाद वापस इसी जगह को देखना बड़ा अजीब था।

"देखो आज हम यहाँ बैठकर शांति से कॉफ़ी पी रहे हैं, है न दुनिया बड़ी कमाल?" ओल्गा ने कहा।

मैंने कॉफ़ी के कप से उन्हें चीयर्स बोला। वह कॉफ़ी बहुत ही जल्दी पी गई थीं। मुझे अपनी कॉफ़ी पर बहुत देर बने रहने की आदत थी। मैंने अपनी कॉफ़ी जल्दी ख़त्म की और फिर हम चलते हुए एक नदी किनारे आए और उन्होंने कहा, "वो जो नदी के दूसरी तरफ़ तीन मूर्तियाँ दिख रही हैं वो Niki de Saint Phalle (फ्रेंच आर्टिस्ट) की हैं। मैं ये तुम्हें दिखाना चाहती थी। मैं उन्हें बहुत पसंद करती हूँ। उनका बचपन बहुत ही तकलीफ़ों से भरा था, जो उनके काम में दिखता है, पर उन्होंने बहुत बाद में उन तकलीफ़ों के बारे में लिखा था। मैं ख़ुद को उनके आर्ट में देख सकती हूँ।"

मैंने बहुत कोशिश की, पर मुझे गार्डन में लगी तीनों मूर्तियों में कुछ भी ऐसा नज़र नहीं आया जिसके बारे में मैं अपने मुँह से एक शब्द भी निकालता। मैं ओल्गा के बग़ल में चुपचाप खड़ा रहा।

फिर वह मुझे ट्राम में बिठाकर एक गार्डन में भी ले गईं। वहाँ Niki de Saint Phalle का इंस्टॉलेशन लगा हुआ था। एक छोटे-से दरवाज़े से आपको प्रवेश करना था और आप एक अजीब-सी चमकीली दुनिया का हिस्सा हो जाते थे। मुझे यहाँ थोड़ा बेहतर लगा, पर समझ के मामले

में मैं अभी भी बहुत दूर था। मैं Niki के बनाए कुछ अजीब-से शारीरिक विन्यासों को देख रहा था तभी पीछे से ओल्गा की आवाज़ आई, "बचपन में इनकी माँ बहुत violent थी, और सालों तक इनके पिता ने इन्हें sexually abuse किया था। Niki की कला को ध्यान से देखो तो कितना कुछ नज़र आने लगता है!"

मैं ओल्गा की आवाज़ सुन रहा था, जो Nikki के बारे में बताए जा रही थीं और सामने मैं Niki de Saint Phalle की कला को देख रहा था। उनके सारे रंगों में, औरतों के बनाए शारीरिक विन्यास में मुझे कहानियाँ दिखने लगी थीं। मैं दंग रह गया– ऐसा कैसे हो सकता है! मुझे ये अनुभव पहले कभी नहीं हुआ था। मैंने देखा मेरी आँखें थोड़ी नम होने लगी थीं। ओल्गा पास आईं और उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया। पता नहीं उन्हें कैसे पता था कि मुझे सहारे की ज़रूरत थी।

जब हम बाहर निकले तो ओल्गा चुप थीं। वह मुझसे एक दूरी बनाते हुए आगे चल रही थीं। मुझ पर पहली बार किसी कलाकृति का ऐसा असर हुआ था। मैं ओल्गा से इसके बारे में बात करना चाहता था, पर उन्होंने इस वक़्त बात करने के सारे दरवाज़े बंद कर रखे थे। हम फिर ट्राम में बैठे और हेनोवर शहर वापस आ गए। वहाँ उन्होंने मुझे एक कैफ़े में छोड़ा और कहा कि मैं आती हूँ। ये कहते हुए उन्होंने मुझसे आँखें भी नहीं मिलाई थीं। मैं उस कैफ़े में बैठ गया और आते-जाते लोगों को देखने लगा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कैसे मैं अपने दिल्ली के काम-काज से बाहर अचानक हेनोवर शहर के इस कैफ़े में बैठा Niki de Saint Phalle की कलाकृति के बारे में सोच रहा हूँ। मैं दिल्ली में रहते हुए कभी इस तरह के दिन की कल्पना भी नहीं कर सकता था। क्या इसे ही लोग यात्रा करना कहते हैं? मैं ख़ुश था और मैं ये किसी को बताना चाहता था कि मैं ख़ुश हूँ। मैंने अपना फ़ोन निकाला और सोचा ऑफ़िस के किसी दोस्त को कहूँगा कि मैं ख़ुश हूँ। रिदम या सारथी से ये कह नहीं सकता था। फिर पता नहीं क्या हुआ कि मैंने फ़ोन पर अपना मेल देख लिया। ऑफ़िस से मेल आए हुए थे। मैंने

अटैचमेंट खोला तो उसमें अगले हफ़्ते की सारी मीटिंग की लिस्ट थी। मैं लिस्ट पढ़ने लगा और एक थकान पूरे शरीर में फैल गई। पूरा हफ़्ता सुबह से शाम तक अलग-अलग कामों से भरा पड़ा था। मैंने जवाब में 'Got that' लिखा और अपना फ़ोन बंद कर दिया।

तभी ओल्गा कार लेकर आईं। मुझे नहीं पता था कि हम लोग कार से कहीं जाने वाले थे। कार में बैठते ही मैंने पूछा, "हम कहाँ जा रहे हैं?"

"कॉन्संट्रेशन कैंप, Bergen-Belsen Concentration Camp." ओल्गा ने जवाब दिया।

और हमारी कार हेनोवर शहर से बाहर की तरफ़ निकल गई। ओल्गा की चुप्पी में मैं सहज था। जब शहर पीछे छूट गया तो उन्होंने कहा, "मैं हमेशा से वहाँ जाना चाहती थी। मैं जब स्कूल में थी तो हमें एक स्कूल ट्रिप में वहाँ जाना था, पर मेरे पिता ने मना कर दिया था कि मैं वहाँ नहीं जा सकती हूँ। मैं बहुत लड़ी थी, मुझे घर में उस दिन बहुत मार भी पड़ी थी। फिर मैं सोचती रही कि एक दिन जाऊँगी। और देखो आज वो दिन है।"

ये कहते ही ओल्गा ने मुझे देखा। उनकी आँखों में स्नेह था, पर चेहरे की मुस्कुराहट में एक उदासी। मैंने कुछ कहा नहीं। कुछ देर में उन्होंने बोला कि Anne Frank की मृत्यु वहीं हुई थी।

मैं स्तब्ध रह गया। जब सारथी से मैं पहली बार मिला था तो वो Anne Frank की डायरी पढ़ रही थी। उसे प्रभावित करने के लिए मैंने वो किताब पढ़ी थी। मुझे याद है मैं डिप्रेस हो गया था, मुझे लगा था कि कौन-सी दुनिया की ये बातें हैं? क्या ये सच में घटित हुआ था? पर मैंने सारथी से कहा था कि मुझे बेहद पसंद आई किताब। वह बहुत प्रसन्न हो गई थीं। मुझे याद है उस वक़्त सारथी के कमरे में Anne Frank की एक श्वेत-श्याम तस्वीर लगी रहती थी, जिसे वह अपने साथ ले आई थी जब हम साथ रहने लगे थे। बाद में उसके बहुत मनाने पर हमने Anne Frank पर बनी एक फ़िल्म भी साथ में देखी थी। वह पूरी फ़िल्म में रो रही थी। मुझे भी वो फ़िल्म बहुत पसंद आई थी, पर मैं रोया नहीं था। हम जैसे-जैसे

Bergen-Belsen के क़रीब पहुँच रहे थे मुझे वो किताब, वो फ़िल्म याद आने लगी थी। मैं उन रास्तों को देख रहा था, अगल-बगल लगे ऊँचे पेड़ों को, यहीं, इन्हीं रास्तों से, कई साल पहले Anne और उनकी बहन को यहाँ लाया गया होगा।

हम जैसे ही Bergen-Belsen Memorial पहुँचे तो बारिश शुरू हो गई। हम भागकर, वहाँ बने म्यूज़ियम के भीतर दाख़िल हो गए। मौसम एकदम स्याह हो चुका था। ओल्गा ने ऊपर आसमान की तरफ़ देखा और वह मुस्कुरा दीं। टिकट लेकर जब हम भीतर गए तो देखा वहाँ सिर्फ़ Anne ही नहीं, और भी जाने कितने लोगों की तस्वीरें एक क़तार से लगी हुई थीं। उस म्यूज़ियम को बहुत ही तरतीब से बनाया गया था। शुरुआत की तस्वीरें वो थीं जब यहाँ लोगों को लाया गया था। उस वक़्त की तस्वीरों में सबके चेहरों पर एक आशा नज़र आ रही थी। फिर अगला खंड था जब वो उन लोगों का शरीर आशा छोड़ने लगा था पर आँखें हल्की नमी लिए हुए थीं। मैं समझ नहीं पा रहा था कि उन आँखों में आशा अभी तक बची है कि वो नमी आशा को जैसे-तैसे पकड़े रखने की है। उन सारी तस्वीरों में जो लोग थे उनकी आँखों में देखना असंभव था। फिर हम Anne की तस्वीरों के सामने पहुँचे। मैं उनकी बचपन की तस्वीरों को देखने लगा, उनके माता-पिता के साथ, उनकी बहन के साथ, दोस्तों के साथ। हर तस्वीर में उनके चेहरे पर, उनकी आँखों पर निगाह अटक जाती थी। उनमें से एक तस्वीर को मैं पहचान गया था। उनका मुस्कुराता हुआ पोर्ट्रेट, यही तस्वीर सारथी के कमरे में लगी हुई थी जिसे वह अपने साथ ले आई थी। उस तस्वीर के बग़ल में लिखा हुआ था- 'I keep trying to find a way to become what I'd like to be and what I could be.'- ये वाक्य उनकी लिखी डायरी की अंतिम एंट्री थी, अगस्त 1944 में।

मेरे आँसू निकल आए। मैंने अपना सिर नीचे किया और मेरे क़दम उस म्यूज़ियम से बाहर की तरफ़ उठने लगे। मैं भूल गया था कि मैं यहाँ ओल्गा के साथ आया था। बाहर धूप निकल आई थी, मौसम साफ़ हो गया

था। मुझे लगा कि काश मैं सारथी को बता पाता कि इस वक़्त मैं कहाँ हूँ! काश मैं उससे कह पाता कि यहाँ मुझे नहीं तुम्हें होना था! ये जगह उसकी थी। मैंने एक सिगरेट जलाई और उन तमाम concentration camps के बारे में सोचने लगा जो सारथी के कारण मुझे पता थे। किसी और देश में किसी दूसरे देश के इतिहास को देखने पर एक अजीब-सी कल्पना का पर्दा चढ़ा रहता है। वो सच में घटित हुआ था और ऐसी जगह अभी भी उपस्थित हैं इस पर यक़ीन कम होता है। इतिहास पढ़ने की नहीं अनुभव करने की चीज़ है।

ओल्गा बहुत देर बाद बाहर आई। मेरी सिगरेट अभी ख़त्म नहीं हुई सो वह मेरे बग़ल में खड़ी रहीं। उन्होंने अपना चेहरा सूरज की तरफ़ कर रखा था और उनकी आँखें बंद थीं। ये ओल्गा का इतिहास था और वो ख़ुद यहाँ पहली बार आई थीं। सिगरेट ख़त्म होने पर हम एक बड़े गेट से अंदर की तरफ़ गए, जहाँ क़ब्रें बनी हुई थीं। बड़ी-बड़ी क़ब्रों पर लिखा था कि यहाँ कितने लोगों को एक साथ दफ़्न किया गया था। कहीं चार हज़ार, कहीं पाँच हज़ार। अंत में हम दोनों Anne Frank की क़ब्र के सामने खड़े थे। वो और उनकी बहन दोनों का नाम शिलालेख पर लिखा हुआ था।

"Anne की ये क़ब्र बाद में बना दी गई थी। लोग यहाँ आते हैं और मान लेते हैं कि Anne यहीं इसी जगह दफ़्न हैं। लोगों को अपनी ख़ुद की कहानी के लिए एक ठोस किनारा चाहिए होता है।" ओल्गा ने कहा।

मैं ओल्गा से कहना चाहता था कि मुझे चाहिए था ठोस किनारा, मेरे लिए उनकी क़ब्र बहुत ज़रूरी थी। भले ही वह इसके नीचे न हो पर मुझे एक जगह चाहिए थी जिसे मैं मान सकूँ कि यहीं हैं वह। हर चीज़ मान लेने से ही शुरू होती है। सारे धर्म मान लेने की नींव पर ही तो खड़े हैं। मैं क़ब्र के सामने खड़ा रहा। ओल्गा ने कुछ देर में कहा, "चलें... देर हो रही है।"

मैंने कहा, "मैं बस इस परिसर में थोड़ी देर टहलना चाहता हूँ।"

ओल्गा ने कहा, "मैं बाहर तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ।" इतना कहकर वह चली गईं।

दूर से देखा जाए तो ये बस एक ख़ाली मैदान-सा दिखाई देगा जहाँ बीच-बीच में पठारनुमा क़ब्रें बनी हुई हैं। धरती के इस छोटे टुकड़े ने एक वक़्त में कितनी त्रासदी झेली है, फिर भी इस जगह को इन लोगों ने अपने प्राकृतिक स्वरूप में रखा हुआ है। सारे पेड़, जंगल, पूरी जगह उगी हुई घास... सब कुछ वैसा-का-वैसा ही। मैं उस पूरी जगह गोल-गोल चक्कर लगाने लगा। मैं यहाँ से निकल भी जाना चाहता था और यहीं लेटे भी रहना चाहता था। अंत में उस मैदान के बीच में खड़े एकमात्र बड़े से पेड़ के सामने बहुत देर खड़ा रहा।

जब हम वापस आ रहे थे तो कार में ओल्गा ने कहा, "इज़राइल और फ़िलिस्तीन के हाल देखकर लगता है कि ये कितनी बड़ी त्रासदी है कि जिन यहूदियों ने यहाँ इतना सहा है, वो दूसरी परिस्थिति में जाकर वैसी ही बर्बरता किसी दूसरी क़ौम पर कैसे कर सकते हैं? कारण जो भी हो पर इस तरीक़े के इतिहास से गुजरने के बाद कोई कैसे किसी भी तरीक़े की हिंसा का रास्ता चुन सकता है?"

ओल्गा ने मुझे देखा पर मैं कुछ भी कहने की स्थिति में नहीं था।

"तुम्हें पता है मुझे लगता था कि हिटलर की बर्बरता के बारे में जब लोग पढ़ेंगे तो युद्ध शब्द से लोगों को नफ़रत हो जाएगी। पर इंसान हिंसा के नए कारण बटोर ही लेता है। एक अच्छी किताब है The book Thief. उस किताब का कथावाचक मृत्यु है। Markus Zusak ने उस किताब का अंत बहुत ही सही वाक्य से किया है, अत में कथावाचक यानी मृत्यु

कहती है- I Am Haunted By Humans."

ओल्गा मुस्कुरा दी थीं पर उनके होंठ काँप रहे थे। कुछ देर बाद मैंने उनसे पूछा, "मुझे आश्चर्य है कि आप इतने क़रीब रहकर भी यहाँ नहीं आई थीं?"

"जर्मनी में कुछ लोग हैं जो कॉन्संट्रेशन कैंप की घटना पर गर्व महसूस करते हैं, मेरे पिता उन्हीं में से एक थे। अगर वो अभी ज़िंदा होते तो मैं उनसे पूछती कि क्या आप कभी गए हैं किसी कॉन्संट्रेशन कैंप में?" ओल्गा के होंठ कड़क हो गए थे। उनकी आँखों में ग़ुस्से की लाल लकीरें उभर आई थीं। मैंने ओल्गा से और कुछ नहीं पूछा। हम दोनों कार में अपनी-अपनी चुप्पी पर बने रहे।

ओल्गा के चले जाने के बाद मैं राजन, नेनी और बच्चों के साथ डिनर कर रहा था। मैंने उनसे कहा कि मैं कल वापस कोपनहैगन जा रहा हूँ, मुझे इंडिया वापस जाना होगा, मेरी छुट्टियाँ ख़त्म हो रही हैं।

"कुछ दिन और रुकते तो बहुत अच्छा लगता।" नेनी ने कहा।

मैंने बस मुस्कुरा दिया। आज का दिन बहुत भारी था। मैं ज़्यादा बात नहीं कर पा रहा था।

"अरे जाने दो, रिदम साहब की अगर नौकरी छूट गई तो हमें गालियाँ पड़ेंगी।" राजन ने कहा।

"आप दोनों कैसे मिले?" मैंने राजन और नेनी दोनों से पूछा।

"कॉलेज में, और कहाँ! पढ़ रहे थे साथ में, मिल गए।" राजन ने जवाब दिया।

"वाह! कॉलेज का प्यार और शादी।" मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"असल में," नेनी ने बोला, "ये मेरी माँ से मेरा बदला भी था, मैं pure blood के उनके अहम को कुचलता हुआ देखना चाहती थी।"

ये कहकर नेनी हँस दीं। इस बात पर राजन भी चुप था और मैं भी। मैंने अपने चेहरे पर खिसियाता हुआ भाव लाया। राजन ने गला साफ़ करते हुए मेरी प्लेट में थोड़े-से चावल डाल दिए। कुछ देर में राजन ने कहा कि

इनकी माँ इतनी बुरी भी नहीं है, वह अलग सोचती हैं बस।

तभी नेनी खड़ी हुई और उन्होंने कहा, "हाँ माँ अच्छी हैं, पर दिक़्क़त है कि उनकी आवाज़ बिलकुल हिटलर के जैसी है।"

और अचानक उन्होंने जर्मन भाषा में, बिलकुल हिटलर की तरह बोलना चालू किया। मुझे शुरू में ये एक अच्छा मज़ाक़ लगा पर फिर वह चिल्लाने लगीं। राजन बहुत असहज हो गया, बच्चे डरे हुए नेनी को देखने लगे। मेरे चेहरे की हँसी भी ग़ायब हो गई थी। राजन उठा और उसने नेनी के कंधे पर अपने दोनों हाथ रख दिए, धीरे-से उन्हें अपनी कुर्सी पर बिठाया। नेनी चुप हो गई थीं। जब सब लोग अपना खाना खा चुके थे और एक-दूसरे के उठने का इंतज़ार कर रहे थे तब नेनी ने धीरे से कहा, "मेरी माँ बचपन में मुझे ऐसे ही डाँटती थीं।"

मैं अंत में अपने कमरे में आया तो ओल्गा के पिता और नेनी की माँ के बारे में देर तक सोचता रहा। Pure blood, विज्ञान के हिसाब से इसकी क्या परिभाषा होगी?

अगले दिन राजन जब मुझे हेनोवर बस स्टॉप पर छोड़ रहा था तो मेरी कोपनहैगन की बस के ठीक बग़ल में Frankfurt जाने वाली बस खड़ी थी। मेरे मुँह से निकला, "क्या मैं अभी Frankfurt जा सकता हूँ?"

"क्या बोल रहे हो?" राजन ने तुरंत बोला, "चुपचाप कोपनहैगन जाओ, तुम्हारी इंडिया की फ़्लाइट है, नौकरी गई तो फिर पछताओगे।"

उसने बड़े भाई वाले अधिकार से बोला। ये वही सुर थे जिन्हें मैं बचपन से सुनते आ रहा था। पहले दसवीं पास कर लो अच्छे नंबरों से फिर जो चाहो वो करना, पहले कॉलेज की डिग्री ले लो फिर जो करना हो करना, पहले एक अच्छी नौकरी कर हाथ में पकड़ लो फिर अपने मन की कर लेना। मेरी इच्छा तो हुई कि अपना सामान इस बस से निकालूँ और बग़ल में खड़ी दूसरी बस में तुरंत डाल दूँ। पर इन अच्छी हिदायतों के डर मेरे ख़ून में रचे-बसे थे। मैं चुपचाप कोपनहैगन जाने वाली बस में जाकर बैठ गया। बस की खिड़की पर बैठे हुए जब मैं राजन को विदा कह रहा था तो विचार आया कि अगर मेरी जगह रिदम होती तो क्या करती? क्या वह उस बुज़ुर्ग आदमी की बात याद करके उस पर अमल करती जिसने कहा था कि हमेशा रिस्क लेना, क्या ये सोचकर रिदम बग़ल वाली बस में जाकर बैठ जाती? तभी मैंने देखा Frankfurt की तरफ़ जाने वाली बस आगे बढ़ गई। मैं उसे उस छोटे से बस स्टॉप से बाहर जाता हुआ देखता रहा। मैंने The Beekeeper of Aleppo वापस निकालकर अपने हाथों में रख

ली। कुछ देर में हमारी बस भी चलने लगी। बस में खिड़की के बाहर मैं पीछे छूट रहे हेनोवर को आख़िरी बार देख रहा था। पता नहीं था कि किसे छोड़कर जा रहा हूँ और किसके पास जा रहा हूँ!

बस वापस उसी शिप में पहुँची। मैं वापस ऊपर कैंटीन में गया तो मुबारक की मुझे याद आने लगी। कहाँ होगा वह अभी? क्या कर रहा होगा? कुछ भी खाने की इच्छा नहीं थी तो मैं ऊपर डेक पर चला गया और वहाँ से सूरज का पानी के भीतर जाना देखता रहा। हवा में ठंडक थी और शिप अपनी गड़गड़ाहट में आगे बढ़ रहा था। मैं गहरे साफ़ पानी में अपने अकेलेपन का विस्तार देखने लगा। अभी मैं रिदम हूँ तो इस अकेलेपन में एक तरीक़े की तसल्ली है, मैं अगर ऋषभ होता तो इस वक़्त गहरे अवसाद में होता, अपने ऑफ़िस वालों को मेल पर जवाब लिख रहा होता, आधा काम यहीं ख़त्म करने की कोशिश करता ताकि शनिवार-इतवार को दोस्तों के साथ दारू पीने की मोहलत चुरा सकूँ। पर मैं वो नहीं हूँ अभी, मैं कुछ और हूँ। क्या मैं कोपनहैगन में वापस घुसते ही सलीम हो जाऊँगा? नहीं, मैं रिदम बने रहना चाहता था। मैं रिदम का चेहरा याद करने लगा। इस वक़्त शिप के डेक पर खड़े होकर वह क्या सोचती... क्या वह वापस कोपनहैगन जाने की अच्छी नसीहत स्वीकार कर लेती? मेरी इच्छा हुई कि मैं उसे मैसेज करके पूछूँ कि रिदम तुम इस वक़्त क्या करती?

मैं अपने सामान के साथ कोपनहैगन एयरपोर्ट पर था। जैसा कि मैं हूँ, मैं वक़्त से बहुत पहले एयरपोर्ट पहुँच चुका था। मेरे हाथों में वापस दिल्ली का टिकट नहीं था, मेरे हाथों में Norway का टिकट था, मैं Tromso जा रहा था। एयरपोर्ट पर बैठे हुए मेरे हाथ काँप रहे थे। मैं दिल्ली के बजाय Norway, Tromso क्यों जा रहा हूँ, इसके कई कारण थे। पहला, जब मैं कोपनहैगन पहुँचा तो वहाँ पहुँचते ही मुझे लगा कि मैं फिर अपनी बनी-बनाई व्यवस्था में वापस चला आया था। मुझे अपने कमरे में घुसते ही लगा कि ये कमरा मेरे दिल्ली के घर से कितना मेल खाने लगा है। मैं ये सारी

व्यवस्था बिगाड़ना चाहता था। दूसरा, मुझे वहाँ रोकने के लिए न तो रिदम से मिलने का लालच था, क्योंकि उसके एक भी जवाब नहीं आए थे, और न ही कोई, अच्छी नसीहतें लेकर, डरा हुआ राजन ही था जो मुझे सारा अव्यवस्थित करने से रोके। और न ही मुझे उदास जर्मन लड़की दिखी। तीसरा, दिल्ली में ऐसा कोई नहीं था जिसके पास जाने के लिए मैं लालायित था। चौथा और मुख्य कारण था जब मैं रात में कोपनहैगन के अपने कमरे में लेटा हुआ था तो मैंने रिदम के बजाय उस कमरे से पूछा था कि मैं क्या करूँ ? मुझे रिदम के वो बुज़ुर्ग आदमी दिखे और उन्होंने कहा कि तीन बातें हमेशा याद रखना– पहला, ख़ूब पढ़ना, पढ़ाई नहीं, लिट्रेचर, तुम्हारे पास हमेशा एक किताब होनी चाहिए। दूसरा, be gentle, हमेशा दूसरों के प्रति स्नेह रखो और तीसरा, कभी भी रिस्क लेने से मत डरो।

मैंने उसी वक़्त अपना फ़ोन निकाला और सबसे रिस्की जगह जाने का फ़ैसला किया। Norway, जहाँ जाना मैंने कभी सोचा नहीं था और उसका वो शहर जिसका नाम मैंने पहले कभी नहीं सुना था–Tromso. मुझे पहले फ़्लाइट से ओस्लो जाना था फिर वहाँ चार घंटे का इंतज़ार था, फिर वहाँ से दूसरी फ़्लाइट पकड़नी थी Tromso के लिए। मैंने कोशिश की कि कोई Airbnb बुक कर लूँ, पर कोई भी अच्छी जगह मिल नहीं रही थी। फिर एक जगह ठीक-ठाक दिखी सो उसे मैंने एयरपोर्ट जाने के ठीक पहले बुक कर दिया, पर उस जगह से बुकिंग का कंफ़र्मेशन नहीं आया था सो मैं थोड़ा चिंतित था। जब मैं फ़्लाइट से ओस्लो पहुँचा तो Tromso के Airbnb ने रूम केंसिल कर दिया। मुझे लगा मैंने रिदम होना कुछ ज़्यादा ही सीरियसली ले लिया है। मैं Tromso रात को 9.40 पर पहुँचने वाला था और मेरे पास रहने की कोई जगह नहीं थी। मेरे पास ओस्लो एयरपोर्ट पर मात्र चार घंटे थे जिसमें मुझे अपने रहने की व्यवस्था ढूँढ़नी ही थी। मैं एयरपोर्ट के एक कैफ़े में बैठा और Airbnb पर अपने लिए एक कमरा तलाशने लगा। बहुत देर खोजने पर एक कमरा अचानक दिखा। उसके मालिक का नाम शशि था। कमेंट सेक्शन में गया तो कोई

कमेंट या कोई रेटिंग नहीं थी और कमरे की तस्वीरें भी ज़्यादा नहीं डाली गई थीं। पर कमरा बाक़ी कमरों जितना महँगा नहीं था सो मैंने उसे दो रात के लिए बुक करने की कोशिश की, सोचा अगर ज़्यादा तकलीफ़ होगी तो वहाँ से एक रात में ही निकल जाऊँगा। मैंने जैसे ही बुकिंग की तो उस कमरे की मालिक शशि ने उसे तुरंत स्वीकार कर लिया। फिर उन्होंने मैसेज भेजा– 'आप कब तक आएँगे?'

'नौ चालीस पर फ़्लाइट लैंड करेगी।' मैंने लिखा।

'एयरपोर्ट से घर तक?'

'आपका नक़्शा देखकर पहुँच जाऊँगा।' मैंने लिखा।

'ओ, नक़्शे से पहुँचना मुश्किल है, और यहाँ पब्लिक ट्रांसपोर्ट भी अच्छा नहीं है।'

'तो?'

'हम्म!'

मैंने देखा उसके बाद उनका कोई मैसेज नहीं आया। मुझे डर था कि कहीं वह भी बुकिंग कैंसिल न कर दें। मैं बार-बार फ़ोन चेक करता रहा। मैं जब फ़्लाइट में बैठ गया तो मैंने उन्हें मैसेज किया– 'मैं टैक्सी ले लूँगा, आप अपना पता यहाँ लिख दीजिए। मैं पहुँच जाऊँगा।'

जवाब में उन्होंने अपना फ़ोन नंबर लिख दिया। मैंने उनका नंबर सेव किया और उन्हें तुरंत मैसेज किया– 'आपका पता?'

फ़्लाइट उड़ने के ठीक पहले उनका मैसेज आया जिसमें उनके घर का पता था।

मैं जब Tromso उतरा तो फ़ोन पर देखा तापमान दस बता रहा था। मैंने अपने बैग से गर्म कपड़े निकाले और तुरंत पहन लिए। तभी शशि का मैसेज आया कि मैं एयरपोर्ट के बाहर आपका इंतज़ार कर रही हूँ। मैं बाहर निकला तो मुझे वह दिखीं। दुबली-पतली-सी, छोटे बाल, मुस्कुराता चेहरा। वह भागती हुई मेरे पास आईं।

"मैं अपको आपके व्हॉट्सएप की डीपी से पहचान गई।"

"जी, मेरा नाम रिदम है।"

"पर आपका नाम तो Airbnb पर कुछ और है?"

"हाँ, वो मैं अपने दोस्त का प्रोफ़ाइल इस्तेमाल कर रहा हूँ।"

मेरी शुरुआत झूठ से हुई जो मुझे अच्छा नहीं लगा, पर मैं रिदम को छोड़ना नहीं चाहता था। हम लोग उनके घर के लिए रवाना हुए। तब Tromso में बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। वह इस बारिश में तेज़ गति से गाड़ी चला रही थीं।

"हम आराम से भी चल सकते हैं, कोई जल्दी नहीं है।" मैंने कहा।

"वो घर पर अकेली है, वैसे तो मैं बहुत धीरे गाड़ी चलाती हूँ।"

उनका घर Tromso के दूसरी तरफ़ था। हमें घर पहुँचने में क़रीब एक घंटा लगा होगा। मैंने घर पहुँचते ही तय कर लिया था कि कल सुबह मैं अपनी कोई दूसरी व्यवस्था खोज लूँगा।

घर में घुसते से ही दाहिनी तरफ़ एक छोटा कमरा था जिसमें मुझे रहना था। मैंने अपना सामान रखा तभी ऊपर की तरफ़ से कुछ आवाज़ आई जैसे कोई किसी से बहस कर रहा हो।

"आप फ्रेश होकर ऊपर आ जाइए।"

वह सीढ़ियों से ऊपर चली गईं। ऊपर बहस की आवाज़ बंद हो चुकी थी। मैं अपने कमरे में आकर सीधा बिस्तर पर पसर गया। कहाँ आ गया मैं? मैं ख़ुद को कोसने लगा। रिस्क? क्या रिस्क है ये? मुझे इस वक़्त हिंदुस्तान जाने की तैयारी करनी चाहिए थी और मैं यहाँ चला आया, दुनिया के दूसरे कोने में।

मैंने मेल चेक किया। ऑफ़िस से कई मेल आए हुए थे। फिर मैंने सर्च किया कि कैसे यहाँ से दिल्ली जाने का टिकट बुक किया जा सकता है और कितना वक़्त लगेगा। मेरे दिमाग़ में प्लान बी हरकत करने लगा था। मैं यहाँ से नहीं, अब इस यात्रा से निकलना चाहता था। यहाँ से ओस्लो और ओस्लो से दिल्ली। तभी मुझे लगा कि मेरे दरवाज़े के बाहर कोई हरकत हो रही है।

"रिदम जी, खाना तैयार है, आप ऊपर आ जाइए।"

मैं ऊपर गया तो शशि ने ढेर सारा खाना लगाया हुआ था। दाल, भिंडी, मटन, जीरा आलू। शशि के बग़ल में एक लड़की बैठी थी जो बड़े असमान्य तरीक़े से फ़ोन में अपना सिर घुसाए हुई थी।

"मुझे नहीं पता था कि आप वेज हैं या नॉनवेज, सो मैंने सब थोड़ा-थोड़ा बना दिया।"

शशि नेपाल से थीं। उनकी हिंदी और अँग्रेज़ी सब टूटी-फूटी थी। यहाँ वह एक होटेल में स्टाफ़ थीं और क़रीब बीस सालों से यहाँ रह रही थीं। पहली बार उन्होंने Airbnb का इस्तेमाल किया था। उनकी बेटी, माला की उम्र क़रीब बारह साल की थी, पर दिमाग़ी रूप से वह कमज़ोर थी। इस घर में वे दोनों ही रहती थीं। शशि ने बताया कि वह रोज़ काम पर जाती हैं और उसके पहले वह माला को स्कूल छोड़ देती हैं। क़रीब चार बजे वे दोनों वापस घर आ जाती हैं।

मैंने जैसे ही पहला कौर खाया, मुझे खाने में पहाड़ी स्वाद आया। भिंडी एकदम दिल्ली वाली थी। दाल में एकदम सही तड़का लगाया गया था। मटन सही मात्रा में तीखा था। मुझे विश्वास नहीं हुआ कि मैं यहाँ इतनी दूर आकर इतना लज़ीज़ भारतीय खाना खा रहा हूँ। शशि ने मुझे टोका और कहा कि ये भारतीय नहीं नेपाली खाना है, क्योंकि मेरा बचपन नेपाल के बॉर्डर पर था जहाँ से तीन घंटे में हम लखनऊ पहुँच जाते थे तो खाने में थोड़ा लखनवी टच भी है। मैंने उन्हें Airbnb के कुछ रुल्स समझाए कि कमरे के साथ सिर्फ़ कॉफ़ी की व्यवस्था ही आप कर सकती हैं, उससे ज़्यादा कुछ भी नहीं। आप अगर खाना खिलाएँगी तो उसके अलग से पैसे होंगे।

"यहाँ कहाँ खाना खाएँगे? इधर तो दूर-दूर तक कोई रेस्टोरेंट नहीं है। आप यहीं खाना।" उन्होंने एकदम अधिकार से कहा, "देखिए आप मेरे और माला के मेहमान हैं, तो आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है।"

इसी बीच माला अपना फ़ोन लेकर उठी और पीछे सोफ़े की तरफ़

चली गई। वहाँ वह दो काल्पनिक लोगों से बात करने लगी। बात हँसी और बहस के बीच की थी। माला की अँग्रेज़ी बहुत साफ़ थी, बिलकुल किसी अमेरिकन लड़की की तरह।

खाना खाने के बाद मुझे यहाँ आना थोड़ा कम खलने लगा। मैं उनकी बालकनी पर सिगरेट पीने आ गया। बारिश रुक चुकी थी और ठंडी हवा चल रही थी। मैंने सिगरेट जलाई और पीछे से शशि एक कटोरी में पानी ले आईं ऐश-ट्रे के लिए।

"यहाँ ऐश-ट्रे नहीं है।"

"मैं सिगरेट पी सकता हूँ न?"

"हाँ, बिलकुल।"

"आप अकेले घूम रहे हैं?" शशि ने पूछा।

"घूम नहीं रहा हूँ, अकेले भटक रहा हूँ।"

पता नहीं मैंने ये उनसे क्यों कहा। कहने के बाद मैं थोड़ा झेंप गया।

"अभी पर्यटकों का मौसम नहीं है तो मुझे अजीब लगा कि भारत से कोई यहाँ इतनी ठंड और बारिश में क्यों आया है!"

मैं उन्हें रिस्क वाली बात बताना चाहता था, पर फिर मैंने चुप रहना ही ठीक समझा। तभी घर के सामने की वीरानी-सी सड़क पर एक गाड़ी आकर खड़ी हो गई। ठीक घर के सामने। शशि तेज़ क़दमों से चलती हुई नीचे गईं और उन्होंने मुख्य दरवाज़े को अंदर से लॉक किया और वापस बालकनी में आकर खड़ी हो गईं। मेरी सिगरेट ख़त्म हो चुकी थी और मुझे ठंड भी लग रही थी।

"अंदर चलें?" मैंने धीमे से पूछा।

शशि ने हाँ कहा, पर उनकी निगाह पूरे वक़्त उसी गाड़ी पर थी।

"आप थक गए होंगे, सो जाइए, कल मैंने अपने काम से छुट्टी ले रखी है, कल आपको Tromso शहर लेके चलूँगी।"

मैंने जवाब में कुछ नहीं कहा। उनका चेहरा बदला हुआ था और उन्होंने कसकर माला को पकड़ रखा था।

मैंने शुभरात्रि कहा और अपने कमरे में चला गया। मेरे कमरे की खिड़की से भी वो गाड़ी दिख रही थी। जब तक वो गाड़ी खड़ी रहेगी मुझे पता था कि मुझे नींद नहीं आने वाली थी। सो मैं मुख्य दरवाज़ा खोलकर बाहर आ गया सिगरेट पीने। मैंने सिगरेट जलाई और उस गाड़ी को देखता रहा। कुछ देर में वो गाड़ी वहाँ से चली गई। मैंने आधी सिगरेट फेंकी और अंदर आ गया। सीढ़ियों पर शशि खड़ी थीं। उन्होंने मुझे धन्यवाद कहा और मैं अपने कमरे में चला गया।

क्या मैं उस यात्रा में हूँ जिसके बारे में सारथी कहा करती थी? मैं कभी-कभी दिल्ली से पहाड़ों पर उसके साथ जाता था तो हर एक दिन, हर एक घंटे की सारी प्लानिंग पकड़कर चलता था। मुझे पहाड़ों पर बोर हो जाने का एक बड़ा डर बना रहता था। अपनी सारी प्लानिंग के बाद भी मैं हमेशा बोर होता हुआ पकड़ा जाता था। सारथी को मेरी प्लानिंग और मेरा बोर होना हमेशा खलता था। वह मुक्त घूमना चाहती थी, बिना किसी प्लानिंग के। वह कहती थी यात्रा में अगर आश्चर्य ही न हो तो उस यात्रा का मतलब ही क्या है? क्या मैं कर रहा हूँ इस वक़्त वैसी यात्रा? मुझे शक था।

अगले दिन शशि ने मुझे कॉफ़ी तैयार करके दी। कॉफी का पहला घूँट लेते ही मुझे इतनी संतुष्टि हुई कि मैं बयाँ नहीं कर सकता, और किस बात की संतुष्टि ये भी मुझे ठीक ठीक पता नहीं था। मैं बहुत दूर था और इतनी दूर आकर भी सुबह की अपनी कॉफी पर सहज था ये मेरे लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं था। कॉफ़ी ख़त्म होने पर हम तीनों तैयार होकर बाहर निकले। कल रात मैं डरा हुआ था और आज मुझे लग रहा था कि मैं इस परिवार का एक सदस्य हूँ। हमने माला को स्कूल छोड़ा और छोड़ते ही शशि ने पूछा कि बताइए क्या देखना चाहेंगे आप?

मैंने झेंपते हुए कहा कि जहाँ आप ले जाना चाहें। आज आपने छुट्टी ली है, आपकी छुट्टी बेकार नहीं जानी चाहिए।

शशि मुस्कुरा दीं और उन्होंने कहा कि चलो थोड़ी हाइकिंग कर लेते

हैं। वह मुझे Tromso शहर के पास वाले सबसे ऊँचे पहाड़ पर ले गईं। हम दोनों धीरे-धीरे Fjellheisen का पहाड़ चढ़ने लगे।

"आप एक गरम कपड़ा और ले आते, आपको ऊपर ठंड लगेगी।" उन्होंने कहा।

"इतनी ऊपर चलना है तो गर्मी आ जाएगी।" मैंने अपनी साँस सँभालते हुए कहा।

जैसे-जैसे हम ऊपर जाते गए, पूरा Tromso शहर का विस्तार हमें नज़र आने लगा। Tromso एक छोटा-सा टापू है, उस टापू और हमारे बीच में समुद्र बह रहा था। शशि का घर भी समुद्र के इसी तरफ़ था, अगर हमें Tromso शहर जाना है तो उसके लिए हमें ब्रिज पार करना पड़ता है। हम जिस ऊँचाई पर पहुँचे थे वहाँ से शशि अपना घर दिखाने लगीं जो बहुत ही छोटा नज़र आ रहा था। ऊपर चढ़कर हम एक पड़ाव पर रखी हुई बेंच पर बैठ गए। मैं जाने कितने सालों बाद इस तरह की चढ़ाई चढ़ रहा था। मेरी साँस फूल गई थी। शशि ने मुझे केले दिए। वह एक छोटा बैग लेकर आई थीं जिसमें केले और पानी उन्होंने रख लिया था।

"इसे Sherpatrappa भी कहते हैं। ये सीढ़ियाँ शेरपा लोगों ने बनाई थीं कई साल पहले।" शशि ने कहा।

वह बिलकुल नहीं थकी थीं। कुछ देर में वह बेंच से उठीं और सामने उग रहे मशरूम के बारे में बताने लगीं। मेरी साँस अब थोड़ी ठीक चलने लगी थी, पर अभी भी ऊपर चढ़ने की हिम्मत नहीं थी।

"रात में वो गाड़ी किसकी थी?" मैंने पूछा।

वह बैठकर मशरूम तोड़ रही थीं। वह बिना पलटे सीधी खड़ी हो गईं।

"माफ़ी चाहता हूँ अगर मैंने कुछ ग़लत पूछ लिया है तो..."

"नहीं ठीक है। वो मेरा पति है, हमारा तलाक़ हो चुका है, पर जब वो पी लेता है तो उसे होश नहीं रहता और वो चला आता है। मैंने कई बार पुलिस में कंप्लेन की है। क़ानूनन वो मेरे घर के एक किलोमीटर के दायरे में प्रवेश भी नहीं कर सकता है। पर अगर मैंने फिर से पुलिस से शिकायत

की तो उसे जेल हो जाएगी और उसकी नौकरी भी चली जाएगी।"

वह कुछ देर के लिए चुप हो गईं। इस ऊँचाई से वह अपने घर को देखने लगीं जो कई माचिस की डिब्बियों के बीच फँसी एक माचिस की डिब्बी जैसा लग रहा था।

"वो डैनिश आदमी है, पीने के बाद हिंसक हो जाता है। मैं और मेरी बच्ची बहुत कुछ सह चुके हैं।"

फिर वह कुछ नहीं बोलीं। मैंने उन्हें उनके बैग से निकालकर पानी दिया फिर हम ऊपर की तरफ़ चल दिए।

सबसे ऊपर एक रेस्टोरेंट था। शशि वहाँ पहुँचकर कॉफ़ी का ऑर्डर दे चुकी थीं। कॉफ़ी आकर ठंडी भी हो गई थी, उन्होंने अपनी कॉफ़ी पी भी ली थी तब कहीं जाकर मैं पहुँचा था। पूरी ज़िंदगी ऑफ़िस में काम करके शरीर इतना कमज़ोर हो चुका था कि मेरी साँसों की आवाज़ पूरे पहाड़ में गूँज रही थी। मैंने रेस्टोरेंट वालों से रिक्वेस्ट की कि कॉफ़ी गर्म कर दें। मेरे बोलने में अभी भी बहुत थकान थी। मेरी पिंडलियाँ बुरी तरह दर्द कर रही थीं, जाँघें काँप रही थीं। शशि का हँसते हुए बुरा हाल था। उसे यक़ीन नहीं हो रहा था कि मैं इस क़दर कमज़ोर हूँ। मैं उस रेस्टोरेंट की बेंच पर पसर गया। तभी मुझे रिदम का मैसेज आया।

'सलीम, तुम वापस आ गए? आज शाम को मिल सकते हो?'

मैंने तुरंत जवाब लिखा– 'नहीं, मैं वापस नहीं आया हूँ, पर तुम कहो तो कल तक पहुँच सकता हूँ?'

'तुम अभी भी जर्मनी में हो?' उसने लिखा।

'नहीं, मैं नॉर्वे में हूँ, मैं यहाँ आ गया था।'

'ओह! कब वापस आओगे?'

'मैं कल आ रहा हूँ, पर उसके पहले मैं तुमसे माफ़ी माँगना चाहता हूँ। जो भी मेरे और तुम्हारी बहन के बीच हुआ, वो ग़लत था, मुझसे बड़ी ग़लती हो गई रिदम, I am really sorry!'

'क्या हुआ था तुम्हारे और पारुल के बीच?' रिदम ने लिखा और मैंने

अपना फ़ोन ख़ुद से दूर कर दिया।

पारुल ने रिदम को कुछ भी नहीं बताया था। मेरे पास अब कहने को कुछ भी नहीं था। मुझे कुछ तो लिखना पड़ेगा। मैं खड़ा हो गया, मानो सारी समस्या बैठे रहने की थी, खड़े होते ही सारी मुसीबत शरीर से झड़ जाएगी। मैंने वापस फ़ोन उठाया और देखा रिदम अभी भी ऑनलाइन है, वह इंतज़ार कर रही है मेरे जवाब का। मैं टहलने लगा, कुछ देर पहले मेरी जाँघें काँप रही थीं, पिंडलियों में दर्द हो रहा था पर इस वक़्त मुझे उस दर्द का कोई एहसास नहीं था। मैं वापस फ़ोन पर वापिस आया, क्या जवाब हो सकता है अब? क्या लिखा जा सकता है? मैं वापस अपने पुराने मैसेज को पढ़ने लगा कि कहीं से मैं किसी एक बात का सिरा पकड़ूँ और एक झूठ का ताना-बाना बुन सकूँ। मुझे सिगरेट की ज़रूरत थी, पर सिगरेट पीने का वक़्त नहीं था मेरे पास और शरीर में ताक़त भी नहीं थी।

'क्या हुआ था सलीम?' रिदम का एक और मैसेज आया।

एक तो मैं अब सलीम नहीं था। मैं जानता भी नहीं था कि सलीम असल में कैसा था। मैं ख़ुद रिदम था। अगर रिदम मेरी जगह होती तो क्या करती? मैं उससे ही पूछना चाहता था कि अगर तुम मेरी जगह होती तो क्या करती? मैं वापस बैठ गया, फ़ोन को अपने हाथ में रखा और अपनी आँखें बंद करके पूछा, रिदम तुम क्या करती? मैंने आँख खोली और लिखा,

'मैं तुम्हारी बहन के साथ सोया था, हमारे नॉर्थ डेनमार्क जाने से पहले वाली रात। मैं उस बात के लिए बेहद शर्मिंदा हूँ। मैं तुमसे मिलना चाहता हूँ ताकि सामने से माफ़ी माँग सकूँ। मुझसे ग़लती हुई है। I am really really sorry!'

इससे पहले कि मैं फिर शुतुर्मुर्ग़ बन जाऊँ, मैंने तुरंत मैसेज भेज दिया। कुछ ही देर में रिदम ऑफ़लाइन हो गई। मैं उस चैट को खोले बैठा रहा। वह दो बार ऑनलाइन आई, पर उसने कुछ भी टाइप नहीं किया।

"क्या हुआ, सब ठीक है?" शशि ने पूछा।

शशि मुझे पूरे वक़्त देख रही थी पर मुझे इसका पता नहीं चला था।

"हाँ, हाँ ठीक है।" मैंने कहा।

मैं हड़बड़ाया हुआ था। मैं रेस्टोरेंट से बाहर निकल आया, पर बाहर इतनी तेज़ हवा चल रही थी कि वहाँ खड़े नहीं रहा जा रहा था। शशि ने सही कहा था कि कुछ गर्म कपड़े और रख लेने चाहिए थे। मैं फ़ोन को अपनी आँखों के सामने से हटा नहीं पा रहा था।

"सुनो, आपकी तबियत ख़राब हो जाएगी। आप अंदर आ जाइए।" शशि ने बाहर आकर कहा।

मैं वापस रेस्टोरेंट में चला आया। मैंने एक कॉफ़ी और ली और गर्म-गर्म उसे गटक गया। शशि मुझे ऐसे देख रही थी मानो पहली बार देख रही हो। मैं इस वक़्त ऋषभ नहीं था, सलीम भी नहीं था, मैं रिदम होने की तरफ़ भाग रहा था पर वह मेरे हाथों से छूटती जा रही थी। क्या जब मुझे सारथी के अफ़ेयर के बारे में पता लगा था और मैंने उसे मैसेज किया था तो क्या वह भी ऐसे ही अस्त-व्यस्त हो गई होगी?

"सुनो, तुम बैठ जाओ। बताओ क्या हुआ? क्या हुआ है?"

उन्होंने मेरे हाथों से फ़ोन ले लिया और उसे अपने पास रख लिया।

"क्या हुआ है? तुम्हारा चेहरा लाल हो रहा है।"

मैं एक जगह बैठ नहीं पा रहा था, पर शशि ने मुझे बिठा दिया था। मेरे भीतर हलचल थी। मैं कुछ कह देना चाहता था। मैंने शशि की आँखों में देखा, वहाँ वो जगह मुझे दिखी जिसमें मैं सारा कुछ कह सकता था। पर सारा कुछ क्या था? धोखा, हाँ मैं धोखे से शुरुआत कर सकता था। मैं कहना चाहता था कि धोखा खाना आसान है। पर धोखा देना इस दुनिया का सबसे कठिन काम है। धोखा देने के बाद की स्थिति में क्या किया जाता है मुझे नहीं पता था। पर मैंने कहा, "मेरी एक प्रेमिका थी, सारथी। हम दोनों दिल्ली में लिव-इन रिलेशनशिप में सात साल से रह रहे थे। वो फ्रीलांस लेखक और जर्नलिस्ट थी। वो हमेशा अपने काम को लेकर यहाँ-वहाँ जाती रहती थी। वहीं उसका एक आदमी से शारीरिक संबंध हो गया था। तीन महीने पहले की बात है कि उसने मुझे छोड़ दिया। मैंने जब पूछा कि कब

से चल रहा था तुम्हारा संबंध तो उसने कहा एक साल से। वो एक साल से उसके साथ सो रही थी और मुझे इसकी भनक भी नहीं लगी थी। पर उसने मुझे ऐसे छोड़ा जैसे हम मैले कपड़े उतारकर नए साफ़ कपड़े पहनते हैं।"

मैं बोलते-बोलते रुक गया। फिर मुझे लगा कि मैं अचानक सारथी की बात क्यों करने लगा! क्या हुआ मुझे? मुझे रिदम की बात करनी चाहिए थी। पर मैं अभी भी सारथी की बात कर रहा था। मेरे भीतर सारा कुछ गड़बड़ हुआ पड़ा था। मैं कुछ भी ठीक से सोच नहीं पा रहा था। मैं चुप रहना चाहता था, पर मुँह में पता नहीं कहाँ से शब्द आ रहे थे और वो मुझसे बिना इजाज़त लिए बाहर निकलते जा रहे थे।

"मैं वापस दिल्ली जाना चाहता था, पर मैं यहाँ आ गया। क्यों, मुझे नहीं पता? मैंने तो इस शहर का नाम भी नहीं सुना था कभी। क्या शहर है ये? कल की मेरी फ़्लाइट है भारत की जो चली जाएगी। मैं नहीं लेना चाहता था कभी भी कोई रिस्क। मुझे नहीं रखना है हमेशा एक किताब अपने हाथ में। मुझे दूसरों से कोई मतलब नहीं है, मेरी ख़ुद की हालत ठीक नहीं है तो दूसरों के प्रति स्नेह कहाँ से आएगा, मैं बस बदला ले रहा हूँ, ख़ुद से, अपने हर अगल-बग़ल के व्यक्ति से, मैं चाहता हूँ सब लोगों को ये पीड़ा महसूस हो जो इस वक़्त मैं महसूस कर रहा हूँ ताकि जब मैं उन्हें बताऊँ कि मैं कैसा महसूस कर रहा हूँ तो वो ये न कहें कि तुम कहीं घूमने जाओ, यात्रा करो सब ठीक हो जाएगा, क्योंकि कितना भी भागो कभी कुछ ठीक नहीं होता। हम कहीं भी चले जाएँ हम बार-बार वही और वैसा का वैसा ही जी रहे होते हैं।"

बोलते-बोलते मेरी साँसें फूलने लगीं। मैं चुप हो गया। मुझे नहीं लगा कि शशि को कुछ भी समझ आया। वह बस मुझे ताक रही थीं। शायद मेरी बातों का कोई सिर-पैर नहीं था। मेरे चुप होने पर उन्हें क्या समझ आया मैं नहीं जानता हूँ, पर कुछ देर में उन्होंने मुझे मेरा फ़ोन वापस दे दिया।

हम जब नीचे आ रहे थे तो मेरी जाँघें कुछ ज़्यादा ही काँप रही थीं। ऊपर चढ़ने से नीचे उतरना ज़्यादा कठिन होता है। मुझे लगा हमें सारा कुछ

कितना ग़लत पता है! धोखा देना ज़्यादा कठिन है, नीचे उतरना ज़्यादा कठिन है, यात्रा करने में भूलता कुछ भी नहीं है, सारा कुछ बहुत ज़्यादा पास खिसक आता है।

कम-से-कम मैंने झूठ से तो छुटकारा पा लिया था, मैंने रिदम को सारा कुछ सच बता दिया था। बस मैं एक चीज़ चाहता था कि काश इस वक़्त मैं रिदम के सामने होता और अपने घुटनों पर बैठकर उससे माफ़ी माँग पाता। ये मैसेज पर I am really really sorry कहना हद से ज़्यादा खोखला सुनाई दे रहा था।

"आपने जो मेरा नाम Airbnb में पढ़ा था, वही मेरा असल नाम है।" मैंने शशि से कहा।

वह कुछ क़दम मुझसे आगे चल रही थीं, चलते-चलते रुक गईं।

"ऋषभ?"

"हाँ।"

"पर मैं रिदम बने रहना चाहता हूँ।" जैसे ही हम नीचे पहुँचे मैंने शशि से कहा।

"रिदम, चलो कुछ अच्छा खाते हैं, मुझे बहुत भूख लगी है।"

हम पुल पार करके Tromso शहर में दाख़िल हुए। वहाँ उन्होंने पार्किंग में गाड़ी पार्क की और हम एक थाई रेस्टोरेंट में खाना खाने घुस गए।

खाने के बाद शशि ने मुझे घर छोड़ा और वह ख़ुद अपने लोकल दोस्तों से मिलने चली गईं। मैंने अपने कमरे में आते ही पैकिंग चालू कर दी। मैं शशि से कहना चाहता था कि मैं कल चला जाऊँगा, पर मैंने सोचा कल की बात कल ही करूँगा। पैकिंग के बाद मैं गहरी नींद सो गया। शाम को शशि माला को लेकर वापस आईं और आते ही किचन में काम करने लग गईं। मैंने कॉफ़ी पीते हुए उनसे पूछा कि क्या बना रही हैं? वह मुस्कुराते हुए बोलीं– "लज़ानिया।" शशि की क़द-काठी से उनकी उम्र का पता नहीं चलता था। वह अपनी उम्र से बहुत कम लगती थीं। लज़ानिया बनाते हुए

वह कोई नेपाली गाना गुनगुना रही थीं। मैं उनकी ख़ुशी देख सकता था।

देर शाम को डाइनिंग टेबल पर मैं स्वादिष्ट लज़ानिया का इंतज़ार कर रहा था। शशि अंदर किचन में व्यस्त थीं और उनके बनाए खाने की ख़ुशबू मेरी भूख और बढ़ा रही थी। मैंने देखा सामने सोफ़े पर माला अपने कमरे के दरवाज़े को घूरे जा रही थी। उसके कमरे का दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ था। मैंने माला से पूछा कि क्या मैं दरवाज़ा बंद कर दूँ? तो वह मेरी तरफ़ देखने लगी। मुझे लगा ठीक इस वक़्त वह अपनी उम्र से कॉफ़ी बड़ी लग रही थी। उसने मुझसे कुछ नहीं कहा, वह वापस दरवाज़े को घूरने लगी। फिर उसने अपना एक हाथ बढ़ाया और दरवाज़े की तरफ़ इशारा करने लगी।

"No, no, I am not doing that." अचानक उसने कहा मानो उस दरवाज़े के पीछे से कोई है जो उसे कुछ करने को कह रहा है।

पता नहीं मुझे क्या हुआ, मैं उठा और जाकर दरवाज़ा बंद कर दिया। ये मेरे अपने डर हैं जिनसे मैं हमेशा से छुटकारा पाना चाहता था। मैं हमेशा दिल्ली में भी, रात में सोने के पहले, अपने दरवाज़े खिड़कियों को एक बार देख लेता था कि वो बंद हैं कि नहीं। मेरे दरवाज़ा बंद करते ही माला खड़ी हो गई।

"He's not going to like that, he will be angry." माला ने कहा, और मैं डर गया।

मैं वापस जाकर अपनी कुर्सी पर बैठ चुका था। अब मैं उठकर वापस दरवाज़ा नहीं खोल सकता था। मैंने देखा माला सोफ़े के आस-पास ग़ुस्से में टहलने लगी थी। शशि ने खाना लगाते वक़्त माला को देखा और तुरंत जाकर दरवाज़ा वापस खोल दिया। माला को जैसे कुछ दिखा वहाँ और उसका ग़ुस्सा तुरंत शांत हो गया। वह तुरंत उससे माफ़ी माँगने लगी।

"माला ठीक है, कोई नहीं, ग़लती से दरवाज़ा बंद हो गया होगा।" शशि ने कहा।

माला ने मुझे देखा। मैं चुप रहा। फिर माला उठी और उसी कमरे के

अंदर चली गई। उसने अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया। हम दोनों खाना खाने बैठ गए। पर माला की बातचीत की आवाज़ लगातार उसके कमरे से आ रही थी। शशि देख सकती थीं कि मैं असहज हो रहा हूँ।

"साल 2017 में मैं माला को लेकर नेपाल गई थी। हम तीन महीने वहाँ रहे थे। मेरी माँ उस वक़्त माला के साथ बैठे हुए एक टीवी सीरियल देखती थी। उन तीन महीनों में पता नहीं इसे क्या हुआ कि वो उस सीरियल के पीछे पागल हो गई। हमें लगातार वो सीरियल उसे दिखाते रहना पड़ता था। यहाँ जब मैंने डॉक्टर को दिखाया था तो उसने कहा कि वो मानती है कि वो उस सीरियल का एक पात्र है। वो चलते सीरियल में सबसे बात करती है, वो उसके भीतर जीती है। ये उसका कम्फ़ोर्ट ज़ोन है।"

"मतलब वो इस वक़्त उस टीवी सीरियल की एक पात्र है?"

"इस वक़्त नहीं, वो पूरे वक़्त अब उसी पात्र की तरह रहती है और बात करती है।"

तभी जब मैंने शशि को बोला था कि मैं यहाँ रिदम हूँ तो उन्हें क़तई आश्चर्य नहीं हुआ था।

"जब वो नेपाल में थी तो माला से शोर बर्दाश्त नहीं होता था। पूरे वक़्त हमें उसके कान बंद रखने पड़ते थे। हमने उसे हेडफ़ोन दे दिए थे और वो लगातार ये सीरियल देखा करती थी।"

मैंने सोचा, तभी उसकी अँग्रेज़ी इतनी जुदा सुनाई देती है। लगता है कि कोई अमेरिकन लड़की बात कर रही है। कुछ देर बाद माला बाहर आई और उसने एक ड्रॉइंग मेरे सामने रख दी। उस ड्रॉइंग में सबके चेहरे गोल थे और सबकी बड़ी-बड़ी आँखें थीं। एक बड़ी-सी औरत कमरे में उड़ रही थी। एक आदमी बीच कमरे में खड़ा रो रहा था, और एक लड़की अपनी माँ के साथ पलंग पर बैठी उस रोते हुए आदमी को देख रही थी। शशि ने मेरे सामने से ड्रॉइंग हटा ली। माला वापस अपने कमरे में चली गई।

रात मैं जब कमरे में लेटा था तो वो ड्रॉइंग मेरे दिमाग़ से निकल नहीं रही थी। मुझे लगा था माला ने अपना नहीं मेरा कमरा बनाया था। वो औरत

जो कमरे में उड़ रही थी, जिसके लंबे बाल थे, वह नाराज़ और दुखी थी। बार-बार उस औरत का चेहरा आँखों के सामने चला आता। मैंने अपना मोबाइल निकाला और व्हॉट्सएप की डीपी में सारथी का चेहरा देखने लगा। सूरज पीछे चमक रहा था, वह किसी गोबर लिपे घर के आँगन में खड़ी थी, उसने सलवार-सूट पहना हुआ था और फूटकर हँसने के बीच कहीं ये तस्वीर ली गई थी। फिर मैं रिदम की तस्वीर देखने लगा। चश्मा पहने मुस्कुराती हुई वह कैमरे में देख रही थी। इन दोनों के बीच में वो कमरे में उड़ रही लड़की का चेहरा भी मेरे दिमाग़ में घूम रहा था। मैंने अपना इंस्टाग्राम खोला ताकि मैं पारुल से माफ़ी माँग सकूँ, पर पता चला कि वह मुझे ब्लॉक कर चुकी थी।

सुबह कॉफ़ी पीते हुए फ़ोन देखा तो नेनी के मैसेज आए हुए थे– 'कैसे हैं आप? कहाँ हैं? तस्वीरें भेजना, आपकी तस्वीरों के ज़रिये मैं भी घूम लूँगी।'

मैं उन्हें कैसे बताता कि मैं असल में कितना घूम रहा हूँ और कितना भाग रहा हूँ! कमरे से बाहर आया तो शशि और माला नहीं थीं। शशि काम पा जा चुकी थी और माला स्कूल। पूरा घर ख़ाली था। मैं टहलते हुए किचन में गया, अपने लिए कॉफ़ी बनाई और नेनी को जवाब दिया कि ओल्गा और राजन को मेरा प्रेम देना, मैं नॉर्वे में हूँ, जल्द तस्वीरें भेजूँगा।

कॉफ़ी लेकर जब बालकनी में आया तो पता चला बाहर का तापमान इस वक़्त सात डिग्री था, हवा की वजह से तापमान सात डिग्री से कम लग रहा था। मैं भीतर आया और शशि की एक शॉल ओढ़कर वापस बालकनी में आ गया। मुझे ये ठंड अपने शरीर पर अच्छी लग रही थी, ये चुभ नहीं रही थी। या मैं यूँ भी कह सकता हूँ कि इस वक़्त मुझे कुछ भी चुभ नहीं रहा था। अब तक जो भी घट चुका था उसका लब्बोलुआब ये था कि इस वक़्त सारा कुछ धुला हुआ नयापन लिए हुए महसूस हो रहा था। जैसे इस ठंड में सूरज का शरीर पर पड़ना बेहद नया था मेरे लिए। मैंने ओल्गा की तरह अपनी आँखें बंद कर लीं और सूरज की हल्की तपिश अपने शरीर पर

महसूस करने लगा। जब आँखें खोलीं तो दूर तक देखने की कोशिश करने लगा। नीले आसमान में सफ़ेद बादलों के बीच सूरज की किरणों का खेल देखने पर यक़ीन नहीं हो रहा था कि ये मैं सच में इतनी ख़ूबसूरती के सामने खड़ा हूँ। लगा कि मैं कोई पेंटिंग देख रहा हूँ, ये सुंदरता असल में किसी की कल्पना है जिसे उसने पेंट किया हुआ है। मैं दिल्ली में बिताए अपने जीवन के बारे में सोचने लगा तो पहली बार ये एहसास हुआ कि वहाँ तो हर एक दिन दूसरे दिनों की फ़ोटोकॉपी जैसा बीत रहा था। सारा-का-सारा पहले ही पता होता था। यहाँ तक कि अपने दोस्तों के जोक के पहले ही मैं कितना और कैसे हँसूँगा ये भी भीतर तय होता था। मेरा हँसना तक बँधा-बँधाया था। यहाँ मैं सलीम था, अब मैं रिदम हूँ, ठीक इस वक़्त मैं उस शहर में हूँ जिसका यहाँ आने के पहले नाम तक नहीं सुना था।

क्या मैं ख़ुश हूँ?

मैं अचानक सोचने लगा। मैंने ये सवाल कभी अपने से नहीं पूछा था। सारथी के साथ रहते मेरा सवाल होता था कि क्या वह मेरे साथ ख़ुश है? या वह मेरे साथ ख़ुश क्यों नहीं है? पर ये सवाल कभी मेरे ज़हन में नहीं आया, कि क्या मैं अपने साथ ख़ुश हूँ। मैं अभी भी बालकनी में खड़ा हल्का काँप रहा था। सामने फैले Tromso शहर के आस-पास फैले पहाड़ों को देख रहा था और इंतज़ार कर रहा था जवाब का। क्या मैं ख़ुश हूँ? मुझे लगा शरीर में जिस जगह से ये सवाल उभरा है जवाब भी उसी जगह से कहीं आएगा। मैं ठंड में काँपते हुए अपने शरीर को छूने लगा। शरीर में कौन-सी जगह होती है जहाँ से इस तरह के सवाल उठते हैं। फिर मुझे लगा कि अगर मुझे पता चल जाए कि इस शरीर में 'मैं' कहाँ है तो उस सवाल का उद्गम पता करना आसान हो जाएगा। मैं बालकनी में टहलने लगा, और अपने ही शरीर में उस जगह को तलाशने लगा जिसे छूकर मैं कह सकूँ कि ये 'मैं' हूँ, ये है शरीर में वो जगह जहाँ से मैं का उद्गम होता है। पर बहुत देर तक टटोलने पर भी न तो मुझे शरीर में कही 'मैं' मिला और न ही कोई जवाब। मेरे भीतर रिदम को लेकर एक टीस थी। सारथी को

लेकर एक पीड़ा। पर अब मैं यहाँ छुपा हुआ नहीं था। शायद सच बोल देने की यही एक सांत्वना भर ख़ुशी थी। मैं बाहर बालकनी में खड़ा इस नए एहसास का सुख ले रहा था।

मैंने अभी तक मेल चेक नहीं किए थे। मुझे पता था कि ऑफ़िस से बहुत मेल आए होंगे। इस वक़्त मुझे दिल्ली में होना था। मैं यहाँ इस बालकनी में शशि की शॉल में लिपटा हुआ अपनी कॉफ़ी लिए इस वक़्त जो देख रहा था और जो भी महसूस कर रहा था बस उसे ही जी लेना चाहता था। जो दिख रहा है उसे वैसा-का-वैसा भीतर प्रवेश करने का मार्ग ख़ाली रखना चाहता था। मैं सामने दिख रही पेंटिंग में कोई एक रंग हो जाना चाहता था। रिदम का रंग क्या है?

मैं गर्म कपड़े पहनकर बाहर टहलने निकल गया था। सोचा था कि Tromso शहर देखूँगा, उसकी गलियों में गुम हो जाने की कोशिश करूँगा। पर बाहर निकलते ही मैं शहर के बजाय पीछे के पहाड़ की तरफ़ मुड़ गया। धीरे-धीरे मैं उस पहाड़ को पार करते हुए जंगल की तरफ़ मुड़ गया। तभी मुझे कहीं से हल्की पानी की आवाज़ आने लगी। मैंने उस आवाज़ की तरफ़ अपने क़दम बढ़ाए। सारे घर पीछे छूट गए थे और पानी की आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। तभी घने पेड़ों के बीच से मुझे पानी दिखा। पीछे किसी ग्लेशियर से आ रहा ये पानी चमकता हुआ अपने पूरे वेग से बह रहा था। मैं उस पानी को छू लेना चाहता था। मैं पत्थरों से होता हुआ उसके पास चला गया। जैसे ही उस पानी को छुआ तो पता चला मैं कितना प्यासा हूँ। मैंने अपना मुँह एक धार में अड़ा दिया और गटागट पानी पीने लगा पर मेरी प्यास नहीं बुझी। पानी में कुछ बेहद पवित्र था पर उसे छूने में उसे पीने में वो बार-बार छलककर वापिस पानी में गिर जा रहा था। मैं उस पवित्र को पकड़ नहीं पा रहा था। पानी में बार-बार हाथ डालने में मेरी जैकेट गीली होने लगी थी। मैंने अपना जैकेट उतारा फिर मुझे टीशर्ट भी उतारने का मन किया। मैं किनारे गया और एक पेड़ के नीचे अपना जैकेट-टीशर्ट उतारकर रख दिया। फिर पता नहीं क्या हुआ कि मैंने अपने

जूते खोले, पैंट उतारी और देखते-देखते मेरे शरीर पर एक भी कपड़ नहीं था। धूप की तपिश कोमल थी पर ठंडी हवा रोंगटे खड़ी कर रही थी। मैं धीमे क़दमों से चट्टानों पर पाँव रखते हुए पानी की तरफ़ गया। पानी बहुत ज़्यादा ठंडा था। पर मेरे भीतर उस पवित्र चीज़ को पा लेने की इच्छा थी जो बार-बार मुझसे छलक जा रही थी। एक जगह जहाँ पानी का एक कुंड जैसा मुझे दिखाई दिया, मैंने धीरे-से उसमें अपने पैर डाल दिए। ठंडा पानी शरीर को छूते ही मुझमें एक कंपन पैदा कर रहा था, पर उस कंपन की तकलीफ़ मुझे अच्छी लग रही थी। धीरे-धीरे कर मैंने अपना पूरा शरीर पानी में डाल दिया। मैं और ज़्यादा तकलीफ़ ख़ुद को देना चाहता था पर शरीर के पानी में प्रवेश करते ही सारी तकलीफ़ जाती रही। मुझे लगा कि कुछ पवित्र है जो मेरे शरीर को छू रहा है। मैं उसे निगलना नहीं चाहता था, मैं बस उसकी छुअन अपने शरीर पर महसूस करना चाहता था।

कुछ देर में मैं वहीं एक चट्टान पर बैठ गया। मेरे नंगे शरीर पर सूरज की किरणें पड़ रही थीं। यहाँ सिर्फ़ पेड़ों का सरसराना था और पानी की आवाज़। जब सूरज की रोशनी से मेरे शरीर का पानी सूखने लगा तो मेरी कँपकँपी भी बंद हो गई। मैं जिस चट्टान पर बैठा था वहीं लेट गया। ऊपर नीला रंग ऐसा था जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। बात-बात में सारथी कहती रहती थी कि चलो, पहाड़ों में चलते हैं, दो दिन के लिए ही सही। पर मैं हमेशा अपनी व्यस्तता में डूबा रहता। एक बार तो वह मंडी हाउस के हिमाचल भवन से जाकर दो टिकट भी ले आई थी धर्मशाला के लिए। पर मैं नहीं जा पाया था। मुझे व्यस्त रहने में मज़ा आता था। उस व्यस्तता से जितना भी वक़्त मिलता वो या तो सारथी या अपने दोस्तों में बँट जाता। और पहाड़ जाकर करेंगे क्या, ये मेरी कभी समझ नहीं आया था। अभी मैं वो यात्रा कर रहा हूँ जो सारथी हमेशा से मेरे साथ करना चाहती थी। वह ऐसे ही किसी पहाड़ पर किसी चट्टान पर यूँ ही पड़े रहना चाहती थी मेरे साथ। मैंने अपनी अगल-बग़ल की चट्टानों को देखा कि अगर सारथी सच में यहाँ मेरे साथ होती तो वह किस चट्टान पर लेटती। क्या मैं कभी भी

उसके सामने इस तरह बिना कपड़ों के किसी चट्टान पर लेटा रह सकता था? मैंने अपनी चट्टान बदली और मैं उस चट्टान पर चला गया जो थोड़ी बड़ी थी जिसमें सारथी के लेट सकने की जगह थी। मैं लेटा रहा और सारथी का बग़ल में पड़े रहना महसूस करता रहा।

'तुम्हें अजीब नहीं लग रहा?' अगर सारथी होती तो वह कहती।

'क्या?' मैं पूछता।

'यहाँ पक्षी बहुत कम हैं।' वह कहती।

'हाँ, सच में यहाँ मैंने बहुत पक्षी नहीं देखे हैं।'

'अगर तुम धर्मशाला चलते ना, तो वहाँ इस वक़्त पक्षियों की भरमार होती।'

'तुम्हें कौन-सा पक्षी पसंद है?' मैं पूछता।

'चील, जो दूर आसमान में उड़ती है। और तुम्हें?'

'मैंने तो गौरैया देखी है बचपन में, मैं शहर में उन्हें देखना मिस करता हूँ।'

'तुम फिर शहर आ गए?' वह नाराज़ होकर कहती।

'तुमने पक्षियों के बारे में पूछा तो मैं बस ईमानदारी से बता रहा था।'

'हर जगह ईमानदारी नहीं चलती है। इस तरीक़े की ईमानदारी दैनिक जीवन में कल्पना का ख़ून कर देती है। और अगर किसी संबंध में कल्पना नहीं है, तो वो संबंध भी मर जाता है।'

'झूठ की बुनियाद पर संबंध कैसे टिकेगा?'

'मैं ज़मीन की बात ही नहीं कर रही, बुनियाद ज़मीनी है, पर मुझे आसमान में दिलचस्पी है।'

'हम आसमान तो ज़मीन पर ही रहकर देख सकते हैं।'

'पर मैं दूर जाना चाहती हूँ जहाँ आसमान और ज़मीन मिलते हैं।'

'ऐसी कोई जगह नहीं होती है?'

'मैं जानती हूँ ऐसी जगह।'

'क्या तुम मुझे भी ले चलोगी?'

'तुम्हें तो यात्राएँ अच्छी नहीं लगती।' वह कहती।

'मैं अब बदल गया हूँ, मैं ऋषभ नहीं हूँ, मैं रिदम हो चुका हूँ।'

मेरे बदलने की बात पर सारथी मुझे एकटक देखती रहती।

'तो बताओ क्या तुम मुझे भी ले चलोगी?'

बहुत सोचने के बाद वह जवाब देती, 'नहीं।'

'क्यों?'

'बहुत देर कर दी तुमने बदलने में...'

'पर देखो मैं बदल गया हूँ।'

'अभी तुमने कपड़े नहीं पहने हैं, जैसे ही तुम अपने पुराने कपड़े पहनोगे तुम फिर ऋषभ हो जाओगे।'

और मैं देर तक पेड़ के नीचे पड़े अपने कपड़े देखता रहा। उन कपड़ों में मुझे ऋषभ, सलीम और रिदम पड़े हुए दिख रहे थे। अगर वे वहाँ पड़े हैं तो इस वक़्त मैं कौन हूँ? क्या मैं इस वक़्त सारथी हूँ?

शाम को जब शशि और माला आए तो मैंने उनका स्वागत ऐसे किया मानो ये मेरा ही घर हो। शशि हँसने लगी, पर माला बिना किसी अभिवादन के ऊपर चली गई। शशि ने कहा कि माला को भूख लगी है शायद। शशि ख़ुश दिखाई दे रही थीं। वह आते ही सीधा किचन में काम करने जुट गईं। कुछ देर में उन्होंने माला को खाना दिया और मेरे लिए एक कॉफ़ी ले आईं।

"आप बहुत ख़ुश लग रही हैं, आज का दिन अच्छा गया लगता है।" मैंने कहा।

"मैं ख़ुश हूँ क्योंकि मैंने अपने ऑफ़िस के एक दोस्त को तुम्हारे साथ जाने के लिए मना लिया है।"

"कहाँ जाने के लिए?"

"बस ये नहीं बताऊँगी, जब तुम वहाँ पहुँचोगे तो तुम मुझे धन्यवाद कहोगे।"

"पर मैं तो कल जा रहा हूँ। मेरी आपके घर में बुकिंग कल तक की

ही है।"

"कौन-सी बुकिंग? मैंने इस घर को Airbnb से निकाल दिया है।"

"क्यों?"

"क्योंकि हमारे यहाँ मेहमाननवाज़ी का चलन है, ये नहीं कर सकते कि ये रहा कमरा और ये कॉफ़ी और चलो पैसे निकालो।"

"पर ये तो आप बिज़नेस कर रही हैं, उसमें तो ऐसा ही होता है।"

"कितना कमा लूँगी? घर में कोई आए और उसे खाने के लिए न पूछूँ तो क्या मतलब है ऐसे पैसों का!"

मेरे पास इसका कोई भी जवाब नहीं था।

"तो मैं कल नहीं जा रहा हूँ वापस?" मैंने पूछा।

"हाँ, आप नहीं जा रहे हैं। आप कल मेरे दोस्त के साथ जा रहे हैं।"

"कल कब?"

"शाम को चार बजे क़रीब, कल शुक्रवार है न तो उसकी आधे दिन में छुट्टी हो जाएगी, वो गाड़ी लेकर यहाँ आएगा और आपको ले जाएगा।"

"और वापसी कब है?"

"रविवार की।"

"रविवार? मैं इतने दिन कहाँ रहूँगा, क्या करूँगा?"

"सब हो जाएगा। आप इतनी ख़ूबसूरत जगह आए हैं मैं नहीं चाहती कि बस आप इस घर के आस-पास ही टहलते रहें।"

"पर मुझे ये भी बहुत सुंदर लग रहा है।"

"जब आपको ये सुंदर लग रहा है तो वहाँ तो आपको मज़ा ही आ जाएगा।"

उनके कहने में इतना अधिकार था कि मैं कुछ और कह नहीं पाया। यूँ भी मुझे इस वक़्त दिल्ली में होना था जो मैं नहीं हूँ। मेरे सारे प्लान तो वैसे भी बिगड़ चुके थे। असल में जो बिगड़ सकता था वो तो कोपनहैगन में बिगड़ ही चुका था। पर आज इस घर की बालकनी में, उस पानी की पवित्रता को छूकर जो मैंने महसूस किया था, उस एहसास से पता नहीं

कौन-सी भूख मिट रही थी मेरी। वो भूख मेरे भीतर थी इसका भी मुझे कोई अंदाज़ा नहीं था। शशि शाम का खाना बनाने में व्यस्त हो गईं। मैंने एयरपोर्ट से जो दारू ख़रीदी थी अपने लिए वो मैंने शशि को गिफ़्ट कर दी। उन्होंने कहा कि आज रात यही पिएँगे।

मैं शाम को टहलने निकल गया। इस बार मैं पहाड़ के बजाय समुद्र की तरफ़ गया। समुद्र किनारे बने घरों से होते हुए जब मैं पानी के पास पहुँचा तो देखा दूर इंद्रधनुष निकला हुआ था। कैसे हम इस चमत्कार पर इतनी आसानी से यक़ीन कर लेते हैं, मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था। मैं आस-पास किसी को बताना चाहता था कि देखो कितना सुंदर इंद्रधनुष है, पर आस-पास कोई नहीं था। मैं चाहता था कि इस वक़्त मैं ख़ुद से सवाल करूँ कि क्या मैं इंद्रधनुष देख रहा हूँ ? जवाब मिला, हाँ, मैं देख रहा हूँ। फिर दूसरा सवाल मैंने किया कि क्या मेरा यूँ अकेले इंद्रधनुष देखना काफ़ी नहीं है ? बहुत देर की चुप्पी के बाद जवाब आया, सच में काफ़ी है।

मैं इद्रधनुष की तरफ़ चलने लगा... समुद्र किनारे चलते-चलते मैं बहुत दूर तक निकल आया। मैं जितना इंद्रधनुष की तरफ़ जाता वो मुझे उतना ही दूर नज़र आता। पर मैं चलता रहा, जब तक कि मैं बुरी तरह थक नहीं गया।

रात में शशि और मैं दारू पीने बैठे। उन्होंने डाइनिंग टेबल पर सुंदर मोमबत्तियाँ लगा रखी थीं। माला अपने कमरे में थी। हमने चीयर्स किया।

"आज मैं बहुत दिनों बाद पी रही हूँ।" उन्होंने कहा।

उनके चेहरे पर चंचलता थी। मैं कुछ सिप लेकर बालकनी में सिगरेट पीने गया तो देखा वही गाड़ी बाहर खड़ी हुई है। इच्छा हुई कि नीचे जाऊँ पर मैं शशि के मूड को ख़राब नहीं करना चाहता था। मैंने आधी सिगरेट बुझाई और अंदर आ गया। शशि किचन में खाना को आख़िरी तड़का दे रही थीं और साथ में पी भी रही थीं। मैंने दूसरा पेग बनाया और हिंदी गाने लगा दिए। कुछ देर में शशि और माला साथ में गले लगकर नाचने लगीं। माला के कमरे का दरवाज़ा अभी भी आधा खुला था और वह बार-बार वहाँ देखते हुए हँसने लगती थी। उसे नाचने में बहुत आनंद आ रहा था। उन्होंने मुझे भी नाचने के लिए खींचा, पर मैंने कहा कि मैं सिगरेट पी लूँ फिर आता हूँ। मैं फिर बाहर गया तो वो गाड़ी वहाँ नहीं थी। मैंने सिगरेट पीते हुए सामने आसमान को देखा तो वो सुर्ख़ हो रखा था। यहाँ इन महीनों में क़रीब साढ़े दस बजे तक आसमान में रोशनी रहती थी। अंदर कमरे में मुझे शशि और माला नाचते हुए दिख रही थीं। मैंने मन-ही-मन रिदम के बचपन के उस बूढ़े आदमी को धन्यवाद कहा जिसने किताब, स्नेह और रिस्क लेने की बात कही थी।

खाना खाने के बाद माला अंदर सोने चली गई। मैंने और शशि ने एक-

एक कॉफ़ी बनाई और सोफ़े पर बैठ गए।

"आज माला कितना ख़ुश थी!" उन्होंने कहा।

"आज माला और आप, दोनों ही कितना ख़ुश हैं!" मैंने कहा।

"आप मुझे मेरे पिता की याद दिलाते हैं," शशि ने कहा, "वो नेपाल में स्कूल टीचर थे। उन्हें इतना घूमने का शौक़ था कि बाप रे! हमेशा झोला उठाकर निकल जाते थे। वो जब यहाँ आते तो अगले ही दिन वहाँ चले जाते जहाँ मैं कल आपको भेज रही हूँ। मैं चाहती हूँ कि आप वो जगह देखें जो मेरे पिता की सबसे पसंदीदा जगह थी इस धरती पर। तीन साल पहले नेपाल में उनके ऊपर किसी ने गाड़ी चढ़ा दी थी। हम सबने बहुत कोशिश की कि वो बच जाएँ, पर नहीं बचे। मैं भी उन्हीं के जैसी हूँ। मुझे भी इतना शौक़ था घूमने का, पर जिस दिन माला पैदा हुई मैंने उसी दिन से अपने लिए जीना छोड़ दिया। इसे पूरे वक़्त मेरी ज़रूरत रहती है। पहले मुझे अखरता था, पर अब मुझे सच में उसी के साथ ज़्यादा ख़ुशी मिलती है। पहले तो ये चल भी नहीं पाती थी, ये पिछले एक साल से ही चलने लगी है। अब हम दोनों निकल जाते हैं घूमने कहीं भी। पहले मैं बहुत पैसा कमाना चाहती थी, उसी के लिए मैं नेपाल छोड़कर यहाँ रहने आ गई थी। मेरे पिता बार-बार मुझसे कहते थे कि पैसा कुछ भी नहीं है, उससे कुछ हासिल नहीं होता। वो सही कहते थे। पर मैं उनकी बात नहीं मानती थी, मुझे लगता कि क्योंकि पैसा नहीं है हमारे पास इसलिए इतनी दिक़्क़तें है, जब घर में पैसा आएगा तब कहीं जाकर हम ख़ुश रह पाएँगे। अब पैसा है तो बस माँ है और मैं हूँ। मेरे पिता कहते थे बेटा, तू अगर आज ख़ुश नहीं है तो कभी भी ख़ुश नहीं रह सकती। आज और अभी ख़ुश रहना सीख, ये वक़्त यूँ निकल जाएगा।"

मेरी दिलचस्पी कल की यात्रा में बढ़ गई थी। मैं शशि के पिता की पसंदीदा जगह देखना चाहता था। कुछ देर की चुप्पी के बाद शशि ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा, "तुम सारथी को एक मैसेज कर दो कि

तुम बहुत ख़ुश हो, और उसे भी ख़ुश रहने के लिए कहना, उसे अच्छा लगेगा।"

अचानक उन्होंने सारथी की बात छेड़ दी मुझे अजीब लगा, पर उनकी कहे में इतना अपनापन था कि मैं उनकी तरफ़ आश्चर्य से देखने लगा।

"जी!" मैंने हिचकते हुए जवाब दिया।

"हाँ, मुझे पता है कि तुम्हारा निजी मामला है, पर मेरे पिता कहते थे कि सारी कड़वाहट को प्यार से सींच दो तो उसमें फूल आने लगते हैं।"

मैं मुस्कुरा दिया और बस उनकी तरफ़ देखता रहा। मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

अगर मैं वापस दिल्ली चला जाता तो यात्रा के जो असल आश्चर्य हैं उनसे वंचित रह जाता। जो कहीं भी निकलकर किसी भी किनारे लग जाने का सुख है वो कभी प्राप्त ही नहीं होता। बस ख़ुद को कोसता हुआ दिल्ली पहुँचता और जॉब की वापस शुरुआत करते हुए सबसे कहता कि अरे बहुत मज़ा आया घूमने में, मैंने ये किया, वो किया, बहुत मज़े किए मैंने। इतना सारा झूठ बोलकर मैं किसको बेवक़ूफ़ बनाता ये मुझे पता नहीं होता। अब जब मैं वापस जाऊँगा और कोई पूछेगा कि कैसी रही यात्रा तो मेरे पास जवाब में बस कुछ नाम होंगे– माला, शशि, रिदम, नेनी, पारुल, उदास जर्मन लड़की, ओल्गा, अफ़गानी शरणार्थी और ऐसे ही कुछ सादे लोग।

रात में मैंने ऑफ़िस का मेल खोला और अपने सीनियर को लिख दिया कि अभी मेरी यात्रा ख़त्म नहीं हुई है, जब वापस आ रहा होऊँगा तो तारीख़ बता दूँगा। अगर तनख़्वाह काटनी है तो काट लीजिएगा, नौकरी से निकालना है तो इत्तला कर दीजिएगा, नीचे मैंने अपना नाम लिखा, ऋषभ। ये मेल भेजकर मैंने लैपटॉप बंद कर दिया। ख़ुद का नाम लिखने में बेहद परायापन महसूस हुआ। मैंने कई बार मन में अपना नाम दोहराया, पर हर बार अपना ही नाम दूर सुनाई दिया। मैं माला की तरह एक पात्र के भीतर हूँ अभी, रिदम। रिदम से बाहर मैं ख़ुद को बे-ताला सुनाई दे रहा था।

तभी मुझे लगा कि बाहर वाले दरवाज़े पर कोई है। मैंने खिड़की से झाँका तो मुझे एक आदमी की परछाई दिखी। मैंने लाइट जलाई तो कोई मुझे भागता हुआ दिखा। मैं दरवाज़ा खोलकर बाहर आया तो वहाँ कोई नहीं था। न तो मुझे वो गाड़ी ही कहीं दिखाई दी। मैं दरवाज़ा बंद करके जब अंदर आ रहा था तो सीढ़ियों पर खड़ी मुझे माला दिखाई दी। उसका एक हाथ हवा में थोड़ा ऊपर उठा हुआ था मानो किसी का हाथ थामे हुई हो। हम दोनों कुछ देर एक-दूसरे को देखते रहे। फिर वह नीचे आने लगी। ऐसा लग रहा था कि वह किसी बूढ़े व्यक्ति को सहारा दे रही है चलने का। जब वह मेरे क़रीब आई तो उसने कहा, "She wants to pee."

उसने नीचे वाले बाथरूम की तरफ़ इशारा किया।

"बिलकुल।" मैंने कहा।

"Can you help ?"

"Yes, why not!"

माला ने दूसरी तरफ़ देखकर कहा, "Its okay, he's a nice guy."

फिर उसने हवा में मेरी तरफ़ हाथ बढ़ाया और मैंने हवा में हाथ थामने का नाटक किया। मैं फिर बाथरूम की तरफ़ गया और दरवाज़ा खोलकर किसी को अंदर भेजने का नाटक करने लगा।

"No you go with her. She can't do anything properly."

मैं बाथरूम में चला गया और अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया। कुछ देर मैं यूँ ही खड़ा रहा पर लगा कि मैं माला को धोखा नहीं देना चाहता हूँ। मैंने कमोड का लिड नीचे किया और उस बूढ़ी औरत को कहा कि बैठ जाओ। मैंने उसका हाथ नहीं छोड़ा... फिर मुझे लगा उन्होंने बाथरूम कर ली है। मैंने उन्हें उठने में सहायता की। फिर मैंने बाथरूम का दरवाज़ा खोला और धीरे से उन्हें बाहर लेकर आया।

"Did you flush the toilet ?"

"ओ, करता हूँ।"

मैंने उनका हाथ माला के हाथ में पकड़ाया और वापस बाथरूम में जाकर फ़्लश किया और बाहर आया। माला अभी भी वहीं खड़ी थी।

"Do you want to say sorry to her ?" माला ने कहा।

"Yes, I am sorry !

"Say it like you mean it."

मैं कुछ देर माला को देखता रहा। उसकी आँखों में इतना यक़ीन था कि मुझे लगा सच में कोई है जो मुझे माफ़ कर देगा। मैं घुटनों के बल बैठा, अपने दोनों हाथों को जोड़ा, आँखें बंद की और कहा, "Please forgive me. मुझे माफ़ कर दो, I am really really sorry ! मैं माफ़ी चाहता हूँ अपने सारे किए की।"

मैं ये सारा कुछ बुदबुदा रहा था। तभी मुझे लगा कि मेरी आँखों से पानी आ रहा है। मैंने अपनी आँखें बहुत ज़ोर से बंद कर ली थीं। मैं नहीं चाहता था कि एक भी आँसू की बूँद टपके। मैं वहीं उकड़ूँ होकर लेट गया और अपना सिर अपने घुटनों में छिपा लिया। पर मेरे हाथ माफ़ी माँगने में आपस में जुड़े रहे, मैं उन्हें अलग नहीं कर पाया। और तभी मुझे अचानक Edvard Munch की पेंटिंग Vampire याद आई। रिदम ने कहा था कि वह पेंटिंग ओस्लो के Munch म्यूज़ियम में है। मैं उस पेंटिंग के सामने खड़ा होना चाहता था, बिलकुल वैसे ही जैसे रिदम खड़ी थी Munch की पेंटिंग के सामने।

अगली दोपहर, ऐरिस, शशि का दोस्त आया, इसी के साथ मैं आज जाने वाला था। शशि ने बताया था कि उसे थोड़ा कम सुनाई देता है।

"कुछ शब्द वो सुन नहीं पाता है।" शशि ने कहा था।

"कौन-से शब्द?" मैंने पूछा था।

"ये वो कैसे बता सकता है कि उसे कौन से शब्द सुनाई नहीं देते? उसने वो शब्द सुने ही नहीं हैं कभी।"

हम जब ऐरिस के आने का इंतज़ार कर रहे थे तो मैं रात के बारे में सोच रहा था। मुझे लगा मैंने इससे पहले कभी किसी से माफ़ी नहीं माँगी थी, मतलब अगर माँगी भी थी तो बस वो शब्द कहे थे कि मुझे माफ़ कर दो। मैंने अपने जीवन में पहली बार जाना कि माफ़ी माँगने में कितना सकून है! कितना ज़रूरी है अपनी ग़लती पर सिर झुका लेना।

मैं अपनी नई यात्रा को लेकर भी उत्साह में था, मैं अपनी पूरी तैयारी कर चुका था। सारा सामान बँध चुका था। शशि ने मुझे एक ऊन की टोपी और ऊन के दस्ताने दिए थे। उन्होंने कहा था कि वहाँ बहुत ठंड होगी ये काम आएँगे।

दोपहर में ऐरिस आया। शशि ने हम दोनों का परिचय करवाया, वह स्वीडन से था और बहुत ही ख़ुशमिज़ाज लड़का था। उसने मुझसे हाथ मिलाया और सीधा किचन में चला गया और अपने लिए उसने कॉफ़ी बना ली। कॉफ़ी के पहले सिप के बाद उसने मुझसे पूछा, "Are you ready

my friend ?"

मैंने कहा, "जी बिलकुल, आपकी कॉफ़ी के बाद हम निकल सकते हैं।"

हम आधे घंटे पहले Tromso शहर छोड़ चुके थे। शहर पीछे छूटते ही पहाड़ शुरू हो गए थे, ऐरिस ने पहाड़ की एक फ़ैक्ट्री की तरफ़ इशारा किया और बताया कि वह शशि के साथ काम करने के अलावा दूसरी पार्ट टाइम जॉब यहाँ करता है। मैंने उससे कहा कि अगर तुम कभी दिल्ली आओगे तो मैं तुम्हें कभी वो रास्ता नहीं दिखाऊँगा जिस रास्ते से मैं अपने ऑफ़िस जाता हूँ। वह हँसने लगा। और मुझे इस बात की बड़ी ख़ुशी हुई कि उसने मुझसे अभी तक एक भी सवाल नहीं पूछा था कि क्या काम करते हो ? कहाँ से हो ? क्यों यात्रा कर रहे हो ? उसके सारे संवाद बस वहीं से शुरू हुए थे जहाँ से हम मिले थे। मानो मैं कोई हिचहाइकर हूँ और उसने मुझे लिफ़्ट दी हो। Fjords (लंबी, नदी जैसा दिखने वाला समुद्र का पानी जब ऊँची पहाड़ियों के बीच से होकर निकलता है) शुरू हो चुके थे। कभी एक तरफ़ समुद्र दिखता तो कभी रास्ते के दूसरी तरफ़ तालाब। ऊपर ऊँचे पहाड़ों पर बर्फ़ के थक्के अभी भी जमे हुए थे। मैंने तापमान देखा तो सात डिग्री सेल्सियस था।

"तुम बहुत लकी हो।" ऐरिस ने कहा।

"मैं ?"

"हाँ, रोज़ बादल और बारिश का मौसम होता था और आज देखो पूरा नीला आसमान है।"

"तो क्या Northern Lights दिख सकती हैं ?" मैंने उत्सुक्ता में पूछा।

ऐरिस हँसने लगा। फिर अपनी हँसी रोकते हुए उसने कहा, "तुम लकी हो, पर इतने भी नहीं।"

उसका कहना था कि नवंबर से पहले बहुत ही कम ऐसा होता है कि Northern Lights दिखें, और लोग तो नवंबर में आकर यहाँ पड़े रहते

हैं और कुछ नज़र नहीं आता।

"हम वैसे जा कहाँ रहे हैं?" मैंने पूछा।

"शशि ने बताने को मना किया है, कहा है सीधा ले जाओ।" ऐरिस ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

हम पेट्रोल पंप पर रुके। पेट्रोल के साथ-साथ उसने कहा कि हम सफ़र के लिए कॉफ़ी भी उठा लेते हैं, शाम तक का सफ़र है कॉफ़ी की ज़रूरत पड़ेगी। वह जब तक गाड़ी में पेट्रोल भर रहा था तब तक मैं भीतर दो कॉफ़ी लेने आ गया। तभी मुझे मैसेज आया– 'ठीक हो तुम?'

एक तीखी-सी टीस मैंने अपने भीतर महसूस की। वो टीस इतनी ज़्यादा तीखी थी कि मुझे मेरे हृदय पर हाथ रखना पड़ा। मैं पेट्रोल पंप की दुकान पर एक कोने में थोड़ी देर बैठ गया। मुझे लगा कि मेरे पैरों में जान ही नहीं है। मैंने कुछ गहरी साँसें लीं। आज भी सारथी का मुझ पर कितना गहरा असर है! मैंने सारथी का नंबर डिलीट कर दिया था, पर अभी भी उसका नंबर किसी नाम की तरह दिमाग़ में छपा हुआ था। मैं जब पैसे देने के लिए अपना कार्ड मशीन में डाल रहा था तो मेरे हाथ काँप रहे थे। सारथी का आख़िरी मैसेज जाने कितने महीने पहले आया था! इन महीनों में न तो मैंने कभी उसकी ख़बर ली थी और न ही उसने मेरी। मैं कॉफ़ी लेकर बाहर आया तो देखा ऐरिस कार में ही बैठा हुआ था। उसकी कार का दरवाज़ा खुला हुआ था। जब मैं कार में बैठा तो वह उठा और बाहर निकला, फिर वापस बैठ गया, फिर निकला और अपनी कार की सीट को क़रीब पाँच बार छुआ। अंत में उसने पेट्रोल का पाइप उठाया और पेट्रोल भरने लगा। मुझे थोड़ा अजीब लगा पर मैं बग़ल में ऐसे बैठा रहा मानो उसकी सारी हरकतें सामान्य हों। फिर मेरी इच्छा सिगरेट पीने की हुई। पता नहीं यहाँ पेट्रोल पंप पर सिगरेट पीते हैं कि नहीं। पर मैं चुपचाप बैठा रहा। ऐरिस पेट्रोल डालते हुए किसी से फ़ोन पर बात कर रहा था। बहुत देर बाद वह वापस आया।

"भई, सारी अपडेट देनी होती है क्या कर रहा हूँ, कहाँ जा रहा हूँ।

तुम्हें क्या हुआ ?" उसने पूछा।

"कुछ नहीं, कॉफ़ी..." मैंने कॉफ़ी की तरफ़ इशारा किया।

उसने कॉफ़ी ली और हम आगे निकल पड़े। मैं ख़ुश हूँ, और तुम भी ख़ुश रहना– शशि ने कहा था कि ये मैसेज कर दो। मेरे दिमाग़ में एक लूप की तरह ये वाक्य चलने लगे थे। मैं बार-बार सारथी का मैसेज खोलकर देख लेता– 'तुम ठीक हो ?'

क्या मतलब है उसका ? क्या उसे मेरी चिंता हो रही है ?

"तुम्हें पता है, माला मेरे सामने पैदा हुई है।" ऐरिस ने कहा, "प्रीमेच्योर बर्थ, बहुत कोशिश करने पर भी डॉक्टर उसे बचा नहीं पा रहे थे। जब उन्होंने कहा कि ये अब नहीं बचेगी तो शशि कहने लगी मैं उसे अपनी गोद में लेना चाहती हूँ। हम सबको पता था कि माला दस मिनट की मेहमान है। हम सब शशि के अगल-बग़ल खड़े थे। दस मिनट हो गए, पंद्रह हो गए, आधा घंटा, एक घंटा, माला साँस लेना छोड़ ही नहीं रही था। वो जिस तरह साँसें खींच रही थी लग रहा था किसी से लड़ रही है। और तब डॉक्टर भागे-भागे वापस आए। उस बच्ची में ज़िंदा रहने की इतनी ललक थी कि वो मृत्यु से लड़ ली थी।"

मैं ऐरिस से उस गाड़ी के बारे में बात करना चाहता था जो रात में शशि के घर के सामने आकर खड़ी रहती है, पर मुझे पता नहीं था कि ये बात करना चाहिए कि नहीं।

क़रीब सात घंटे की ख़ूबसूरत ड्राइव के बाद हम Moskenesoya ज़िले के आख़िरी और बहुत छोटे-से गाँव में पहुँचे जिसका नाम था– A

ऐरिस ने गाड़ी पार्क की और कहा, "हम Lofoten Islands में हैं।"

ऐरिस को फिर कार से उतरने में बहुत वक़्त लगा। वह उतरे, फिर वापिस सीट पर बैठ जाए, फिर बाहर आकर सीट को दो-तीन बार छुए, फिर भीतर जाकर बैठ जाए। मैं उसके उतरने में आस-पास का नज़ारा देखता रहा जो बेहद ख़ूबसूरत था।

"अब मैं सब बता सकता हूँ। शशि चाहती थी कि तुम ये देखो, उसके

पिता बस पकड़कर यहाँ आ जाया करते थे। उनकी बेहद पसंदीदा जगह थी ये।"

"तो हम यहाँ रुकेंगे?" मैंने उत्साह में पूछा।

"नहीं, यहाँ हम शाम की सैर करेंगे, फिर चलेंगे Svolvær, वहीं मैंने एक Airbnb की व्यवस्था की है।"

इस गाँव में कुल जमा दस घर होंगे। सामने नीला समुद्र और पीछे Lofoten के बड़े ऊँचे पहाड़। हवा में ठंडक थी। और बहुत ही कम लोग दिखाई दे रहे थे। मैंने कॉफ़ी ली और बाहर आकर बैठ गया। शशि के पिता जो नेपाल में एक टीचर थे वो इस आख़िरी गाँव में आकर अपना वक़्त बिताते थे, ये बात सोचकर ही लगता था कि ये किसी परिकथा की शुरुआत है।

वहाँ से निकलकर जब हम Svolvær के अपने Airbnb पर पहुँचे तो ऐरिस ने तुरंत भीतर आकर अपना सामान फेंका और एक बीयर खोल ली, "अब बस हम लोग पिएँगे आज की रात।"

मैं जब तक पहली बीयर के कुछ घूँट लगाता उसने दूसरी बीयर खोल ली थी।

"हम बाहर जाकर भी पी सकते हैं?" मैंने उससे पूछा।

"वहाँ भी पिएँगे, पर तुम्हें पता है न यहाँ सब कुछ कितना महँगा है, तो पहले सुरूर फिर ग़ुरूर।"

हमने अपने-अपने हिस्से की बीयर पी। फिर मैंने ऐरिस से कहा कि चलें तो उसने अपनी बीयर की कैन ख़त्म करते हुए हामी भरी। पर उसको फिर अपनी जगह से उठने में वक़्त लगा। वह फिर कुर्सी से खड़ा हुआ, बैठा, फिर खड़ा हुआ, क़रीब पाँच बार अपनी कुर्सी को छुआ और अंत में हम लोग लड़खड़ाते क़दमों से Svolvær शहर की तरफ़ चलने लगे। रास्ता सुंदर था और शरीर में बीयर का सुरूर, तो चलने में बहुत आनंद आ रहा था, हम शहर में दाख़िल हुए। यहाँ-वहाँ फुटकर लोग, छोटे समूह में दिख रहे थे। हम सीधा एक पब में घुसे, कुछ खाने के साथ बीयर ऑर्डर

की। इस बीच ऐरिस फ़ोन पर कहीं बात कर रहा होता और हम जो भी कर रहे थे, उसे कभी अँग्रेज़ी में तो कभी नॉर्वेजियन भाषा में समझा रहा होता। पहले मुझे लगा शायद वह शशि से बात कर रहा है, पर फिर उसने उसका नाम लिया– लाली। Svolvær बहुत ही शांत शहर था। मुझे लाली की आवाज़ भी सुनाई दे जाती। लाली नेपाली भाषा में बात कर रही थी। मुझे थोड़ा अजीब लगा तो पब में बैठे, बीयर पीते हुए मैंने पूछ लिया, "तुम्हें नेपाली समझ आती है?"

"नहीं, बिलकुल भी नहीं, बहुत ही कठिन भाषा है।"

मैं कितना कुछ जानना चाहता था ऐरिस के बारे में। क्यों वह बार-बार उस जगह को छूता था जिस जगह से वह उठ रहा होता! कौन है वो जिसे वह अपनी दिनचर्या बता रहा होता है जबकि वहाँ से वो सिर्फ़ नेपाली में बात कर रही होती जो ऐरिस जानता ही नहीं था! हर एक आदमी किस तरह एक अजनबी शहर की तरह होता है! आप उस अजनबी शहर में रहकर भी उस शहर को पूरी तरह जान नहीं पाते। अगर ये दिल्ली होता तो मैं सारा कुछ पूछ चुका होता, पर यहाँ मुझे तटस्थ रहना ही ठीक लगता है।

"मैं जिस फ़ैक्ट्री में जॉब करता हूँ न, शशि का पति भी वहीं काम करता है।"

"ओ, तो तुम उसे जानते हो?"

"हाँ, वो मुझसे बहुत मेल-मिलाप रखना चाहता था, पर मैं एकदम दूर रहता हूँ उससे।"

"तुम्हारे लिए तो बहुत ही अजीब होगा!"

"हाँ, मतलब वो पहले ठीक आदमी था, पर माला के आते ही उसे पता नहीं क्या हो गया। वो बहुत पीने लगा, और ख़ासकर माला के अगल-बग़ल वो एकदम अलग आदमी हो जाता था।"

"मतलब?"

"वो डरा हुआ रहता, और फिर उस डर में जब नशा करता तो ख़ूँख़ार हो जाता।"

हम लोग बहुत पी चुके थे। क़रीब रात के ग्यारह बज गए थे। हमने अंत में तय किया कि अब हमें अपने Airbnb की तरफ़ वापस चलना शुरू कर देना चाहिए। इस बार पब की कुर्सी से ऐरिस को उठने में बिलकुल भी वक़्त नहीं लगा। ऐसा क्यों हुआ मुझे पता नहीं, न ही मैं जानना चाहता था। मैं ख़ुश था कि ऐरिस तुरंत खड़ा हो गया था। हमारा कमरा मुख्य शहर से क़रीब सात किलोमीटर दूर पहाड़ पर था। हवा में अच्छी-ख़ासी ठंडक थी, पर बहुत नशे की वजह से हमें उतनी ज़्यादा ठंड महसूस नहीं हो रही थी। चलते हुए ऐरिस और मुझे हर बात पर हँसी आने लगी थी, हम हर छोटी बात पर देर तक हँसते, मैं कई बार हँसते हुए नीचे ज़मीन पर बैठ जाता और तब पता चलता कि सड़क बर्फ़ की सिल्ली के जितनी ठंडी है। तभी एक पुल पर ऐरिस ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे रोक दिया और इशारा किया कि ऊपर आसमान में देखो। मैंने देखा कि पहाड़ों के पीछे से एक पतली-सी हरी रोशनी दिखाई दे रही थी।

"क्या है ?"

"शायद Northern Light!"

मुझे हँसी आने लगी।

"मैं इतना भी लकी नहीं हूँ।" मैंने हँसते हुए कहा और आगे चलने लगा। मुझे पूरा यक़ीन था कि ऐसा कुछ नहीं है। पर ऐरिस ने मुझे फिर रोका और कहा कि ऊपर देखो। तभी मुझे वो हरी-सी पतली रोशनी आगे बढ़ती हुई दिखी। वो अपना विस्तार लेने लगी थी। तभी उस हरी-सी रोशनी ने अचानक आसमान में अपना नृत्य शुरू कर दिया। वो किसी लौ-सी, बहुत धीमी गति में फड़फड़ाने लगी थी। मैंने देखा वो रोशनी आसमान के एक कोने से दूसरे कोने तक फैल गई थी। हर फड़फड़ाहट में हरे रंग के भीतर कुछ और रंग झलक जाते। मुझे लगा कि ये सिर्फ़ मेरे साथ हो रहा है। मैंने अपनी आँखों पर हाथ फेरा और फिर उन रंगों को आसमान में देखने लगा। पहली बार मैंने आश्चर्य की आवाज़ें सुनी थीं जो मेरे ही मुँह से निकल रही थीं। हम दोनों का नशा काफ़ूर हो चुका था। मैं उस पुल पर लेट गया और

Northern Light का विस्तार पूरे आसमान पर छाता हुआ देखने लगा। कितने सारे आश्चर्य हैं इस ब्रह्मांड में, और वो घट रहे हैं मेरी आँखों के सामने, मुझे इसका यक़ीन नहीं था।

हम जब कमरे पर वापस आए तो हम दोनों के पास कहने के लिए कुछ भी नहीं था। हम दोनों की थकान और नशा दोनों ख़त्म हो चुके थे। हम दोनों अपनी-अपनी सिगरेट पर चुपचाप बैठे रहे।

रात सोने से पहले मैंने सारथी को मैसेज किया– 'सारथी, मैं ख़ुश हूँ और घूम रहा हूँ, तुम भी बहुत ख़ुश रहना।'

मैसेज भेजते ही मेरे चेहरे पर एक मुस्कुराहट थी।

जब सुबह उठा तो सारथी का मैसेज आया हुआ था– 'What the fuck was that? ख़ुश रहना? मैंने सिर्फ़ मैसेज किया था पूछने के लिए कि तुम ठीक हो? क्योंकि तुम्हारे ऑफ़िस के दोस्तों के मैसेज आ रहे थे कि तुम वापस नहीं आए और शायद तुम्हारी नौकरी जा सकती है। तुम घूम रहे हो सही है, पर यहाँ नौकरी जा सकती है! मैं तो ख़ुश हूँ, तुम अपना देख लो।'

मैंने सारथी का मैसेज एक बार फिर से पढ़ा। फिर सारथी को मैसेज किया– 'ठीक है।'

मुझसे और कुछ भी लिखते नहीं बना। मैं लिखना चाहता था कि अच्छा लगा सुनकर कि तुम ख़ुश हो, पर इसमें भी एक तंज़ की बदबू आ सकती थी। अभी यहाँ ऐरिस और शशि के बीच में अपनी नौकरी के बारे में सोचने में भी अजीब-सी खिजखिजाहट हो रही थी। मैसेज करने के बाद मैंने अपने ऑफ़िस में मेल किया कि मैं अगले हफ़्ते वापस आ रहा हूँ, देरी के लिए क्षमा।

हम लोग सुबह उठते ही Reine टाउन की तरफ़ निकल गए। ऐरिस एक hike करना चाहता था। वो Reinbringen Hike के नाम से मशहूर थी। क़रीब दस बजे हमने Reine के उस पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। आधे रास्ते हाइक करते हुए मुझे लगा कि मेरी नौकरी ही ठीक थी,

सारथी सच कह रही थी कि अपना देख लो, मुझे वापस दिल्ली चले जाना चाहिए और चुपचाप अपनी नौकरी पर ध्यान देना चाहिए, मैं इन चीज़ों के लिए नहीं बना हूँ। ख़ासकर अंत में तो इतनी खड़ी चढ़ाई थी कि हर तीसरी सीढ़ी पर मैं देर तक रुककर साँस भीतर खींच रहा होता था। ऐरिस बिलकुल भी नहीं थक रहा था। वह मुझसे बहुत पहले ऊपर पहुँच चुका था। जब मैं अंत में ऊपर पहुँचा तो बहुत देर तक एक पत्थर पर लेटा रहा। ऐरिस कहीं भी बैठ नहीं रहा था। जब मेरी साँस सामान्य तरीक़े से चलने लगी थी तो मैंने वहाँ से नज़ारा देखा, वहाँ से Reine शहर, पहाड़ और समुद्र को देखकर पूरी थकान मिट गई। पर मैं एक चट्टान पर चित्त पड़ा रहा। मैंने ऐरिस को बहुत धन्यवाद कहा यहाँ लाने के लिए।

"पर चढ़ते वक़्त तो तुम गाली दे रहे थे?" उसने कहा।

"हाँ, तब सच में प्राण पखेरू उड़ने को थे तो गलियाँ बड़ी सहजता से निकल रही थीं।"

वह हँसने लगा। हम दोनों अच्छे दोस्त हो गए थे।

"तुम्हें स्वीडन जाना चाहिए, तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा।"

"नहीं ऐरिस, मुझे अब वापस दिल्ली जाना चाहिए वरना नौकरी से हाथ धो बैठूँगा।"

"दूसरी कर लेना।"

"इतना आसान थोड़ी है!"

"आसान तो यहाँ चढ़ना भी नहीं था!" ऐरिस ने कहा।

इसका मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं खिसियाते हुए मुस्कुरा दिया।

हम पूरा दिन कार में घूमते हुए अलग-अलग छोटे-छोटे गाँवों में जाते रहे, हर छोटे सुंदर कैफ़े में रुक जाते। ऐरिस को गाड़ी से उतरने में वक़्त लगता जिसमें मैं आगे बढ़कर कोई अच्छा कैफ़े खोज चुका होता। फिर हम देर तक वहाँ बैठे रहते। मैं उठने के बहुत पहले ऐरिस से बोल देता कि चलो, चलते हैं। वह अपनी जगह छोड़ने में पूरा वक़्त लेता। मैं कोशिश करता कि उसे नहीं देखूँ। मुझे अब पता लग चुका था कि वह किस तरह

अपनी जगह छोड़ता है।

"तुम सच में बहुत लकी हो।" ऐरिस ने कहा, "दो दिन लगातार सूरज और सितंबर की शुरुआत में ही Northern Lights का दिखना, कमाल है।"

"मैं नहीं मानता कि मैं लकी हूँ, शायद तुम लकी हो इसलिए ये हो रहा है।" मैंने कहा।

"मैंने लाली को बताया तो वो कहने लगी कि रिदम को बोलना कि वो बहुत लकी है।"

"लाली कौन है?"

"लाली मेरी प्रेमिका है, वो नेपाल में रहती है।"

"जिससे तुम बात करते रहते हो?"

"हाँ।"

ऐरिस को कम सुनाई देता था इसलिए वह फ़ोन से आती आवाज़ को ऊँचा रखता था। मैं सुन सकता था कि कोई दूसरी तरफ़ से सिर्फ़ नेपाली में बात कर रहा है और उस आवाज़ से पता चलता था कि उस महिला की उम्र भी थोड़ी ज़्यादा है। अब मुझसे रहा नहीं जा रहा था। मुझे लगा कि अब हम अच्छे दोस्त हो चुके हैं सो मैं पूछ सकता हूँ। सो मैंने उससे पूछ लिया।

"लाली की उम्र कितनी है?"

मुझे लगा कि मेरे मुँह से ये सवाल निकला ही नहीं, क्योंकि ऐरिस के चेहरे पर कोई बदलाव नहीं आए थे। मैंने फिर पूछा, फिर लगा कि मेरा वाक्य ऐरिस से होकर निकल गया। वो उसने सुना ही नहीं। फिर मैंने पूछा कि तुम्हें अपनी जगह छोड़ने में इतना वक़्त क्यों लगता है? वो वाक्य भी जैसा मेरे मुँह से निकला वैसा ही ग़ायब हो गया। फिर मुझे याद आया कि शशि ने कहा था कि ऐरिस को कुछ शब्द सुनाई नहीं देते हैं। शायद शब्द नहीं, उसे कुछ वाक्य सुनाई नहीं देते हैं।

"चलें?"

मैंने ऐरिस से कहा और उसने जवाब दिया, "हाँ, चलो वक़्त भी हो

चला है।"

वापस Tromso जाने के पहले ऐरिस मुझे वो जगह दिखाना चाहता था जहाँ वह एक छोटा घर बनाना चाहता था।

Henningsvaer नाम के एक छोटे-से गाँव में हम पहुँचे। उस गाँव के अंतिम छोर पर समुद्र की तरफ़ एक ज़मीन का सुंदर टुकड़ा था। वह उस हरे टुकड़े पर खड़ा हो गया और उसने अपने पूरे घर का नक़्शा समझाया, किस तरफ़ बालकनी होगी, लाली और उसका कमरा कहाँ होगा, किचन कहाँ होगा, कहाँ वह कुत्तों को रखेगा। फिर वह एक बोट ख़रीदेगा और उस बोट से पूरा यूरोप लाली और कुत्तों के साथ घूमेगा।

"और बच्चे ?" मैंने पूछा।

"What did you say ?"

"बच्चे ?"

"What ?"

उसे सुनाई नहीं दिया। मैंने दूसरा सवाल किया, "कितने कुत्ते ?"

"दो, दो कुत्ते।"

वहीं खड़े रहकर उसने लाली को फ़ोन लगाया और देर तक उससे अपने घर के सपने के बारे में बात करता रहा।

देर रात कभी-कभी सारथी पहाड़ों में घर बनाने की बात करती थी। मैं कभी उन सपनों को समझ नहीं पाया था। वह चाहती थी कि किसी ऐसी जगह छोटा-सा घर बनाएँगे जहाँ पानी के बहने की आवाज़ पहुँचती होगी, सामने सुंदर पहाड़ दिखते होंगे, और हम अपने घर के आस-पास इतने घने और ऊँचे पेड़ लगाएँगे कि लोगों को हमारा घर दिखना बंद हो जाएगा। मैं हमेशा उसके इस सपने के बीच में कुछ मज़ाक़िया बात करने की कोशिश करता था, अब लगता है कि मैं असहज हो जाता था उसके सपनों के बारे में सुनकर। मुझे कभी समझ नहीं आया कि कैसे लोगों के भीतर एक सपना पल रहा होता है जो इतना सजीव होता है कि वो उसकी एक-एक ईंट के बारे में पूरे विस्तार से बात कर सकते हैं। मैं एक अच्छी नौकरी में था, सारथी जैसी मेरी संगिनी थी, मैंने बस इसी सपने को अपने रोशनदान की जाली से देखा था। उसके पूरे होते ही मैं बस उसी में अपना जीवन गुज़ार देना चाहता था। पर आज मैं यहाँ Henningsvaer आकर, ऐरिस के सपने के घर में खड़े होकर, सारथी का सपना समझ सकता था। यहाँ आकर, जिस जगह का नाम कैसे लिया जाता है, वो भी मुझे पता नहीं था।

मैं टहलते वक़्त शशि के पिता के बारे में भी सोचता रहा। क्या करते होंगे वह यहाँ आकर? कहाँ रहते होंगे? मैं अपनी सारी कल्पना में भी उनका यहाँ टहलना ठीक से महसूस नहीं कर पा रहा था। क्यों नेपाल में बैठे हुए उन्होंने इस जगह का सपना देखा था कभी? मैं इस बात की कल्पना

भी नहीं कर सकता था। क्योंकि दिल्ली में काम करते हुए अगर कोई मुझसे पूछता कि क्या एक दिन तुम देर रात Svolvær शहर की सड़कों पर किसी स्वीडिश दोस्त के साथ नशे में धुत ख़ुद को देख सकते हो? तो मैं कहता कि इस जनम तो क्या अगले कई जन्मों तक यह संभव नहीं है।

जब हम वापस Tromso पहुँच रहे थे तो बादल और बारिश का माहौल वापस आ चुका था। शशि ने पहाड़ी राजमा बना रखा था और उसने एक ख़ुशख़बरी दी कि वह अपने पति से कोर्ट केस जीत चुकी है। मैं और ऐरिस ख़ुश हो गए। हमने वाइन खोली और चीयर्स करते हुए शशि को सुनहरे भविष्य की दुआएँ दी। कैसे इस एक ख़बर से मेरी पूरी-की-पूरी थकान मिट गई। कैसे जिस व्यक्ति को मैं अभी चार दिन पहले जानता भी नहीं था उसके लिए मैं इतना ज़्यादा ख़ुश था! शशि ने इन तीन दिनों में मेरे लिए ऊन के दस्ताने बुने जिसमें रेंडियर बना हुआ था, मैंने ध्यान से देखा उन दस्तानों के कोने में उन्होंने मेरा नाम भी बुन रखा था–रिदम। मैंने तुरंत उन दस्तानों को पहन लिया, उन दस्तानों की गर्मी और शशि का स्नेह मैं अपने हाथों में महसूस कर सकता था। मुझे लगा कि मैं इन सबके क़ाबिल नहीं था। मैं इतना अच्छा आदमी नहीं था जिसे ये सब मिले। मैं अचानक शशि और ऐरिस के सामने से उठा और अपने कमरे में चला गया। देर तक उन दस्तानों को हाथ में फँसाए पलंग पर बैठा रहा। हम हमेशा बिना किसी अपेक्षा वाले खुले दिल से किए गए प्रेम की इच्छा रखते हैं, पर जब सच में वो मिलता है तो क्या हमारे भीतर वो जगह है जिसमें उसे सहेजा जा सके? हमें कभी नहीं पता होता कि ऐसे प्रेम को कहाँ टिकाकर रखा जाए।

मैंने रात में खाने के बाद उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा कि मैं कल सुबह निकल जाऊँगा। ऐरिस ने कहा कि वह कल छुट्टी ले लेगा और मुझे एयरपोर्ट छोड़ देगा। मैं अब और धन्यवाद नहीं कह सकता था। जब मैंने शशि को बाक़ी दिनों के पैसे देने चाहे तो उन्होंने बिलकुल मना कर दिया। मैंने बहुत कोशिशें कीं, पर वह नहीं मानीं।

ऐरिस के जाने के बाद मैं बालकनी में सिगरेट पी रहा था तब शशि पीछे से दो गिलास वाइन लेकर बालकनी में आईं।

"मैंने सोचा जाने से पहले एक-एक गिलास वाइन तो बनती है।" उन्होंने कहा।

मैंने अपना गिलास लिया और उनके गिलास से टक्कर मारी।

"अब और धन्यवाद नहीं कहूँगा। आशा करता हूँ आप एक दिन दिल्ली आएँगी तो आपको थोड़ा हमारे यहाँ के पहाड़ों की सैर करवाऊँगा।"

"बिलकुल।" उन्होंने कहा।

"आपको वाइन पसंद है बहुत?" मैंने पूछा।

"मैंने ये वाइन पीना अभी-अभी सीखा है तो बड़ा मज़ा आता है, यूँ घूँट-घूँट किसी अच्छे सुरूर तक पहुँचने में।"

"आप लाली को जानती हैं? ऐरिस की प्रेमिका? वो भी तो नेपाल से ही हैं।"

वह मेरी तरफ़ देखती रहीं, फिर उन्होंने एक गहरी साँस ली और दूर पहाड़ों के देखने लगीं।

"रिदम, कितना अच्छा नाम है ये। है न!" उन्होंने कहा।

मैं चुप रहा। मैंने एक बड़ा घूँट वाइन का लिया और दूसरी सिगरेट जला ली। ठंड में मेरे हाथ काँप रहे थे सिगरेट जलाने में। वाइन के साथ जैसे ही मैंने दो कश लिए मुझे मेरा शरीर हल्का लगने लगा।

"ऐरिस बहुत ही अच्छा लड़का है, इस तरीक़े के लड़के कम बनते हैं। उसने नेपाल में बहुत वक़्त गुज़ारा था। मैं उसको बहुत पहले से जानती हूँ। लाली और ऐरिस को ऊपर पहाड़ों पर जाने का इतना शौक़ था कि वे दोनों कभी घर में टिकते ही नहीं थे। ऐरिस नेपाल में स्वीडिश और अँग्रेज़ों के लिए गाइड का भी काम करने लगा था। नेपाल में जब भूकंप आया था तो उस वक़्त ऐरिस और लाली एवरेस्ट बेसकैंप में थे। लाली उस दुर्घटना में नहीं रही थी। ऐरिस को लगता था कि वो लाली को बचा सकता था, पर एवलांच को देखते ही वो जहाँ बैठा था वहीं बैठा रह गया था। जब एवलांच

शांत हुआ तो ऐरिस डरा हुआ मूर्ति बना एक ही जगह बैठा था। तब से ही ऐरिस को कम सुनाई देने लगा था। ऐरिस अभी भी चार महीने लाली के घर पर नेपाल में जाकर रहता है। वो अभी भी मानने को राज़ी नहीं है कि लाली अब इस दुनिया में नहीं है।"

"पर वो फ़ोन पर बात किससे करता है?"

"ये मैं भी उससे पूछने की हिम्मत नहीं जुटी पाई हूँ।"

हम दोनों देर तक आसमान का सुर्ख़ होना देखते रहे। वह ख़ुश थीं और उनकी ख़ुशी में मैं भी शरीक था। मैं पीछे पलटा तो माला हम दोनों को देख रही थी। वह बालकनी का दरवाज़ा खोलकर बाहर आई और अपनी माँ के गले लग गई। दोनों देर तक एक-दूसरे से चिपके रहे मानो कोई राज़ आपस में साझा कर रहे हों। मेरी बहुत इच्छा हुई कि मैं इस वक़्त उन दोनों से लिपट जाऊँ। तभी मुझे फिर Edvard Munch की Vampire पेंटिंग याद आई। शशि और माला ने मुझे शुभ रात्रि कहा। शशि जाने लगीं, पर माला मुझे देखती रही, फिर उसने अपने कमरे की तरफ़ देखा। मैंने उसके कमरे की तरफ़ देखकर दो-तीन बार शुभरात्रि कहा। Akhil

"थैंक्यू रिदम!" माला ने मुस्कुराते हुए कहा और वे दोनों अपने-अपने कमरे में चली गईं।

Tromso से मेरी फ़्लाइट ओस्लो तक की थी। मैंने अभी तक ओस्लो से कोपनहैगन तक की फ़्लाइट बुक नहीं की थी। और कोपनहैगन से दिल्ली की फ़्लाइट बुक करने के लिए मैंने कई बार कोशिश की, पर हर बार कुछ रोक लेता। मैं तारीख़ भरता और देर तक उसे ताकता रहता पर आगे नहीं बढ़ता। मैं जाने से पहले एक बार रिदम से ज़रूर मिलना चाहता था पर ये कैसे संभव होगा ये मुझे नहीं पता था। वह शायद मेरे मैसेज या फ़ोन का जवाब भी नहीं देगी। उससे बिना मिले दिल्ली जाना अजीब होगा। ऐरिस मुझे एयरपोर्ट छोड़ते वक़्त ख़ूब बातें कर रहा था। मैंने उसको अपने असमंजस के बारे में बताया और पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए।

"अभी तुम्हारा वक़्त नहीं हुआ है वापस जाने का।" उसने कहा।

"अरे मुझे जाना ही है।" मैंने कहा।

"हाँ, पर अभी हुआ नहीं है वरना तुम सीधा कोपनहैगन निकल जाते और वहाँ से दिल्ली, पर तुमने ऐसा नहीं किया।"

"हाँ, पर मैं ओस्लो से भी दिल्ली जा सकता हूँ।"

"तुम कुछ दिन ओस्लो रुक जाओ, फिर देखना।"

"नहीं, मुझे एक-दो दिनों में दिल्ली पहुँचना ही पड़ेगा। मैं नहीं रुक सकता हूँ अब।"

एयरपोर्ट पर ऐरिस से विदा लेते हुए मैंने उससे कहा कि लाली को मेरा प्रेम देना, उसने तपाक से जवाब दिया, "बिलकुल।" हम गले मिले और उसने कहा कि तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो। मैं जब अपनी फ़्लाइट की तरफ़ जा रहा था तो मेरी इच्छा हुई एक बार और ऐरिस के गले लग जाऊँ। उसे एक बार और छू लूँ। मुझे विश्वास नहीं था कि ये सारे लोग असल में मेरी ज़िंदगी में आए थे। ऐरिस की लाली नहीं रही थी, माला किसी सीरियल की पात्र थी, शशि पहली बार जी रही थी, और मैं रिदम था। पता नहीं मैं अपने जीवन में इन लोगों से कभी दोबारा मिल भी पाऊँगा कि नहीं। मुझे अब समझ आ रहा था कि ऐरिस को अपनी जगह छोड़ने में इतना वक़्त क्यों लगता था। वह उस जगह पर एक बार फिर बैठ जाना चाहता था, एक बार और उसे छू लेना चाहता था। उससे जगह नहीं छूटती थी और मुझसे ये लोग नहीं छोड़े जा रहे थे।

ओस्लो एयरपोर्ट उतरकर मैं एयरपोर्ट के भीतर ही एक कैफ़े में बैठ गया। एयरपोर्ट से बाहर क़दम रखने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। पीछे जितना छूटा था और आगे जितना भी अनिश्चितता का फैलाव था उसने भीतर एक वृत्त-सा बना रहा था। मैं उस वृत्त में गोल-गोल चक्कर लगा रहा था। मेरा किसी भी दिशा में मुड़ना नामुमकिन-सा दिखाई दे रहा था। मैंने एक कॉफ़ी ली और समर्पण-सा कर दिया। मैं अब हिलने की भी स्थिति में नहीं था। मैं चाहता था कि मैं वापस उस पार्क का कुत्ता हो जाऊँ, कोई गेंद फेंके

और मैं उस ओर भागने लगूँ। मेरे ख़ुद के सोचने-समझने की स्थिति ख़त्म हो चुकी थी।

मैंने अपना फ़ोन निकाला और एक मैसेज किया।

'हेलो रिदम,

मैं जब कोपनहैगन आया था तो घूमने नहीं आया था, मैं छुपने आया था। मैं जब जर्मनी भी गया था तो घूमने नहीं गया था, मैं भाग रहा था तुमसे। नॉर्वे भी इसलिए पहुँचा था कि भटक जाऊँ और उस भटकने में एक सड़क मिले जो तुम तक पहुँचती हो। इस भटकने में ही पहली बार लगा कि मुझे यात्रा करना समझ आ रहा है। मैं शायद पहली बार घूम रहा था। सारथी कहती थी कि यात्रा हमें बेहतर इंसान बनाती है। मुझे कभी भी इस बात का यक़ीन नहीं था। और मुझे ये भी नहीं पता कि मैं बेहतर इंसान हुआ हूँ कि नहीं। हाँ, मैं बदल गया हूँ। और उस बदलाव में तुम्हारा ही हाथ है। तुमने मुझे सलीम बनाया था। मैं सलीम था। पर मैंने कभी ये जानने की कोशिश नहीं की कि असल में सलीम कौन है? मैं बस नाम ओढ़े घूम रहा था। मैंने सलीम हो जाने की संभावनाओं को कभी खँगालकर देखा नहीं था। जिस दिन मैंने कोपनहैगन छोड़ा था, मैं उस दिन फिर बदल गया था। मैं सलीम से रिदम हो गया था। शायद धोखा खाने और धोखा देने में यही अंतर है। धोखा खाते ही हम अपने भीतर जाकर छिप जाते हैं, एक डर का कवच बाहर लगा लेते हैं। पर धोखा देने पर हम बदल जाते हैं। हम वो इंसान नहीं रह जाते। मैं अब रिदम हूँ और मैं हमेशा ये सवाल करता हूँ कि अगर रिदम इस वक़्त होती तो क्या करती?

काश उस रात, जब मुझसे ग़लती हुई थी, जिसके लिए मैं अभी तक पछता रहा हूँ, मैं ख़ुद से पूछ लेता कि इस वक़्त सलीम क्या करता? तो शायद आज मैं सलीम ही होता और हम दोनों नॉर्वे साथ घूम रहे होते।

अभी मैं ओस्लो एयरपोर्ट पर हूँ। सोचा था कि Edvard Munch के म्यूज़ियम में उनकी Vampire वाली पेंटिंग के सामने कुछ देर खड़ा रहूँगा, फिर वापस दिल्ली। पर इस वक़्त मेरे पैर जड़ हो गए हैं। तुम्हें पता

है मुझे पहली बार पता चला कि माफ़ी कैसे माँगी जाती है। मैंने जितनी बार भी तुमसे कहा था कि I am sorry, वो सारे शब्द थे, माफ़ी की आवाज़ें थीं। मैं तुमसे माफ़ी माँगना चाहता हूँ और बिना माफ़ी माँगे यहाँ से नहीं जा सकता।

मैसेज थोड़ा लंबा हो गया है, पर मैं थोड़े में नहीं समझा सकता था। मेरी कॉफ़ी ख़त्म हो चुकी है, और मैं ख़ुद से पूछ रहा हूँ कि रिदम, क्या करना चाहिए?'

मैंने ये मैसेज रिदम को भेज दिया। खड़ा हुआ तो मेरे पैर डगमगा रहे थे। मैंने अपना सामान उठाया और मुझे नहीं पता कि किस तरफ़ जाना चाहिए। धीरे-धीरे, रेंगते हुए मैं ओस्लो एयरपोर्ट के बाहर जाने लगा। जैसे ही मैं एयरपोर्ट के दरवाज़े के पास पहुँचा, मुझे रिदम का मैसेज आया।

'मैं तुम्हें क्यों मैसेज कर रही हूँ मुझे नहीं पता। तुम्हारे मैसेज को पढ़ने के बाद लगा कि मैं शायद ख़ुद तुमसे एक बार मिलना चाहती हूँ। पर मैं अभी कोपनहैगन में नहीं हूँ, मैं जब वापस आऊँगी तो तुम्हें मैसेज करूँगी। मुझे अच्छा लगेगा अगर तुम Munch का काम देखो। पर उसके पहले उनके बारे में थोड़ा जान लेना। तुम्हें उनका काम देखने में ज़्यादा मज़ा आएगा। मैं मैसेज करूँगी जब वापस कोपनहैगन पहुँचूँगी।'

मैंने मैसेज पढ़ा और दरवाज़े पर ही जड़ खड़ा रहा। आने-जाने वाले यात्रियों का मुझे धक्का लगा। वे मुझे घूरकर देख रहे थे क्योंकि मैं रास्ते में खड़ा था। मैं वापस एयरपोर्ट के अंदर आ गया। मैं बाहर नहीं जा सकता था। रिदम ने सही कहा कि अगर मैं अभी Munch की पेंटिंग के सामने चला गया तो उसे ताकता रहूँगा और इंतज़ार करूँगा कि कुछ समझ आ जाए। मैं कुछ और करना चाहता था, पर पता नहीं था कि क्या करूँ? तभी मुझे एयरपोर्ट पर एक किताब की दुकान दिखी। मैंने उस दुकानवाले से पूछा कि क्या आपके पास कोई Edvard Munch की किताब होगी? उसने मुझे मुस्कुराकर देखा और कहा कि है मेरे पास। वह एक किताब ले आया। मैंने बिना किताब देखे उसे पैसे दिए और वापस उसी कैफ़े में

आकर बैठ गया। मैंने सोचा जल्दी से इस किताब के मुख्य हिस्से पढूँगा, जैसा मैं अपने ऑफ़िस में रिसर्च के दौरान करता था, और फिर सीधा Munch म्यूज़ियम देखने जाऊँगा।

कॉफ़ी लेकर मैं बैठा और मैंने किताब का नाम पढ़ा, So Much Longing in So Little Space : The Art of Edvard Munch, नॉर्वेजियन लेखक Karl Ove Knausgaard ने ये किताब लिखी थी।

मैं किताब को खोलूँ उसके पहले मैंने नेनी को Northern Lights की तस्वीरें भेज दी। मुझे लगा कि उन्हें ये तस्वीरें देखकर अच्छा लगेगा।

फिर मैंने फ़ोन अपने से अलग किया और किताब खोल ली। किताब का पहला वाक्य एकदम सीधा था।

'कभी-कभी ये बताना असंभव है कि एक कलाकृति क्यों और कैसे अपना असर छोड़ती है।'

मुझे कभी इस बेहद सीधे वाक्य का कोई जवाब नहीं मिला था। और ये भी है कि मैंने कभी इस तरीक़े के सवाल करने का दुस्साहस भी नहीं किया था। पर इस वाक्य से शुरू हुई किताब पर मैं मोहित हो गया था। मैं सच में जानना चाहता था कि क्या होता है, जब कोई आदमी किसी कलाकृति को देखता है और एक कलाकृति क्यों और कैसे अपना असर छोड़ती है!

Knausgaard लिखते हैं, 'जैसे मैं बहुत भावुक हो जाऊँ किसी पेंटिंग के सामने खड़ा होकर, जो भावना उस पेंटिंग ने ही मेरे भीतर जगाई है, पर ये असंभव है बताना कि वो क्या था इस पेंटिंग में जिसकी वजह से मैं ये महसूस कर रहा हूँ, जैसे, क्या ये दुख किसी रंग को देखकर मेरे भीतर उभरे हैं, या ये लालसा किसी ब्रश स्ट्रोक को देखकर मैंने महसूस की है, या वो अचानक आई अंतर्दृष्टि कि जीवन अंत में उसके मूल भाव में निहित है।'

क्या होता है एक कलाकृति को देखकर?

Knausgaard लिखते हैं- 'एक कलाकृति जिसने ऐसा असर उन पर डाला था वो थी Edvard Munch की 1915 की पेंटिंग Cabbage

Field. तब वह क़रीब पचास बरस के थे।'

मैंने तुरंत फ़ोन उठाया और उस पर Cabbage Field by Munch ढूँढ़ा। अब मेरे सामने वो पेंटिंग थी। मैंने उसको देर तक निहारा। मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैं वापस किताब पर आया।

'पत्तागोभी पेंटिंग के अग्र-भाग में बनी हुई है जो अंदाज़न बनाई गई है, बारीकी से नहीं, किसी स्केच की तरह, जो पीछे के हरे और नीले ब्रश स्ट्रोक में गुम जाती है। गोभी के खेत के बग़ल में पीली जगह है, उसके ऊपर गहरे हरे रंग का हिस्सा है, और सबसे ऊपर की तरफ़ संकीर्ण-सा टुकड़ा है गहरे स्याह आसमान का।

बस यही है, इतनी ही है पूरी तस्वीर। पर ये तस्वीर जादुई है। पर वो इतने सारे मतलब को भीतर पाले हुए है कि देखते हुए लगता है कि कुछ हमारे भीतर फट पड़ा है। और ऐसे देखने जाए तो ये बस एक गोभी का खेत है।

तो क्या हो रहा है इस पेंटिंग के अंदर?

जब मैं उस पेंटिंग के रंग और आकार को देखता हूँ जो अपने-आपमें मौलिक रूप से एकदम सरलता लिए हुए है, उसमें जो सीधा परिदृश्य हमें दिखाई देता है वो पेंटिंग उससे कहीं ज़्यादा हमें लगने लगती है। जैसे मैं इसमें मृत्यु देखता हूँ, मानो पेंटिंग का इरादा मृत्यु से सुलह करने का है, पर कुछ भयानक घटा है, इसके चिह्न मौजूद हैं, और जो असल में भयानक है वो अज्ञात है, मानो हमें पता नहीं कि क्या हमारी प्रतीक्षा में है।

पर Munch की पेंटिंग असल में कुछ कहती नहीं है, वो कुछ और नहीं दिखाती सिवाय गोभी, अनाज, पेड़ और आकाश के अलावा। और फिर भी हम देख लेते हैं मृत्यु, सुलह, शांति और साथ-साथ कुछ भयानक घटना के चिह्न।

अगर इसको सरलता से देखें तो खेत की लाइन भीतर की तरफ़ जा रही है, अँधेरे की ओर, और वो साँझ ऊपर आकाश की तरफ़ उतर रही है।

कई लोगों ने खेतों को पेंट किया है, कई लोगों ने साँझ को अपनी

चित्रकारी में उतारा है, पर कोई भी उसे नहीं छू पाया जो ये पेंटिंग बिना किसी प्रयत्न के कहती है।'

मेरी कॉफ़ी ख़त्म हो चुकी थी और मैं Munch की पेंटिंग Cabbage Field को, अपने फ़ोन पर घूरे जा रहा था। सिर्फ़ इस किताब की शुरुआत पढ़ने पर ही मुझे एक पेंटिंग को देखने की समझ पैदा हुई। अच्छा हुआ मैं Munch म्यूज़ियम नहीं गया। अगर उस म्यूज़ियम में मुझे Cabbage Field दिखती तो मैं उसके सामने से गुज़र जाता। मैंने अपना सामान उठाया और एयरपोर्ट पर टहलने लगा। मुझे लगा Munch ही नहीं मैं ज़िंदगी में किसी भी चीज़ को अब तक समझा ही नहीं हूँ। मेरे पास वो नज़र ही नहीं है। कितना मूर्ख था कि मैं सोच रहा था कि इस किताब को मैं अपने ऑफ़िस के रिसर्च वाले काम की तरह जल्दी पढ़कर सीधा म्यूज़ियम में घुस जाऊँगा। मुझे Munch को समझने में वक़्त लगेगा, मैं अभी Munch म्यूज़ियम नहीं जा सकता था। तभी मुझे रिदम का वो बूढ़ा आदमी याद आया।

मेरे हाथों में एक नई किताब थी, लोगों के प्रति स्नेह मैं सीख रहा था और अब मुझे बस एक और रिस्क लेना था। एयरपोर्ट पर भटकते हुए मेरी निगाह ट्रेन स्टेशन पर पड़ी जो असल में ओस्लो एयरपोर्ट के अंदर ही था। ट्रेन के प्लेटफ़ॉर्म पर जाने का जो दरवाज़ा था उसी के बाहर टिकट मशीन लगी हुई थी। मैं तुरंत उस मशीन पर गया और जो भी ट्रेन उस प्लेटफ़ॉर्म पर आने वाली थी उस ट्रेन के आख़िरी स्टॉप का टिकट ले लिया।

टिकट पर लिखा था, ओस्लो Lugthavn Stasjon से Kongsberg Stasjon तक। मैं दरवाज़ा खोलकर Track 4 पर गया, दस मिनट में ट्रेन आ चुकी थी और मैं Kongsberg की तरफ़ निकल गया था।

मैंने ट्रेन में बैठते ही वापस किताब खोल ली। Knausgaard ने जो Munch का संसार लिखा था मैं उसके भीतर इतने गहरे उतर गया

था कि रास्ते का पता ही नहीं चला। जब पढ़ने से ब्रेक लिया तो देखा Kongsberg आने ही वाला था। मैंने Kongsberg पहुँचने के ठीक पहले Airbnb पर एक कमरा बुक किया।

बहुत छोटा, सुंदर, शांत शहर था ये। स्टेशन पर उतरते ही लगा कि मैं ऐसे ही नहर के किनारे वाले शहर में आना चाहता था। ठीक स्टेशन के बाहर पानी का स्रोत था, बहते पानी के किनारे-किनारे होते हुए मैं अपने Airbnb के कमरे पर पहुँचा। छोटा-सा कमरा था, ठीक उतना ही जितना एक आदमी को सोने और पढ़ने के लिए चाहिए होता है। मैंने अपना सामान रखा और बाहर शहर की तरफ़ निकल गया। नहर पार करते ही सड़क किनारे छोटे कॉफ़ी हाउस दिखाई देने लगे। मैं अपनी किताब लेकर नहर के पास के एक कैफ़े में जाकर बैठ गया।

मैं एक साधारण-सा आदमी था, मेरे जीवन में कोई भी बड़ी घटनाएँ नहीं थीं, सारथी के चले जाने की घटना को अगर छोड़ दें तो। मैं दिल्ली के ऑफ़िस में सीधा-सादा काम करता रिसर्च का और कुल जमा चार-पाँच लोगों को अपना दोस्त कह सकता था। जबकि Munch का जीवन मुझसे एकदम उल्टा था, वो घटनाओं, अपनों की मृत्यु, कला, प्रेम, यायावरी से भरा पड़ा था। पर उनके जीवन में कुछ था जो मुझे बेहद आकर्षित कर रहा था, बेहद अपना-सा लग रहा था। शायद उनके जो स्त्रियों के साथ संबंध थे, जिसमें वो कभी भी सफल नहीं रहे। उन्हें काम करते रहने का जुनून था, हर मुश्किल के बीच उन्हें शांति उनके काम में ही मिली थी। वो लगातार अपनी मृत्यु के पहले तक काम करते रहे थे। मैं उनके जीवन के बारे में जितना भी पढ़ता गया उतना ही लगा कि ये तो सारे मेरे डर हैं जिनसे Munch जूझ रहे थे। मैंने ख़ुद के जीवन का भटका हुआ टुकड़ा उनके जीवन के भीतर पाया जो असल में कभी मेरा था ही नहीं।

किस क़दर हम अपने जीवन में उस जीवन को याद करने लगते हैं जो हमने कभी जिया ही नहीं था! शायद इसलिए लोग कला की शरण में जाते हैं, ये भावना कोई कला ही भीतर महसूस करा सकती है। रिदम का

Munch की पेंटिंग के सामने खड़ा रहना और कुछ पा लेना इसी भावना का हिस्सा था। शायद ये कला ही है जिसके ज़रिए हमने जो नहीं जिया है उसे अगर छू नहीं सकते तो कम-से-कम महसूस तो कर ही सकते हैं। मैं Munch के जीवन को महसूस करना चाहता था। उस हद तक कि मैं, कम-से-कम, अपने सपनों में ही सही, पर एक बार अपने जीवन के उस टुकड़े को छू सकूँ जिसकी जगह मेरे जीवन में हमेशा ख़ाली पड़ी थी।

किताब पढ़ते हुए Asgardstrand शहर का ज़िक्र बार-बार आया। यहाँ Munch गर्मियों में आकर काम करते थे। इसी शहर में अपने घर के पास के जंगलों में उन्होंने पहली बार किसी महिला को चूमा था। यही वो जगह थी जहाँ उन्होंने अपनी कई मशहूर पेंटिंग की थीं जैसे The Bridge, Four girls in Asgardstrand and The Dance of Life.

मैंने अपना फ़ोन निकाला और सर्च किया कि Kongsberg से Asgardstrand कितनी दूर है ? मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब मुझे पता चला कि जहाँ मैं रह रहा था वहाँ से Asgardstrand बस 78 किलोमीटर की दूरी पर था। गाड़ी से क़रीब एक घंटे बीस मिनट का रास्ता था।

अगले दिन मैंने एक गाड़ी बुक की। एक हाथ में किताब और दूसरे हाथ में कॉफ़ी लिए मैं Asgardstrand की तरफ़ निकल चुका था।

Munch को एक तरह से आत्मीयता या intimacy का डर था पूरे जीवन। शायद इसलिए क्योंकि उन्होंने उनकी माँ को खो दिया था जब वह महज़ पाँच साल के थे। और जब वह तेरह साल के थे तो अपनी बड़ी बहन को खो चुके थे, जिनके वह बहुत ही क़रीब थे। उनके पिता की मृत्यु हुई जब वह पच्चीस साल के थे, फिर उन्होंने अपने छोटे भाई को खो दिया जब वह बत्तीस साल के थे। एक तरह से उन्होंने अपनी बहन Laura को भी खो दिया था जो बहुत ही कम उम्र में मानसिक रूप से बीमार हो गई थीं। Munch बेहद सेंसेटिव थे। उनके ऊपर इन सारे संबंधों का बेहद गहरा प्रभाव पड़ा, ऐसा प्रभाव कि वह किसी भी नए संबंध से कतराते रहे। किसी भी संबंध में जैसे ही उन्हें आत्मीयता महसूस होती वह बिदक जाते। जब उनकी मौसी की मृत्यु हुई, जो उनके लिए माँ समान थीं, उनके जीवन के अंतिम समय में, तो वह उनके funeral पर भी नहीं गए। उन्होंने उनका funeral दूर से देखा, वह चर्च की दीवार के बाहर खड़े होकर funeral देखते रहे। और उनके जीवन के सारे डर उनकी कलाकृति में साफ़ देखे जा सकते हैं। उन्होंने अपनी पेंटिंग में कुछ भी नहीं छुपाया। मैं फ़ोन पर उनकी वो सारी कलाकृतियाँ देखने लगा जिन कलाकृतियों पर उनके जीवन के इन हादसों का असर था। रिदम जिस पेंटिंग के सामने जाकर खड़ी हुई थी वो पेंटिंग भी उनके जीवन में आई मृत्यु का हिस्सा थी। मैं उस पेंटिंग को अब अपने फ़ोन पर देखकर भी महसूस कर सकता था। मेरे जैसे नौसिखिए के लिए इस तरह से Munch को

पढ़कर उनकी कलाकृति को देखने में थोड़ी आसानी हो गई थी, वरना जब मैं रिदम के साथ Munch को देख रहा था तो मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। Asgardstrand पहुँचते ही लगा कि मानो इस गाँव को पहले Munch ने पेंट किया था और फिर उस पेंटिंग को देखकर लोगों ने इस तरह के घर बनाए और उनमें रहने लगे थे। यहाँ सभी घर सफ़ेद रंग के थे और उनके बग़ल में खुला हुआ समुद्र। मैं Asgardstrand की गलियों से होता हुआ Munch Street पहुँचा, आगे कुछ ही दूर चलने पर मुझे वो पीला घर दिखा। शायद इस तरफ़ ज़्यादा लोग आते नहीं थे, पूरा Munch Street चुप था, पूरा गाँव चुप। आसमान एकदम साफ़ था और सूरज की रोशनी चारों तरफ़ फैली हुई थी। मैं उस घर के सामने खड़ा हो गया। मैंने किताब आधी से ज़्यादा पढ़ ली थी। इस घर में Munch के सारे क़िस्से मैं जानता था। घर से ही समुद्र दिखता था। Munch की पेंटिंग में जहाँ भी चाँद है और चाँद की रोशनी जो पानी पर चमक रही है वो यहीं की है।

मैं Munch के घर के सामने खड़े रहकर सोचने लगा कि क्या मुझे सच में Munch में दिलचस्पी है या मैं असल में रिदम के क़रीब होना चाहता हूँ इसलिए Munch के पीछे भाग रहा हूँ? क्या मुझे लगता है कि रिदम तक पहुँचने का रास्ता Munch से होते हुए जाता है? जैसे मैं यात्राएँ पसंद नहीं करता था, पर इतनी दूर आना एक तरह से सारथी को वापस अपने जीवन में बुलाने का बहाना था? क्या मैं दूसरों के क़रीब होने में लगातार ख़ुद को खोता रहता हूँ? या असल में दूसरों के आईने में ख़ुद को देखकर मैं अपने क़रीब आता हूँ? मैंने कभी इस तरह से नहीं सोचा था। मैंने कभी ख़ुद को इतना महत्त्वपूर्ण माना ही नहीं कि मैं क्या चाहता हूँ उस पर विचार करूँ। मुझे इस बात का तो यकीन था कि मैं अब वो ऋषभ नहीं रहा था जो दिल्ली में लगातार बस व्यस्त रहता था। मैं यहाँ रिदम था। तभी मैंने सोचा कि अगर रिदम मेरी जगह यहाँ खड़ी होती तो उसका खड़े रहना भी अलग होता, उसका इस घर को देखना भी अलग ही होता। मैंने ख़ुद से पूछा कि कैसे देखती रिदम इस घर को? तभी पीछे से एक महिला

आई और उन्होंने मुझसे नॉर्वेजियन में बात करनी शुरू कर दी। मैंने उनसे कहा अँग्रेज़ी प्लीज़ तो वह मुस्कुराईं और उन्होंने कहा, "क्या आप अंदर से उनका घर देखना चाहेंगे?"

"हाँ।"

"आप रुकिए, मैं चाबी लाती हूँ।"

जब वह दरवाज़ा खोल रही थीं तो उन्होंने बताया कि Munch यहाँ नंगे घूमते थे। Asgardstrand में उनके अलावा सारे फिशरमेन रहा करते थे, उन लोगों ने Munch के बारे में शिकायत की कि वह अपने घर के आँगन में नंगे घूमते हैं। तो Munch ने अपने घर के अगल-बग़ल के पेड़ों को काटना बंद कर दिया ताकि वह इत्मिनान से यहाँ नंगे घूम सकें और कोई उन्हें परेशान न करे। उन महिला के बताने में एक ख़ुफ़ियापन था मानो Munch कहीं सैर पर गए हैं और वह मुझे चोरी से उनके बारे में बता रही हैं और उनका घर खोलकर दिखा रही हैं। इस घर को वैसा-का-वैसा ही रखा गया था जैसा वह आख़िरी बार इसे छोड़कर गए थे। पलंग, टेलीफ़ोन, लिखने की टेबल। उन्हें तस्वीरें लेने का बहुत शौक़ था। उस महिला ने बताया कि उन्होंने कई सेल्फ़ी भी ली थीं।

"आपका नाम क्या है?" मैंने उनसे पूछा।

"सोनिया।"

"आप कहाँ रहती हैं?"

"यहीं इसी गाँव में पीछे की तरफ़।"

Munch की एक मंगेतर थीं, वह चाहती थीं कि Munch उनसे शादी कर लें, पर Munch अपने काम को सबसे ज़्यादा महत्त्व देते थे। एक रात वह अपनी मंगेतर को यहाँ इसी घर में लेकर आए, उस रात इस घर में क्या हुआ किसी को पता नहीं, पर एक गोली चलने की आवाज़ आई थी और Munch के बाएँ हाथ की लंबी उँगली ज़ख़्मी हो गई थी। Munch ने उस बारे में कभी किसी से कुछ नहीं कहा, पर उसका असर उनकी पेंटिंग में देखा जा सकता है। फिर सोनिया ने उन पेंटिंग के चित्र

दिखाए जिसमें Munch ज़ख़्मी बिस्तर पर पड़े हुए हैं, उनकें हाथों से ख़ून निकल रहा है और एक औरत सीधे जो पेंटिंग देख रहा है उसे देख रही है।

घर बहुत ही छोटा-सा था। पीछे की तरफ़ एक मेहमान का कमरा, एक किचन, बहुत-सी वाइन की बोतलें, उनके कपड़े, जूते, सारा कुछ वैसा का वैसा ही रखा हुआ था। सोनिया मेरी ख़ामोशी की वजह से बड़ी उत्साह में थी या फिर शायद यहाँ इस तरफ़ कम लोग ही आते थे इसलिए वह लगातार बोले जा रही थीं। मैं रिदम था और मैं सच में सारा कुछ सुनना चाहता था। Knausgaard की किताब पढ़ने के बाद मैं वो सारी बातें पहले से ही जानता था जो सोनिया मुझे बता रही थी पर मैंने उसके उत्साह को मारा नहीं, मैंने उसे बताने दिया वह जो भी बताना चाहती थीं, बल्कि मैं उसके सामने ऐसा अभिनय करता रहा कि ये मैं पहली बार ही सुन रहा हूँ। फिर वह मुझे उस घर से समुद्र की तरफ़ ले गई जहाँ Munch ने अपने जलन में डूबे दोस्त को पेंट किया था और समुद्र किनारे की हुई बाक़ी सारी पेंटिंग का ब्यौरा भी वह विस्तार से देने लगी। सोनिया को सारी पेंटिंग ज़बानी याद थी। फिर वह मुझे Grand Hotel के सामने वाले ब्रिज पर ले गई जहाँ उन्होंने Three Girls on the Bridge पेंट की थी 1901 में। सोनिया ने बताया कि उन लड़कियों की उम्र नौ साल की थी, उनमें से एक लड़की जिसके सुनहरे बाल थे, वो जब नब्बे साल की हुई तो उसे पता चला कि उनकी पेंटिंग जो Munch ने की थी, वो बहुत प्रसिद्ध हो चुकी है। उनसे पूछा गया कि आपको कैसा लगता है ये जानकर, तो उन्होंने जवाब दिया कि काश Munch हमें रोज़ वहाँ बुलाने के पैसे दे देता।

मुझे इस बात पर बड़ी हँसी आई। मुझे हँसता देखकर उन्होंने कहा कि Munch के पास कभी बहुत पैसे नहीं होते थे, तो वह पैसे के बदले लोगों को अपनी पेंटिंग दे देते थे, यहाँ के लोगों को उनकी पेंटिंग देखकर लगता कि ये अधूरी पेंटिंग Munch ने हमें पकड़ा दी। उन्हें वो अजीब और बदसूरत लगती थीं। गाँव वाले उनकी पेंटिंग फेंक दिया करते थे।

फिर वह मुझे हर उस सड़क पर ले गई जहाँ Munch ने लोगों को, बच्चों को पेंट किया था। वापस आते हुए सोनिया ने बताया कि यहाँ जंगल था उस वक़्त, एक चाँदनी रात में इसी जंगल में चलते हुए उन्होंने पहली बार एक औरत को चूमा था, वह शादीशुदा थी। उस पहले प्रेम, चाँदनी रात का असर भी उनके चित्रों में देखा जा सकता है।

हम जब एक लंबा चक्कर लगाकर वापस पहुँचे तो मैंने उनसे कहा कि मुझे बहुत भूख लगी है।

"क्या आप मेरे साथ कुछ खाना पसंद करेंगी?" मैंने पूछा।

सोनिया ने कुछ देर सोचा और फिर मुझे देखकर मुस्कुरा दीं। उनकी मुस्कुराहट में चंचलता थी, उसे देखकर मुझे लगा कि काश मेरे पास और वक़्त होता! काश मैं सोनिया के साथ इस गाँव की चाँदनी रात में, जंगल की तरफ़ टहलने निकल जाता और हम पूरी रात Munch पर बात करते!

ग्रैंड होटल के कैफ़े में बैठते ही हम दोनों के हाथों में बीयर थी। मौसम बहुत सुंदर था। हल्की ठंडी हवा में धूप का शरीर पर पड़ना बहुत सुखद लग रहा था। हम दोनों ने खाना मँगवाया, मेरे साथ-साथ वह भी बहुत भूखी थीं।

"आप Munch म्यूज़ियम हो आए हैं?" उन्होंने पूछा।

"नहीं, कोशिश करूँगा जाने की।"

"कोशिश क्यों?"

"मैं यहाँ कुछ भी पूरे यक़ीन से नहीं कह सकता हूँ, जो होता जाएगा करता रहूँगा।"

"मैं समझी नहीं।"

"मतलब, इस वक़्त मुझे दिल्ली में होना था, पर देखिए मैं यहाँ आपके साथ बीयर पी रहा हूँ।"

मैंने देखा मेरे कहने में ज़्यादा खुलापन था। मैं कुछ भी छुपा नहीं रहा था। मुझे लगा कि ये सोनिया का असर है, पर फिर लगा कि ऐसा नहीं है। असल में किसी भी नए व्यक्ति से हम बहुत ईमानदार होते हैं, उससे सारा

कुछ कह देने की क्षमता रखते हैं, पर जैसे-जैसे हम एक-दूसरे को जानने लगते हैं हम अपने कहने में चुप्पी बढ़ाते जाते हैं और चीज़ों को छुपाना शुरू करने लगते हैं। अनकहे का बोझ बढ़ता जाता है और कहे के सारे वाक्य बेअसर होते जाते हैं।

"ऐसा नहीं है, आप चीज़ों को बेकार में रूमानी कर रहे हैं।" सोनिया ने कहा

"नहीं ऐसी बात नहीं है, मैं सच कह रहा हूँ।" मैंने कहा।

"अगर आप यहाँ आए हैं तो इसका मतलब है कि आप यहाँ आना चाहते थे। इसका कोई और दूसरा कारण नहीं है। हम सबको बड़ा ही अच्छा लगता है ये सोचना कि सारा का सारा किया हुआ कोई करवाता है, कोई बड़ी शक्ति है। अगर कोई बड़ी शक्ति है भी तो उसको आप में कोई दिलचस्पी नहीं है। आपका जीवन एक समय तक ही है और उसमें जो आप चाहते जाते हैं वही होता जाता है। अब अगर आप भारत में रहकर अमेरिका के प्रेसिडेंट होना चाहेंगे तो अलग बात है। आप समझे न?"

आख़िरी वाक्य कहते हुए वह मुस्कुरा दीं। उन्हें भी लगा कि वह शायद कॉफ़ी नाराज़ हो गई थीं। मैंने कहा कि आप बिलकुल ठीक कह रही हैं। हम कुछ देर अपने-अपने खाने पर चुपचाप रहे। फिर उन्होंने पूछा, "क्या करते हैं आप?"

"कल तक तो नौकरी थी, अब लगता है कि बेरोज़गार हो चुका हूँ।"

इस बात पर वह हँस दी।

"कोपनहैगन में मेरी एक दोस्त को मैंने धोखा दिया था, वो Munch को बहुत पसंद करती थी। Munch को जानना शायद उससे माफ़ी माँगने जैसा है, इसीलिए मैं यहाँ चला आया। और शायद इसीलिए मैं Munch म्यूज़ियम भी जाऊँगा। मुझे मेरे कारण असल में पता हैं।"

मैं जब ये कह रहा था तो वह ऐसे सुन रही थीं जैसे मैं उन्हें Munch House में सुन रहा था।

"पता है, Munch अपने काम में इतने ज़्यादा ईमानदार थे, कि उनके

जीवन में घटी सारी-की-सारी घटनाओं का असर आप उनके रंगों में, उनके ब्रश स्ट्रोक्स में देख सकते हैं। Munch से जो मैंने सीखा है वो ये है कि आप बस एक चीज़ के प्रति जीवन में ईमानदारी रखो बाक़ी चीज़ें ख़ुद-ब-ख़ुद सही हो जाती हैं।"

"मैं बस चाहता हूँ कि मैं Munch के किसी एक काम के सामने ऐसे खड़े होऊँ जैसा मैंने उस लड़की को, जिसे मैंने धोखा दिया है, कोपनहैगन म्यूज़ियम में खड़े देखा था।"

"क्या तुम उससे प्रेम करते हो ?"

"पता नहीं, वो मेरी बहुत अच्छी दोस्त है। प्रेम के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता हूँ। मैं मेरी एक्स गर्लफ्रेंड के बारे में ज़्यादा सोचता हूँ, अगर किसी के बारे में लगातार सोचते रहना प्रेम है तो मैं शायद उससे ही प्रेम करता हूँ।"

"क्या नाम है तुम्हारी दोस्त का ?"

"रिदम।"

"माफ़ी चाहती हूँ, मैंने अभी तक तुम्हारा नाम तो पूछा ही नहीं।"

"कोई बात नहीं, मेरा नाम सारथी है।"

जब मैं सोनिया से विदा ले रहा था तो हम समुद्र किनारे उसी पत्थर पर खड़े थे जिसे Munch ने अपनी बहुत-सी पेंटिंगों में पेंट किया था। उस पत्थर के बारे में बताने के बाद सोनिया ने मुझे चूमा और वह Munch के घर की तरफ़ चली गई। मुझे सोनिया का चूमना इतना सामान्य लगा जितना मेरा किसी अजनबी को बाय कहना। अपने चूमे जाने की मुस्कुराहट को लेकर मैं Asgardstrand गाँव में टहलने निकल गया। मैं टहलते हुए उस गाँव के जंगलों की तरफ़ चला गया जहाँ Munch को टहलना बहुत पसंद था। मैं अपने आस-पास के सारे पेड़ों को छूते हुए चलने लगा। मैं इस शांति को, इस ठंडी हवा को, इस ठंड में सूरज के सुनहरे उजाले को छूते हुए चलना चाहता था। मैं सारथी था और इस वक़्त Munch के जंगल में एक पुराना हिंदी गाना गुनगुनाता हुआ टहल रहा था।

कोई भी संबंध कब ख़त्म होता है? और संबंध ख़त्म होने का पता सबसे पहले किसे लगता है? मुझे लगता है जिसकी वजह से संबंध ख़त्म हो रहा होता है उसे सबसे बाद में पता चलता है कि अब संबंध नहीं रहा। वह एक क़िस्म के शॉक में चला जाता है। उसे उस झटके से उबरने में बहुत वक़्त लगता है पर जब तक वह उस शॉक में रहता है तब तक वह ख़ुद को एक बेचारगी की आँखों से देखता है। अगर मैं बहुत ज़्यादा ईमानदारी से देखूँ तो मैं कहीं बहुत भीतर इस संबंध के ख़त्म होने का इंतज़ार ही कर रहा था। बहुत ईमानदारी से कहूँ तो मैं पारुल से मिलते ही उसके साथ सेक्स करने की कल्पना कर चुका था। बहुत ईमानदारी से कहूँ तो मैंने सिर्फ़ और सिर्फ़ आज तक माला के उस अदृश्य साथी से अपने पूरे दिल से माफ़ी माँगी है और किसी से नहीं।

मैं जब वापस Kongsberg पहुँचा तो सीधा शहर घूमने निकल पड़ा। नदी किनारे चलते हुए ये शहर उन शहरों की याद दिला रहा था जिनके सपने सारथी को आते थे और वह मुझे सुबह चाय पीते हुए बताया करती थी। या जब कभी वह किसी चुप शाम में किसी एक जगह चले जाने की बात करती थी, वो कोई ऐसा ही छोटा शहर होता था। मैं नदी किनारे टहल रहा था और मैंने ख़ुद से पूछा कि अगर सारथी इस वक़्त यहाँ होती, तो क्या करती? मुझे इसका कोई जवाब नज़र नहीं आया। कितना ज़्यादा अजीब है कि मैं ख़ुद से पूछता हूँ कि अगर रिदम यहाँ होती तो क्या करती तो, उस वक़्त नहीं पर कुछ देर बाद ही सही जवाब ज़रूर मिल जाता है। पर सारथी, जिसके साथ मैंने मेरे जीवन के इतने साल बिताए हैं वहाँ बस एक चुप्पी है। अब लगता है कि काश सारथी मुझे जबरदस्ती किसी हवाई जहाज़ में बिठाकर किसी लंबी यात्रा पर भेज देती तो मैं एक बेहतर दोस्त बनकर उसके पास वापस आता। मेरे बेहतर आदमी बनने की ज़िम्मेदारी उसकी नहीं मेरी थी, पर एक ही जैसी ज़िंदगी गोल-गोल जीते हुए कभी मुझे इस बात की समझ ही नहीं रही कि असल में मैं किसी के साथ रहने लायक़ नहीं रह गया था। मुझे लगता था कि ऑफ़िस में लोग मुझे पसंद करते हैं,

मैं सबके बर्थडे पर उपस्थित रहता हूँ, यहाँ तक कि दोस्तों के साथ हमने सारथी के भी कितने सरप्राइज़ बर्थडे मनाए थे। वो दिखावटी तरीक़े से आश्चर्य में पड़ जाती, फिर एक दिन उसने मुझसे कह दिया कि मुझे अच्छे नहीं लगते ये बचकाने सरप्राइज़ वाले बर्थडे, please don't do it. मैंने अपने दोस्तों में सारथी की उस वक़्त बहुत बुराई की थी, और सब लोग मेरी ही तरफ़ थे कि कितनी मेहनत की थी मैंने ये सब करने में। कैसे मुझे ये चीज़ें जो इतनी साफ़ हैं दिखी ही नहीं उस वक़्त ? क्यों मैं इस विश्वास में रहा कि मैं तो एकदम सही बॉयफ्रेंड हूँ। हमारे संबंध में मैंने कभी किसी दूसरी लड़की की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखा– मैं इस बात को एक तमग़े की तरह पहनता था कि देखो मैं कितना ईमानदार हूँ अपने संबंध में। पर मैं अपने संबंध में कितना उबाऊ था इसका मुझे कभी अंदाज़ा ही नहीं लगा। ईमानदार होने से कहीं ज़्यादा खतरनाक़ है उबाऊ होना।

मैंने Asgardstrand के Munch House में उनकी एक तस्वीर देखी थी जिसमें वह मृत पड़े हुए थे, जो उनकी छोटी बहन ने खींची थी। मैंने सर्च किया तो पता चला कि उन्होंने अपना अंतिम समय, 1916 से 1944 तक ओस्लो के पास, Ekely में बिताया था। मैंने Ekely जाना तय किया, मुझे लगने लगा था कि Munch के रास्ते मैं रिदम की तरफ़ नहीं, ख़ुद की तरफ़ बढ़ रहा हूँ। मैं ख़ुद को साफ़ दिखने लगा हूँ।

बहुत भीड़ और शहरी इलाक़ों से होता हुआ मैं Ekely में उनके घर पहुँचा, ये पहले एक पौधों की नर्सरी थी। उनके घर के भीतर नहीं जा सकते थे, वो बंद था पर Munch ने इस घर में रहकर इसके आस-पास की सारी जगह को अपनी पेंटिंग में चमकते रंगों से पेंट किया था। सामने का घना पेड़, सेब का पेड़, मैं वो सारी पेंटिंग देखने लगा जो यहीं घर के आस-पास की थी उन्होंने। उस घर के कई चक्कर काटकर अंत में मैं पेड़ के पास लगी हुई बेंच पर बैठ गया। एक वक़्त शायद यहीं से ओस्लो शहर का विस्तार दिखता होगा। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, 19 दिसंबर 1943 की रात को ओस्लो शहर में एक भयानक विस्फोट हुआ था, Munch

नींद में चौंककर उठे थे। वह उस घटना से बहुत घबरा गए थे जिसे उन्होंने उनके watercolour की पेंटिंगों में दर्ज किया था। अगले दिन वह बीमार पड़ गए थे जिस बीमारी से वह उबर नहीं पाए और 23 जनवरी 1944 को गहरी नींद में उनकी मृत्यु हो गई।

क्या मैं अब Munch के सेल्फ़ पोर्टेट, Between the Clock and the Bed, के सामने खड़ा रहूँगा तो मैं वैसे ही उसे देख पाऊँगा जैसा रिदम उनकी पेंटिंग को देख रही थी? क्या ये सारी जानकारी मैं इसीलिए इकट्ठी कर रहा हूँ ताकि पूरी तरह रिदम हो पाऊँ? अब मेरे भीतर Munch म्यूज़ियम जाने की इच्छा गहराती जा रही थी।

तभी मुझे दोस्तों के कुछ मैसेज आए कि–

'क्या बे तूने नौकरी छोड़ दी?'

'क्या हुआ तू ठीक है?'

'अब आ भी जा भाई, और क्या करेगा वापस आकर, वो सोचकर आना?'

'फ़ोन कर...' वग़ैरा-वग़ैरा।

मैं समझ गया कि मुझे नौकरी से निकाल दिया गया है। यहाँ Munch की जगह पर बैठे हुए ये ख़बर अपने सारे आश्चर्य और सारा दुख खो चुकी थी। मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था।

'सारथी, मैंने ख़ुद ये नौकरी छोड़ी है। असल में मुझे बहुत पहले ये काम कर देना था, पर अभी यहाँ हूँ और यहाँ मुझे ठीक लग रहा है। मैंने सोचा इससे पहले कि मेरे दोस्त तुम्हें बताएँ, मैं ही मैसेज कर दूँ।'

मैंने सारथी को मैसेज कर दिया। जाने कितना-कुछ मैं उसे लिख देना चाहता था, जाने कितनी बातें, पर जब संबंध ख़त्म हो चुका होता है तो हर एक शब्द का असर भी पलट चुका होता है, क्योंकि अगर मैं उसे वो मैसेज लिखता जो मैं लिखना चाहता हूँ तो शुरुआत 'प्रिय सारथी' से करता और अंत 'तुम्हारा रिदम' होता। और मुझे पता है उसके बाद वह मान चुकी होती कि मैं पागल हो चुका हूँ। इसलिए मैंने बहुत ही सीधा-सा मैसेज उसे किया।

ओस्लो शहर में घुसते ही मैं सीधा Munch म्यूज़ियम की तरफ़ चलने लगा। ओस्लो और भी कई चीज़ों के लिए प्रसिद्ध था, पर मेरी दिलचस्पी सिर्फ़ और सिर्फ़ Munch में थी। मैंने सुना था Munch म्यूज़ियम नॉर्वे की तीन सबसे बदसूरत इमारतों में गिना जाता है। मुझे बिल्डिंग इतनी बुरी भी नहीं लगी, मैं टिकट लेकर सीधा Munch बिल्डिंग में प्रवेश कर गया।

'हेलो रिदम,

मैं इस वक़्त ओस्लो में हूँ और यहाँ के एक पब में बैठा बीयर पी रहा हूँ। मेरी इच्छा नहीं है बीयर पीने की, मैं बस तुम्हें मैसेज करना चाहता था, और मैसेज करने की हिम्मत जुटाने में मैं कई बीयर पी चुका हूँ, और अगर तुमने कल मुझसे पूछा कि मैंने तुम्हें मैसेज क्यों किया तो मैं बीयर को दोषी भी ठहरा सकता हूँ।

ख़ैर मैं अभी-अभी Munch म्यूज़ियम से बाहर निकला हूँ। मैं नम हूँ। मुझे इसके पहले कभी नहीं पता था कि कोई कला आपके ऊपर इस क़दर असर कर सकती है। मुझे हमेशा से उन लोगों पर शक होता था जो कला की, शास्त्रीय संगीत की तारीफ़ ऐसे करते मानो उन्होंने उनकी ज़िंदगी बदल दी हो। पर मैं अभी-अभी Munch के संसार से निकलकर बाहर आया हूँ और तुम्हें मैसेज करे बिना नहीं रह सकता था।

तुम्हें पता है यहाँ आने के पहले मैं Ekely गया था जहाँ Munch

की मृत्यु हुई थी, और उसके पहले मैं Asgardstrand भी गया था जहाँ उसका summer house था। मैं ये बातें तुम्हें क्यों बता रहा हूँ? तुम तो सब जानती हो, मैं बस ये कहना चाह रहा था कि अगर मैं किताब नहीं पढ़ता, अगर मैं इन दोनों जगहों पर नहीं जाता तो शायद मैं पिछली बार की तरह यूँ ही, पूरे म्यूज़ियम से टहलते हुए बाहर निकल आता। पहली बार उनके चित्रों के रंग मुझे अपनी तरफ़ खींच रहे थे, उनके ब्रश स्ट्रोक-अकेलापन, पीड़ा, प्रेम सारे कुछ से सने हुए थे। उनकी हर तस्वीर, तस्वीर बनाने की प्रक्रिया भी साथ लेकर चलती है। मैं उनकी पेंटिंग Weeping Nude के सामने जाने कितनी देर खड़ा रहा! मैं Munch के सारे रंगों को जानता था, वो मेरे जीवन के रंग थे, वो मेरे अकेलेपन, कमीनेपन के रंग थे, अगर कोई पूछे कि गहरी उदासी कैसी होती है तो मैं Munch की किसी पेंटिंग की तरफ़ ही इशारा करूँगा।

और फिर मेरी साँसें रुक गईं। मैं पूरी तरह स्थिर हो गया था जब मैंने अचानक ख़ुद को Vampire नाम की उनकी पेंटिंग के सामने पाया। तुमने इस पेंटिंग के बारे में सही कहा था। मैंने उसी वक़्त तय कर लिया था कि मैं तुम्हें मैसेज करूँगा। मैंने तुम्हें देखा था Edvard Munch की पेंटिंग के सामने खड़े हुए, और किस तरह तुम उस चित्र का हिस्सा लग रही थीं। मैंने देखा, ठीक Vampire की पेंटिंग के सामने तुम थी। पेंटिंग में उस लड़की के सुर्ख़ बालों के नीचे समर्पण में बिखरा हुआ आदमी, मैं उस चित्र में सब कुछ था, सारे रंग, सारे स्ट्रोक, सारा भय, सारी पीड़ा और मेरे अकेलेपन के सारे डर... सब कुछ मैं देख सकता था। रिदम, मैं ठीक उस वक़्त तुम्हारे साथ तुम्हारी कार में था और मेरा सिर तुम्हारी गोद में पड़ा हुआ था। मैं उस पेंटिंग के सामने ख़ुद को निहायत ही कमज़ोर महसूस कर रहा था।

मैं तुम्हें Munch समझाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, मेरे पास कोई चारा नहीं है, मैं बस सारा कुछ तुम्हें कह देना चाहता हूँ। मैं ही वो आदमी हूँ जिसने कुछ हफ़्तों पहले तुमसे कहा था कि मुझे पेंटिंग समझ नहीं आती है, और मैं ही वो आदमी हूँ, जिसकी पेंटिंग देखते ही पैरों तले ज़मीन

खिसक गई है। अब ये सारा कुछ लिखने के बाद थोड़ा ठीक लग रहा है। इतनी सारी बड़बड़ के लिए माफ़ी। मैं तुमसे बहुत जल्द मिलना चाहता हूँ।'

मैंने ये सारा कुछ लिखा, अपनी तीसरी बीयर का एक लंबा घूँट लिया और रिदम को मैसेज भेज दिया। मुझे पता था अगर मैं उसे मैसेज भेजने में देर करूँगा तो शायद कभी नहीं भेज पाऊँगा। जिस तरह Munch के जीवन के सारे के सारे जिए हुए भाव आप उनके चित्रों में देख सकते हैं, ऐंग्ज़ायटी, डर, प्रेम, मृत्यु, भय, सांत्वना, तो मैं अपने जिए में ये सब छुपाकर क्यों चलता हूँ। जब तक मैं ख़ुद से ईमानदार नहीं रहूँगा तब तक मैं किसी और के प्रति ईमानदारी नहीं बरत सकता।

मैं पैदल ओस्लो ट्रेन स्टेशन की तरफ़ जा रहा था और मुझे मेरा पूरा शरीर बहुत हल्का लग रहा था। इच्छा हो रही थी कि मैं बग़ल में पड़े बच्चों के झूलों में उछलकर चढ़ जाऊँ और उनमें देर तक झूलूँ। इस बार मैंने इच्छा को इच्छा नहीं रहने दिया... मैं बच्चों के झूले में कूदकर चढ़ गया और देर तक झूलता रहा।

मैंने नेशनल थियेटर स्टेशन पर से ट्रेन पकड़ी। रास्ते से एक हॉट चॉकलेट ले ली। मैं मिठास चाहता था, धीरे-धीरे उसे पीते हुए मैं वापस Kongsberg के अपने Airbnb की तरफ़ चल दिया।

जब मैं अपने कमरे में पहुँचा तो सारथी का मैसेज आया– 'ये रिदम कौन है ?'

मैंने मैसेज देखा और अपना सिर पकड़ लिया। मैंने Munch म्यूज़ियम वाला मैसेज रिदम के बजाय सारथी को भेज दिया था। मैंने देखा वह अभी टाइप कर रही है, मैं इंतज़ार करने लगा। दस मिनट, पंद्रह मिनट... फिर उसका मैसेज आया–

'तो जो तुम ख़ुश होने की बात कर रहे थे वो ये ख़ुशी है। ठीक है। मैं ख़ुश हूँ कि तुम घूम रहे हो और विश्वास नहीं हो रहा कि तुम Edvard Munch की बात कर रहे हो। तुमने शायद कभी ध्यान नहीं दिया होगा,

पर सालों से मेरे डेस्कटॉप पर जो स्क्रीन सेवर है वो एक Munch की पेंटिंग ही है!

वैसे यहाँ आकर कोई म्यूज़ियम में काम नहीं देगा, सोच लेना क्या करोगे। अब नौकरी तो है नहीं, वापस आकर कोई सहायता चाहिए हो तो बता देना। मैं ख़ुश हूँ, तुम भी कोशिश करना ख़ुश रहने की।'

मैंने जवाब में, ग़लत मैसेज भेजने के लिए माफ़ी माँगी और धन्यवाद कहकर बात ख़त्म कर दी। जो मैसेज मुझे रिदम को भेजना था मैंने वो कॉपी किया और रिदम का चैट खोलकर उसे पेस्ट किया, पर उसे भेजने के ठीक पहले मैं रुक गया। अब ये सारी बड़बड़ भेजने का मन नहीं किया। मैंने वो डिलीट किया और लिखा–

'हेलो रिदम,

आज Munch म्यूज़ियम गया था, तुम्हें बहुत मिस किया वहाँ। मैं कल वापस कोपनहैगन आने की सोच रहा हूँ, तुम वापस आ चुकी हो क्या? मिलना चाहता हूँ मैं तुमसे। बताना।'

मैंने मैसेज सेंट किया और लेट गया। कमरे की छत पर खिड़की से आती हुई रोशनी कुछ चित्र-सा बना रही थी। वहाँ मैं Munch के रंगों के स्ट्रोक्स को चलते हुए देख सकता था, Munch के चाँद की रोशनी, उसका विशाल सूरज, उसका प्रेम में लथपथ डरा हुआ जीवन।

मुझे सुबह वापस कोपनहैगन चले जाना था। पर Kongsberg छोड़ने की इतनी जल्दी इच्छा नहीं हुई। कुछ घंटे और की गुहार लगाकर मैंने रात में टिकट बुक नहीं की। फिर सुबह-सुबह इच्छा हुई शहर में जाकर लंबा चल लूँ एक बार। फिर कुछ घंटे और की मोहलत लेकर मैं नदी किनारे टहलने निकल गया। कुछ बदल रहा था, मैंने ध्यान से देखा तो नदी किनारे लगे ऊँचे पेड़ों के रंग बदल रहे थे। जिन पेड़ों को मैं रोज़ देखता आया था वो अपने होने में जुदा होते जा रहे थे। ये पतझड़ के रंग थे, जब fall पूरी तरह होगा तो कितना ज़्यादा ख़ूबसूरत दिखेगा। पर मैं वापस जा चुका

होऊँगा। मैं इस वक़्त अपने वापस जाने के बारे में नहीं सोचना चाहता था। मैं चलते-चलते Kongsberg के ब्रिज को पार करके एक कैफ़े में बैठ गया, जहाँ से मुझे पूरा जंगल दिखाई दे रहा था। मेरे हाथों में गर्म कॉफ़ी थी, मौसम में ठंडक थी, तापमान दस डिग्री था और हवा भी चल रही थी। सामने बदलते रंगों के बीच इस काली कॉफ़ी का हर एक सिप भीतर तक गर्मी पैदा कर रहा था। मैं ख़ुद को देख सकता था कि मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट लगातार बनी हुई है। ये मेरे साथ पहली बार हो रहा था कि मैं ख़ुश था और किसी को ये बात बताने की मुझे इच्छा नहीं थी। मैंने फ़ोन नहीं उठाया किसी को मैसेज करने के लिए, मैंने कोई तस्वीर भी नहीं ली। मैं इस वक़्त यहाँ इस जगह के भीतर हूँ इस बात से ही मैं मंद-मंद मुस्कुराए जा रहा था। फिर मैं सोचने लगा ऐसा पहले कब हुआ था? शायद जर्मनी में कहीं, Tromso में, Asgardstrand के जंगलों में, पता नहीं। मैंने पहली बार पतझड़ को इस तरह रंग बदलते देखा था और पहली ही बार ख़ुद को उसके बीच मुस्कुराते हुए महसूस किया था। ये सारे बदलाव नए थे मेरे लिए। मैं ख़ुश था और ख़ुशी साँझा करने का छिछलापन भीतर ग़ायब था। मुझे लगने लगा था कि मैं सारथी और रिदम के बीच का कुछ होने लगा हूँ। शायद मैं अब सलीम हूँ, रिदम ने पहली बार मुझे सलीम ही माना था, शायद सलीम ऐसा ही कुछ था जिसे मैंने कभी ठीक से जाना ही नहीं। शायद अब जाकर मैं सलीम हुआ हूँ।

मैं दिन भर जंगलों में टहलता रहा। मुझे इन बदलते रंगों को देखने में बहुत आनंद आ रहा था। तभी लगने लगा कि बचपन के घर के रोशनदान से छनकर आते सपनों को पूरा करने के बाद कोई और सपना क्यों नहीं देखा? छोटा-सा जीवन और उस जीवन को उसकी पूरी संकीर्णता में बाँधे बैठा था, कुएँ के मेंढक की तरह। मुझे इतनी दूर आना पड़ा ये जानने के लिए कि एक ही जीवन में मैं सलीम भी हो सकता हूँ और रिदम भी। अपने जीवन में मैं उस अफ़ग़ानी आदमी की गहरी चिंता में भी पड़ सकता हूँ जिससे बस कुछ ही वक़्त पहले परिचय हुआ था। इसी जीवन में मैं पहली

बार किसी अदृश्य औरत से रोते हुए माफ़ी भी माँग सकता था। कितनी संभावनाएँ बिखरी पड़ी थीं चारों तरफ़ और मैं अपने घर से ऑफ़िस और ऑफ़िस से घर के रास्ते की यात्रा में व्यस्त था।

रिदम का मैसेज आया– 'मुझे ख़ुशी है कि तुमने Munch म्यूज़ियम देख लिया। मैं कोपनहैगन वापस आ चुकी हूँ। जब तुम आ जाओ तो बताना, मुलाक़ात होती है।'

मैंने जंगल में बैठे-बैठे रात की फ़्लाइट बुक की और रिदम को मैसेज किया कि मैं आज रात ही पहुँच रहा हूँ, जब तुम फ्री हो तो बता देना।

उसका जवाब में एक शब्द का 'ओके' आया।

मैं बदलते रंगों के बीच से चलता हुआ वापस अपने कमरे पर आया और पैकिंग करने लगा। मुझे Kongsberg से ओस्लो ट्रेन में जाना था फिर ओस्लो से कोपनहैगन की रात की फ़्लाइट थी। सारी पैकिंग ख़त्म करने के बाद भी मेरे पास अभी वक़्त था। मैं जीवन में वक़्त काटने और इंतज़ार करते रहने से उक्ता गया था। मैंने सोचा कि इस वक़्त का कुछ किया जाए, कहीं निकल लिया जाए, जहाँ जाने के बारे में सोचा न हो। कोपनहैगन यूँ भी एक तरीक़े का घर हो गया था, वहाँ वापस जाने में अजीब-सी हिचक हो रही थी। मैं Kongsberg स्टेशन जाने से पहले एक छोटे गाँव Notodden की तरफ़ निकल गया। मैंने सुना था कि Notodden में तेहरवीं शताब्दी का एक Stave Church था, Heddal Stave Church. मुझे चर्च देखने का मन नहीं था, मुझे बस एक बहाना मिल गया था थोड़ा मन भटकाने का। जब मैं Notodden पहुँचा तो बारिश हो रही थी, पेड़ों पर धुँध फैली हुई थी, ठंड भी बहुत बढ़ चुकी थी। ऐसी स्थिति में मन जो पहले थोड़ा कम भारी था और भारी हो चुका था। चर्च की बिल्डिंग बहुत ही निराली थी, बाहर ही क़ब्रिस्तान था, मैं चर्च के बजाय ढेरों क़ब्रों के आस-पास मँडराता रहा था। बहुत पहले मैं और सारथी पहली बार घूमने मैक्लॉडगंज गए थे। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हम लोग यहाँ क्यों चले आए थे। मैं रोज़ दारू पी लेता और सारथी

रोज़ दूर-दूर जगहों पर घूमकर आती और मुझे कहानी सुनाती। एक बार वह मुझे मैक्लॉडगंज के क़ब्रिस्तान में ले गई थी, वहाँ वह एक परिवार की क़ब्र पर बहुत देर खड़ी रही थी। कोई ब्रिटिश परिवार था जिसमें दो बच्चे भी थे, उन्हें वहाँ दफ़्न किया गया था। सारथी ने मुझसे कहा था कि अपने वतन, अपने लोगों से दूर ये लोग यहाँ दफ़्न हैं, कितना गहरा अकेलापन है ये! मुझे याद है मैं सारथी की बातों पर हँस दिया था। यहाँ Notodden के क़ब्रिस्तान में खड़े होकर मुझे अपनी उस हरकत पर आज कितना दुख हो रहा था! सारथी कितनी गहरी और निजी बात मेरे साथ साझा कर रही थी और मैं उसकी बातों में एक हँसी की जगह खोज रहा था! फिर मुझे ऐसी कई घटनाएँ याद हो आईं, और शर्म से मेरा सिर झुक गया। काश मैं Tromso में होता तो माला की उस अदृश्य औरत से फिर माफ़ी माँगता।

Kongsberg स्टेशन जाते हुए बारिश थम गई थी। 3.34 की ट्रेन वक़्त पर थी। मुझे खिड़की वाली जगह मिल गई थी। ट्रेन ने वक़्त पर स्टेशन छोड़ा था। मेरे सामने एक नॉर्वेजियन आदमी बैठा था जो लगातार फ़ोन पर बात कर रहा था। बग़ल वाली सीट पर एक युवा लड़की बैठी थी जो प्रेम में थी। जिस तरीक़े से वह किसी को मैसेज कर रही थी और सारे जवाब पढ़कर मंद-मंद मुस्कुरा रही थी, पता चलता था कि वह बहुत प्रेम में है। प्रेम के चेहरे कितने एक जैसे होते हैं! फ़ोन पर बात ख़त्म करके वह नॉर्वेजियन आदमी मुझे देखने लगा। कुछ देर बाद उसने हाथ बढ़ाया और अपना नाम बताया, मैंने भी अपना नाम बताया। वह दारू से महक रहा था।

"पाकिस्तानी? बांग्लादेशी? इंडियन?" उसने पूछा।

"इंडियन।"

"ओ, यू सपोर्ट पुतिन?"

मैं चुप रहा। तभी एक लड़का वहाँ से निकला, वह नॉर्वेजियन उसे देखते ही खड़ा हो गया। उसके खड़े होने पर मुझे पता चला कि असल में वह कितना बड़ा है और ऊँचा है। दोनों में कुछ बहस हुई और फिर वह लड़का ग़ुस्से में निकल गया। वह नॉर्वेजियन बड़बड़ाता हुआ वापस बैठ गया। तभी उसकी निगाह मुझसे मिली और उसने अपनी बड़-बड़ मुझ पर उड़ेल दी।

"मुझे अच्छा होना पड़ेगा। वर्ना ये रोमानिया से आए लोग सब हड़प लेंगे। सारे लोग बहुत चालाक हैं। वो गेम खेलना जानते हैं, मुझे चौकन्ना

रहना पड़ेगा। हम नॉर्वे के लोग सीधे पड़ जाते हैं। जैसे मेरा बाप ही कितना गधा निकला! वह अपने एक रोमानियन दोस्त के कहने पर थाइलैंड गया था छुट्टी मनाने और वहाँ से एक बीवी उठा लाया। तुम्हें पता है उस थाई लड़की की उम्र मुझसे भी कम है। मैं घर जाता हूँ तो हँस-हँसकर मुझसे बात करती है। मेरा बाप कहता है कि बुढ़ापे में मेरी सेवा करेगी इसलिए लाया हूँ। मैंने कहा नहीं करेगी, फिर उन्होंने पूछा कि तुम करोगे? मैं क्या कहता! मैं घर छोड़कर निकल गया। कोई तरकीब लगानी पड़ेगी। पहले तो मुझे अच्छा बर्ताव करना पड़ेगा सबका दिल जीतने के लिए, पर उसमें सालों लग जाएँगे। इतना वक़्त नहीं है। तब तक तो ये रोमानिया के लोग और थाईलैंड के लोग सारा नॉर्वे चट कर चुके होंगे।" ये कहते हुए उसने अपने बैग से एक बीयर निकाली।

"इससे ही तो दूर रहना है, इसे नहीं पीना है।" ये कहते हुए उसने बीयर खोली और गटागट पीने लगा।

"अब मेरे बाप को कौन समझाए! वो घर का 70 प्रतिशत हिस्सा अपने नाम करा चुकी है। मैं तीस के लिए लड़ रहा हूँ। बस ये बीयर पीना एक बार छोड़ दूँ तो सब से निपट लूँगा।" ये कहते ही वह एक बार में पूरी बीयर गटक गया। तभी उसे टिकट चैकर आता हुआ दिखा, मुझे आँख मारकर कहा कि मैं फ्री में सफ़र कर रहा हूँ, पकड़ा गया तो तीस प्रतिशत अभी के अभी गए।

उसकी पूरी कहानी में मैं सिर्फ़ हँस रहा था। उसके जाते ही मेरी निगाह प्रेम में लथपथ लड़की पर गई। वह अभी भी प्रेम के छोटे क्षणिक तेज़ मैसेजों के आदान-प्रदान में व्यस्त थी। अगले स्टेशन पर मैंने नॉर्वेजियन आदमी को देखा, उसे पुलिस पकड़कर ले जा रही थी, उसने मुझे देखकर अपने कंधे उचका दिए।

मैंने भी उसे देखकर अपने कंधे उचका दिए। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी और उसकी वजह से मैं भी मुस्कुरा रहा था।

कोपनहैगन मैं क़रीब नौ बजे पहुँचा था। शनिवार की रात थी तो

सारा कोपनहैगन सड़कों पर था। हर तरफ़ मस्ती का माहौल था। इस बार कोपनहैगन आना घर वापस आने जैसा लग रहा था। ऐसा लगा कि वापसी शब्द कोपनहैगन में तब्दील हो चुका है। तो जब दिल्ली वापस जाऊँगा तो वो क्या होगा ? मैं अपनी बिल्डिंग की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए ये सोच रहा था। फ़्लैट का दरवाज़ा खोलते वक़्त लगा कि ये कमरा मेरे अलावा कोई दूसरा किराए पर नहीं लेता है शायद। जब भी कोपनहैगन वापस आ रहा होता था इस कमरे को वापस बुक कर लेता था। मैं दरवाज़ा खोलकर भीतर घुसा तो मुझे किचन में खड़ी उदास जर्मन लड़की दिखी। उसने शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं पहने हुए थे, कान में हेडफ़ोन लगाए, एक हाथ में वाइन लिए वह कुछ बना रही थी। उसके शरीर से मेरी आँख नहीं हट रही थी। मुझे लगा मैं Munch की बनाई कोई न्यूड पेंटिंग देख रहा हूँ। किचन की पीली रोशनी में उसका शरीर तराशा हुआ लग रहा था। मैं बहुत कोशिश करने पर भी जल्दी पलट नहीं पाया था। मैं जैसे-तैसे वापस दरवाज़े पर गया और थोड़ा ज़ोर से दरवाज़ा बजाया मानो मैं अभी-अभी भीतर आया हूँ और जल्दी से बिना किचन में देखे अपने कमरे में चला गया।

उदास जर्मन लड़की मेरे सामने एक बड़ी-सी टीशर्ट पहनकर बैठी थी। हम दोनों के बीच में उसका अभी-अभी बनाया हुआ पास्ता रखा था।

"मुझे लगा आज फिर अकेले ही डिनर करना पड़ेगा।"

वह सच में मेरे आने पर बहुत प्रसन्न थी। वाइन का एक गिलास उसने मुझे पकड़ाया और हमने गिलास टकराते हुए स्कोल कहा। स्कोल बोलते ही मेरे मुँह से सॉरी निकला। उदास जर्मन लड़की वाइन का सिप लेने के ठीक पहले रुक गई।

"Why sorry ?"

"ऐसे ही मुँह से निकल गया। मैं धन्यवाद कहना चाहता था।"

मैं जानता था उसने मुझे पकड़ लिया है। उसकी आँखों में बहुत कुछ जानने की शरारत मैं देख सकता था।

"मुझे लगा था कि तुम तो वापस जा चुके होगे!"

"जाना तो था, पर नहीं गया।"

"तुम यहीं रहने के बारे में तो नहीं सोच रहे हो न?"

मैं हँस दिया। पास्ता का एक कौर अपने मुँह में रखा और मेरी आँखें बड़ी हो गईं। पास्ता बहुत ख़राब बना था। मेरी आँखों को देखकर उसने तुरंत पास्ता चखा और हम दोनों की प्लेट को तुरंत उठाकर उसने डस्टबिन में डाल दिया।

"अरे इतना भी बुरा नहीं था!" मैंने अपनी हँसी रोकते हुए कहा।

मैंने देखा वह पास्ता फेंकने के बाद बीच किचन में खड़ी हुई है। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह जल्दी से अब क्या बना दे।

"सुनो, चलो बाहर डिनर पर चलते हैं, my treat." मैंने कहा और उदास जर्मन लड़की की आँखें चमकने लगीं।

"तुम मुझे डेट पर ले जा रहे हो?"

"वादा किया था।" मैंने कहा।

वह तुरंत अपने कमरे में तैयार होने चली गई। मैं उससे कहना चाहता था कि मैंने तुम्हें अपने घूमने में बहुत याद किया था। पर कुछ चीज़ें कहने का अजीब-सा डर अभी भी था, अभी भी लगता था कि सारथी को पता लग जाएगा तो वह क्या सोचेगी! वह मुझे छोड़ चुकी थी, पर मुझसे अभी भी कुछ छूट नहीं रहा था।

उदास जर्मन लड़की जब तैयार होकर बाहर आई तो मुझे लगा उसके हल्के गुलाबी मेकअप और लिपस्टिक के पीछे उसकी उदासी छिप गई है। उसने सुंदर काले रंग की ड्रेस पहन रखी थी और उसके पास से भीनी-भीनी ख़ुशबू आ रही थी।

"तुम तैयार नहीं हुए?"

"तैयार?"

"तुम ऐसे ही चलोगे?"

"मेरे पास बहुत कपड़े नहीं हैं।"

"प्लीज़ कुछ तो अच्छा पहनो!"

मैं अपने कमरे में गया और अपने कपड़ों के बीच कम ख़राब कपड़ों को टटोलने लगा। जींस में से बदबू नहीं आ रही थी, फिर याद आया कि मैंने जींस के साथ कुछ कपड़ों को Kongsberg में धोया था। एक शर्ट दिखी जिसमें प्रेस नहीं थी, पर चूँकि काली थी इसलिए पहनने पर बहुत बुरी नहीं लग रही थी। मैं उदास जर्मन लड़की की बराबरी कभी नहीं कर सकता था। वह बहुत सुंदर थी और दूसरों के प्रति उसका स्नेह उसकी सुंदरता को और बढ़ा देता था।

हम उसके पब नहीं गए। हम निकलते ही मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट की तरफ़ मुड़ गए। हम दोनों ने ही जैकेट नहीं पहना था और कोपनहैगन में ठंड बढ़ गई थी। बाहर निकलते ही हवा के एक झोंके में हम दोनों सिहर गए और चलते हुए एक-दूसरे के पास खिसक आए। उदास जर्मन लड़की की यहाँ एक पसंदीदा जगह थी जो मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट में पीछे की तरफ़ थी। भीड़ वहाँ भी थी, पर वहाँ बैठकर बातचीत की जा सकती थी। गिलास के बजाय हमने पूरी बोतल वाइन मँगवा ली, इसलिए नहीं कि हम बहुत पीना चाहते थे, उसका कारण था कि पूरी बोतल वाइन बहुत सस्ती पड़ती थी। मैं देख रहा था, इस पब की पीली और लाल रोशनी जो उदास जर्मन लड़की के चेहरे पर पड़ रही थी, वो कितनी नाटकीय लग रही थी। वह इस रोशनी में बेहद ख़ूबसूरत दिखाई दे रही थी। पर वह जैसे ही दूसरे लोगों को देखती उसकी आँखों के आस-पास एक गहरी छाया फैलने लगती। फिर जैसे ही वह वाइन का एक सिप लेकर मुझसे मुख़ातिब होती, वो छाया ग़ायब हो जाती। ये उदास छाया का खेल मैं बहुत देर तक देखता रहा था।

"What happened to that girl?" उसने मस्ती में पूछा।

"कौन-सी लड़की?"

"ओ, तो बहुत लड़कियाँ हैं?"

"नहीं, ऐसा नहीं है।"

"जो मेरे पब में तुमसे मिलने आई थी।"

"हाँ, पारुल, अब बस मत पूछो, कहानी जाने कितने उतार-चढ़ाव

झेल चुकी है!"

"वो अभी भी तुम्हारी ज़िंदगी में है?"

"नहीं, अब तो उसने मुझे इंस्टाग्राम पर भी ब्लॉक कर दिया है।"

वह हँसने लगी। उसकी हँसी मेरी हँसी जैसी नहीं थी। मेरे हँसने के सामने उसकी हँसी बस होंठों का फैलना और वापस पास आ जाना था। मेरे हँसने पर पब में बैठे कुछ लोग पलटकर हमारी तरफ़ देखने लगते। उदास जर्मन लड़की ने पारुल के बारे में पूछा और मुझे लगा कि काश वह रिदम के बारे में पूछती तो मैं उसे सारा कुछ बता देता। उस सारे कुछ में उससे ये भी कहता कि पारुल को लेकर जो मैंने रिदम से माफ़ियाँ माँगी थीं वो सब झूठ थीं, क्योंकि मैं ठीक इस वक़्त तुम्हें वापस बिना कपड़ों के देखना चाहता हूँ। अभी भी, कान में लगे हेडफ़ोन पर तुम्हारे नग्न शरीर का हिलना मेरे पूरे शरीर में हरकत कर रहा है।

हम एक वाइन की बोतल ख़त्म कर चुके थे। जो भूख लगी थी वो वाइन के साथ छोटी-मोटी चीज़ें खाने में शांत हो गई थी। मेरा हाथ बार-बार सिगरेट की तरफ़ जा रहा था, पर उसके लिए मुझे उठकर बाहर जाना पड़ता सो मैं अपना सिगरेट पीना टाल रहा था। उसने मेरी झिझक समझ ली। हमने एक वाइन की बोतल और ऑर्डर की और उसे लेकर पब के बाहर आ गए।

"तुम्हें कुछ खाना नहीं है?" उसने पब से निकलते हुए पूछा था।

"आज रात नहीं।" मैंने जवाब दिया था।

हम चलते-चलते नहर के किनारे पहुँच गए थे। मुझे कोपनहैगन का ये हिस्सा अच्छे से याद था। यहीं समुद्र किनारे, एक शाम मैं रिदम के साथ घूमा था। मैं हर उस जगह को देर तक निहारता रहा जहाँ-जहाँ हम बैठे थे, रुके थे, मुस्कुराए थे।

उदास जर्मन लड़की के हाथों में वाइन की बोतल थी। उसकी चाल में हल्की लड़खड़ाहट थी, उसके पैर एक रिदम में उठ रहे थे। शायद कोई जर्मन गाना था जो उसके दिमाग़ में चल रहा था। हम अंत में एक लकड़ी के बने हुए ब्रिज पर बैठ गए। आस-पास बहुत सारी बोट लगी हुई थीं।

सामने समुद्र का पानी था जो शहर के बीच से होकर गुज़रता था, दूसरी तरफ़ एक क़तार में बने पबों का संगीत यहाँ तक सुनाई दे रहा था।

"मैं न्यूयॉर्क पढ़ने गई थी। तुम कभी गए हो न्यूयॉर्क?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"बहुत ही कमाल शहर है। मुझे लगता है इस दुनिया में वही एक ऐसा शहर है जहाँ आप पहला क़दम रखते हो और आपको लगने लगता है कि आप तो इस शहर में पहले भी आ चुके हो।"

"कैसे?" मैंने पूछा।

"न्यूयॉर्क को हमने इतना ज़्यादा जो फ़िल्मों में देखा है। मेरी अँग्रेज़ी ऐसी थी कि लोग तुरंत पकड़ लेते थे कि मैं जर्मनी से हूँ। मैं छुपाती भी नहीं थी, पर उस कॉलेज में पूरी दुनिया से लोग आते थे और सभी लोगों का जर्मन लोगों के प्रति एक अजीब व्यवहार होता था। ख़ासकर अगर बातचीत ह्यूमन राइट्स पर चल रही हो। मैं जब भी किसी ज़्यादती पर बात करना चाहती लोग कहते– तुम तो रहने दो, एक जर्मन होकर तुम्हें ये हक़ नहीं है। मतलब हर बार लोग इस साफ़गोई से नहीं कहते थे, पर हर आदमी के कहने में इतिहास घुस आता था। मुझे जब भी इन बातों का बहुत बुरा लगता मैं अपनी माँ से देर तक फ़ोन पर बतियाती रहती। बातों-बातों में मैंने देखा था कि मेरी माँ हिटलर, द्वितीय विश्वयुद्ध, यहूदी, कॉन्संट्रेशन कैंप जैसी बातों से असहज हो जाया करती थी। वो जितना असहज होती मेरी उत्सुकता उन बातों में उतनी ही बढ़ती जाती। जब एक दिन मुझे मेरे बहुत से सवालों के जवाब नहीं मिले तो मैंने कॉलेज से छुट्टी ली और हैमबर्ग चली गई। मैं अपने घर, अपने परिवार के बारे में सारा कुछ जानना चाहती थी। मुझे शक था कि कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है। मैं अपने परिवार में जिससे भी पूछती कोई भी मुझे सीधा जवाब नहीं देता। फिर मुझे पता चला मेरे एक अंकल के बारे में, वह अठारह बरस के थे जब वह हिटलर की तरफ़ से लड़ते हुए इटली में मारे गए थे। वहाँ से मुझे एक सिरा मिला। जब मैंने पता करना शुरू किया तो मुझे यक़ीन नहीं हुआ कि हमारा घर, हमारा

परिवार किस क़दर द्वितीय विश्वयुद्ध का हिस्सा रहा था! उसमें वे लोग भी थे जो हिटलर के साथ थे और वे भी जिन्होंने यहूदियों की मदद की थी। मैंने एक लंबी लिस्ट बनाई और अपने सोशल मीडिया पर माफ़ी के साथ सारा का सारा सच लिख दिया। मुझे ये करना ही था। अपने लिए, अपनी माँ के लिए। मैं जब वापस न्यूयॉर्क आई तो मैंने सबसे पहले कॉलेज छोड़ा, और UN में नौकरी कर ली। मैं चाहती थी कि मैं लोगों के लिए उनके बीच में जाकर काम करूँ। पर UN में मुझे ऑफ़िस का काम सौंप दिया गया था, एक तरीक़े से मैं क्लर्क थी। एक साल भी मैं वहाँ टिक नहीं पाई और नौकरी छोड़कर सीधा अफ़्रीका चली गई। वहाँ मुझे कुछ बहुत ही अच्छे लोग मिले जो UN से भी ज़्यादा भीतर घुसकर काम कर रहे थे। अब ये जर्मन गिल्ट कहो या जो भी, मुझे भीतर से एक तरीक़े की शांति मिलती थी जब मैं किसी परिवार के लिए कुछ भी ऐसा कर पाती थी जिससे उनका भविष्य उनके लिए सरल हो जाए। उसी कंपनी में मैं आज तक हूँ। उसी कंपनी ने मुझे यहाँ भेजा है काम करने।"

उस उदास जर्मन लड़की की बातों से जो चित्र मेरे दिमाग़ में बन रहे थे, कुछ देर के लिए लगा कि मैं कोई फ़िल्म देख रहा हूँ। उसने जब तक अपनी बात ख़त्म की थी, हम धीरे-धीरे पूरी वाइन भी गटक गए थे। जब हम वापस चलने को हुए तो पता चला कि हम दोनों को ही बहुत चढ़ गई है। चलते हुए उसने मेरे हाथों में अपना हाथ डाला तो मुझे पता चला वह ठंड के मारे काँप रही है। मैंने उसे अपने पास खींच लिया। उसने अपना सिर मेरे कंधों पर टिका दिया। चलते हुए मैं अगल-बग़ल के लोगों के चेहरों को ध्यान से देख रहा था और सोच रहा था कि कितनी कमाल कहानियाँ होंगी सभी की और मैं कभी इनमें से किसी की भी कहानी नहीं जान पाऊँगा! पता नहीं मुझे इस बात का अचानक बहुत दुख क्यों हो रहा था! इतने दिनों से घूमते रहने के बाद लगने लगा कि अभी तो शुरुआत हुई है। अभी तो मैंने सुनना सीखा है।

जब हम अपने फ़्लैट पर वापस आए तो वह अपने कमरे में जाने के बजाय मेरे पीछे-पीछे सीधा मेरे कमरे में आ गई। उसने अपने सारे कपड़े उतारे और मेरे बिस्तर में चादर ओढ़कर लेट गई। ये उसके लिए एकदम सामान्य था, उसका मेरे साथ इस वक़्त सोना। मैं उसे कैसे समझाता कि मेरे लिए ये मुमकिन नहीं था।

"क्या मेरे लिए एक बोतल पानी लाकर रख दोगे? मुझे रात में पानी के लिए किचन में नहीं जाना।"

मैं उसके लिए किचन से एक बोतल पानी भरकर ले आया। फिर मैंने अपने कपड़े उतारे और उसके बग़ल में लेट गया। उसने मुझे अपने पास खींचा और मुझे चूमने लगी। कुछ देर में उसने मुझे छोड़ दिया।

"मैं समझ सकती हूँ, हम गले लगकर सो तो सकते हैं?"

मैं मुस्कुरा दिया और अपना एक हाथ आगे किया, उसने अपना सिर उस पर रखा और मैंने दूसरे हाथ से उसे अपने क़रीब खींच लिया। मैं उसकी साँसें अपनी गर्दन पर महसूस कर सकता था, मैं उसके बालों को सूँघ सकता था, उसकी ख़ुशबू बहुत जुदा थी, मैंने ऐसी ख़ुशबू कभी महसूस नहीं की थी। उसका शरीर ठंडा था जो धीरे-धीरे गर्म होता जा रहा था। मैंने अपनी आँखें बंद कर ली। ठीक इस वक़्त वह अपनी उदासी में अकेले नहीं थी, मैं अपनी उदासी के साथ उसके साथ था।

मैं सुबह उठा तो उदास जर्मन लड़की गहरी नींद सो रही थी। उसके शरीर पर चादर साँप की तरह लिपटी हुई थी। उसके सुनहरे बालों से उसका

मुँह ढँका हुआ था। मैंने उसके चेहरे से बाल हटाए और उसे हल्के से चूमा। उसने एक अँगड़ाई ली। मेरी इच्छा हुई कि मैं उसके शरीर के हर कोने को चूम लूँ। पर मैं उसे उसकी ख़ूबसूरत नींद से जगाना नहीं चाहता था। मैंने साँप जैसी चादर को उसके शरीर से निकालकर उसे ठीक से ओढ़ाया। कुछ देर उसके बग़ल में बैठा रहा, पर रह-रहकर उसे चूमने का मन करता रहा।

मैंने कपड़े पहने और नीचे कॉफ़ी पीने निकल गया। बाहर बारिश हो रही थी। बारिश और ठंड से बचता हुआ मैं बस सड़क पार कर पाया। कॉफ़ी हाउस अभी दूर था। मेरा वहाँ जाना मुश्किल था। मैं कॉफ़ी हाउस के बजाय सामने के इंटरनेशनल स्टोर में घुस गया।

"कॉफ़ी?" मैंने पूछा।

"वो पीछे की तरफ़ मशीन है, वहाँ से ले लो।" काउंटर पर बैठे आदमी ने हिंदी में कहा, उसकी हिंदी सुनकर साफ़ पता लग रहा था कि वह पाकिस्तान से है।

मैंने कप लिया, मशीन में काली कॉफ़ी का बटन दबाया और पैसे देने वापस काउंटर पर आया।

"जाने दो भाईजान, कल आप हारे हो, कॉफ़ी मेरी तरफ़ से।" उसने कहा।

"मैं हारा हूँ?" मैं समझा नहीं।

"कल का भारत-पाकिस्तान का मैच नहीं देखा आपने?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"जी, मैं क्रिकेट नहीं देखता।"

"भाई कैसे इंडियन हो यार, कहीं तुम अपनी हार से ज़्यादा ख़फ़ा तो नहीं हो?"

"जी नहीं, मुझे क्रिकेट में क़ोई इंटरेस्ट नहीं है।"

मैं दुकान के थोड़ा बाहर आ गया ताकि कॉफ़ी के साथ सिगरेट पी सकूँ, पर बारिश से बचने के लिए मुझे दरवाज़े से सटकर ही खड़ा रहना

पड़ा। मैंने फ़ोन निकाला और रिदम को मैसेज किया कि क्या आज शाम को मिल सकते हैं ? रिदम को मैसेज भेजने का बाद लगा कि मैं कल रात ही उसे मैसेज कर सकता था पर नहीं किया, किस तरह समय चीज़ों के असर को धुँधला करता जाता है ! जैसे सारथी से जुदाई का दुख उतना गहरा नहीं था अब, और कभी-कभी ये बात ज़्यादा दुखी कर देती थी कि सारथी मुझ पर अपना असर खोती चली जा रही थी। कल रात समुद्र किनारे बैठे हुए, वाइन की चुस्की लगाते-लगाते मैंने जो उदास जर्मन लड़की की बातें सुनी, उन बातों की आँच मैं अब तक महसूस कर सकता था। उसे बहुत आश्चर्य होता जब कोई मुल्क युद्ध करने की बात करता। बड़ी-बड़ी आँखों से हाथ उचकाते हुए उसने कहा था कि हम अपने इतिहास से जुदा नहीं हैं। कैसे ? क्यों ? जर्मनी के इतिहास को जानने के बाद भी लोग कैसे युद्ध की बात कर सकते हैं ! मैं अभी भी उसकी बड़ी-बड़ी आँखों को अपने सामने महसूस कर सकता था। AKAN

मैं चाहता था कि इस जर्मन लड़की के बारे में नेनी को सारा कुछ बताऊँ। नेनी को मैसेज करने के लिए मैंने फ़ोन निकाला कि तभी पीछे से इंटरनेशनल स्टोर वाले ने कहा, "पहले मैं भी नहीं देखता था जनाब, पर यहाँ आकर मैच देखने में बहुत मज़ा आता है। यहाँ सारे हिंदुस्तानी-पाकिस्तानी एक साथ जमा होते हैं और क्या माहौल बनता है !"

बाहर आकर वह भी सिगरेट पीने लगा। बारिश से बचते हुए हम दोनों बहुत पास पास खड़े थे। मैंने अपना फ़ोन वापस जेब में रख लिया।

"कॉफ़ी के लिए शुक्रिया !" मैंने कहा।

"अरे जनाब, आप ख़िदमत का मौक़ा दो। अच्छा ये बताएँ अभी आप क्या कर रहे हैं ?"

मैंने उसे देखा, फिर अपनी सिगरेट को देखा, मुझे लगा उसे दिख रहा होगा कि मैं इस वक़्त सिगरेट पी रहा हूँ। पर सिगरेट पीना किसी कांम में नहीं आता है सो मैंने कहा, "कुछ नहीं।"

"तो ठीक है, चलिए मेरे साथ, मेरी नाइट ड्यूटी ख़त्म हो गई है।"

"कहाँ?"

"अरे चलिए तो, आपको मज़ा आ जाएगा। लीजिए आपकी क़िस्मत कमाल की है, देखो, बस भी आ चुकी है।"

मैं उनसे कुछ कह पाता उसके पहले वो बस में चढ़े और उन्होंने मेरे टिकट के पैसे दे दिए। मैं हाथ में कॉफ़ी लिए बस के दरवाज़े के सामने खड़ा था और समझ नहीं पा रहा था कि करना क्या है!

"अरे आप कॉफ़ी लेकर भी आ सकते हैं।" उन्होंने कहा।

मैं बस में चढ़ गया था। उनके बग़ल में बैठते ही लगा कि ये मैं क्या कर रहा हूँ? कहाँ जा रहा हूँ? पर उसकी बातों में हर चीज़ को लेकर इतना उत्साह था कि वह मेरे चेहरे पर आए हतप्रभ वाले भाव देख ही नहीं पा रहे थे।

"बस तीन स्टॉप, और ग़रीबख़ाना आ चुका होगा।"

मेरे हाथों में अभी भी कॉफ़ी थी जो ठंडी हो चुकी थी। मैं उसे पी भी नहीं रहा था।

"पर मैं आपके घर क्यों जा रहा हूँ?" मैंने पूछा।

"अल्लाह का शुक्र है कि आप आ गए, बाद में आप मेरा शुक्रिया अदा करेंगे। वैसे मेरा नाम इरफ़ान भट्ट है।"

"जी मैं... रिदम।"

मैं सलीम बोलने वाला था। मुझे अजीब लगा कि मैं ऐसा क्यों करने वाला था? क्योंकि वह पाकिस्तान से है इसलिए, मेरा सलीम होना इरफ़ान को अपनापन देगा? क्यों? क्या ये मेज्योरिटी का गिल्ट है? जैसे उदास जर्मन लड़की को उसके इतिहास का गिल्ट है?

हम तीन स्टॉप बाद उतरे और उन्होंने उतरते ही बताया कि सामने जो बिल्डिंग दिख रही है वो उनकी बेटी का स्कूल है। उनका घर स्कूल के सामने वाली बिल्डिंग में दूसरे फ़्लोर पर था। उन्होंने अपने फ़्लैट का दरवाज़ा खोला और मुझे पूरे घर में ईसा मसीह की तस्वीरें नज़र आई।

"आप ईसाई हैं?" मैं पूछना नहीं चाहता था, पर मेरे मुँह से निकल

गया।

"हाँ, ख़ुदा का बंदा हूँ।"

पाकिस्तानी ईसाई मैंने कभी सोचा नहीं था। मुझे उनके प्रति थोड़ी दिलचस्पी बढ़ गई थी। उनकी बातों के बीच में मैं, रिदम के जवाब की अपेक्षा में, अपना फ़ोन देख लेता।

"अरे जनाब यूसुफ़ युहाना ईसाई था, जब वो अच्छा खेलता था तो हम सब पाकिस्तानी ईसाइयों की छाती चौड़ी हो जाती थी। पर इन लोगों ने उसको मुसलमान बनाकर ही दम लिया। हमें बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है पाकिस्तान में। मैं ख़ुद क्रिकेटर था, पर मजाल है मुझ जैसे लोगों को चांस मिलता।"

मैंने देखा उनका घर ख़ाली था तो पता चला उनकी बेगम कल ही पाकिस्तान गई हैं और वो जाते वक़्त मटन और दाल बनाकर गई हैं। उन्होंने बिना मुझसे पूछे पराठे बनाना शुरू किए और कहा कि दोनों भाई साथ में दो-दो पराठे खाते हैं। मुझे पता था कि यहाँ समर्पण कर देना बहुत ज़रूरी था। अब मेरे बस में कुछ भी नहीं था। पराठे और मटन सच में बहुत लज़ीज़ थे। खाते वक़्त मैं उन्हें सुनना भूल गया था। वह लगातार बोले जा रहे थे। खाने के बाद अचानक मुझे ध्यान आया कि उदास जर्मन लड़की जब सोकर उठेगी और उसे मैं अपने ही कमरे में नहीं दिखूँगा तो उसे बहुत बुरा लगेगा। मैंने अंत में जैसे-तैसे उनसे इजाज़त ली और तुरंत बस में बैठकर वापस आ गया। बस में बैठते वक़्त मुझे ख़याल आया कि मैंने निकलते वक़्त उन्हें धन्यवाद भी नहीं कहा।

बारिश हल्की थम गई थी पर आसमान स्याह था। बस मेरे अलावा दो लोग और बैठे थे। मैं खिड़की के बाहर इस शहर में सुबह का प्रवेश देख रहा था। कितनी चुप्पी थी, सारा कुछ कितना धीमी गति से चल रहा था मानो समय को किसी ने रबर की तरह खींच दिया हो और हर चीज़ ने उस खिंचाव में अपनी तेज़ी को त्याग दिया हो! मैं कल रात के बारे में

सोचने लगा, मैं कितना अलग था उदास जर्मन लड़की के साथ! रात में उसके शरीर का ठंडे से गर्म होना मैंने अपने शरीर पर महसूस किया था और मैं ख़ुद को उसके कितना क़रीब महसूस कर रहा था। मैं ऐसा कभी नहीं था दिल्ली में। अब लगता था कि सारथी ने कितना सहा था मुझे! मैंने कभी देर रात उसके साथ चलते हुए बेसिर-पैर की लंबी बातें नहीं की थीं, कभी उसकी निजी कहानियों का हिस्सा नहीं बना। अगर वह मुझे न छोड़ती तो मैं सालों-साल ऐसा ही रहता, एक गिजगिजा-सा स्वार्थी आदमी जिसे महज़ इस बात का गुमान था कि वह अपने प्रेमी से ईमानदार है। मैं कितना मानकर चलता था कि वो तो मेरी प्रेमिका है उसे तो समझना चाहिए। मैं बीमार था, मैं एक तरीक़े का पुरुष था जो अपने पुरुष के अहम को एक परंपरा की तरह, बिना जाने अपने भीतर लिए घूम रहा था। कहने के लिए मैं आज़ाद ख़यालों का था, मैं हर जगह बताता था कि हम लिव-इन रिलेशनशिप में हैं, मेरे लिए ये प्रोग्रेसिव था, इसपर मुझे काफ़ी वाहवाही भी मिलती थी महफ़िलों में, पर मुझे असल आज़ादी का अर्थ पता ही नहीं था। मैं बिना प्रेम को समझे सारथी का प्रेमी बना घूमता था। अगर यहाँ घूमते हुए मैं पुराने ख़ुद से टकरा जाऊँ तो मैं उसे मुँह भी न लगाऊँ। मैं कभी भी ईमानदार नहीं था, मैं कभी भी सच्चा आदमी नहीं था। एक अच्छा इंसान बनने के बजाय मैं बाक़ी सारी बातों में व्यस्त रहा आया था। मैं सारथी से माफ़ी नहीं माँग सकता था क्योंकि अगर उसने पूछ लिया कि मेरे इतने सारे सालों का हिसाब कौन देगा तो मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं होगा।

जब मैं वापस अपने कमरे में आया था तो वहाँ उदास जर्मन लड़की नहीं थी। मैंने उसके कमरे का दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, पर वो भीतर से बंद था।

दोपहर में रिदम का मैसेज आया– 'शाम को मीट पैकिंग डिस्ट्रिक्ट के प्रोलॉग कैफ़े में मिलते हैं।'

मैंने जवाब में धन्यवाद लिखा। मेरे भीतर एक ऊर्जा थी, मैं ख़ुश था कि मैंने उदास जर्मन लड़की के साथ सेक्स नहीं किया था और मैं रिदम

को उदास जर्मन लड़की के साथ बिताई रात के बारे में भी सारा कुछ बता सकता था। और उसे बताना चाहता था कि Edvard Munch कितना कमाल है, मैं उसकी हर-एक पेंटिंग पर रिदम से बात करना चाहता था। मैं चाहता था कि उसके साथ वापस कोपनहैगन के म्यूज़ियम जाऊँ और इस बार Munch की पेंटिंग के सामने उसके साथ खड़ा होकर उसे बताऊँ कि असल में इस पेंटिंग के पीछे की कहानी क्या है। मैं उसे बताना चाहता था कि Vampire पेंटिंग के सामने मैंने ख़ुद को भीतर तक पहली बार महसूस किया था। उसे ऐरिस, ओल्गा, नेनी, शशि, माला के बारे में भी कितना कुछ बताना था!

प्रोलॉग कैफ़े जाने के पहले मैं उदास जर्मन लड़की से मिलने उसके पब पर गया। सुबह जल्दी निकलने के लिए मैंने उससे माफ़ी माँगी।

"एक बीयर मिल सकती है?"

"हाँ क्यों नहीं, आज तो संडे है।"

अपने भीतर की उथल-पुथल को शांत करने के लिए मुझे एक बीयर की ज़रूरत थी।

"मैं आज अपनी एक पुरानी दोस्त से मिलने जा रहा हूँ बहुत दिनों के बाद।" मैंने बीयर का एक लंबा घूँट लेने के बाद कहा।

"अच्छा, मुझे तो लगता है उसके लिए पहले बीयर की ज़रूरत नहीं है, तुम्हें बीयर तो उसके साथ पीना चाहिए।"

"मामला इतना सीधा नहीं है। मैं बताऊँगा सारा कुछ तुम्हें वापस आकर।"

बीयर ख़त्म करके मैं पैसे देने लगा तो उसने मना कर दिया। कहा मेरी तरफ़ से।

मैं जब प्रोलॉग कैफ़े पहुँचा तो रिदम मुझे बाहर की तरफ़ बैठी हुई दिखी। उसकी पीठ मेरी तरफ़ थी, मैं उसे पहचान गया था, इच्छा तो थी कि मैं उसके गले लग जाऊँ।

"हेलो रिदम, सॉरी मैं लेट हो गया।" मैंने कहा।

वह खड़ी नहीं हुई, बैठी रही।

"नहीं, मैं यहाँ पहले से आ गई थी। बैठो, कैसे हो?"

"मैं अच्छा हूँ।"

अपने चेहरे पर अजीब-सी मुस्कुराहट उसने चिपका रखी थी। मैं समझ नहीं पा रहा था।

"क्या लोगी, बताओ?" मैंने नई शुरुआत की तरह कहा।

एक दूरी थी, पर मैं समझता था, ये दूरी क्यों थी। मैं अपनी तरफ़ से उसे पूरा वक़्त देना चाहता था। तभी दो कॉफ़ी लेकर एक आदमी आया और वह हमारे साथ बैठ गया। रिदम ने उस आदमी को थैंक्यू कहा कॉफ़ी लाने के लिए।

"ये शब्बीर है, और ये... ?" रिदम मेरे नाम पर रुक गई थी।

"जी मैं ऋषभ हूँ।" मैंने कहा।

हम दोनों ने हाथ मिलाया।

"हाँ, इन्होंने आपके बारे में बताया था। कैसी रही आपकी जर्मनी और नॉर्वे की यात्रा?"

"ठीक ही थी। अकेला घूम रहा था, तो आप समझ ही सकते हैं कि कैसी हो सकती है।" मैंने कहा।

"हाँ, अकेले तो मैं सोच भी नहीं सकता। मैं तो कभी-कभी रिदम के साथ भी बोर होने लगता हूँ ट्रेवल पर। भई मुझे कोपनहैगन बहुत पसंद है, यहाँ मुझे मज़ा आता है, दोस्त हैं, यारी है, रिदम है।"

ये कहकर उसने रिदम को कंधे से पकड़कर अपनी तरफ़ खींचा और उसके माथे को चूम लिया।

"बताओ क्या-क्या देखा?" रिदम ने पूछा, जब वह शब्बीर से थोड़ा अलग हुई।

"मैं ज़्यादातर यूँ ही घूमता रहा था, कभी इस शहर, फिर उस शहर, ज़्यादा कुछ नहीं।"

"अरे तुम Munch म्यूज़ियम गए थे? कैसा रहा वो तो बताओ?"

रिदम ने पूछा।

"Munch!" मैंने कहा और अपनी आँखें घुमाई, कंधे उचका दिए।

"यार क्या अजीब पेंटिंग करता है वो!" शब्बीर बीच में बोल पड़ा, "मतलब चेहरे ही नहीं दिखते, अरे चेहरे तो ढंग से बनाओ। मैं पाँचवीं क्लास में था तब ऐसी पेंटिंग करता था, हा हा हा।"

शब्बीर अपने ही जोक पर हँस रहा था, और मैं शब्बीर की हाँ-में-हाँ मिला रहा था।

"तुमने क्या किया?" मैंने सारी हँसी को काटते हुए रिदम से पूछा।

"हम तो," शब्बीर ने जवाब में कहा, "Tip of Denmark गए, फिर पूरा नॉर्थ घूमते हुए दो दिन पहले ही आए हैं।"

"अरे वाह! कैसा रहा?" मैंने पूरे जोश में पूछा था।

शब्बीर ने सारा रूट बताया, और बताया कि कैसे उसने रिदम के लिए सारा कुछ सरप्राइज़ प्लान किया था। शब्बीर कितना मेरे जैसा सुनाई दे रहा था, मतलब जैसा मैं दिल्ली में हुआ करता था। मुझे लगा कि मैं मेरे अतीत से मिल रहा हूँ। बीच बातचीत में वह रिदम का हाथ चूम लेता, उसकी आँखों में आँखें डालकर पूछता– है न बेबी?

मैं भीतर से अपने लिए एक कॉफ़ी ले आया था, और जैसे-तैसे उन दोनों के सामने कॉफ़ी ख़त्म की।

"तो अब क्या प्लान है? More adventures?" रिदम ने पूछा।

"बिलकुल भी नहीं। तौबा इन सारी रिस्क लेने वाली बातों से! मैं अब वापस जाना चाहता हूँ।" मैंने कहा।

"कब जा रहे हो?" उसने पूछा।

"इच्छा तो है कि आज रात ही निकल जाऊँ, पर देखता हूँ कब की फ़्लाइट मिलती है।" ये मैंने हँसते हुए शब्बीर से कहा। वह मेरी बात पर हँस दिया।

"हाँ दोस्त, मतलब, इतने दिन अकेले, तुम्हारे दिमाग़ का तो दही हो चुका होगा।"

उसके कहते ही मुझे लगा कि वह शायद एकदम सही कह रहा है। मेरा जीवन, चाहे जैसा भी था, दिल्ली में ही था, मैं वैसा ही आदमी था, मैं दिल्ली का शब्बीर था। मैं न तो सलीम था और न ही रिदम, मैं बस ऋषभ था।

"चलो डिनर पर चलते हैं। पास में ही एक थाई रेस्टोरेंट हैं, रिदम और मेरा फ़ेवरेट है, वहीं चलते हैं।" शब्बीर ने कहा।

"नहीं दोस्त, मुझे पैकिंग करनी है, टिकट बुक करनी है, बहुत काम है। मैं बस अब यहाँ से निकलना चाहता हूँ, जितनी जल्दी हो सके।"

"ओ, मैं समझता हूँ दोस्त।" शब्बीर ने कहा।

हम तीनों ने गले लगकर एक-दूसरे को विदा कहा। रिदम के गले लगने में मैं अपनी दूरी बनाए हुए था। वह कोई और लड़की थी जिसे मैं जानता नहीं था। मुझे लगा उसका नाम भी अलग होगा, वह अब ख़ुद को रिदम नहीं कह सकती थी, क्योंकि उससे कहीं ज़्यादा रिदम अब मैं था। पर शब्बीर के सामने लगने लगा था कि ऐसे आईने के सामने बैठा हूँ जिसमें मुझे मेरा अतीत दिख रहा है। मेरा सलीम होना, मेरा रिदम होना, मेरा सारा बदलाव चरमराकर ढह गया था। लेकिन मैं पहली बार अपने अभिनय से ख़ुश था, शायद मैं अपने भीतर के इस अभिनेता को जानता था। मैं ऋषभ हो चुका था, इसलिए मैं बहुत सहज था अपने झूठ में, मैं सालों-साल ऐसा ही जीता आया था।

जब मैं वापस अपने कमरे की तरफ़ आ रहा था तो बारिश दुबारा शुरू हो गई थी। मैं बारिश से बचना नहीं चाहता था, मैं किसी भी चीज़ से बचना नहीं चाहता था, मैं चाहता था कि मैं भीग जाऊँ, भीगकर तर-ब-तर हो जाऊँ। पर ये दिल्ली की बारिश नहीं थी, ये ठंडी बारिश थी जो हवा के थपेड़ों की वजह से, कुछ ही देर में पूरे जिस्म में चुभने लगी थी। मैं काँपने लगा था। मैं भागता हुआ अपनी बिल्डिंग के पास पहुँचा, पर अंदर नहीं गया। मैं बिल्डिंग की आड़ में खड़ा रहा। मुझे इस वक़्त कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या चाहता था? अपने कमरे में जाऊँ या बाहर ही भटकता रहूँ? मैं जवाब के इंतज़ार में वहीं खड़ा रहा। मुझे सहारा चाहिए था, अपनापन, कोई जो मेरी बात पूरी सुन ले। या कोई हो जो कम-से-कम यही बता दे कि क्या करूँ? मैं वापस कुत्ता हो जाना चाहता था। मैं चाहता था कि कोई गेंद फेंके और मैं देर तक अपने मालिक को ख़ुश करने के लिए उस गेंद के पीछे भागता रहूँ।

मैं बुरी तरह भीग चुका था और सोच रहा था कि यहीं खड़ा रहूँ या भीतर चला जाऊँ? मैं, बग़ल वाले पब में, उदास जर्मन लड़की के पास गया। वह पब के काउंटर के पीछे बहुत व्यस्त दिखाई दे रही थी। जैसे ही हमारी आँखें मिलीं मुझे उसकी आँखों में एक चमक दिखी, अजीब था, पहली बार वह मुझे उदास नहीं लग रही थी। उसने इशारे से पूछा कि इतनी जल्दी आ गए? सब ठीक है?

मैंने इशारे से कहा कि सब सही है।

पर वह मुझे देखती रही, मैंने अपनी आँखें हटा लीं। मैंने काउंटर पर जाकर उससे एक व्हिस्की का डबल शॉट माँगा।

"Are you sure you are okay?" व्हिस्की का गिलास मेरे सामने रखते हुए उसने पूछा।

"Yup, I am okay." ये कहते ही मैंने एक बार में पूरी व्हिस्की पी ली।

"तुम भीग चुके हो, तुम्हे ठंड नहीं लग रही?"

"नहीं, मुझे ठीक लग रहा है।"

"सुनो, मेरी शिफ़्ट एक घंटे में ख़त्म होगी, रुकना, lets talk." ये कहकर वह वापस अपने काम में व्यस्त हो गई।

मैंने ख़ाली गिलास के नीचे पैसे रखे और वहाँ से निकल गया। बाहर कुछ क़दम ही रखे होंगे कि मेरा जबड़ा काँपने लगा। मैं ठंड बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, पर मैं ऐसे अपने कमरे में वापस नहीं जा सकता था। व्हिस्की का एक शॉट मारते ही मुझे लगा कि मुझे शराब की शरण में जाना चाहिए। मुझे शराब चाहिए थी। मैं चाहता था कि इतना पी लूँ कि मैं सोने के बजाय बिस्तर पर बेहोश हो जाऊँ। मैं भागते हुए इंटरनेशनल स्टोर के अंदर घुस गया। मुझे पता था कि यहाँ शराब आसानी से मिल सकती थी। मैंने व्हिस्की की छह छोटी बोतलें उठाईं और सीधा काउंटर पर फैला दीं। मैं पेमेंट कर ही रहा था कि पीछे के कमरे से इरफ़ान भट्ट निकलकर आए।

"अरे मियाँ, आप तो पूरे भीग गए हैं... अंदर आइए, हीटर में बैठिए।"

मैं इस वक़्त उनका कुछ भी नहीं सुनना चाहता था। मैं चाहता था कि मैं अपनी व्हिस्की को लेकर सीधा अपने कमरे में चला जाऊँ। लेकिन मेरे लाख मना करने पर भी वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे अंदर वाले कमरे में ले गए। मुझे उन्होंने एक कुर्सी पर बिठाया जिसके सामने हीटर रखा हुआ था और तौलिये से मेरे बाल सुखाने लगे।

"मैं कर लूँगा इरफ़ान भाई... मैं कर लूँगा।"

मैंने उन्हें कहा, पर उन्होंने मेरी एक न सुनी। फिर वह मेरे लिए एक

जंपर ले आए और मेरी टी-शर्ट उतारकर उन्होंने मुझे वो पहनाया। मेरे शरीर में थोड़ी गर्मी आ गई थी। मैंने व्हिस्की की एक छोटी बोतल खोली और उसे एक साँस में गटक गया। फिर मैंने कमरे में निगाह दौड़ाई। चारों तरफ़ मशीनें लगी थीं खेलने की, और कुछ बूढ़े लोग अपनी क़िस्मत आजजमा रहे थे। एक तरीक़े का ग़रीब जुआघर था। मैंने व्हिस्की की एक और छोटी बोतल खोली और उसे अपने मुँह से लगा लिया।

"क्या जनाब, आप तो एकदम आज मूड में हैं!" उन्होंने कहा।

मैं हँस दिया। एक बेहूदी फूहड़ हँसी जिसमें शर्म नहीं होती है।

"रुको, आपको मैं एक ग़ज़ब नशा कराता हूँ।"

उन्होंने खेलने वाली एक मशीन, जो बंद पड़ी थी, उसमें चाभी डालकर उसे खोला। भीतर whipped cream canisters रखे हुए थे, जैसे कॉक्रोच को मारने के लिए हिट की लंबी बोतल होती हैं बिलकुल वैसी, पर सफ़ेद। इरफ़ान ने बताया कि इनमें Nitrous Oxide होता है जिसे laughing gas भी कहते हैं। उन्होंने मुझे एक बोतल पकड़ाई और कहा, मुँह से लगाओ और खींच जाओ। मैंने उस बोतल के सिरे को अपने मुँह में लगाया और गैस भीतर खींच गया।

"एक बार और..." उन्होंने कहा।

मैंने एक बार और खींचा। मुझे लगा मेरे दिमाग़ को किसी ने सुन्न कर दिया है। मेरी आँखें बड़ी हो गईं। मुझे सारा कुछ साफ़-साफ़ दिखने लगा, और चेहरे पर मुस्कुराहट फैल गई। इरफ़ान ने बोतल को मेरे हाथों से लिया और उसे वापस उस मशीन में रख दिया।

"आओ बाहर सैर करके आते हैं, तुम्हें असली कोपनहैगन दिखाता हूँ।" इरफ़ान ने कहा।

मैंने दुकान से बाहर क़दम रखते ही व्हिस्की की एक और छोटी बोतल मुँह से लगाई और उसे अपने शरीर में उड़ेल दिया। फिर एक सिगरेट जलाई। मुझे बिलकुल भी ठंड नहीं लग रही थी। बारिश बंद हो चुकी थी, पर सड़कें अभी भी गीली थीं। लैंपपोस्ट, सिग्नल और दुकानों की रोशनी

सड़क के गीलेपन में चमक रही थी। मुझे सारा कुछ धुँधला दिखाई दे रहा था। अचानक मेरे मुँह से निकला Edward Munch... मुझे लगा मैं उनकी पेंटिंग में क़दम रख रहा हूँ। अगल-बग़ल के सारे चेहरे अपने नाक-नक़्श खो चुके थे। सभी लोग एक भाव ओढ़े हुए दिखाई दे रहे थे। मैंने इरफ़ान को देखा तो उनका चेहरा भी मुझे चमकता हुआ दिखा।

"Happiness!" मैंने उनको देखते हुए कहा। तभी मुझे सड़क के बीचो-बीच Munch की पेंटिंग का चाँद नज़र आया जिसकी चमक समुद्र के बजाय यहाँ कोपनहैगन की सड़क पर तैर रही थी। मैं उछल पड़ा, मैं Munch की पेंटिंग के अंदर था। मुझे लगा हर आदमी मेरे अगल-बग़ल से नाचता हुआ गुज़र रहा है। मैं सबको दुआ-सलाम करने लगा।

"चलो जनाब, जन्नत का रास्ता इस तरफ़ है।" इरफ़ान ने चलते-चलते कहा।

हम पता नहीं कोपनहैगन की किन सड़कों पर निकल आए थे! मुझे लगा हर तरफ़ एक तरीक़े का मेला लगा हुआ है और मेले में हर व्यक्ति जोकर है। और हर जोकर किसी जश्न में ख़ुद को उलझाए हुए है। मैं हर कुछ देर में व्हिस्की की छोटी बोतल खोलता और उसे अपने मुँह से लगा लेता। जैसे ही मैंने आख़िरी बोतल ख़त्म की हम एक बिल्डिंग के पास आकर रुक गए। चमकती रोशनी के बीच मुझे एक विशालकाय आदमी खड़ा दिखा। इरफ़ान उस आदमी से बात करने लगा। फिर उस आदमी ने हम दोनों को भीतर जाने को कहा। मैं जैसे ही भीतर पहुँचा तो हर तरफ़ अँधेरा था। अँधेरी गुफाओं में बैठे लोग दारू पी रहे थे। हर तरफ़ लाल और हरी रोशनी नज़र आ रही थी। कुछ बूढ़े लोग मुझे बार टेबल पर दिखे, मुझे लगा वे सारे बूढ़े लोग Munch की पेंटिंग के मज़दूर हैं, जिनके चेहरे नहीं हैं। वे थके हुए अपनी-अपनी शराब के गिलास को पकड़े दिन भर की अपनी गहरी थकान की बात कर रहे हैं और बीच-बीच में सामने नृत्य कर रही लड़की को किसी आशा से देख लेते हैं। हम दोनों सामने लगे एक सोफ़े पर बैठ गए। स्टेज पर नाच रही लड़की ने इरफ़ान को देखकर

अभिवादन किया, फिर वह अपने कपड़े उतारने लगी। मुझे लगा कि वह कपड़े नहीं उतार रही है, वह अपनी चमड़ी पर चिपके अलग-अलग रंगों को निकालकर फेंक रही है। कभी लाल रंग निकलकर ज़मीन पर फैल जाता तो कभी पीला। अंत में सफ़ेद रंग उसके शरीर से मुझे बहता हुआ दिखा। वह एक खंबे से टिककर नीचे बैठ गई और बहुत देर तक नहीं उठी। उसके ऊपर पड़ रही पीली, लाल और हरी रोशनी के कारण मुझे लगा कि ये तो Munch की Weeping Nude पेंटिंग की लड़की है जो उस चित्र से बाहर आ गई है। मैं सोफ़े से उठा और उसकी तरफ़ बढ़ने लगा, पर इरफ़ान ने मुझे रोक लिया।

"अरे मियाँ, आप क्यों जा रहे हैं, मैं उसे बुलाता हूँ।"

इरफ़ान ने इशारा किया और वह Weeping Nude अपने बालों को बिखेरती हुई मेरे पास आकर बैठ गई। मैंने उसके चेहरे को छूना चाहा तो उसने कहा, "No touching."

फिर उसने इरफ़ान की तरफ़ देखा। मुझे नहीं पता कि इरफ़ान ने उसे क्या इशारा किया, उसने मेरे दोनों हाथों को पकड़ा और उन्हें अपने गालों पर लगा दिया। मुझे लगा कि मैं पीले रंग में अपनी उँगलियाँ डाल रहा हूँ।

"आपका रंग सूख चुका है।" मैंने कहा।

"What ?" उसने पूछा।

मैं उसकी आँखों में देखता रहा। उसकी आँखों के भीतर जो रंग थे वो अभी भी गीले थे। लगा Munch ने अभी-अभी उन्हें पेंट किया है।

"मुझे माफ़ कर दो।" मैंने कहा।

"What are you saying ?"

"क्या मैं तुम्हारी आँखें छू सकता हूँ ?"

मैंने देखा, वह पानी में डूबती जा रही है। तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरी आँखों से पानी टपक रहा है। मुझे सारा धुँधला अब तैरता हुआ नज़र आ रहा था। मैं अपनी उँगली को उसकी आँखों की तरफ़ ले गया। मैं अपनी उँगलियाँ Munch के गीले रंगों में डुबाना चाहता था। तभी उस लड़की ने

डरते हुए इरफ़ान को देखा। इरफ़ान ने मेरे कंधे पर हाथ रखकर मुझे पीछे खींच लिया। वह लड़की उठकर वापस स्टेज पर चली गई। मैं इरफ़ान के गले लग गया।

बाहर सड़क पर मैं इरफ़ान के कंधे पर झूल रहा था। मेरा नशा उतरता जा रहा था और मेरी आँखों के सामने से सारी चमक ग़ायब होती जा रही थी। दुनिया उसी उबाऊ स्थिति में वापस चली आ रही थी। जो भी अगल-बग़ल से गुज़र रहा था, वह अब नाच नहीं रहा था, सड़कों पर से Munch की चाँदनी और रंग सब ग़ायब होते चले जा रहे थे। मैं बार-बार चिल्ला रहा था, "Munch please don't go, please don't go Munch."

जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा मैं इरफ़ान के काउंटर के नीचे सो रहा था और कुर्सी पर इरफ़ान ग्राहकों से बतिया रहे थे। मैं कुछ देर वैसे ही पड़ा रहा। लग रहा था कि मैं कई दिनों से सो रहा था। मेरा सिर हल्का था और होंठ सूखे हुए थे। मैंने इरफ़ान को दो बार आवाज़ लगाने की कोशिश की, पर मुझे लगा मेरे होंठ आपस में चिपक गए हैं। मैं जैसे-तैसे उठा और इरफ़ान के बग़ल में रखी पानी की बोतल उठा ली। पूरी बोतल ख़त्म करने के बाद मुझे थोड़ा ठीक लगा।

"जनाब, आप तो हवा में उड़ रहे थे पूरी रात, आपको इतने कबाब खिलाने पड़े तब कहीं जाकर आप क़ाबू में आए।"

इरफ़ान बोलते हुए हँस रहे थे। मैंने उनका जैकेट उन्हें वापस किया और उन्हें धन्यवाद दिया, पराठों के लिए, नशे के लिए, मैंने कई और धन्यवाद अपने मन से कह दिए। उनकी दुकान से निकलते हुए मुझे डर लग रहा था लड़खड़ाने का, कहीं मैं उनकी दुकान में रखे सामान से टकरा न जाऊँ। बहुत सँभलकर मैंने उनको विदा कहा।

अपने फ़्लैट में पहुँचकर मैं देर तक शॉवर के नीचे खड़ा रहा। गर्म पानी का अपने शरीर पर पड़ना और उसका शरीर से बहते जाना, इसे देखना बहुत सुखद एहसास दे रहा था। फिर मैं देर तक बिना कपड़ों के ख़ुद को आईने के सामने देखता रहा। मेरा पूरा शरीर थक चुका था इस

यात्रा से, मेरे सलीम और रिदम होने से, मेरे छुपने से, मेरे दिखावे से। मैंने सोचा अभी जाकर वापसी का टिकट बुक करता हूँ। अब यहाँ एक दिन भी काटना कठिन लगने लगा था। तभी बाथरूम का दरवाज़ा उदास जर्मन लड़की ने खटखटाया।

"तुम ठीक हो ? हे, इंडियन लड़के !"

"हाँ, मैं ठीक हूँ, बस आता हूँ।"

"मैं अपने लिए कॉफ़ी बना रही हूँ, तुम्हें चाहिए ?" उसने पूछा।

"हाँ, प्लीज़ !"

हम दोनों अपनी-अपनी कॉफ़ी लिए किचन की खिड़की पर बैठे थे। बाहर फिर बारिश शुरू हो चुकी थी।

"मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी, कहाँ चले गए थे तुम ?" उसने पूछा।

मुझे नहीं पता था कि मैं इसका उत्तर कहाँ से शुरू करूँ। मैं कहाँ चला गया था से, या, मैं कहाँ चला आया था से। मैंने उसे बिना किसी बनावट या नाटकीयता के सबसे पहले सारथी के बारे में बताना शुरू किया, फिर आहिस्ता से कोपनहैगन और रिदम पर आया, पारुल के साथ सोने में उसकी भागीदारी का भी मैंने वैसे-का-वैसा ही ज़िक्र कर दिया। मैं जब तक आज रात कहाँ चला गया था पर आया तब तक उसकी आँखों में मुस्कुराहट आ चुकी थी। मैंने देखा कि वह कभी भी उदास जर्मन लड़की नहीं थी। मैंने ध्यान से उसकी आँखें देखी, वहाँ उदासी का एक कण भी नज़र नहीं आया। वह महज़ एक जर्मन लड़की थी और सारी उदासी मेरे भीतर थी। मुझे ही हमेशा से लगता था कि अकेले रहने वाले लोग बेहद उदास रहते हैं। मैंने उसको इस फ़्लैट में शुरू से अकेला देखा था और मान लिया था कि ये ज़रूर उदास होगी। मैंने जिस ज़मीन से खड़े होकर आज तक उसे देखा था, वो ज़मीन उदासी से भरी पड़ी थी। वह कभी उदास नहीं थी, सारी उदासी मैं अपने भीतर लिए घूम रहा था।

वह चुपचाप मेरी सारी दास्तान सुनती रही। उसके सुनने में इतना अपनापन था कि पहली बार मुझे एहसास हुआ कि दूसरे को सुनना भी एक

कला है, जो बहुत कम लोगों को आती है।

"तुमने जिस तरह मुझे अभी सुना है, उसके लिए बहुत धन्यवाद, मुझमें इतना धैर्य नहीं है।" मैंने कहा।

"तुमने उस रात मुझे सुना था। तुम ख़ुद को लेकर कुछ ज़्यादा ही क्रिटिकल हो। कहीं तुम जर्मन तो नहीं हो?" ये कहते ही वह हँसने लगी। मैं चुप रहा। वह खिड़की के बाहर देखने लगी।

"देखो, आज की रात कितनी सुंदर है!" उसने कहा।

"नाटकीय!" मैंने कहा।

हम दोनों एक ही जगह देर से बैठे हुए बारिश का गिरना देखते रहे।

"तुम्हारे लिए ये नाटकीय है और मेरे लिए ये रात शांत।"

"तुम सुलझी हुई हो, मुझे सुलझने में अभी बहुत वक़्त है।"

"अगर कोई इंसान तुम्हें आकर ये कहे कि वो सुलझा हुआ है तो वो सबसे बड़ा झूठ कह रहा है। हम कैसे सुलझे हुए रह सकते हैं! इस समाज का विन्यास आपस में इतनी बुरी तरह गुँथा हुआ है कि हम सब एक-दूसरे से हर वक़्त जुड़े हुए हैं। एक व्यक्ति का किया अच्छा-बुरा काम जाने कितने लोगों पर, कितनी पीढ़ियों पर असर डालता है। जैसे सारथी का तुम्हें छोड़ना तुम्हें यहाँ ले आया, और अगर तुमने सारथी को छोड़ा होता तो शायद तुम यहाँ नहीं आते। अगर आ भी जाते तो ये यात्रा एकदम अलग होती, रिदम भी शायद तुम्हें मिलती, पर उससे तुम्हारा संबंध एकदम अलग होता।"

वह कहते-कहते चुप हो गई। मुझे लगा उसके भीतर एक थमा हुआ समुद्र है जिसका सिर्फ़ एक अंश ही मैं देख पाया हूँ। उसकी चुप्पी कितनी विशाल नज़र आ रहा थी! फिर मैं सारथी को छोड़ने के बारे में सोचने लगा, ये सोचते ही मेरे पूरे शरीर में एक सिहरन दौड़ गई।

"तुम क्यों अकेली हो?" मैंने पूछा।

"पता नहीं," वह मुस्कुरा दी, "मुझे लगा था कि तुम ये पूछोगे। मुझे लगता है कि हम बहुत ज़्यादा हैं, मतलब हम इंसान इस दुनिया में बहुत

ज़्यादा हैं। ऐसा मेरा मानना है कि इस दुनिया के लिए आपका सबसे बड़ा योगदान यही है कि आपके द्वारा इस दुनिया में कोई और मनुष्य प्रवेश न करे। हमने सबकी रहने की जगह छीन ली है। जानवर, पक्षी, पेड़, जंगल। कैसे कोई भी सोचने-समझने वाला व्यक्ति इस दुनिया में एक और इंसान ला सकता है जबकि उसे पता है कि हम इंसानों ने ही क्या हश्र कर दिया है इस दुनिया का! मुझे ये क्रिमिनल लगता है।"

"क्रिमिनल तो बड़ा शब्द है।" मेरे मुँह से निकल गया।

"हाँ, पर अब हम उस स्थिति में पहुँच गए हैं कि इस शब्द के अलावा और कोई शब्द नहीं है। मैं इसे क्रिमिनल ऐक्ट मानती हूँ और शायद यही कारण है कि मैं अकेली हूँ। मतलब ये और इस तरह के मेरे सारे विचार। तुम जिस तरह मुझे इस वक़्त देख रहे हो लग रहा है कि मैं ज़्यादा उलझी हुई हूँ।"

मुझे इस बात पर हँसी आ गई, पर उस हँसी के पीछे गहरी उत्सुकता थी सारा कुछ जानने की। मैं उसे सुनते रहना चाहता था। पर उसके विचारों को पता करने के प्रश्न नहीं थे मेरे पास। मैं उससे ये नहीं कह सकता था कि बोलती रहो मुझे अच्छा लग रहा है।

"नहीं, तुम उलझी हुई नहीं हो। अब लगता है कि शायद सारथी भी ऐसा ही कुछ चाहती थी। जब मुझे लगने लगा था कि वो शायद मुझे छोड़ सकती है तो मैंने कोशिश की थी कि वो प्रेग्नेंट हो जाए। पर उसे शायद इस बात की भनक लग गई थी।"

"तुम्हें एक बात कहूँ, अगर तुम्हें बुरा न लगे तो?"

"कहो।"

"मुझे सारथी पसंद है। तुम्हारे जीवन में आए लोगों में से अगर मैं किसी एक से मिलना चाहती हूँ तो वो सारथी ही है।"

मैं बाहर सड़क की तरफ़ देखने लगा। बारिश बंद हो गई थी, बाहर की नाटकीयता कम होती जा रही थी। मैं शांत हो चुका था। मैं अपनी सारी उदासी लिए उस जर्मन लड़की के पास खिसक आया। उसने कॉफ़ी का

कप अलग रखा और मैंने उसकी गोद में ख़ुद को समर्पित कर दिया। उसने मुझे ऐसे पकड़ा मानो वह मुझे अपने भीतर प्रवेश करने की इजाज़त दे रही हो। मेरा पूरा शरीर ढीला पड़ चुका था। मैं फिर Munch के बारे में सोचने लगा था।

मैं उसके कमरे में था। उसके नर्म बिस्तर पर वह मेरे बहुत क़रीब थी और मैं उसे चूम रहा था। उसके होंठों को छूने पर मुझे लगा कि मैं पहली बार किसी को चूम रहा हूँ। इसके पहले मैंने किसी भी लड़की को चूमा नहीं था। हम देर तक एक-दूसरे की कॉफ़ी में सनी गर्म साँसों को सूँघते रहे।

"मुझे प्रेग्नेंट करने की कोशिश मत करना।" उसने मुस्कुराते हुए कहा।

मुझे हँसी आ गई। हम एक-दूसरे के शरीर से खेलने लगे। उसी खेल में कब मैं उसके भीतर प्रवेश कर गया मुझे पता नहीं चला। हमारा शरीर एक ही रिदम में हरकत कर रहा था, हम दोनों का संगीत एक था।

"शायद मैंने पहली बार सेक्स किया है।" मैंने उसके बग़ल में लेटे हुए उससे कहा।

"सेक्स मत कहो, प्रेम किया है बोलो।"

"हाँ, प्रेम किया है।"

वह मेरी छाती के बालों से खेलने लगी और मैं उसके कमरे की छत ताक रहा था।

"तो क्या प्लान है तुम्हारा?" उसने पूछा।

"मैं वापस जाना चाहता हूँ। जितनी जल्दी हो सके।"

"वापस? दिल्ली?" उसने मेरी छाती के बालों से खेलना बंद कर दिया।

"हाँ, बस अभी टिकट बुक कर दूँगा।"

"मैं एक बात कहूँ?"

"बिलकुल।"

"ऐसे मत जाओ, वरना यात्राओं को लेकर हमेशा एक ज़ख़्म रहेगा। यात्राएँ बहुत सुंदर होती हैं।"

"सारथी भी यही कहती थी कि यात्राएँ बहुत सुंदर होती हैं। पर ये किताबें पढ़ना, दूसरों के प्रति स्नेह रखना, रिस्क लेना, ये सबसे अब थकान हो गई है।"

"तुमने कभी मौसम को बदलते हुए देखा है? कितना ख़ूबसूरत होता है ये बदलाव। यहाँ इस वक़्त मौसम बदल रहा है, पतझड़ शुरू हो चुका है, सारा पुराना झड़कर गिर रहा है। इस कायाकल्प के जो रंग हैं वो अजूबे हैं, इसे जिए बिना तुम कैसे जा सकते हो!"

वह लेटे हुए मुझे देख रही थी और मैं अभी भी उसके कमरे की छत में कुछ तलाश रहा था।

"मुझसे यहाँ कोपनहैगन में अब रहते नहीं बनेगा।"

"तो कहीं और जाओ, पर इस तरह वापस नहीं जा सकते तुम।"

मैं चुप हो गया। मैं दिल्ली के बारे में सोचने लगा। मुझे ख़ुद का दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरना दिखा, वहाँ की भीड़, आवाज़ें सुनाई देने लगीं और उन आवाज़ों के बीच मुझे अपने ख़ाली घर में मेरा प्रवेश करना दिखा, दोस्तों से मिलना दिखा और मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

"सच कहूँ तो, न तो मैं यहाँ रहना चाहता हूँ और न ही वापस जाना चाहता हूँ।"

"मेरी मानो तो स्वीडन जाओ, वहाँ पतझड़ बहुत ख़ूबसूरत होता है। अगर तुम कहो तो मैं भी चलती हूँ तुम्हारे साथ।"

"तुम चलोगी? तुम्हारे पास वक़्त है?"

"निकाल लूँगी वक़्त।"

"हम कल निकल सकते हैं?" मैंने बहुत उत्साह में पूछा।

"तुम्हारा मतलब है कि आज?"

"हाँ मतलब सुबह।"

"ठीक है।"

हम दोनों ने अपना-अपना फ़ोन निकाला और कल सुबह की ट्रेन की टिकट बुक कर दी।

"मुझे पैकिंग करना पड़ेगा, और तुम्हें भी तो तैयारी करनी होगी।" मैंने कहा।

"हाँ। मुझे सुबह थोड़ा काम है, मैं तुम्हें सीधी ट्रेन स्टेशन पर मिलूँगी।"

"ठीक है, तुम पैकिंग करके अपनी नींद पूरी करो, मैं तुम्हें कल स्टेशन पर मिलता हूँ।"

मैंने जाते वक़्त उसे बहुत चूमा और धन्यवाद कहा।

अगले दिन सुबह मैं ट्रेन में अकेला बैठा था। मेरे हाथों में एक ख़त था जो जर्मन लड़की मेरे सिरहाने रख के चली गई थी। ट्रेन में बहुत कम लोग थे। कोपनहैगन छोड़ने और Stockholm जाने के बीच जो मेरे भीतर उदासी भर रही थी उसे मैं जर्मन लड़की के लिखे ख़त को बार-बार पढ़ते हुए अपने भीतर से बाहर फेंक रहा था।

'मेरे इंडियन दोस्त,

आज की बिताई हुई रात मुझे याद रहेगी, बहुत अरसे बाद मैंने इतना अपनापन महसूस किया है। इसलिए भी ये ख़त लिखना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल है।

जब तुम पूरा भीगते हुए मेरे पब में आए थे, मैं तुम्हें देखकर डर गई थी। किसी का इतना उदास चेहरा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। तुम जब शुरू में आए थे और किचन में कॉफ़ी और नाश्ता बनाने में चीज़ें ढूँढ़ रहे होते थे, उस वक़्त से लेकर कल रात जो तुम थे उसमें ज़मीन-आसमान का अंतर था। मैं वो अंतर शब्दों में बयान नहीं कर सकती हूँ। पर मैं वो अंतर समझती हूँ। मैं नहीं आ रही हूँ तुम्हारे साथ कल, ये यात्रा तुम्हें अकेले ही करनी होगी। मैं जानती हूँ तुम्हें बुरा लगेगा, पर ये बहुत ज़रूरी है कि तुम अपने बदलाव को ख़ुद समझो, और ये तुम्हें तभी समझ आएगा जब तुम अपनी आँखों के सामने हो रहे बदलाव को अकेले जिओगे। पतझड़ कितना ख़ूबसूरत होगा! स्वीडन में किसी छोटे शहर में जाना और वहाँ बैठकर मौसम का बदलना देखना। कोई इंसान हमें कुछ नहीं सिखा सकता है, हमें

अगर कोई कुछ सिखा सकता है तो वो ये प्रकृति है। अगर मैं वहाँ तुम्हारे साथ रही तो तुम मेरी आँखों से वो सब देखोगे, तुम्हारे देखने में भी एक क़िस्म का अभिनय होगा। हम सब ऐसा करते हैं। अगर अकेले रहोगे तो अपने पूरे अतीत के साथ नंगे रहोगे और उस नग्नता में हर चीज़ का अपने ऊपर असर देखोगे।

मुझे पता है तुम और यात्रा करोगे और अगर कभी यात्राओं में हम वापस टकरा गए तो साथ भीगेंगे।

तुम्हारी यात्रा अच्छी हो!

स्नेह!

G

मैं क़रीब डेढ़ बजे Stockholm पहुँचा। Stockholm में हल्की भुरभुरी बारिश हो रही थी, हवा में थोड़ी ठंड थी। मैंने अपने हाथों में जर्मन लड़की के ख़त को कसकर पकड़ रखा था। मन अजीब हरकत कर रहा था, कभी चेहरे पर मुस्कुराहट फेंक देता तो कभी पूरा शरीर मुझे भारी लगने लगता। मुझे इस वक़्त अच्छी कॉफ़ी की ज़रूरत थी। स्टेशन से बाहर निकलते ही मैं एक अच्छे कैफ़े की तलाश में निकल पड़ा। बारिश की फुहार मेरे चेहरे पर पड़ रही थी, जो अजीब-सी राहत दे रही थी, लग रहा था कि कोई, हर कुछ देर में मुझे छेड़ लेता है। मैं स्टेशन से दूर एक कैफ़े में जाकर बैठ गया। मुझे एक छोटा शहर खोजना था और फिर उस शहर में जाने का रास्ता। मैंने गूगल पर खोजा तो क़रीब एक घंटे की दूरी पर एक क़स्बा-सा दिखा Gustavsbergs, मैंने Airbnb पर एक कमरा बुक किया और गूगल मैप में देखा तो Stockholm से एक बस जाती थी उस क़स्बे तक। मेरे पास वक़्त था, मैंने कॉफ़ी के साथ एक सिगरेट जलाई और वापस उस जर्मन लड़की के ख़त को पढ़ने लगा।

Gustavsbergs, सुंदर से तालाब के किनारे बसा एक छोटा-सा शहर था। बस से उतरकर जब मैं अपने सूटकेस को घसीटते हुए इस शहर के भीतर प्रवेश कर रहा था तो रास्ते में मुझे एक हिरण दिखा। वो मुझे देखकर चौंका नहीं, वो बस कुछ क़दम आगे बढ़ गया। मैं कुछ देर उस हिरण को निहारता रहा, फिर लगा कि शायद ये मुझे ही दिख रहा है। मैंने अगल-बग़ल देखा कि किसी को देख लूँ उस हिरण को देखते हुए, पर

उस चुप शहर में बहुत देर तक कोई गुज़रा ही नहीं। उस हिरण ने फिर मुझे पलटकर देखा, क्या वो भी यही सोच रहा होगा कि मैं यहाँ हूँ भी कि नहीं? कुछ देर में वो पेड़ों के भीतर ओझल हो गया और मैं आगे बढ़ गया। मेरे हाथों में मेरा फ़ोन था और मुझे उस क़स्बे में दस नंबर घर खोजना था। ये घर ऐडम और जेनी का था। भीतर एक अजीब ख़याल आया कि काश मेरे बहुत प्रयत्न करने पर भी मुझे दस नंबर घर न मिले तो मैं तुरंत अपने वापस दिल्ली जाने की टिकट बुक करूँगा और मन में एक बहाना होगा कि मैंने प्रयत्न किया था, पर मुझे घर ही नहीं मिला तो क्या करता। पर फिर लगा कि ये बहाना मैं किसे बताऊँगा? कौन है जो ये पूछ रहा है मुझसे कि क्यों नहीं रुके तुम स्वीडन में? मेरे हाथों में अभी भी मुड़ा हुआ जर्मन लड़की का ख़त था, क्या मैं इस ख़त को दिखाने के लिए ये सब कर रहा हूँ? मैंने उस ख़त को अपने बैग में रख दिया।

मैं अंत में दस नंबर घर के नीले दरवाज़े के सामने खड़ा था। बेल बजाई तो ऐडम और जेनी ने बहुत आत्मीयता से मेरा स्वागत किया। वे मेरे आने का ही इंतज़ार कर रहे थे। जेनी सीधी तनी हुई दुबली-पतली महिला थीं, उन्होंने अपने बाल छोटे कटवाए हुए थे जिसकी वजह से वह ऐडम से उम्र में कम लगती थीं। उनकी हँसी बच्चों की तरह चंचल थी। ऐडम भरे हुए शरीर के व्यक्ति थे, उनका क़द जेनी से कम था और उम्र के साथ उनके बाल जा चुके थे। उनकी आँखों में असीम उत्सुकता थी। मुझे उन्होंने ऊपर वाला कमरा दिया था। मैंने जब अपने कमरे में सामान रखा तो लगा ये किसी का कमरा रहा होगा, जो मेरे आने के ठीक पहले तक यहाँ रहता था। उसके कपड़े, कंप्यूटर, किताबें सारी-की-सारी चीज़ें ऐसे बिखरी पड़ी थीं कि लगा इन्हें किसी ने अभी-अभी इस्तेमाल किया है। मैं सामान रखकर वापस नीचे कॉफ़ी पीने आया। उनकी बातों से पता चला कि उनके दो बच्चे थे जो Stockholm में रह रहे थे, क्योंकि अठारह की उम्र के बाद बच्चों को घर छोड़ना पड़ता था। इस घर में जेनी और ऐडम अकेले रहते थे। कॉफ़ी पीते ही लगा कि असल में मैंने बहुत वक़्त से कुछ खाया नहीं था।

मैं टहलने के बहाने से बाहर गया और एक थाई रेस्टोरेंट जो मुझे रास्ते में दिखा था वहाँ से खाना पैक करवाकर ले आया, पर वो उन्होंने मुझे खाने नहीं दिया। उन्होंने मुझे अपने घर का स्वीडिश खाना खिलाया, उबले आलू और माँस। ऐडम ने कहा कि तुम ये बोरिंग खाना खाओ और मैं खाऊँगा थाई खाना जो तुम लाए हो। मैं हँस दिया। ऐडम का ह्यूमर बहुत अच्छा था। खाना खाने के बाद दोनों ने उनकी बची हुई white wine मुझे दी। घर के बीच में चिमनी थी जिसके सामने हम लोग आग जलाकर बैठ गए थे।

मैंने देखा कि घर की दीवारों पर पेंटिंगनुमा तरीक़े से कहीं-कहीं उर्दू में अल्लाह जैसा कुछ लिखा हुआ था। मैंने उनसे पूछा, तो ऐडम और जेनी एक-दूसरे को देखने लगे। मैं थोड़ा असहज हुआ तो मैंने बात बदल दी, मैं उनके घर की तारीफ़ करने लगा। पर जिस सहजता से वे अभी तक बैठे थे वो सहजता हम तीनों का साथ छोड़ चुकी थी। कुछ देर में जेनी ने हम दोनों को गुड नाइट कहा और अपने कमरे में चली गईं। ऐडम को असहज होता मैं देख सकता था, वह बार-बार जेनी के कमरे की तरफ़ देखने लगता। मुझे लगा कि इस वक़्त उसे जेनी के साथ होना चाहिए शायद। सो मैंने कहा कि सफ़र की बहुत थकान है, कल मिलते हैं ऐडम, गुड नाइट!

अगले दिन मैं बस में बैठकर Stockholm चला गया। Stockholm पहुँचते ही बारिश शुरू हो गई। बारिश से बचते हुए मेरा ध्यान बार-बार पेड़ों की तरफ़ चला जाता। मैं पेड़ों के पत्तों पर बदलते रंगों को देख रहा था। मुझे लगातार एक ख़ुशबू आ रही थी, ठंड और नमी में डूबी इस ख़ुशबू को मैं पहचानता था– ये ख़ुशबू दिल्ली में मुझे ठंड के दिनों में आया करती थी, जब धुँध में पूरा शहर डूबा होता था। उस वक़्त मैं और सारथी नुक्कड़ पर चाय पीने जाते थे। वह मुझे हमेशा सपनों-सी सुबह लगती, मैं सारथी को कभी नहीं बता पाया कि मैं किस क़दर ठंड और कोहरे का इंतज़ार करता था!

जब-जब बारिश थमती, मैं अपने चलने की गति तेज़ कर देता मानो मुझे कहीं पहुँचना है और जैसे ही बारिश वापस चालू हो जाती, मैं किसी

दुकान या बिल्डिंग के दरवाज़े की आड़ में छुप जाता। मैं चलते-चलते उस ओर जाना चाह रहा था जहाँ मुझे ज़्यादा पेड़ दिखें, जहाँ पतझड़ के रंगों का खेल साफ़ नज़र आए। तभी मेरी निगाह पड़ी सड़क किनारे लगे हुए Niki de Saint Phalle के इंस्टॉलेशन आर्ट पर, मैं उछल गया। इस अजनबी शहर में मैं किसी एक चीज़ को जानता था। मैं उनके पास गया, उनकी तस्वीर खींची और तुरंत नेनी को भेज दी।

'ये आप ओल्गा को भेज देना, कहना बहुत-बहुत धन्यवाद, सारे अनजाने में कुछ पहचाना दिखा। आशा है आप अच्छी होंगी।' मैंने मैसेज किया।

'तुम अभी तक यहीं भटक रहे हो?' उनका जवाब तुरंत आया।

'मुझे नहीं पता कि मैं पहले भटका हुआ था या अभी भटक रहा हूँ।' मैंने लिखा।

'मुझे जलन हो रही है तुमसे।' उन्होंने लिखा।

'यक़ीन करें, आप नहीं चाहेंगी मेरी जगह होना कभी भी।' मैंने लिखा।

'माफ़ करना, पिछली बार जब तुमने तस्वीरें भेजी थीं, मैं तुम्हें जवाब नहीं दे पाई थी। मेरे भीतर कुछ टूट-सा गया था। Northern Lights मैं हमेशा से देखना चाहती थी।' ये लिखकर उन्होंने रोता हुआ इमोजी का चेहरा भेजा।

मैं ऐसी बातों के जवाब पर उलझ जाता था, पर फिर मैं इस तरह चुप्पी नहीं साध सकता था सो मैंने जवाब लिखा।

'मुझे रास्ते में एक बैकपैकर मिला था जो पोलैंड से था। वह कॉलेज में था और जैसे-तैसे पैसे जमा करके पिछले दो महीने से यात्रा पर था। मैंने उसे लिफ़्ट दी थी। कंधे पर एक छोटा बैग लिए था बस, और जंगलों में टेंट लगाकर रहता था। उसे देखकर मुझे आपकी याद आई। जब वह कार में बैठा था तो मेरे पास ढेरों सवाल थे। पर सारे सवाल उसके पास पहुँचकर मेरे अपने डर सुनाई देते। वह बहुत छोटे जवाब दे रहा था और उसकी आँखों में चमक थी। जब एक वीरान से तालाब के किनारे मैंने उसे

छोड़ा तो उसने मुझे इशारे से बताया कि शायद आज रात मैं उस तालाब के पीछे वाले जंगल में अपना टेंट लगाऊँ। नेनी, आपको यक़ीन नहीं होगा मैं दिन में उस वीराने को देखकर डर गया था। उसके बाद से हर रात मैं जब भी सोता हूँ तो मुझे वह पोलिश लड़का याद आता है, इस वक़्त कहाँ वीराने में सो रहा होगा वो!'

मैसेज भेजने के बाद मैं देर तक चुप बैठा रहा।

'अभी तुम्हारे सामने क्या दिख रहा है, उसकी एक तस्वीर भेजो।' उन्होंने कुछ देर बाद जवाब में लिखा।

मैं चलते-चलते आगे आ गया था। मैं एक बंदरगाह जैसी जगह पर था। मेरे सामने बोट थी, छोटे जहाज़ खड़े थे। स्वीडन टापुओं का देश है, छोटे-छोटे ढेरों टापू हैं यहाँ पर, आप हमेशा पानी से घिरे रहते हैं। बारिश बहुत धीमी पड़ गई थी, पर ठंड बहुत ज़्यादा थी। इस मौसम में एक गर्म कॉफ़ी दरकार थी। मैंने एक कॉफ़ी ऑर्डर की और बाहर की तरफ़ आकर बैठ गया था। फिर एक तस्वीर खींची और नेनी को भेज दी। नेनी का जवाब कुछ देर में आया।

'तस्वीर ज़ूम करके देखी, सामने जो बड़ी बोट है, वो Vaxholm जा रही है, मैंने उस शहर को सर्च करके देखा है, बहुत ही ज़्यादा सुंदर है। तुम्हें पता है अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो उस बोट में चढ़ चुकी होती। जैसे सरकारी बस चलती हैं वैसे ही यहाँ ये बोट चलती हैं जो लोगों को एक टापू से दूसरे टापू छोड़ती हैं।'

मैंने कॉफ़ी ख़त्म की और एक छोटा-सा वीडियो बनाया जिसमें मैं उस बोट में चढ़ रहा हूँ, और वो वीडियो मैंने नेनी को भेज दिया। Vaxholm पहुँचकर मैंने एक छोटा वीडियो भेज दिया नेनी को बोट से उतरने का। मैंने आसमान में देखा तो बादल छट रहे थे और जगह-जगह से नीला आसमान झाँकने लगा था। यहाँ हवा अभी भी तेज़ थी। मैं एक पब की तरफ़ बढ़ने लगा तभी नेनी का मैसेज आया।

'मैंने सर्च किया है, तुम सीधा जाओ और बाएँ हाथ की तरफ़ तुम्हें एक

कच्चा-सा रास्ता दिखेगा, बस उसे पकड़कर चलते रहना।'

मैंने मैसेज पढ़ा और पब जाना रद्द किया। सीधे जाकर जब बाएँ हाथ पर मुझे वो पगडंडी दिखी तो मैंने उसकी एक तस्वीर खींचकर नेनी को भेज दी। उस ओर जाते ही मुझे रंग-बिरंगे सुंदर घर नज़र आने लगे। मुझे हर कुछ देर में सेबों से लदा हुआ पेड़ दिख जाता। घरों के बाहर एक टोकरी में सेब रखे हुए थे जिन्हें आप ले सकते थे, और अगर चाहें तो तोड़कर भी खा सकते थे। मैंने सेब तोड़कर खाए। सेब का स्वाद ऐसा था मानो शक्कर घोल दी हो किसी ने। मैं एक सेब ख़त्म करता तो आगे दूसरा पेड़ दिख जाता, मैं लगातार सेब खा रहा था और नेनी को कभी वीडियो तो कभी तस्वीरें भेज देता। मुझे लगने लगा था कि मैं किसी परिकथा में हूँ, समुद्र किनारे इस छोटे-से शहर में कूट-कूटकर सुंदरता भरी हुई थी। और मुझे न घरों में, न ही आस-पास कोई लोग नज़र आ रहे थे। मैं उस पगडंडी को पकड़े पूरा शहर घूम चुका था। तभी एक छोटी पगडंडी ने मुझे शहर के बाज़ार में धकेल दिया और मुझे लगा कि सपना टूट गया।

नेनी का मैसेज आया– 'इस शहर में चॉकलेट की सबसे मशहूर दुकान है, वहाँ से चॉकलेट ज़रूर खाना।'

मैं जब उस मशहूर दुकान पर पहुँचा तो वो बंद हो रही थी। मुझे देखते ही वह लड़की रुक गई। उसने अपनी मर्ज़ी से मुझे Vaxholm की सबसे प्रसिद्ध छोटी चॉकलेट दे दी। मैंने नेनी को उसका चित्र भेजा। उन्हें खाने के बाद पता चला कि वो कितनी ज़्यादा स्वादिष्ट थी! जब लड़की दुकान बंद करके जा चुकी थी तब मुझे पछतावा हुआ कि मैंने वो चॉकलेट इतनी कम क्यों ली थी!

नेनी का मैसेज आया– 'तुम वापस एक बस से भी जा सकते हो, वहाँ से Stockholm का रूट बहुत अच्छा है, शायद बीच में तुम्हें बस बदलनी पड़े।'

'आप अगर मेरी जगह होतीं तो बेहतर सफ़र करतीं।' मैंने लिखा।

उन्होंने एक तस्वीर भेजी जिसमें बच्चे सामने बैठे खा रहे हैं और वह

किचन में खड़ी हैं। घर एकदम व्यस्त दिख रहा था। बच्चों के चेहरों पर हँसी थी।

'मैं कितना आपके जैसा जीना चाहता हूँ!' मैंने मैसेज भेजा।

मैं बस में बैठ चुका था। मुझे एक नहीं दो बस बदलनी थी। बस बदलने के बीच में मैं आस-पास थोड़ा घूम लेता। मेरी निगाहें ज़्यादातर पेड़ों पर रहतीं। हर पेड़ बहुत धीमी गति से बदल रहा था। अंत में मैंने Stockholm से बस पकड़ी और वापस Gustavsbergs के लिए रवाना हुआ।

'अभी फ़ारिग हुई हूँ सारे काम से, और काम करते-करते लगा कि मैंने Vaxholm भी घूम लिया। आप ठीक हैं?' नेनी का मैसेज आया।

'मैं जब भी ईमानदारी से इसका जवाब देने बैठता हूँ तो कोई भी शब्द दिमाग़ में नहीं आता।' मैंने मैसेज किया।

'क्या हुआ, पूछ सकती हूँ?" उन्होंने मैसेज किया।

मैं बस में बैठे हुए एक टनल पार कर रहा था। बस बाहर निकली तो पूरी बस में उजाला छा गया। मैंने आसमान देखा, वो वापस स्याह हो चुका था। लगभग हर हरा पेड़, पत्ती-दर-पत्ती लाल, कत्थई और पीले रंगों में परिवर्तित हो रहा था। अगर इसे मैं बहुत बारीकी से देखूँ तो भी मैं बदलाव को पकड़ नहीं सकता। वो सारी पत्तियाँ ठीक झड़ने के पहले अपनी सबसे ख़ूबसूरत अवस्था में पहुँच रही थीं। और मैं यहाँ सिर्फ़ ठीक हूँ के सवाल पर मौन हो जाता था।

मैंने जवाब लिखा– 'मैं बीमार था, एक ऐसे तिलिस्म में जिस तिलिस्म को मैंने ही बचपन से ईंट-दर-ईंट खड़ा किया था। मैं वहाँ का राजा था। उस तिलिस्म की भूलभुलैया में मैं ऐसा फँसा हुआ था कि कभी बाहर झाँककर भी नहीं देखा कि असल में ये दुनिया क्या है? सारथी ने मेरे तिलिस्म को ताश के पत्तों-सा गिरा दिया था। उस वक़्त उस पर बहुत ग़ुस्सा आया था, इतना कि मैं यहाँ चला आया था उसे दिखाने कि देखो मैं कितना ग़ुस्सा हूँ! यहाँ अपने तिलिस्म के बग़ैर मैं नंगा था, इस नग्नता को ढाँकने के लिए भी मैंने यहाँ वैसा ही तिलिस्म बनाने की कोशिश की, और लगने लगा कि

मैं कितनी भी दूर चला जाऊँ कभी भी अपने दोगलेपन से बहुत दूर नहीं हो सकता हूँ।'

मैं Gustavsbergs उतरकर तालाब किनारे टहलते हुए अपने कमरे की तरफ़ चल रहा था। शाम हो चुकी थी, रात सारा उजाला खाने को आतुर थी। तभी मुझे वही हिरण दिखा। इस बार उसके पीछे उसका छोटा बच्चा भी था। वो दोनों मुझे देखते ही डर गए। मैं जहाँ था वहीं स्थिर खड़ा हो गया। मैं नहीं चाहता था कि वो मुझे देखकर डरें। पर वो डर के मारे आगे भागने लगे। आगे घर थे, वो उस तरफ़ नहीं जा सकते थे, वो रुक गए। उनके वापस जंगल की तरफ़ जाने के रास्ते में मैं खड़ा था, वो बदहवास से मेरे सामने के मैदान में कभी दाएँ जाते तो कभी बाएँ। मैं ये देख नहीं पाया, मैं पलट गया, और जहाँ से आया था उसी ओर वापस जाने लगा। वो मेरे कारण डरे हुए थे, उनकी फटी हुई आँखें मैं देख नहीं पा रहा था, मैं तेज़ क़दमों से चलने लगा, मैं चाहता था कि उनसे बहुत दूर निकल जाऊँ। मैं ऐडम और जेनी के घर से विपरीत दिशा में जा रहा था। कुछ लोगों के हँसने की आवाज़ आई, मैं समझ गया कि वहाँ कोई पब है। मैं उन आवाज़ों की तरफ़ चल दिया। पब के बाहर कुछ लोग सिगरेट पी रहे थे। मैं उस पब के भीतर गया और एक बीयर ऑर्डर की।

नेनी का मैसेज आया– 'मैं यहाँ जर्मनी में autumn देख रही हूँ। जिस बदलाव की प्रतीक्षा में मैं रहती हूँ वो मेरे सामने हो रहा होता है। मैं इस ख़ूबसूरती से रश्क करती हूँ, पर ये भी जानती हूँ कि इस ख़ूबसूरती के कारण ही मैं इसके बाद आने वाली सर्दियों को बर्दाश्त कर पाती हूँ। तुम इस बदलाव में कहीं ऐसी जगह जाना जहाँ सिर्फ़ जंगल हो और शांति हो। तुम इस बदलाव के बीच में रहकर इसे देखना। तब मुझे लिखना मेरे सवाल का जवाब कि तुम कैसे हो?'

'मैं कोशिश करूँगा।' मैंने लिखा।

पब से निकलकर कमरे की तरफ़ जाते वक़्त मैंने देखा मैदान सूना पड़ा था। तालाब के किनारे कुछ लोग अपने कुत्तों के साथ बैठे हुए थे।

घरों से पीली रोशनी बाहर आ रही थी। जिस घर में मैं झाँकता वहाँ से एक अजीब-सा सूनापन नज़र आता। मैं जानता था ये सूनापन उन घरों का नहीं है, ये मेरे भीतर का है।

घर में ऐडम और जेनी मेरा इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने डाइनिंग टेबल पर स्वीडिश खाना सजाकर रखा था और एक वाइन की बोतल भी साथ में रखी हुई थी।

"सॉरी! मुझे नहीं पता था कि आप इंतज़ार कर रहे होंगे!" मैंने कहा।

"हमने सोचा, साथ ख़ाएँगे, इसका अलग बिल भी दे देंगे।" ऐडम ने कहा।

जेनी ने कहा कि ऐडम मज़ाक़ कर रहा है। मुझे बहुत भूख लग रही थी, थोड़ी औपचारिकता के बाद मैं सीधे खाने पर टूट पड़ा।

खाने के बाद हम लोग अपनी-अपनी वाइन लेकर वापस चिमनी के सामने आकर बैठ गए। तभी जेनी ने एक तस्वीर निकालकर दिखाई। एक बहुत ही दुबला-पतला कोमल-सा दिखने वाला लड़का, उसकी हल्की मूँछों को देखकर लग रहा था कि उसके चेहरे पर ये बाल अभी-अभी आए हैं।

"ये मुर्तज़ा है," जेनी ने कहा, "ये सीरिया से यहाँ चला आया था, जब ये सोलह साल का था।"

"सत्रह।" ऐडम ने टोका।

"हाँ शायद सत्रह, मैं यहाँ के रिफ़्यूजी कैंप में काम करती थी। जब इसने अपनी कहानी बताई तो हम सब सिहर गए। ये कैसे ज़िंदा यहाँ तक पहुँचा था इस बात पर हम सब लोग आश्चर्यचकित थे। स्वीडन सरकार इसे यहाँ रखने से इनकार करती रही। अंत में मैंने और मेरे साथियों ने मिलकर एक मुहीम छेड़ दी।"

"कितनी प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी जेनी ने..." ऐडम बीच में बोले।

"ये इतना ज़्यादा कमज़ोर था कि मैं इसे अपने घर ले आई। जिस कमरे में तुम रह रहे हो, वो उसी का कमरा था। हमने इसे पाँच साल अपने

पास रखा। इसे अंत में अस्थायी निवासी परमिट मिल गया था। पर इसे अभी तीन साल और यहाँ रहकर काम करना था स्थायी परमिट के लिए।"

वह चुप हो गईं। उन्होंने ऐडम को देखा।

"ठीक है, जो भी हुआ।" ऐडम ने कहा।

जेनी ने वाइन की बोतल उठाई और सबके गिलास में वाइन डाली। हमने चीयर्स किया।

"ये जो तुम पेंटिंग देख रहे हो ये मैंने ख़रीदी थी कि उसे ये उसका अपना ही घर लगे। वो कितना ख़ुश था यहाँ! मुझे लगा था हमें तीसरा बेटा मिल गया है।" जेनी ने कहा।

"तभी पता लगा कि सीरिया से उसका परिवार जर्मनी पहुँच गया है," ऐडम ने कहा, "हमने उसके परिवार से संपर्क किया। वो रोज़ अपनी माँ से बातें करने लगा। फिर हमने देखा कि वो पाँच वक़्त की नमाज़ भी पढ़ने लगा है। हम ख़ुश थे कि उसका परिवार भी अब सीरिया से जर्मनी पहुँच गया है। पर फिर एक दिन उसने कहा कि उसे अपने परिवार के पास जाना पड़ेगा, वे लोग बुला रहे हैं। मुझे लगा वो मिलने जाना चाहता है, पर उसने कहा कि वो अब उन्हीं के साथ रहेगा।"

ऐडम ने वाइन का एक लंबा घूँट मारा। मैंने देखा जेनी की आँखें गीली हो गईं।

"कितना कुछ हमने किया था, कितनी लड़ाइयाँ लड़ी थीं!" जेनी ने कहा, "मैं चाहती थी कि वो स्थायी निवासी हो जाए, फिर उसे जो करना है वो करे। अब वो जा चुका है, हमारी सारी मेहनत पानी में चली गई। मैंने उसके भाई से बात की, तो वो कहने लगा आप लोग रहने दीजिए, हम जर्मनी में ये सब कर लेंगे।"

"उसे सारा कुछ फिर से शुरू करना पड़ेगा," ऐडम ने कहा, "जेनी के कहने पर हम जर्मनी भी गए समझाने, पर उसकी माँ ने कहा कि तुम मेरे बेटे को बरगलाकर ले जाना चाहते हो। मुर्तज़ा वहीं खड़ा था और उसने एक शब्द भी नहीं कहा। फिर हमसे वहाँ रुकते नहीं बना, हम वापस आ

गए।"

जेनी अचानक मुझे हमारी माँओं जैसी लगने लगीं। उनकी चुप्पी अजीब थी। वह अभी भी मुर्तज़ा की तस्वीर देख रही थीं।

"तो अब क्या स्थिति है?" मैंने पूछा।

"अभी मुर्तज़ा का कहीं कोई पता नहीं है," ऐडम ने कहा, "उसका फ़ोन बंद है। हमने Munich में पता लगाया था जहाँ वे थे, वे वहाँ से जा चुके हैं। इसलिए जेनी आजकल बहुत परेशान रहती है।"

"मैं पिछले छह महीने से उसे खोज रही हूँ," जेनी ने कहा, "इतना तो हक़ बनता है कि वो सही हालात में है कि नहीं ये पता चले?"

मैं कुछ भी नहीं कह पाया था। ऐडम ने मुर्तज़ा की तस्वीर जेनी के हाथों से लेकर उसे अपनी जेब में रख ली। फिर वे मेरे दिन के बारे में बात करने लगे। मेरे जवाब में थकान थी और उनके सुनने में भी एक क़िस्म का भारीपन। अंत में हम सब चुप हो गए। उसी चुप्पी में हमने अपना-अपना गिलास ख़त्म किया और एक-दूसरे को गुड नाइट कहा।

मैं जब बिस्तर पर लेटा हुआ था तो मुझे हिरण और उसका बच्चा याद आने लगे जो बदहवास-से यहाँ-वहाँ भाग रहे थे। फिर मुझे वो अफ़ग़ानी याद हो आया, जब मैं इतने छोटे सफ़र में उसकी चिंता करने लगा था तो मैं जेनी का हाल भी जान सकता था, क्योंकि मुर्तज़ा तो पाँच साल यहाँ रहा था।

मैंने नेनी को मैसेज किया और कहा कि वह ओल्गा से पूछें कि उनके कैंप में कोई सीरियन परिवार है जिसमें क़रीब बाईस-तेईस साल का कोई मुर्तज़ा नाम का लड़का हो! उसके पास स्वीडिश अस्थायी वीज़ा है।

नेनी का जवाब आया कि वह कल तक पता करके बताएगी।

अगले दिन दोपहर तक मुर्तज़ा नाम के चार लोगों का ब्योरा नेनी ने मुझे भेजा था। मैंने ऐडम को वो दिखाया, पर उनमें से उनका वाला मुर्तज़ा कोई नहीं था।

'ओल्गा ने अपने लोगों को लगा दिया है।' नेनी ने मैसेज में लिखा, 'अगर मुर्तज़ा की कोई तस्वीर मिल सकती है तो बड़ी मदद होगी। ओल्गा ज़्यादातर अफ़ग़ानी लोगों को जानती है, पर वो कोशिश कर रही है।'

ऐडम ने तुरंत मुझे मुर्तज़ा की तस्वीर भेजी, मैंने वो नेनी को भेज दी। ऐडम ने मुझसे कहा, "जब तक मुर्तज़ा का पता न लग जाए तब तक जेनी को हम कुछ नहीं बताएँगे, वरना वो बेकार परेशान होगी।"

"मैं इस बात का ख़याल रखूँगा।" मैंने कहा।

मुझे Gustavsbergs पसंद आने लगा था। ऐडम और जेनी का घर Gustavsbergs के कोने में था। उनके घर से कुछ ही दूरी पर तालाब था और तालाब के बग़ल से एक पगडंडी जाती थी जो सीधा घने जंगल की तरफ़ ले जाती थी। मैं दिन में कई बार उस पगडंडी को पकड़कर अंदर जंगल में टहलने निकल जाता। ऐडम मेरी चिंता करने लगे थे, उन्हें लग रहा था कि मैं बोर हो रहा हूँ, वह बार-बार पूछते कि क्या मुझे Stockholm जाना है, या कहीं और घूमना है? मैं उन्हें मना कर देता। उनके घर के पास जो जंगल था वो घने ऊँचे पेड़ों से सना पड़ा था। उस जंगल की चुप्पी पतझड़ के रंगों से अटी पड़ी थी। साँस लेने में भी लगता था कि मैं बहुत से रंग अपने भीतर खींच रहा हूँ और हर रंग की अलग ख़ुशबू थी जिसमें मेरा देखना लगातार बदल रहा था। मैं जब अपने कमरे में रहता तो बार-बार उस जंगल के बारे में सोचने लगता। मैं हर कुछ देर में ख़ुद को उस घने जंगल में पाता। उस जंगल की हवा में मुझे सिर्फ़ पत्तियों के सरसराने की आवाज़ें ही सुनाई देती थीं। अब हिरण दिखते तो वो मुझे देखकर भागते नहीं थे, वो बस थोड़ा सचेत हो जाते। मैं दबे क़दमों से किसी पेड़ के नीचे जाकर बैठ जाता। कई बार वो मेरे इतने बग़ल में आ जाते कि मुझे लगता कि मैं हाथ बढ़ाकर उन्हें छू सकता हूँ। पर हर चीज़ को छू सकने की, अपने पास रख लेने की सारी इच्छाओं को मैं झड़ते हुए देख सकता था। ऐसी स्थिरता में जब मैं अपनी आँखें बंद करता तो मुझे घर याद आता, पर वो दिल्ली वाला घर नहीं होता। वो घर होता, किसी

पहाड़ के कोने के किसी कोने में बना घर। अगल-बग़ल देवदार के पेड़ होते, जंगल को जाती छोटी पगडंडियाँ होतीं, उन पर पहचाने पैरों के निशान होते। मैं कभी पहाड़ पर नहीं रहा था, मैं वहाँ बहुत जाता भी नहीं था, और ये पहाड़ पर घर जैसा सपना मेरा भी नहीं था, ये सारथी का सपना था जो इस जंगल में पता नहीं कैसे मेरे सपने में बदलता जा रहा था। मुझे गोबर लिपी घर की सीढ़ियाँ दिखने लगतीं, सफ़ेद चूने में पुतीं दीवारें, गहरे नीले दरवाज़े। मैं इस जंगल में भटकते हुए बार-बार एक घर पा जाता जो असल में कहीं था ही नहीं। Akhil

---

कुछ ही दिनों में ओल्गा ने मुर्तज़ा नाम के लोगों का ब्योरा भेजा, पर बात ज़्यादा धुँधली होती जा रही थी। फिर एक दिन नेनी ने मैसेज किया कि ओल्गा ने तुम्हारा नंबर लिया है, वह तुम्हें फ़ोन करेगी। तभी ओल्गा का फ़ोन आया, "जो तस्वीर तुमने भेजी थी, वैसा दिखने वाला एक लड़का हैम्बर्ग में है अपने परिवार के साथ, पर उसका नाम फ़ारुख़ है। मैंने चोरी से उसकी तस्वीर खींच ली थी, वो अभी भेजती हूँ तुम बताना कि क्या ये वही है?"

ओल्गा ने फ़ोन काट दिया। ऐडम मेरे साथ ही थे और हम दोनों उस तस्वीर का इंतज़ार कर रहे थे। तभी फ़ोन पर मैसेज की आवाज़ आई। जैसे ही मैंने अपने फ़ोन पर तस्वीर खोली, ऐडम उत्साह में खड़े हो गए।

"यही है मुर्तज़ा, क्या हाल बना लिया है इसने अपना!" उन्होंने कहा।

मैंने उनसे फ़ोन वापस लिया और ओल्गा को फ़ोन किया, "हाँ, ये वही है।"

"तो अब क्या करना है?" ओल्गा ने पूछा।

"मैं कुछ देर में फ़ोन करता हूँ। बहुत धन्यवाद, ओल्गा!"

मैंने और ऐडम ने सँभालकर ये बात जेनी को बताई। जेनी फँटी हुई आँखों से हम दोनों को देखने लगीं, मानो उन्होंने कुछ सुना ही न हो।

"देखो वो फिर ग़ायब हो सकता है," ऐडम ने कहा, "हम चाहते हैं कि वो अच्छे से रहे, है न! और हमें ओल्गा मिल गई है जो हमें उसकी ख़ैर-तबियत देती रहेगी। यही तो चाहिए हमें कि वो जहाँ रहे अच्छे से रहे। हम अपनी तरफ़ से जितनी सहायता होगी, कर देंगे बिना उसको पता लगे।"

मैंने देखा, ऐडम की बातों से जेनी पूरी तरह सहमत नहीं थीं। उनके हाथों में मेरा फ़ोन था और वह उस तस्वीर को देखे जा रही थीं।

"कितना वज़न कम हो गया है इसका!" उन्होंने कहा।

जेनी को उस वक़्त हमारी बातों में बिलकुल दिलचस्पी नहीं थी। मैंने और ऐडम ने उन्हें वक़्त दिया। कुछ देर बाद वह ख़ुद कहने लगीं कि हम दूर ही रहते हैं, पर दूर से हम इसके और इसके परिवार के लिए जो भी कुछ कर सकते हैं, करेंगे। मैंने वापस ओल्गा को फ़ोन लगाया और ओल्गा ने कहा कि तुम मेरी बात ऐडम से करा दो। मैंने ऐडम को अपना फ़ोन दिया और बाहर सिगरेट पीने निकल आया। सिगरेट पीते हुए मेरे पैर वापस उस जंगल की तरफ़ बढ़ने लगे। मौसम ठंडा था और हवा भी चल रही थी। जंगल में क़दम रखते ही मेरी निगाह पेड़ों पर पड़ी और मेरे हाथों से सिगरेट छूट गई। मैंने इतने रंग एक साथ कभी देखे नहीं थे। तेज़ हवा में पेड़ों से रंगों की बारिश हो रही थी। सारे पत्ते अपने पेड़ से टूट-टूटकर गिर रहे थे, चटक पीला, सुर्ख़ और गहरा कत्थई रंग। मैं इस वक़्त उछलना-कूदना चाहता था, पर मैं चुपचाप गहरे जंगल में घुसता चला गया। मैं इस जंगल की चुप्पी में, इन पत्तों के रंगों में गुम जाना चाहता था। इस पतझड़ की एक भीनी गर्माहट थी, जिसे मैं अपने भीतर महसूस कर रहा था। उस जर्मन लड़की ने कितना सही कहा था कि तुम्हें ये अकेले ही देखना होगा नंगी निगाह से, वरना मैं अभिनय कर रहा होऊँगा। भीतर जंगल में जाकर मैं रुक गया। मेरे भीतर क्षमता नहीं थी इस सुंदरता को पचाने की, मैं इसे बस ताक सकता था जैसे जेनी मुर्तज़ा की तस्वीर को देख रही थीं। मैं इस वक़्त कुछ ऐसा देख रहा था जिस पर मुझे यक़ीन नहीं हो रहा था और ये

बात मैं किसी को बताना भी नहीं चाह रहा था। मैं इसमें अकेला और चुप था। ये सब अपने-आप में कितना पूरा था, मैं इस जंगल का हिस्सा था, मैं इस पेंटिंग के भीतर था, ख़ुश था, और इस ख़ुशी को पूरा करने के लिए मुझे किसी के सहारे की ज़रूरत नहीं थी!

रात में हम तीनों चिमनी के सामने बैठे थे। ऐडम ने आज की रात महँगी वाइन की बोतल खोल ली थी। चिमनी की आँच में जेनी की आँखें चमक रही थीं। वह बार-बार मुर्तज़ा से जुड़े क़िस्से छेड़ देतीं, हर क़िस्से के कुछ पहलू को ऐडम टोककर ठीक कर देते।

"मैं मुर्तज़ा को लेकर स्वार्थी हो गई थी," जेनी ने कहा, "ओल्गा से बात करके लगा कि मुझे शरणार्थियों की मदद के अपने काम पर वापस जाना चाहिए। उन सबको हमारी बहुत ज़रूरत है।"

ऐडम ने अपना हाथ जेनी के कंधे पर रखा।

"ओल्गा मुर्तज़ा की जर्मन नागरिकता के लिए काम कर रही है, वो हमें उसकी सूचना देती रहेगी।" ऐडम ने कहा।

मैं अपने जिए पतझड़ के नशे में था। मुझे सारा कुछ एक सपना लग रहा था।

"ऐडम, क्या आप मुझे कल Stockholm छोड़ सकते हैं?"

"चलो, आख़िरकार तुम घूमने तो निकल रहे हो!"

"नहीं, मुझे एयरपोर्ट छोड़ देना, मैं वापस दिल्ली जाना चाहता हूँ।"

"ओ, इंडिया वापस?"

"हाँ, मुझे लगता है कि अब मुझे चलना चाहिए।"

"ठीक है, I will drop you tomorrow."

'हेलो नेनी,

अगर आप इस वक़्त मुझसे पूछो कि कैसा हूँ मैं, तो मैं कहूँगा कि मैं गिर रहा हूँ। कहीं बहुत ऊँचे दरख़्त से। मेरे सारे फीकेपन को त्याग के मैं रंगों में नहाते हुए गिर रहा हूँ। कैसा हूँ मैं के जवाब में सारे लोग शामिल

होंगे जिन्हें धन्यवाद कहना मैं भूल गया था। और मैं कहना चाहूँगा कि ये दुनिया कितनी ख़ूबसूरत है और कितने सुंदर लोग हैं इसमें, जैसे आप। इस पतझड़ के पहले मुझे लोग उदास और परेशान दिखते थे। सारे पत्तों के झड़ने से पता चला कि सारी उदासी सारी परेशानी मेरी अपनी पाली हुई थी। मैं इस वक़्त अपनी सबसे सुंदर अवस्था में हूँ जैसे एक पत्ता अपने पेड़ से जुदा होते हुए सबसे ख़ूबसूरत नज़र आता है। इस वक़्त गिरते हुए मैं जहाँ भी देख रहा हूँ, मुझे लोग मुस्कुराते हुए नज़र आ रहे हैं। मैं आपको भी मुस्कुराता हुए देख सकता हूँ। कैसा हूँ मैं के जवाब में मैं आपको धन्यवाद कहना चाहता हूँ कि आपने जेनी और ऐडम की सहायता की।

मैं इस वक़्त फ़्लाइट में बैठा हूँ और दिल्ली वापस जा रहा हूँ, पर लग रहा है कि ये मेरी यात्रा की तरफ़ मेरा पहला क़दम है। मैं पहली बार अपने होने से बाहर निकला हूँ। अगर मैं यात्रा में ही बना रहा तो आपसे जल्द मुलाक़ात होगी।

आपका दोस्त

सलीम, रिदम, सारथी, ऋषभ।'

मानव कौल

लेखन मानव के मूल स्वभाव में है। मानव के लिए लिखना संसार से उनका संवाद है। दो दशकों से भी अधिक समय से लेखन में सक्रिय मानव ने बीते 6-7 सालों में बहुत सघन लेखन किया है। अब तक मानव की 11 पुस्तकें—**'ठीक तुम्हारे पीछे'** (कहानियाँ), **'प्रेम कबूतर'** (कहानियाँ), **'तुम्हारे बारे में'** (न कविता, न कहानी), **'बहुत दूर, कितना दूर होता है'** (यात्रा-वृत्तांत), **'चलता-फिरता प्रेत'** (कहानियाँ), **'अंतिमा'** (उपन्यास), **'कर्ता ने कर्म से'** (कविताएँ), **'शर्ट का तीसरा बटन'** (उपन्यास), **'रूह'** (यात्रा-वृत्तांत), **'तितली'** (उपन्यास) और **'टूटी हुई बिखरी हुई'** (उपन्यास) प्रकाशित हो चुकी हैं। **'पतझड़'** मानव की बारहवीं किताब और पाँचवाँ उपन्यास है।

मैं बस ये कहना चाह रहा था कि अगर मैं किताब नहीं पढ़ता, अगर मैं इन दोनों जगहों पर नहीं जाता तो शायद मैं पिछली बार की तरह यूँ ही, पूरे म्यूज़ियम से टहलते हुए बाहर निकल आता। पहली बार उनके चित्रों के रंग मुझे अपनी तरफ़ खींच रहे थे, उनके ब्रश स्ट्रोक- अकेलापन, पीड़ा, प्रेम सारे कुछ से सने हुए थे। उनकी हर तस्वीर, तस्वीर बनाने की प्रक्रिया भी साथ लेकर चलती है। मैं उनकी पेंटिंग Weeping Nude के सामने जाने कितनी देर खड़ा रहा! मैं Munch के सारे रंगों को जानता था, वो मेरे जीवन के रंग थे, वो मेरे अकेलेपन, कमीनेपन के रंग थे, अगर कोई पूछे कि गहरी उदासी कैसी होती है तो मैं Munch की किसी पेंटिंग की तरफ़ ही इशारा करूँगा।

उपन्यास

9 789392 820854
₹299
sampadak@hindyugm.com